केकर दल रूस में

(फ्रेन्ड्स शान्ति समिति के प्राच्य-पाश्चात्य सम्बन्ध समिति, फ्रेन्ड्स हाउस, यूस्टन रोड, लंदन, एन० डब्ल्यू०-१ द्वारा अंगरेजी में प्रकाशित)

सम्पादिका

कैथलीन लौन्सडेल

हिन्दी रूपकार

डा० मनोरंजन प्रसाद गुप्त

(प्राध्यापक सायंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना।)

पुस्तक-भंडार, पटना ४

प्रकाशक
पुस्तक-भंडार
पटना और लहेरियासराय

मूल्य ६।)

मुद्रक
श्री महादेवसहाय सिंह अष्ठाना
श्री हिमालय प्रेस, पटना।

क्वेकर दल का रूस भ्रमण

सम्पादिका—कैथलीन लौन्सडेल

चार्ल्स द्वितीय के प्रति घोषणा, १६६० ई०

"हमलोग किसी भी उद्देश्य के लिये अथवा किसी भी बहाने समस्त युद्धों, द्वेषों एवं शस्त्रप्रयोगों का पूर्णतया विरोध करते हैं। निखिल विश्व के सम्मुख हमारी यह घोषणा है। हमलोगों का मार्ग प्रदर्शन करनेवाली यीशु की शक्ति परिवर्त्तनशील नहीं है। इस कारण वह एक बार हमलोगों को दुर्वृत्ति (Evil) से अलग कर पुनः उसी की ओर नहीं ले जा सकती। हमलोग इसे निश्चित रूप से जानते हैं और संसार के सम्मुख घोषणा करते हैं कि समस्त सत्यों का दर्शन कराने वाली यीशु की शक्ति हमलोगों को यीशु के राज्य के लिये अथवा इस विश्व के राज्यों के लिये ही किसी भी व्यक्ति के साथ सशस्त्र युद्ध एवं संघर्ष के लिये प्रेरित नहीं कर सकती।"

समस्त व्यक्तियों के लिये सद्भावना का सन्देश, १९५० ई०

(अँगरेजी, फ्रेंच, जर्मन एवं रशियन में प्रकाशित।)

"समस्त विश्व में भय एवं पारस्परिक अविश्वास की वृद्धि देखकर सोसायटी ऑव-फ्रेंड्स (क्वेकर सम्प्रदाय) सभी मनुष्यों के लिये सभी जगहों में सद्भावना का सन्देश उद्घोषित करती है। फ्रेंड्स लोगों का अनुरोध है कि अविश्वास एवं दुर्भावना की वृद्धि करनेवाले समस्त शब्दों एवं कार्यों से बचने की चेष्टा की जाय, एक दूसरे के दृष्टिकोण के ज्ञान की वृद्धि के लिये नवीन प्रयास हों और सच्ची शान्ति की स्थापना के लिये यथार्थ प्रयत्न किये जायँ। उनलोगों का विश्वास है कि विरोध-शान्ति संभव है। उनलोगों को आशा है कि अनेकों भाषाओं में अनूदित होने पर यह साधारण शब्द स्वयं एक नवीन भावना को उत्पन्न करने में सहायक होगा जिससे विश्व के प्रसाधनों का उपयोग युद्ध के कार्यों से हटाकर मानवजाति की सुख-समृद्धि के लिये किया जायगा।"

उपक्रमणिका

सोसायटी ऑव फ्रेंड्स तथा विश्वशान्ति

❀

सोसायटी ऑव फ्रेंड्स
तथा
विश्व शान्ति

१६५१ ई० में अंग्रेज क्वेकर लोगों का एक छोटा दल रूस गया हुआ था। यह पुस्तक उसी का भ्रमण वृत्तान्त है।

और क्वेकर लोगों का परिचय ? 'क्वेकर' उस सम्प्रदाय का उपनाम है जिसे यथार्थतः 'रेलिजस सोसायटी ऑव फ्रेन्ड्स' कहते हैं।

सत्रहवीं शताब्दी के मध्य में इंगलैंड में एक महान् धार्मिक आन्दोलन हुआ था। यह आन्दोलन विख्यात गृहयुद्ध (सिविलवार) और क्रॉमवेल के कॉमनवेल्थ-युग की पृष्ठभूमि था। कहा जाता है कि उस समय इंगलैंड में धर्मचर्चा उतनी ही बड़ी भीड़ को आकर्षित कर लेती थी जितनी बड़ी भीड़ को बीसवीं शताब्दी में "फुटबॉल मैच' आकर्षित कर लेता है। इसी आन्दोलन के फलस्वरूप, विशेषतया इंगलैंड के उत्तर में, एक नवीन दल का प्रादुर्भाव हुआ। इस दल के लोग अपने को "सीकर्स" (आत्मान्वेषी) कहते थे। वे लोग चर्च के अन्तर्गत विभिन्न दलों के सैद्धान्तिक विवादों से ऊबकर एक नवीन धार्मिक अनुभूति प्राप्त करना चाहते थे। उनलोगों की सभाओं में जॉर्ज फॉक्स नामक एक विलक्षण युवक प्रकट हुआ जो स्वयं एक महान् अनुसंधान कर चुका था। उसने अपने हृदय में भगवान् अथवा क्राइस्ट की वाणी मुखरित होते सुनी थी और इसके लिये उसे किसी पुजारी, धर्मग्रंथ अथवा अन्य बाह्य प्रभुत्व की मध्यस्थता की आवश्यकता नहीं पड़ी थी। उसने देखा कि यदि यह उसके लिये सत्य है तो यह प्रत्येक स्त्री-पुरुष के लिये भी अवश्य सत्य होगा। प्रत्येक व्यक्ति ईश्वरीय सत्य को स्वयं प्राप्त कर लेगा। जॉर्ज फॉक्स और उसके मित्रों के उपदेश के फलस्वरूप अनेकों "सीकर्स" (आत्मान्वेषी) फाइन्डर्स (स्वयंद्रष्टा) हो गये। वे लोग सजीव सत्य एवं चेतन ब्रह्म का प्राप्त कर चुके थे और सभी मनुष्यों को इस महान् अनुसन्धान से लाभान्वित कराने के लिये कृतसंकल्प थे।

जॉर्ज फॉक्स और उनके मित्रों ने इस महान् सत्य के गूढ़ार्थ को उत्साहयुक्त एवं भ्रमरहित होकर देखा था। बात यह है कि यद्यपि उनलोगों का यह दावा ठीक ही था कि भगवान् उनलोगों के हृदय द्वारा उनलोगों से बोल चुके हैं, तथापि वे लोग 'न्यू टेस्टामेंट' के ज्ञान से अत्यन्त प्रभावित थे और उनलोगों के लिये नजारेथवासी जेसस (यीशु) के अनुभव, उनके उपदेश, उनकी प्रेमयुक्त जन-सेवा और शूली द्वारा उनका प्राणांत जीवन का प्रधान (केन्द्रीय) सत्य था। जेसस ने मानव-प्रेम और ईश्वरीय प्रेम को दो अभिन्न आदेशों के रूप में एक सूत्र में बाँधा था। उनलोगों ने भी ठीक वही किया। जेसस ने धनी-गरीब, स्त्री-पुरुष के बीच किसी प्रकार का अन्तर नहीं माना था। उन्होंने सबके प्रति करुणा, प्रेम और सम्मान दिखलाया था। अतः प्रारंभिक क्वेकर लोगों ने सभी स्त्री-पुरुषों की पूर्ण आध्यात्मिक समानता स्वीकार कर ली थी। उनलोगों का कथन था कि यदि प्रत्येक स्त्री और पुरुष के अन्दर ईश्वर-सदृश तत्त्व विराजमान है तो तत्कालीन निर्मम दण्डव्यवस्था और समस्त युद्ध एवं संघर्ष ईश्वर के विरुद्ध अपराध हैं।

इस दैवी तत्त्व की पुकार सुननेवाले सभी मनुष्यों का कर्त्तव्य है कि वे सदैव अपने साथी मनुष्यों के अन्तःस्थित इसी तत्त्व से अपील किया करें। दुष्ट मनुष्यों को पाशविक ढंग से दण्ड देने अथवा वध करने के बदले अवश्य सुधारा जाय। युद्ध का—जिसमें सुरक्षात्मक युद्ध भी सम्मिलित है—पूर्णतया बहिष्कार कर दिया जाय।

चार्ल्स द्वितीय के शासनकाल में इंगलैंड में क्वेकरलोगों को अत्यधिक क्रूर यातनायें सहनी पड़ीं। उनलोगों पर चर्च और राज्य दोनों के अधिकार-हनन का दोषारोपण किया गया। मनुष्य के वास्तविक स्वभाव के सम्बन्ध में उनलोगों ने जिस महान् सत्य के दर्शन किये थे उसकी घोषणा करने के लिये उनलोगों ने यूरोप के अनेक भागों में, यहाँ तक कि कुस्तुन्तुनियाँ और जेरूजेलम में भी, अपने सदस्यों को भेजा था और इन स्थानों में उनलोगों का भलीभाँति स्वागत भी हुआ था। कुछ मुस्लिम क्षेत्रों में उनलोगों को इतनी क्रूर यातनायें सहनी पड़ीं कि सोसायटी ऑव फ्रेन्ड्स लगभग नष्ट ही हो गई। तथापि एक छोटे सम्प्रदाय के रूप में उनलोगों ने इंगलैंड और उत्तरी अमेरिका में अपना अस्तित्व कायम रक्खा और वे लोग अपने धार्मिक सिद्धान्तों के प्रति सच्चे बने रहे। उनलोगों की

उपासना-सभायें अभी भी स्वयं ईश्वर के सिवा किसी अन्य नेता के बिना ही होती थीं । वे लोग अपने हृदय में ईश्वर की वाणी सुनने के लिये घंटों एक साथ नीरव उपासना में बैठ रहते, किन्तु प्रत्येक सदस्य को नीरवता भंग करने और ईश्वरीय प्रेरणा से अपने साथियों को उपदेश देने की समान स्वतत्रता थी । इसके सिवा, उनकी सामाजिक विश्रुतियाँ भूली नहीं गई थीं ।

अठारहवीं शताब्दी में सुप्रसिद्ध अमरीकी क्वेकर जॉन वुलमैन ने अपने साथी क्वेकर लोगों से दासता का सर्वथा परित्याग करने के लिये अनुरोध करना प्रारंभ किया जो उस समय उत्तरी अमेरिका में खूब प्रचलित थी । उन्होंने दासों के स्वामियों और दासों के व्यापारियों को दोषी ठहराने के लिये कोई वृहत् सार्वजनिक आन्दोलन नहीं प्रारंभ किया । उन्होंने उससे भी अधिक कठिनतर, और संभवतः विलम्बकारी किन्तु अधिक मौलिक, मार्ग का अनुसरण किया । वे खुद ही दासों के स्वामियों के यहाँ गये तथा उन्हें दास-प्रथा की बुराइयों को समझाया और किसी भी मूल्य पर दासों को मुक्त करने का आग्रह किया । इस प्रकार धीरे-धीरे दासता के विरुद्ध सद्विवेक जाग्रत हुआ । कुछ क्वेकर लोगों ने नीग्रो-दासों के प्रति भी अत्यधिक व्यक्तिगत दिलचस्पी दिखलाई । ऐन्थोनी बेनिजेट नामक क्वेकर को 'नीग्रो-मित्र' की सम्माननीय उपाधि भी प्राप्त हुई ।

परवर्त्ती पीढ़ियों में अमेरिका और इंगलैंड के क्वेकर लोगों ने विश्व के अनेक भागों में दासता के उन्मूलनार्थ होने वाले आन्दोलन में प्रधान भाग लिया । उनलोगों ने अमेरिका और पश्चिमी अफ्रिका के कुछ ब्रिटिश उपनिवेशों में नीग्रो लोगों की पाठशाला खुलवाने में भी अगुए का काम किया ।

उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में यूरोप में दण्ड-सुधार के लिये अग्रगण्य सुविख्यात एलिजाबेथ फ्राइ भी एक सक्रिय क्वेकर थीं । बहुत समय तक युद्धविरोधी क्वेकर प्रसिद्धि अधिकांशतः निषेधात्मक थी । युद्ध सरकारी कार्य था । क्वेकरलोग सामान्य नागरिक थे जो शासन कार्य में भाग नहीं लेते थे । वे लोग युद्ध में भाग नहीं लेते थे । उस समय युद्ध से कोई सम्बन्ध नहीं रखना ही उनलोगों के कर्त्तव्य की इति-श्री समझी जाती थी । उस समय अमेरिका और आयरलैंड में शस्त्र-ग्रहण करने से अस्वीकार करने के कारण उनलोगों के

दल के कुछ नवयुवकों के साथ अनुचित बर्त्ताव किया गया और इंगलैंड में उत्तेजित भीड़ क्वेकर लोगों के घरों पर पत्थर फेंकती थी क्योंकि वे लोग 'नेपोलियन युद्ध' और अन्य युद्धों में सैनिक विजयों के समय आनन्दप्रद झंडोत्तोलन नहीं करते थे।

परन्तु उन्नीसवीं शताब्दी में जनतंत्र की भावनाओं के प्रचार के साथ-साथ क्वेकर लोग शान्ति कार्य में अधिकाधिक सक्रिय होते गये। उनलोगों ने शान्ति-समितियों की स्थापना में सहायता की; अन्तर्राष्ट्रीय पञ्चायत एवं निःशस्त्रीकरण के लिये कार्य किया। १८४० ई० के बाद जब इंगलैंड और रूस के बीच विद्वेषाग्नि तीव्र हो उठी तब 'क्रीमिया युद्ध' रोकने की विफल आशा से कुछ क्वेकर लोगों ने मास्को जाकर जार से भेंट की। अधिकांशतः वे लोग युद्ध के अन्तर्निहित कारणों का अध्ययन कर रहे थे और परतंत्र जातियों एवं अभावग्रस्त वर्गों को मुक्ति-प्रदान करने की आवश्यकता की ओर ध्यान आकर्षित कर रहे थे। सामान्य जनों एवं करोड़ों मूक प्राणियों के सम्बन्ध में कुछ सदस्यों की दिलचस्पी बनी तो रही, किन्तु उनकी संख्या अल्प थी और इस कारण जनतांत्रिक समाजों (Communities) में उनकी आवाज का अत्यन्त कम प्रभाव पड़ा। जनतांत्रिक युग में, जब कि लोकमत ही बहुधा निर्णयात्मक कारण होता है, केवल थोड़े से राजनीतिज्ञों से की गई अपीलों का अधिक प्रभाव नहीं पड़ सकता।

क्वेकर रिलीफ पार्टियाँ १८५६ ई० में फिनलैंड में, १८७० ई० में फ्रांस में एवं युद्ध द्वारा ध्वस्त अन्यान्य देशों में घायल व्यक्तियों की, विशेषकर घायल नागरिकों की, शुश्रूषा में सहायता करने गई थीं। १९१४ ई० और १९३९ ई० के दोनों महायुद्धों में अधिकांश क्वेकर युवकों ने लड़ना अस्वीकार कर दिया, किन्तु पीड़ितों के प्रति करुणा उत्पन्न कराने के लिये और यह बतलाने के लिये कि कायरता के कारण उनलोगों ने लड़ना अस्वीकार नहीं किया था—अनेकों युवकों ने एम्बुलेंस अथवा रिलीफ यूनिट में काम किया था। रिलीफ कार्य करनेवाले क्वेकरों ने अपने राष्ट्र के शत्रुओं से भी ठीक अपने राष्ट्र अथवा मित्रराष्ट्रों के लोगों की भाँति ही बर्त्ताव करने का प्रयत्न किया। निश्चयतः प्रथम महायुद्ध के प्रारंभ होने पर इंगलैंड की सोसायटी ऑव फ्रेन्ड्स का एक सर्व प्रथम कार्य तथा-कथित 'विदेशी शत्रुओं' की सहायता के लिये एक समिति की

स्थापना करना था। युद्ध छिड़ जाने पर इंगलैंड में अनेकों जर्मनों एवं शत्रु-राष्ट्रों के अन्य नागरिकों को कैद कर लिया गया था और काल-क्रम से लोकमत भी उनलोगों के प्रति अधिकाधिक शत्रुतापूर्ण होता गया। परन्तु यह सहायता-कार्य कुछ लोक-विरोध का सामना करके युद्धपर्यन्त जारी रक्खा गया। प्रथम महायुद्ध के समाप्त होने पर स्वदेश में ही तीव्र बुभुक्षा के शिकार जर्मनों की सहायता की गई और परवर्त्ती वर्षों में जब यातना के कारण करोड़ों यहूदी एवं अन्य जातिवाले एक देश से दूसरे देश में भागते फिरते थे तब उनलोगों की विपदा को कम करने के लिये प्रयत्न किये गये। क्वेकर दल जैसा एक छोटा समाज करोड़ों पीड़ितों के लिये आवश्यक सहायता का प्रबन्ध संभवतः नहीं कर सकता था, किन्तु क्वेकर कार्यकर्त्ता जिन लोगों के बीच कार्य करते हैं, उनसे सच्ची मैत्री अथवा कम-से-कम कुछ वैयक्तिक सम्बन्ध की स्थापना के लिये वे सदैव प्रयत्न करते हैं।

अब एशियाई युद्ध एवं संघर्ष के सम्बन्ध में। इंगलैंड के क्वेकर लोगों ने उन्नीसवीं शताब्दी में 'अफीम युद्धों' (ओपियम वार्स) के बाद, ब्रिटिश सरकार द्वारा चीन पर लादे गये अधार्मिक अफीम व्यवसाय का अनेक वर्षों तक सफल विरोध किया। अंगरेज क्वेकर लोगों ने भारतीय स्वातन्त्र्य आन्दोलन का समर्थन प्रारंभ से ही किया था। यहाँ भी, चीन और भारत के इन राजनीतिक आन्दोलनों में भाग लेनेवाले क्वेकरों ने चीनी एवं भारतीय स्त्री-पुरुषों के साथ घनिष्ठ मित्रता कायम करने के साथ-साथ ब्रिटिश सरकार पर दबाव डालने और लोकमत को शिक्षित करने के कार्य को संयुक्त कर दिया।

यह बिल्कुल स्वाभाविक ही था कि महात्मा गाँधी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर और अन्य उच्चकोटि के नेताओं के व्यक्तित्व के प्रति ऐसे सिद्धान्तों को माननेवाली संस्था (सोसायटी) का ध्यान विशेष रूप से आकृष्ट हो।

इस प्रकार हमलोग वर्त्तमान युग में प्रवेश करते हैं। क्वेकर लोग सक्रिय रूप से विश्व-संघ के सिद्धान्त का समर्थन करते रहे हैं, भले ही यह सिद्धान्त राष्ट्र-संघ के रूप में साकार हो अथवा संयुक्त राष्ट्र-संघ के रूप में, परन्तु वे लोग विश्व-सरकार के इन सर्व प्रथम अवयवों के दोषों के प्रति सजग भी रहे हैं। विशेषतः उनलोगों ने

"लौहआवरण' को पूँजीवादी एवं साम्यवादी जगत को विभाजित करने वाले एक अलंघ्य अवरोध के रूप में मानना अस्वीकार कर दिया है । अमरीकी क्वेकर दलों ने अमरीकी-रूसी 'शीतयुद्ध' से सम्बद्ध प्रश्नों का पूर्ण एवं क्रमबद्ध अध्ययन करके अपनी 'स्टेप्स टु पीस' नामक पुस्तिका में शान्तिमय प्रयास में अग्रसर होने के लिये कुछ उत्साहवर्द्धक प्रस्ताव प्रस्तुत किये हैं। अँगरेज क्वेकर लोगों का एक दल विश्व-शान्ति समिति के कुछ सदस्यों से मिला था और बाद में उस दल ने रूस भ्रमण के निमंत्रण को स्वीकार कर लिया था। इस पुस्तक में उसी भ्रमण का वर्णन है। जो दल रूस गया हुआ था वह उसी समय से अन्तर्ज्ञान (अंडरस्टैंडिंग) के निर्माण के साधनों की खोज में क्रियाशील रहा है। इंगलैंड में एक वैसा ही दल चीन के साथ सर्वोत्तम साधनों द्वारा सफल आवागमन प्रारंभ करने के लिये भी कार्य कर रहा है । इसपर ध्यान देना होगा कि इन परिस्थितियों में, और अन्य परिस्थितियों में भी, प्रयुक्त की जानेवाली कार्यपद्धति (टेकनीक), सन्देह एवं अविश्वास द्वारा भिन्न हुए किसी विदेश के दर्शन करने और वहाँ की प्रत्येक वस्तु की प्रशंसा करने वाली सरल योजना के समान नहीं है; क्वेकरलोग भेद उत्पन्न करने वाले वास्तविक प्रश्नों का सामना करते हैं और बाहर के लोगों से (जिन्हें देखने वे लोग जाते हैं) तथा अपनी गृह-सरकारों से सचाई के साथ बातचीत करने की कोशिश कर और अधिक कष्टकर कार्य करने का प्रयत्न करते हैं ।

यद्यपि अभी भी क्वेकरलोग अन्य किसी देश की अपेक्षा उत्तरी अमेरिका और इंगलैंड में अधिक संख्या में हैं, तथापि इस समय उनके छोटे, किन्तु शक्तिशाली दल यूरोप के अनेकों भागों में विद्यमान हैं और व्यक्तियों के रूप में तो क्वेकरलोग संसार भर में फैले हुए हैं। इनमें से कुछ शान्ति-निर्माण के प्रयत्न में अत्यधिक सक्रिय भाग ले रहे हैं। उदाहरणार्थ, १९५३ ई० के ग्रीष्मकाल में छः अथवा आठ विभिन्न देशों के क्वेकर लोग स्वेडेन में रूसी ईसाइयों से विचार-विनिमय के साथ-साथ यह देखने के लिये मिले थे कि रूस और पश्चिमीय देशों के बीच अधिक उत्तम अन्तर्ज्ञान (अंडरस्टैंडिंग) की वृद्धि करने में विचारात्मक अवरोध (बैरियर) दोनों ओर के ईसाई लोग कुछ कर सकते हैं अथवा नहीं। स्कैंडेनेविया, जर्मनी, मेक्सिको एवं अन्य देशों के निवासी क्वेकर, इंगलैंड और अमेरिका के क्वेकरलोगों के साथ-साथ, राष्ट्र

और राष्ट्र, जाति और जाति के बीच की कुछ खाइयों को भरने में सहायता पहुँचाने के लिये प्रतिवर्ष संयुक्त राष्ट्र की सभाओं एवं अन्य बैठकों में उपस्थित होते रहे हैं। इन सभा-सम्मेलनों में उनके लिये केवल पूर्व-पश्चिम के बीच का विद्वेष ही चिन्तनीय विषय नहीं होता। वे लोग उत्तरी-दक्षिणी अफ्रिका, जर्मनी एवं अन्यत्र विद्यमान विद्वेष-मय स्थितियों में भी सक्रिय दिलचस्पी लेते रहे हैं। परन्तु ऐसी राजनीतिक सभाओं में भाग लेने वाले क्वेकरलोगों का व्यक्तिगत रूप से जो भी प्रभाव पड़ पाता है वह शायद मुख्यतः इस सत्य के कारण कि इस दल के अन्य सदस्य करोड़ों पीड़ितों की सेवा में लगे हुए हैं जिससे न्यूयार्क अथवा जेनेवा में बोलनेवाले उनके सहकर्मी अनेकों देशों के स्त्री-पुरुषों की आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं के वास्तविक ज्ञान के साथ बोल सकते हैं।

अक्टूबर ८, १९५३ ई० *—होरेस अलेकजैन्डर*

प्रथम अध्याय

परिचय

यह पुस्तक सोसाइटी ऑव फ्रेन्ड्स के सात सदस्यों की रूस-यात्रा के सम्बन्ध में लिखी गई है। वे लोग वहाँ किस प्रकार गये, वहाँ जाकर उन्होंने क्या किया और क्या देखा इन सबका वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।

इस प्रथम अध्याय का उद्देश्य केवल उनके वहाँ जाने के कारणों को सुस्पष्ट करना है। उन्हे रूस जाने का यह अवसर कैसे प्राप्त हुआ तथा ग्रेट-ब्रिटेन के 'सोसाइटी ऑव फ्रेन्ड्स' की कार्य-कारिणी समिति ने उन्हें वहाँ भेजने का क्यों निश्चय किया—यात्रा की पृष्ठभूमि में इन सब बातों का निरूपण इस अध्याय में किया गया है।

सोसायटी ऑव फ्रेन्ड्स (क्वेकर सम्प्रदाय) ३०० वर्षों से विश्व को शान्ति का निश्चित प्रमाण देता रहा है। क्वेकर लोगों के लिये शान्ति यीशु की शिक्षा पर आधारित जीवन का अत्यन्त आवश्यक अंग है। उनका विश्वास है कि युद्ध सर्वदा अनुचित है और यह बात केवल अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध के लिये ही नहीं वरन् गृहयुद्ध एवं वर्गयुद्ध के लिये भी सत्य है। अतएव उनलोगों ने वैयक्तिक एवं व्यावसायिक, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समस्त मानवीय सम्बन्धों में शान्ति-निर्माता के रूप में कार्य करने का प्रयत्न किया है। वे युद्ध की समस्त तैयारियों, नवीन शस्त्रीकरण तथा सैनिक-प्रशिक्षण के लिये रँगरूटों की अनिवार्य भर्ती के विरोधी हैं। वे इन्हें मानवता के प्रति अपराध तथा ईसाई धर्म की शिक्षा एवं आचार के प्रतिकूल मानते हैं।

द्वितीय महायुद्ध की समाप्ति के बाद अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध में दिनोंदिन अवनति होती जा रही है, सोवियत संघ और पाश्चात्य शक्तियों के बीच की खाई दिनोंदिन और गहरी होती जा रही है, युद्ध के लिये अधिकाधिक तैयारियाँ हो रही हैं और इस कारण राष्ट्रों के बल, उत्साह, धन एवं अन्य उपादानों का

उपयोग दारिद्र्य, रोग एवं अज्ञान के उन्मूलनार्थ नहीं हो रहा है। क्वेकर लोगों के लिये ये सभी बातें अत्यन्त चिन्ता का विषय रही हैं।

क्वेकर लोगों का विश्वास है कि धर्म एक जीवन का मार्ग है। विलियम पेन के शब्दों में "ईसाई होना यीशु मसीह के समान होना है"। भय, पक्षपात, अन्याय, दारिद्र्य एवं रोग पर विजय पाने के लिये प्रयत्न करना धर्म का वास्तविक अंग है। इस कारण वे सामाजिक एवं जातीय न्याय के मार्क्सवादी उद्देश्यों के प्रति गहरी सहानुभूति रखते हैं। परन्तु मार्क्स-लेनिन के दर्शन और सोवियत तथा साम्यवादी व्यवहार के अनेक पहलुओं से उनका विरोध रहा है। साम्यवादी दर्शन वस्तुवादी, नास्तिक एवं समस्त धर्मों का शत्रु है, किन्तु क्वेकर अपने आपको यीशु के धर्म का एक अंग मानते हैं। मार्क्सवादी इतिहास की व्याख्या एक अनिवार्य संघर्ष के रूप में करते हैं; किन्तु क्वेकर ईश्वर के संग मानव की ऐक्य-स्थापना की आवश्यकता में विश्वास करते हैं। वे लोग इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिये तथा मानव-मानव के बीच ऐक्य स्थापित करने के लिये प्रयत्न करते हैं। लेनिन ने शिक्षा दी थी कि नैतिकता का स्थान 'सर्वहारा वर्ग-संघर्ष' के हितों के अधीन होना चाहिये। परन्तु क्वेकर लोगों का विश्वास है कि ईमानदारी, प्रेम, उदारता एवं सत्य चिरन्तन हैं; वे दैवी गुण हैं तथा अंततोगत्वा भय, सन्देह, लोभ एवं भ्रम पर उनकी विजय निश्चित है। वस्तुतः क्वेकर लोगों ने सत्य का इतना उच्च मान रक्खा है कि प्रारंभिक दिनों में कितने ही क्वेकरलोगों को (यह नाम उन्हें उपहास में मिला था) राजभक्ति की अथवा किसी भी प्रकार की शपथ लेने से इन्कार करने के कारण बंदी बना लिया गया था। क्वेकरलोगों का विश्वास था कि ऐसा करने से सत्य के दो मापदण्ड निर्धारित हो जायेंगे। क्वेकर दुर्वृत्तियों के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं, परन्तु उनका विश्वास है कि उनपर विजय पाने का एकमात्र मार्ग सत्य, प्रेम एवं औदार्य से काम लेना है। अगर लोगों को शान्ति या न्याय प्राप्त करने की इच्छा है, तो असत्य, संदेह, घृणा, प्रतिहिंसा एवं वैमनस्य का आश्रय लेना व्यर्थ है। इनसे किसी भी सदुद्देश्य की प्राप्ति नहीं हो सकती।

इसके अतिरिक्त स्वतंत्रता क्वेकर लोगों के दृष्टिकोण का अविच्छिन्न अंग है। इसमें रुचि-स्वातंत्र्य एवं अनुनय-विनय के लिये पर्याप्त स्थान है, किन्तु बल-प्रयोग की कहीं गुंजाइश नहीं है। क्वेकर लोगों का विश्वास है कि ईश्वर के साथ सहयोग भी मुक्त रूप में होना चाहिये, दबावयुक्त नहीं। अतएव किसी भी प्रकार का सर्वसत्तावाद उनके लिये घृणा की वस्तु है। उनका विचार है कि लोगों को एक ही तरह सोचने की शिक्षा कदापि नहीं दी जानी चाहिये

और उन्हें ऐसा करने के लिये बाध्य तो और भी कम किया जाना चाहिये। साथ ही क्वेकर लोग यह भी अनुभव करते हैं कि जिस प्रकार स्वतंत्रता के शारीरिक तथा मानसिक दोनों अर्थ होते हैं, ठीक उसी प्रकार उसके राजनीतिक तथा समाजिक अर्थ भी होते हैं। ऐसे स्त्री-पुरुष, जो दारिद्र्य के कारण अविराम श्रम का जीवन व्यतीत करते हैं और फिर भी जो सदैव बेकारी के भय से ग्रसित हैं, स्वतंत्र नहीं हैं।

इसके सिवा रुग्ण, बुभुक्षित एवं क्रोधित लोगों के लिये भी स्पष्ट रूप से सोच सकना संभव नहीं है। चूँकि क्वेकर यीशुमसीह की उस शिक्षा को मानते हैं, जिसमें उन्होंने ईश्वर के समक्ष प्रत्येक मानव के वैयक्तिक मूल्य एवं एक दूसरे के प्रति उसके उत्तरदायित्व को बतलाया है, इसलिये वे यह भी स्वीकार करते हैं कि पीड़ित एवं अभावग्रस्त लोगों को तो प्रेम एवं सेवा की विशेष आवश्यकता होती है। विलियम पेन, जॉन वुलमैन, जॉन बेलर्स एवं एलिजाबेथ फ्राई जैसे क्वेकर लोगों ने तो इसे स्पष्ट रूप से जान लिया था कि न्याय, करुणा एवं उदारता की भूमि में ही शान्ति का बीज-वपन संभव है। १६५१ ईस्वी में क्रॉमवेल की सेना में कप्तान का पद दिये जाने पर जॉर्ज फॉक्स ने कहा था कि 'वे उस जीवन एवं शक्ति की पवित्रता में निवास करते हैं, जो समस्त युद्धों के कारणों का ही मूलोच्छेद करती है।" क्वेकर लोग इसे संभव तथा अनिवार्य दोनों ही मानते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय विद्वेषों की वृद्धि, वस्तुवाद की उन्नति एवं वैयक्तिक अधिकारों की उपेक्षा तथा युद्ध के आयुधों की सतत् वृद्धिशील विनाशकारिता और उनके अनेकानेक प्रकार इन सबके कारण क्वेकर लोग विशेष रूप से चिन्तित रहे हैं। अतः क्वेकर समाज के सदस्यों को वैयक्तिक एवं सामूहिक दोनों तरह से, 'पार्टिजन्स ऑव दि पीस मूवमेंट' (शान्ति-हितैषी आन्दोलन) की प्रगति का अवलोकन विशेष अभिरुचि के साथ करना चाहिये था (यद्यपि ऐसा नहीं हुआ) जो पोलैंड के रॉकलॉ नामक स्थान पर, १६४८ ई० में बुद्धिजीवियों की एक सभा से प्रारम्भ हुआ था और पेरिस, स्टॉकहोम तथा वारसॉ नामक स्थानों में १६४६-५० तक चलता रहा।

इस आन्दोलन को पाश्चात्य देशों में सरकारी प्रोत्साहन नहीं दिया गया। किन्तु अगर क्वेकर लोगों को विश्वास होता कि यह आन्दोलन वस्तुतः शान्ति-निर्माण में सहायक होगा, तो वे इसका समर्थन अवश्य करते। लेकिन वे स्पष्ट रूप से इसे जान नहीं सके। यह तो विदित ही था कि इस आन्दोलन को

भावना सोवियत संघ में उत्पन्न हुई थी और वहाँ तथा उसके अनुयायी देशों में इसका प्रबल समर्थन किया गया था। लेकिन यह भी कोई ऐसा कारण नहीं था जिससे रूककर लोग इस आन्दोलन का साथ नहीं देते, अगर वह समर्थन स्वाभाविक एवं दबावरहित होता। लेकिन ऐसी बात थी कहाँ? इस आन्दोलन को अन्य देशों के साथ-साथ पश्चिमी देशों में भी कुछ भ्रम में पड़े लोगों का बहुत बड़ा समर्थन प्राप्त हुआ था। लोग तो सदैव शान्ति के भूखे होते हैं और जहाँ-कहीं भी उन्हें शान्ति का कोई सरल शब्दों में लेखपत्र दीख पड़ता है वे उसे ही अपना लेते हैं। फिर भी 'शान्ति के हितैषियों ने' अपने वक्तव्य में जिस भाषा का प्रयोग किया था, वह ऐक्य-स्थापित करनेवाली न होकर युद्धोत्पन्न करनेवाली ही थी। शान्ति-सभाओं में भाग लेनेवालों के अनेक भाषण भी, जिनमें से कुछ विस्तृत रूप में मुद्रित भी हुए थे, शान्ति या समझदारी की भाषा में नहीं दिये गये थे। उन भाषणों में 'कोरिया युद्ध' एवं आज की भयावह अंतर्राष्ट्रीय स्थिति के लिये समस्त दोष सामान्यतः पश्चिमी शक्तियों के और विशेषतः संयुक्त राज्य, अमेरिका के मत्थे मढ़ा गया था, किन्तु इसी दृष्टि से सोवियत नीति के किसी भी पहलू की कोई भी आलोचना नहीं की गई थी।

अतएव यह आन्दोलन न तो स्वतन्त्र प्रतीत हुआ, न तटस्थ ही, और शान्तिवादी तो यह निश्चय ही नहीं था।

'स्टॉकहोम शान्ति अपील' और 'पंचराष्ट्रीय संधि-पत्र' में अपील करनेवाली भाषा की अपेक्षा धमकी देनेवाली भाषा प्रयुक्त की गई थी। इन भाषणों में 'युनाइटेड नेशन्स एसेम्बली' (संयुक्त राष्ट्र-सभा) में अणुशक्ति के अंतर्राष्ट्रीय नियन्त्रण एवं चीन के जन-शासन को मान्यता प्रदान करने जैसी उलझनदार समस्याओं के सम्बन्ध में विचार-विमर्श करने में जो रूसी दृष्टिकोण था उसे ही बार-बार दुहराया गया था। किन्तु अन्य सभी जटिल प्रश्नों को छोड़ दिया गया था जिनसे यह सन्देह उत्पन्न होता है कि सद्भावना और सद्विश्वास के अभाव में केवल घोषणाओं एवं सन्धियों से ही सच्ची शान्ति की स्थापना भला कभी भी संभव है? ये बातें इतनी स्पष्ट थीं कि इनको जानने के लिये किसीको भी अधिक संशयवादी बनने की आवश्यकता नहीं होती। संभव था कि यह शान्ति-आन्दोलन केवल तबतक जारी रहता, जबतक स्टालिन असाम्यवादी देशों पर कोई भारी आक्रमण करने के लिये तैयार नहीं होते। अथवा इसका अभिप्राय यह रहा हो कि सोवियत जनता का अपने शासकों में विश्वास दृढ़ किया जाय तथा पश्चिमी शक्तियों

के बीच फूट उत्पन्न की जाय। संभव था कि क्वेकर लोगों के प्रति वैयक्तिक एवं सामूहिक रूप से इस आन्दोलन को सहायता के लिये जो अपीलें की जा रही थीं उनका अभिप्राय केवल इसपर सम्मान का आवरण चढ़ाना और क्वेकर लोगों से "काम निकालना" रहा हो, क्योंकि क्वेकर जिन मूलभूत सिद्धांतों में विश्वास करते हैं उन्हींको घृणा के साथ अस्वीकार किया जा रहा था।

किन्तु अधिकांश लोगों की ही भाँति क्वेकर लोग भी "काम में लाये जाने" का विरोध करते हैं। वे आदर्शवादी हो सकते हैं, किन्तु वे अल्पबुद्धि नहीं हैं। शान्तिवाद में विश्वास नहीं करनेवालों के साथ सहयोग करने के प्रति भी उनका विरोध नहीं है। कई वर्षों से वे 'नेशनल पीस कौन्सिल' (राष्ट्रीय शान्ति परिषद्) के प्रबलतम समर्थकों में रहे हैं। (यह परिषद् एक ब्रिटिश संघटन है जिसका उद्देश्य उन सभी लोगों को एक करना है, जो समझौते के द्वारा शान्ति प्राप्त करने की उपादेयता में विश्वास करते हैं, भले ही ये लोग शान्तिवाद में विश्वास करें या नहीं।) परन्तु अच्छी तरह जाँच किये बिना वे किसी आन्दोलन को 'निष्क्रिय स्वीकृति' देने या सहायता करने के लिये तैयार नहीं थे।

इसके सिवा अन्यलोगों की ही भाँति वे इस आन्दोलन को यों ही झूठ भी नहीं मान सकते थे। और अगर ऐसा भी होता तब भी इसका अर्थ यह नहीं था कि इस आन्दोलन के जन्मदाताओं से वास्तविक शान्ति-निर्माण के लिये बातचीत करना असंभव होता। क्वेकर लोगों का तो यह विश्वास है कि सभी समस्याओं पर खुल्लम-खुल्ला विचार करने के लिये इच्छुक रहना सदैव उचित है और ऐसा करना तो विशेषकर उस अवस्था में और भी बुद्धिमत्तापूर्ण है, जब मौलिक अंतर सिद्धान्तों के अंतर्गत ही प्रतीत होता है, जैसा कि इस प्रसंग में था।

उदाहरणार्थ सन् १८५४ ई० में सोसायटी ऑव फ्रेन्ड्स ने तीन क्वेकर लोगों को रूस के जार के पास भेजा था—उनसे वैयक्तिक अपील करने के लिये जिसमें वे अपनी नीति में संशोधन करें तथा रूस और ग्रेट ब्रिटेन का आसन्न युद्ध रुक जाय। इसमें उनलोगों को इतनी अधिक सफलता मिली थी कि क्रिमिया युद्ध नहीं हो पाता, अगर उनलोगों को उतनी ही सफलता ब्रिटिश गृहनीति को सुधारने में प्राप्त हुई होती। इस बात का लिखित प्रमाण मौजूद है। किन्तु इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि क्वेकर लोगों ने अपने देश के शासकों और जनता के प्रति अपनी स्पष्टवादिता अथवा अपील सम्बन्धी कर्त्तव्य को अवहेलना या उपेक्षा की है। वे लोग तो इसका पालन

बहुधा करते आये हैं। और उनकी बातें प्रायः सदैव नम्रतापूर्वक सुनी गई हैं यद्यपि कि उनकी अपील अपने उद्देश्य में सफल नहीं रही है।

मई १९५० ई० में ग्रेट-ब्रिटेन स्थित सोसायटी ऑव फ्रेन्ड्स की कार्यकारिणी ने 'प्राच्य-पाश्चात्य सम्बन्ध समिति' की स्थापना की। (यह सभा 'मीटिंग ऑव सफरिंग्स' के नाम से प्रचलित हुई है और जिसके सदस्य सभी शाखा-सभाओं के प्रतिनिधि एवं 'एल्डर्स' लोग हैं)। इस समिति की स्थापना अमेरिका के क्वेकर लोगों के प्रोत्साहन के साथ हुई और इसका प्रादुर्भाव 'अमेरिकन फ्रेंड्स सर्विस कमिटी' के अंतर्गत एक शाखा के रूप में हुआ। ऐसा करने का अभिप्राय यही था कि पूर्व-पश्चिम के तनाव के कारणों का विशेष अध्ययन करने में बृटिश क्वेकर लोग भी अमेरिका के क्वेकर लोगों का साथ दे सकें तथा उसे दूर करने के लिये जो संभव एवं लाभदायक कार्य प्रतीत हो उसे सम्पन्न कर सकें। इसी प्रकार की एक विशेष समिति की स्थापना अमेरिका के क्वेकर लोगों ने पहले भी की थी, जिसने कुछ दिनों तक कार्य किया और जो समय-समय पर अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर विचार करने के लिये बैठकें करती रही। इन बैठकों के परिणाम-स्वरूप 'दी युनाइटेड स्टेट्स ऐंड सोवियत यूनियन' (संयुक्त राज्य और सोवियत संघ) नामक एक छोटी पुस्तक प्रकाशित हुई थी, जिसने संसार के विभिन्न भागों के लोगों का ध्यान अपनी ओर अधिक रूप से आकर्षित किया। इसी श्रेणी की एक दूसरी पुस्तक, जिसका नाम 'स्टेप्स टू पीस : ए क्वेकर भीउ ऑव यू० एस० फौरेन पौलिसी' (शान्ति की ओर : संयुक्त राज्य को वैदेशिक नीति पर एक क्वेकर का विचार) है, हाल ही में प्रकाशित हुई है। (यह पुस्तक १९५१ में गोलैंक्ज, लन्दन से प्रकाशित हुई है)। इस प्रारंभिक कार्य के पश्चात् एक 'अन्तर्राष्ट्रीय क्वेकर दल' का निर्माण हुआ, जो १९५०-५१ ई० में संयुक्त राष्ट्रसंघ को साधारण सभा 'जेनरल एसेम्बली ऑफ यूनाइटेड नेशन्स' के अधिवेशन के समय न्यूयार्क में उपस्थित था। (इसी प्रकार १९५१-५२ ई० में पेरिस में भी इस सभा के अधिवेशन के समय क्वेकर दल उपस्थित था)। क्वेकर लोगों के इस दल ने अनेक देशों के प्रतिनिधि राजनीतिज्ञों से वैयक्तिक एवं बिधि-निरपेक्ष रूप से सम्पर्क स्थापित किया और उनलोगों के लिये एक ऐसे स्थान की व्यवस्था करने में सहायता की, जहाँ वे शान्ति अनुभव कर सकें एवं जनश्रुति से दूर हो सकें। इस दल ने उनलोगों को और भी अधिक आधारभूत एवं मैत्रीपूर्ण स्तर पर मिलने के लिये प्रोत्साहित किया, जो मतभेद रखते हैं और एक दूसरे के प्रति जिनका अविश्वास है।

इसी प्रकार के वैयक्तिक सम्बन्ध के क्षेत्र में ही सोसायटी ऑव फ्रेन्ड्स ने

सेवा के निमित्त सदैव बड़ा से बड़ा अवसर प्राप्त किया है। क्वेकर लोगों ने सरकारी नेताओं से ऐसा वैयक्तिक सम्पर्क न्यूयार्क, वाशिंगटन, लन्दन एवं अन्य स्थलों में अनेक बार कायम किया था और १९५० ई० के अंत में ब्रिटिश क्वेकर लोगों ने सोवियत संघ के नेताओं से भी ऐसा ही सम्पर्क स्थापित करने की आवश्यकता बड़े जोरों से महसूस की।

अतएव 'मीटिंग फॉर सफरिंग्स' की अनुमति से "प्राच्य-पाश्चात्य सम्बन्ध समिति" के कुछ सदस्य १९५१ के प्रारम्भ में ही लन्दन-स्थित रूसी राजदूतावास में गये और वहाँ उन्होंने सोवियत संघ में एक प्रतिनिधिमण्डल भेजने के लिये निमंत्रण पाने की इच्छा प्रकट की। उनलोगों ने शान्ति-हितैषी आन्दोलन के प्रति एवं 'विश्वशान्ति परिषद्' (आन्दोलन की कार्यकारिणी) द्वारा प्रेषित लेख-पत्रों से सम्बन्धित अपनी द्विविधाओं पर प्रकाश डाला और इस बात पर जोर दिया कि सोसायटी ऑव फ्रेन्ड्स इस आन्दोलन की सहायता करने में असमर्थ रही है। उनलोगों ने मोटे तौर से क्वेकर लोगों के धार्मिक सिद्धान्तों का वर्णन कर यह बतलाया कि किस प्रकार इन्हीं सिद्धान्तों के फलस्वरूप शान्ति के पक्ष में एवं सभी प्रकार की हिंसाओं के विरुद्ध सोसायटी ऑव फ्रेन्ड्स की ऐतिहासिक घोषणाएँ निकली हैं। इसके साथ उनलोगों ने दूतावास-स्थित परामर्शदाता के द्वारा सोवियत सरकार को 'शान्ति-प्रमाण-पत्र' से संबंधित क्वेकर साहित्य और विशेषतः "सद्भावना का सन्देश भेंट किया"। १९५० ई० में सोसायटी ने इस सन्देश को अँगरेजी, फ्रेन्च, जर्मन एवं रूसी भाषाओं में पर्याप्त मात्रा में प्रकाशित करवा कर अपने वार्षिक अधिवेशन (वार्षिक सामान्य अधिवेशन) के अवसर पर वितरित करवाया था। यह सन्देश इस पुस्तक के आरम्भ में मुद्रित भी हुआ है।

उनलोगों ने बतलाया कि क्वेकर लोगों के रूस-भ्रमण का प्रधान उद्देश्य इसी सद्भावना को उस देश के सभी लोगों तक पहुँचाना है जिनसे वे मिल सकेंगे। वे अपने भ्रमण एवं वैयक्तिक सम्बन्धों के द्वारा सोवियत जनता एवं ब्रिटेन तथा पश्चिमीय राष्ट्रों की जनता की जीवन-विधि के पारस्परिक ज्ञान के आदान-प्रदान में वृद्धि करना चाहते है। साथ ही उनलोगों ने यह भी कहा कि वे लोग पारस्परिक ज्ञान की रुकावटों के सम्बन्ध में, जिनके लिये दोनों पक्षों के लोग न्यूनाधिक मात्रा में उत्तरदायी हैं तथा उन विधियों के सम्बन्ध में, जिन्हें वे शान्ति प्राप्त करने के लिये आवश्यक समझते हैं, सोवियत संघ के लोगों के साथ और विशेषतः वहाँ के राजनीतिक, धार्मिक एवं शैक्षणिक नेताओं तथा प्रेस-प्रतिनिधियों के साथ विचार-विमर्श करना चाहते हैं।

लन्दन-स्थित दूतावास में परामर्शदाता के साथ प्रथम मिलन में ही यह सब स्पष्ट कर दिया गया और उन्होंने भी सोसायटी ऑव फ्रेन्ड्स के अनुरोध को अपनी सरकार के पास भेजने के लिये अत्यन्त नम्रतापूर्वक सहमति दिखलाई।

सोवियत दूतावास से यह सम्पर्क स्थापित करने के कुछ ही दिनों बाद 'विश्वशान्ति परिषद्' की ओर से सोसायटी ऑव फ्रेन्ड्स को एक निमंत्रण पत्र मिला। उसमें यह सुझाव दिया गया था कि दोनों दलों के कुछ लोग अप्रकट एवं विधि-निरपेक्ष तौर से यह पता लगाने के लिये मिलें कि इन दलों में सामान्य कार्य के लिये कोई आधार कायम हो सकता है कि नहीं। 'प्राच्य-पाश्चात्य सम्बन्ध समिति' की सिफारिश से यह निमंत्रण स्वीकार कर लिया गया और सोसायटी ने अपनी ओर से यह अनुरोध किया कि यह सम्मेलन इंगलैंड में ही हो और सोसायटी ही मेजबान बने।

इसके कुछ ही पहले ब्रिटिश सरकार ने 'विश्व शान्ति परिषद्' के प्रतिनिधियों को 'शेफील्ड शान्ति सम्मेलन' में उपस्थित होने के लिये प्रवेशपत्र देने से इन्कार कर दिया था। परन्तु क्वेकर लोगों का विश्वास था, और वह उचित विश्वास भी था, कि अप्रकट रूप से सम्मेलन के लिये प्रवेशादेश देने में सरकार को कोई आपत्ति नहीं होगी। वास्तव में यह सम्मेलन ऑक्सफोर्ड के समीप एक ग्राम-अतिथिशाला में हुआ और सेन्ट गाइल्स, ऑक्सफोर्ड स्थित 'सोसायटी ऑव फ्रेन्ड्स मीटिंग हाउस' (सम्मिलन गृह) में इस दल को, जिसमें दो रूसी और एक पोलैंड के निवासी थे, चाय के लिये आमंत्रित किया गया। इस दल के लोगों ने कुछ कॉलेजों को भी देखा। यह सम्मेलन केवल एक 'वीकएन्ड' (शनिवार से रविवार तक का छुट्टी वाला समय) तक हुआ। हमारे विदेशी अतिथि इस बात पर विनोद कर रहे थे कि ग्रेट ब्रिटेन में हवाई अड्डे पर पहुँचने के पश्चात् उन्हें परचे दिये गये जिनमें लिखा हुआ था, "ब्रिटेन-आगमन के लिये स्वागत! ब्रिटेन का त्योहार (फेस्टिवल ऑव ब्रिटेन) अवश्य देखिये।" किन्तु उनके प्रवेश पत्र की अवधि इस त्योहार के आरम्भ होने के तीन दिन पहले ही समाप्त हो जाने वाली थी! क्वेकर लोगों ने इस पर सरकार को यह सुझाव दिया कि इन प्रवेश पत्रों की अवधि उस समय तक के लिये जिसमें कि ये लोग त्योहार देख सकें, बढ़ा देना सज्जनता पूर्ण होगा और सरकार ने यह बात मान ली।

सप्ताह के इन अन्तिम दिनों में अनेक समस्याओं पर विचार-विमर्श किया गया। 'विश्वशान्ति परिषद्' के प्रतिनिधि दोनों ओर से मान्य बातों ही पर समस्त ध्यान केन्द्रित करना चाहते थे, किन्तु क्वेकर लोगों ने उपलब्ध अल्प

समय में मतभेद की बातों पर ही विचार करना अधिक लाभप्रद समझा, क्योंकि इससे इस बात का पता लग सकता था कि विरोधी दृष्टिकोणों में पारस्परिक अन्तर्ज्ञान एवं ऐक्य-स्थापना की कोई गुंजाइश है कि नहीं। ये वार्त्ताएँ अत्यन्त सरल एवं स्पष्ट तरीके से मैत्री के वातावरण में की गईं और वे सोवियत संघ में होनेवाली आगामी वार्त्ताओं के लिये रोचक भूमिकाएँ सिद्ध हुईं। इस बैठक के बीच सोवियत यूक्रेन के अध्यक्ष और सुविख्यात नाटककार तथा प्रधान सोवियत प्रतिनिधि श्री कोरनीचाउक ने 'प्राच्य-पाश्चात्य सम्बन्ध समिति' के सदस्यों को बतलाया कि उन्हें सोवियत शान्ति समिति की ओर से सोसायटी ऑव फ्रेन्ड्स के आठ सदस्यों को ग्रीष्म ऋतु में किसी भी समय सोवियत संघ में आने के लिये निमंत्रण देने का अधिकार दिया गया है।

यह निमंत्रण बाद में लिखित रूप में भी मिला। 'मीटिंग ऑव सफरिंग्स' ने इसे विधिपूर्वक स्वीकृति प्रदान कर वहाँ भेजे जानेवाले सदस्यों को मनोनीत करने के लिये एक समिति संगठित की। जो लोग भेजने के लिये चुने गये, उनके नाम निम्नलिखित है —

(१) बी० लेसली मेटकाफ, 'प्राच्य–पाश्चात्य सम्बन्ध समिति' एवं सोसायटी ऑव फ्रेन्ड्स की 'औद्योगिक एवं सामाजिक सुव्यवस्था परिषद्' के सभापति तथा राष्ट्रीय कोयला बोर्ड के मुख्य इंजीनियर।

(२) जेराल्ड बेली, मंत्री, प्राच्य-पाश्चात्य सम्बन्ध समिति; १६ वर्षों तक राष्ट्रीय शान्ति परिषद् के संचालक, सोसायटी ऑव फ्रेन्ड्स की विश्व समिति के सभासद्; लेखक एवं राजनीतिज्ञ।

(३) मार्गरेट ए बैकहाउस, अभी हाल तक ग्रेट-ब्रिटेन की सोसायटी ऑव फ्रेन्ड्स की सेवा परिषद की सभानेत्री; सोसायटी ऑफ फ्रेन्ड्स की विश्वसमिति की सदस्या ; वेस्ट हिल ट्रेनिंग कॉलेज की भूतपूर्व संरक्षिका एवं व्यावहारिक मनोविज्ञान की अध्यापिका।

(४) पॉल एस० कैडबरी, सोसायटी ऑव फ्रेन्ड्स एम्बुलेन्स यूनिट के सभापति, पहले बर्मिंघम नगर परिषद् के उदार सदस्य और उसकी भवन-निर्माण-समिति के सभापति, कैडबरी ब्रॉदर्स लि०, चाकलेट मैनुफैक्चरर्स (निर्माता), बोर्नविले, बर्मिंघम के प्रबन्धकारी संचालक।

(५) मिल्ड्रेड क्रीक, चिकित्सिका, मानसिक रोग-विभाग, शिशु औषधालय, ग्रेट ऑरमॉण्ड स्ट्रीट, लन्दन।

(६) फ्रैंक एडमीज, पहले सोसायटी ऑव फ्रेन्ड्स एम्बुलेन्स यूनिट के सभासद् और अब 'मैनचेस्टर गार्जियन' अखबार के सम्वाददाता।

(७) कैथलीन लौन्सडेल, ग्रेट-ब्रिटेन में सोसायटी ऑव फ्रेन्ड्स के दो स्कूलों और सोसायटी ऑव फ्रेन्ड्स की कॉन्सक्रिपशन समिति की सदस्या; आइल्सबरी महिला कारावास एवं बोरस्टाल बालिका संस्था के निरीक्षण बोर्ड की सदस्या; प्राध्यापिका, स्फटिक विज्ञान विभाग, यूनिवर्सिटी कालेज, लन्दन तथा रॉयल सोसायटी की सदस्या।

इस प्रकार यह प्रतिनिधि मण्डल बहुत बड़े व्यावसायिक हितों एवं सोसायटी ऑव फ्रेन्ड्स की सेवाओं के विभिन्न पहलुओं का प्रतिनिधित्व करता था।

इस बात की व्यवस्था की गई कि मास्को आने-जाने का व्यय सोसायटी ऑव फ्रेन्ड्स देगी लेकिन, सोवियत संघ की सीमा के अंतर्गत रूसी आतिथ्य को सहर्ष स्वीकार कर लिया गया। मण्डल के सदस्यों की सुविधा के लिये भ्रमण का समय जुलाई, १६५१ के अंतिम दो सप्ताहों तक ही सीमित रक्खा गया। सोवियत प्रवेश पत्र तथा चेकोस्लोवाकिया का ट्रान्जिट विजा (गमन आदेश पत्र) भी प्रस्थान करने के ठीक एक दिन पूर्व ही मिल सके। इन कारणों से अधिकांश प्रारम्भिक व्यवस्थाएँ विश्वास पर ही की गईं।

इंगलैंड से प्रस्थान करने के पूर्व मण्डल के कुछ सदस्यों ने अलग अलग अवसरों पर तत्कालीन वैदेशिक मंत्री श्री हर्बर्ट मौरिसन एवं राज्यसचिव श्री केनेथ यंगर के साथ बातचीत की थी और उन्हें अपने भ्रमण के सामान्य उद्देश्यों से भली-भाँति अवगत भी कराया था। यद्यपि किसी भी दृष्टि से यह भ्रमण सरकार द्वारा प्रोत्साहित नहीं था, फिर भी इसे हतोत्साहित भी नहीं किया गया और जो लोग गये उन्हें अपने साथ पर्याप्त मात्रा में क्वेकर साहित्य ले जाने के लिये सरकार की ओर से सुझाव भी दिया गया। इस सुझाव से कुछ मनोविनोद भी हुआ, क्योंकि क्वेकर-साहित्य का उद्देश्य एक मात्र निर्यात ही नहीं है।

इस प्रस्तावित भ्रमण की एक विज्ञप्ति जून १६५१ के अन्त में ब्रिटेन के अखबारों में प्रकाशित हुई और उसका जोरों से प्रचार हुआ।

परवर्ती अध्यायों में दल के सभी सदस्य स्वयं अपनी बातें कहेंगे। इस पुस्तक का अधिकांश भाग भ्रमण के समय, अथवा तदुपरान्त शीघ्र ही लिखित डायरियों या पत्रों से तथा भ्रमण के विभिन्न पहलुओं से सम्बन्धित सूचनाओं से उद्धृत किया गया है।

द्वितीय अध्याय

मास्को से पश्चिम

आरंभ की यात्रा जो शनिवार १४ जुलाई १९५४ को प्रारंभ हुई वह प्रेस फोटो-ग्राफरों के नम्र-प्रदर्शन (इनलोगों से हम धीरे-धीरे अभ्यस्त से हो गये) से क्वेकर लोगों के एक दल के सद्भावना-प्रकाश से (यह दल हवाई अड्डे पर हम-लोगों को विदा देने प्रातःकाल सात बजे के ठीक बाद ही पहुँचा था) और हालैंड में क्वेकर दल के एक बड़े स्वागत से जो एमस्टरडेम में हुआ (और जहाँ हम प्रायः एक घंटा ठहरे)—भरी पड़ी रही। हमलोग एक डच विमान में ही यात्रा कर रहे थे (क्योंकि कोई भी ब्रिटिश वायुयान चेकोस्लोवाकिया तक नहीं जाता) और वह रात प्रॉग में ही बिताने का निश्चय भी कर चुके थे।

हमलोगों का विमान यात्रियों की अपेक्षा माल ही अधिक ढो रहा था। इस कारण हमलोग मुलहाउस की ओर बढ़े, जो फ्रांस और स्विटजरलैंड की सीमा पर अवस्थित है तथा बॉल का हवाई स्टेशन है। वहाँ पर पेनसिलिन का एक कार्गो विमान पर लिया गया। एक सद्भावना मण्डल के लिये हमलोगों ने इसे मंगलकारी बोझ ही समझा, यद्यपि फ्रैन्क एडमीड की बरसाती कार्गो के नीचे दब गई थी (बिना पखवारा समाप्त हुए उसकी प्राप्ति नहीं हो सकी)। मुलहाउस में हमलोगों ने शनिवार के दोपहर के बाद का समय बिताया, जो जल्दी न बीतनेवाला और साथ ही साधारण दिनों की अपेक्षा गर्म प्रतीत हुआ। पहले तो हमलोग समझ ही नहीं पा रहे थे कि हमलोग किस देश में हैं। कोई भी—यहाँ तक कि डच विमान-चालक भी—यह नहीं बता सका कि हमलोग कब आगे बढ़ेंगे। उस समय तो ऐसा लग रहा था मानों हमलोग यूरोप में कहीं खो गये हैं और इसीके परिणाम स्वरूप हमलोग प्रॉग हवाई स्टेशन पर ५ घंटे देर करके पहुँचे।

वहाँ पर चेकोस्लोवाक शान्ति समिति के दो सदस्यों से हमलोगों की भेंट

हुई। भेंट करनेवालों में एक थे चेकोस्लोवाकिया मंत्रिमण्डल के चर्च-विभाग के पदाधिकारी डॉ० सुकोमेल जोयनेक और दूसरे व्यक्ति थे श्री वीसोहलीड वेंकलॉव, जो ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से हो आये थे। उन्होंने हमें अपने वैयक्तिक अनुभवों में से कुछ बातें बतलाईं जो उनपर एक चेक नागरिक के रूप में एक जर्मन कन्सेन्ट्रेशन कैम्प (जर्मन बन्दी शिविर) में ६ साल में बीती थीं। 'विश्व साम्यवाद' की आवश्यकता में इनके अटल विश्वास स्थापित होने के दो कारण थे—पहला यह अनुभव और दूसरा १६३८ ई० में उनका यह प्रत्यक्ष ज्ञान कि सैनिक सन्धियों से वास्तविक सुरक्षा प्राप्त होने वाली नहीं है।

हमलोग देर से पहुँचे। इस कारण हमलोगों के स्वागत संबंधी उनका आयोजन अव्यवस्थित हो गया। हमलोगों ने (वृहत् होटल अल्कोन) 'ग्रेट कॉस्मोपोलिटन होटेल अल्कोन' में, जो विलासमय होने के साथ-साथ व्यक्तित्व शून्य भी प्रतीत होता था, भोजन किया। तदुपरान्त वे लोग हमलोगों को ११ बजे रात तक घूम-घूमकर अपने सुन्दर नगर का अवलोकन कराते रहे। हमलोगों ने वेनसिलस स्ट्रीट में 'राजा वेनसिलस' की मूर्त्ति को विराजमान देखा और सन्त विटस के गिरजाघर के बाहर 'स्कॅयर' में सन्तजार्ज को सर्पाकृतिवाले देव के वध करने की भंगिमा में देखा। हमलोगों का सर्वसाधारण लोगों से एक कैफेटेरिया में मिश्रण हुआ और हमलोगों ने पहाड़ी पर बने अद्भुत महल की सराहना की। शनिवार की एक रात के लिये प्रॉग हमलोगों को आश्चर्यजनक रूप से शान्त एवं एकाकी प्रतीत हुआ। हमलोगों ने इसे कुछ खिन्न एवं अप्रसन्न महसूस किया, किन्तु संभवतः हमलोगों का मन ही इसके लिये दोषी रहा हो। भोजन के वक्त एक युवक साम्यवादी से हमलोगों का कुछ व्यर्थ तर्क-वितर्क हो गया था। इसलिये हमलोगों ने यह निश्चय किया कि भावी वादविवादों में हमलोग ऐसा रुख कभी नहीं ग्रहण करेंगे।

दूसरे दिन हमलोगों को सबेरे ही उठना पड़ा और सात बजे हमलोग प्रॉग के हवाई अड्डे से एक रूसी विमान में लोव और कीव होते हुए मास्को के लिये रवाना हो गये (सोवियत संघ में रूसी विमान के सिवा अन्य देशों के विमान नहीं प्रवेश कर सकते)। हमलोग जिसमें यात्रा कर रहे थे, वह सुखावह और कुशल हाथों द्वारा चालित प्रतीत होता था। परन्तु उसमें न सुरक्षा के लिये चर्मपट थे, न कोई यात्री सेवक अथवा अतिथि सेविका। उसमें पश्चिमी देशों की अपेक्षा कम ही सावधानी का ध्यान रक्खा गया था। विमान, लोव में, जो सोवियत संघ में प्रवेश करनेवाला स्टेशन है, श्रमिकों, जोती हुई भूमि और लोगों के दलों के पास तक नीचे आ

गया था। यह हवाई स्टेशन छोटा है, इसकी कुछ इमारतें नष्ट भी हो गई हैं, तो भी यहाँ के 'एयरस्ट्रिप' और हवाई जहाज उतरने की जमीन में (कीव की ही भाँति) आधुनिकीकरण के अनेक प्रमाण हैं। फिर भी सफाई की व्यवस्था आधुनिक नहीं थी।

सर्वप्रथम चुंगी एवं मुद्रा-सम्बन्धी जाँच हुई। सोवियत अधिकारियों के इस प्रथम सम्पर्क के संबंध में हमलोगों में से कितनों को कुछ घबराहट पहले से थी। हमलोगों को यह पहले ही चेता दिया गया था कि हमलोग अपने साथ अत्यधिक कागज-पत्र नहीं ले जायँ, क्योंकि उनकी काफी जाँच-पड़ताल की जायगी। इसके सिवा यह भी बतलाया गया था कि हमलोग अपने साथ आधुनिक अँगरेजी उपन्यास नहीं ले जायँ, क्योंकि रूसी लोग उन्हें नहीं पसन्द करते। हमलोगों को बतलाया गया था कि डिकेन्स के लिये पूरी स्वतन्त्रता है, शेक्सपियर और एच० जी० वेल्स के लिये भी यही बात है। वस्तुतः चुंगीवाली जाँच अत्यन्त शीघ्रतापूर्ण हुई। कितने थैलों को तो खोला भी नहीं गया। कैथलीन लौन्सडेल को अपने एक थैले को खोलने के लिये कहा गया, जिसमें कागज आदि थे। थैला खोलने पर हैन्स ऐन्डरसन की परियों की कहानी दीख पड़ी, जिसे उन्होंने सोने के वक्त पढ़ने के लिये ले लिया था। चुंगी अफसर ने उसे देखते ही अंगरेजी में 'भेरी गुड, भेरी गुड इनडीड' कह कर हर्षसूचक सहमति प्रकट की और अन्य सबको बिना जाँच किये ही छोड़ दिया। हमलोगों को यह जानकर प्रसन्नता हुई कि एक सोवियत अफसर भी अपने विवेक से इस प्रकार काम ले सकता है और वास्तव में उसने लिया भी। लेसली मेटकाफ के कैमरे की जाँच नहीं हुई और उन्हें सभी मनोवांछित चित्र लेने की स्वीकृति इस शर्त्त पर मिल गई कि सोवियत संघ से प्रस्थान करने के पूर्व ही उन सभी चित्रों के ब्लॉक भी तैयार हो जाने चाहिये।

जिस अफसर ने हमलोगों की मुद्रा की जाँच की, वह कुछ दूसरे प्रकार का था। वह अँगरेजी नहीं जानता था, किन्तु उसके साथ कोई दुभाषिया नहीं था। (इससे तो हमलोगों को आश्चर्य भी हुआ, क्योंकि हमलोगों को यह आशा थी कि हमलोगों पर दृष्टि रखने के लिये दुभाषिये प्रत्येक स्थान पर मौजूद रहेंगे)। हमलोगों में से दो व्यक्ति, लेसली मेटकाफ और फ्रैन्क एडमीड रूसी भाषा का कुछ ज्ञान रखते थे। (२५ वर्ष पूर्व लेसली ने रूस के सर्व-प्रथम वृहत् विद्युत् केन्द्र के निर्माण में १ वर्ष तक कार्य किया था) परन्तु शुरू-शुरू में उन लोगों को रूसी भाषा में बोलना कष्टसाध्य जान पड़ा। इस

अफसर को हमलोगों की समस्त मुद्रा जाँचने में बहुत समय लगा। वह अत्यन्त सतर्कतापूर्वक धीरे-धीरे और परिश्रम के साथ प्रत्येक नोट और प्रत्येक यात्री के चेक का नम्बर लिखता था। इससे यह बात हमलोगों के ध्यान में आई कि सोवियत संघ में अनेक अधेड़ व्यक्तियों ने शिक्षा बहुत सयाने होने पर ही पाई होगी, तब जब कि शिक्षा प्राप्त करना इतना सुगम नहीं जान पड़ता। इस अफसर ने जिन फार्मों को भरा, उनकी आवश्यकता, हमलोगों के जानते, कभी नहीं हुई। हमलोगों ने तो उन्हें फिर देखा भी नहीं। इस जाँच-पड़ताल के बीच विमान रुका रहा। हमलोगों ने शीघ्र भोजन किया। भोज्य-सामग्री में अंडे और उत्तम कोटि के 'चॉकलेट' थे। हममें से प्रत्येक ने तीन-तीन अंडे खाये और चॉकलेट का पान किया। परन्तु भोजन का समस्त व्यय मास्कोस्थित ब्रिटिश राजदूतावास को ही वहन करना पड़ा क्योंकि अभी तक हमलोगों के पास रूबल नहीं थे। इसके बाद हमलोग कीव और मास्को की ओर बढ़ते गये।

वह दिन बहुत बड़ा और क्लान्तिजनक था, किन्तु हमलोग निम्नस्थ ग्रामों को देखने में दिलचस्पी ले रहे थे, जो पश्चिमी यूरोप से नितान्त भिन्न थे। सामूहिक फार्म बहुत आसानी से पहचाने जाते थे। वृहत् क्षेत्रफल—५०० एकड़ और शायद इससे भी अधिक—बीच में एक ग्राम और उसके चारों ओर वैयक्तिक भूमि के पतले टुकड़े! हमलोग अपने साथी यात्रियों में भी दिलचस्पी ले रहे थे। एक तरुण पिता, जो रूसी सेना के कप्तान की वर्दी पहने हुए था, अपने चार वर्षीय पुत्र की तकलीफ के कारण अत्यन्त परेशान था तथा बच्चे की माँ और अधिक परेशान थी, किन्तु कुछ भी करने से लाचार थी। आखिरकार पॉल कैडबरी ने, जो स्वयं एक अनुभवी पितामह हैं, अपनी बरसाती को तकिये के समान बनाकर दे दिया और तब वह शिशु फर्श पर ही निद्रा में निमग्न हो गया, जिससे बच्चे के पिता को बड़ी शान्ति मिली और वह बड़ा प्रसन्न हुआ।

१५ जुलाई, रविवार को हमलोग समय पर मास्को (मास्को के समय के अनुसार ५-४५ संध्याकाल और अंगरेजी समय के अनुसार ३-४५ संध्याकाल) पहुँचे। सूर्य के प्रखर प्रकाश में विमान से उतरते समय सोवियत शान्ति समिति की ओर से हमारे कुछ मेजबानों और तीन दुभाषियों ने (जिनमें दो पुरुष और एक महिला थी) हमलोगों का स्वागत किया। इन दुभाषियों से आगे चलकर हमलोगों की बड़ी घनिष्ठता हो गई। प्रायः विधिवत् स्वागत करने में महिलाओं के लिये पुष्पगुच्छ भेंट किया जाता है।

हमलोगों ने जिन गुच्छों को पाया, उनमें फ्लॉक्स, स्वीट विलियम और कुटीर गुलाब आदि सुगन्धिमय पुष्प थे। कुछ दूर पर चर्च के बड़े पादरियों का एक प्रतिनिधिमण्डल आनेवाला था, जिसे देखने के लिये हमलोग उत्सुक थे और जो हमलोगों के प्रतिनिधिमण्डल से और अपूर्व होता। बाद में हमलोगों को पता चला कि वे लोग हंगरी से 'इस्टर्न ऑर्थोडॉक्स चर्च' (प्राच्य सनातन गिरिजाघर) के विशेष धर्मोत्सव में भाग लेने के लिये पधारे थे और जिसे आगे चलकर जैगोर्स्क में हमलोगों को भी देखना था।

हवाई स्टेशन से मास्को तक सड़क लम्बी सीधी, गर्म एवं जनशून्य मालूम हुई। यह सड़क प्रशस्त थी, इसकी सतह अच्छी थी, और इसके दोनों ओर वृक्षों की पंक्तियाँ थीं। इसकी अगल-बगल जो भी विज्ञप्तियाँ थीं, वे सभी स्टैन्डर्ड फ्रेम में कुछ-कुछ दूर पर लगी हुई थीं। देश की भूमि चौरस थी, किन्तु नीची नहीं। सूर्य के प्रकाश में खेत चमकते से जान पड़ते थे। जंगलों के टुकड़े तो बराबर मिलते थे और लकड़ी के छोटे-छोटे घर भी यत्र-तत्र दीख पड़ते थे। जब हमलोग नगर के और समीप पहुँचे, तब हमलोग 'न्यू यूनिवर्सिटी' (नवीन विश्वविद्यालय) के विशाल लोहे इत्यादि से बने ढाँचे से कुछ दूरी के फासले पर गुजरे, जो मास्को के समीप ही में था और जिसकी गणना वहाँ के सर्वाधिक प्रभावशाली नवीन भवनों में होनेवाली थी। इसका निर्माण-कार्य १९४९ ई० में प्रारम्भ हुआ था और अब करीब-करीब पूर्ण हो गया था। हमलोगों को बतलाया गया कि इस भवन के अन्तर्गत १६० हेक्टर (३९० एकड़) भूमि आ जायगी। हमलोगों से यह भी कहा गया कि उनलोगों का लक्ष्य तो एक ऐसे विश्व-विद्यालय का निर्माण करना है, जो पूर्णतया स्वावलम्बी हो, जिसमें ६००० छात्रों के लिये निवास की ऐसी उचित व्यवस्था हो कि प्रत्येक छात्र को ८ वर्गगज के बराबर क्षेत्रफलवाली एक सुसज्जित कोठरी मिल सके और विश्व-विद्यालय के अध्यापकों और उनके परिवारों के लिये भी सुसज्जित फ्लैट की व्यवस्था हो सके। हमलोगों को यह भी बताया गया कि विश्व-विद्यालय के सामान्य भवनों के सिवा एक नाट्यशाला, एक वेधशाला और २५०० लोगों के लिये एक क्रीड़ास्थल भी बनाया जायगा।

नगर की सीमा पर पहुँचते ही हमलोगों ने बसों और ट्रामों का स्वाभाविक शोरगुल सुना और हमें पुराने घर तथा नवीन पंक्तिबद्ध कोठरियों से बने ब्लॉक दीख पड़े। गत शताब्दी के प्राचीन, भग्न एवं जनाकीर्ण गृहों तथा लौह-कंक्रीट से प्रस्तुत नवीन महलों का वैषम्य आश्चर्यजनक था। और यही वैषम्य प्राचीन, भद्दी, संकीर्ण गलियों और मास्को के केन्द्र में स्थित नवीन प्रशस्त मार्गों के

बीच भी देखने में आया। नेशनल होटल, जहाँ हमलोग और अन्य अनेक प्रतिनिधिमण्डल ठहराये गये थे, रेड स्कायर के समीप रेभोल्यूशन स्कायर में है। हममें से प्रत्येक के लिये बैठने, सोने, और नहाने के लिये अलग-अलग कोठरियों की व्यवस्था की गई थी, जो अधिकांशतः प्राचीन ढंग से और प्रचुरता से सजाई हुई थीं। हमलोग अपनी कई कोठरियों से सुदूर स्थित सेन्ट बेसिल के असाधारण गिरजाघर को पूर्णरूप से देख सकते थे। सान्ध्य प्रकाश में उसकी यह झलक हर्षोत्फुल्लकारी होती थी। यह गिरजाघर अनेक मीनारों से परिपूर्ण प्रबल लाल तारों से युक्त क्रेमलिन और 'इतिहास संग्रहालय' के बीच निर्मित था। इस संग्रहालय के दूसरी ओर एक 'डिपार्टमेन्ट स्टोर' था।

होटल में भोजन के उपरान्त लेसली मेटकाफ के कमरे में स्वागत-समिति के सदस्यों की उपस्थिति में एक सभा हुई। वे लोग हमलोगों का भावी कार्यक्रम निर्धारित करने के पूर्व यह जान लेना चाहते थे कि हमलोगों के लिये कैसा कार्यक्रम निर्धारित हो। हमलोग किन-किन व्यक्तियों से भेंट करना चाहते हैं, किन-किन स्थानों मे जाना चाहते हैं और कौन-कौन से कार्य करना चाहते हैं। प्रायः लोगों की यह धारणा है कि सोवियत संघ में जानेवाले सभी प्रतिनिधिमण्डलों को केवल पूर्व—आयोजित यात्रा ही करनी पड़ती है। एडवर्ड क्रैन्कशॉ ने इस प्रकार के प्रतिनिधिमण्डलों के मूल्यों तथा उनकी तटस्थ पर्यवेक्षण की शक्ति में पूर्ण अविश्वास प्रकट किया है। लोकमत ने भी साधारणतः उन्हीं के कथनों की प्रतिध्वनि करने की प्रवृत्ति दिखलाई है। क्रैन्कशॉ का कहना है—

"अगर किसी भी व्यक्ति को इस प्रकार किसी निर्दिष्ट यात्रा के लिये आमंत्रित किया जाय और प्रत्यक्ष रूप से यह आमंत्रण निर्दोष भी हो, तो भी उसे सर्वप्रथम अपने आप से यह पूछना चाहिये कि आखिर केवल उसे ही रूस में आने की स्वीकृति क्यों दी जाती है और उसके पड़ोसी को क्यों नहीं? तदुपरान्त, निमंत्रण स्वीकार करने के पहले उसे रूसी रीतियों से परिचित होकर अपने आप से यह प्रश्न करना चाहिये कि क्या सोवियत राज्य के समस्त शासन-यंत्र के प्रति जो इतनी तड़क-भड़क दिखलाने को चेष्टा करेगा वह संतुलित दृष्टिकोण रख सकेगा? क्योंकि उसको बुलाने का वास्तविक उद्देश्य यही है— जैसा कि उसके पूर्व अनेक सज्जन और बुद्धिमान व्यक्तियों को बुलाकर छला जा चुका है।"

हमलोगों का भ्रमण निश्चयतः ऐसा नहीं था। इंगलैंड से प्रस्थान करने के पूर्व ही हमलोगों ने 'सोवियत शान्ति समिति' के सभापति श्री तिखोनोव

से पत्र द्वारा दो अनुरोध किये थे। पहला यह कि हमलोगों को केवल हल्के पेय ही दिये जायँ और दूसरा, कि हमलोगों को पर्याप्त अवकाश दिया जाय, क्योंकि हमलोग दिन के हरएक घंटे में अपने को केवल व्यस्त ही रखना नहीं चाहते थे। इन अनुरोधों को विश्वस्त भाव से स्वीकार कर लिया गया और दुभाषिये भी, जिन्हें हमलोगों के प्रतिनिधिमण्डल के साथ रक्खा गया था, हमलोगों के भ्रमण की अवधि में सुरापान से निवृत्त रहे। विचार-विमर्श करने के लिये हमलोगों को शान्तिपूर्ण समय प्राप्त था। हमलोग प्रत्येक दिन एक साथ उपासना करने के लिये आधा घंटा समय निकालने की चेष्टा करते थे।

निश्चयतः हमलोगों के लिये कोई कार्यक्रम पहले से ही तैयार नहीं किया गया था और प्रायः हमलोगों की प्रत्येक इच्छा स्वीकार कर ली गई। कुल स्वीकार कर ली गई' ऐसा नहीं ही कहा जा सकता; हमलोगों ने स्तालिन से भेंट करने की इच्छा प्रकट की, परन्तु यह संभव नहीं हो सका। इसके बदले में हमलोगों ने ग्रोमिको, विशिंस्की या मलिक का नाम लिया और अन्ततोगत्वा मलिक से ३ घंटे तक हमलोगों की बातचीत हुई, जिसका वर्णन किसी दूसरे अध्याय में हुआ है।

सोवियत संघ में आजकल धर्म का क्या स्थान है—यह जानने के लिये हमलोग उत्कंठित थे। अतः हमलोगों ने बैपतिस्टों एवं 'इस्टर्न ऑर्थोडॉक्स चर्च' (पूर्वीय सनातन गिरजाघर) के नेताओं से बात करने के लिये और अगर संभव हो तो उपासना में सम्मिलित होने के लिये भी, अनुरोध किया।

हमलोग केवल राजनीतिक एवं धार्मिक नेताओं के संग ही नहीं, बल्कि सोवियत प्रेस-प्रतिनिधियों और अपने मेजबान सोवियत शान्ति समिति के संग भी उन तरीकों पर विचार-विमर्श करना चाहते थे, जिन्हें शान्ति प्राप्त करने के लिये क्वेकर लोग अनिवार्य मानते हैं।

हमलोग शिक्षण-शास्त्रियों से मिलकर सोवियत बालकों की शिक्षण-पद्धति के विषय में कुछ ज्ञान प्राप्त करना चाहते थे। दुर्भाग्यवश जुलाई का अन्तिम भाग सोवियत विद्यालयों को कार्यरत देखने के लिये अनुपयुक्त समय है, क्योंकि पश्चिमी देशों की भाँति ही यहाँ के बच्चे भी उन दिनों छुट्टियाँ मनाते रहते हैं। परन्तु 'रशियन फेडरल रिपब्लिक' (रूसी संघात्मक गणतंत्र) के जन-शिक्षा मंत्री श्री कैरोव से हमलोगों की बातचीत हुई।

विचार करने पर तो अब हमलोग अपनी धृष्टता पर प्रायः आश्चर्यचकित

हो उठते हैं। यह तो ऐसा लगता था, मानो किसी छोटे धार्मिक सम्प्रदाय का प्रतिनिधित्व करनेवाले रूसी लोगों का एक दल इंगलैंड में आकर ब्रिटेन के प्रधान मंत्री, कैण्टरबरी के सबसे बड़े पादरी (आर्कबिशप), टाइम्स के सम्पादक, ब्रिटेन के शिक्षा-मंत्री एवं अपेक्षाकृत अनेक निम्न पदासीन व्यक्तियों से मिलने के लिये इच्छा प्रकट करे। तो भी हमलोगों की मुख्य-मुख्य माँगें स्वीकार कर ली गईं। (हममें से) कुछ सदस्यों को वैयक्तिक रूप से भी कुछ अनुरोध करना था। उदाहरणार्थ, लेसली मेटकाफ कोयले की खान में जाना चाहते थे; पॉल कैडबरी 'चौकलेट फैक्टरी' देखना चाहते थे और कैथलीन लौन्सडेल स्फटिक विज्ञानवेत्ताओं से भेंट करना, मास्कोस्थित 'एकेडमी ऑव साइंस' के अधिकारियों से बातचीत करना तथा एक बंदी शिविर को देखना चाहती थीं। इन सब की व्यवस्था हो गई।

हमलोगों ने मास्को के सिवा अन्य नगरों को भी देखने की अभिलाषा प्रकट की थी और इसलिये एक 'वीक-एन्ड' भर हमलोग अलग-अलग टुकड़ियों में बँट गये। हमलोगों में से तीन व्यक्ति रेल द्वारा लेनिनग्राड और चार विमान द्वारा कीव चले गये। बाद में हमलोगों को पता चला कि सोवियत संघ में आनेवाले कुछ दर्शक तो और भी दूर, स्तालिनग्राड और काले सागर तथा कजाकिस्तान के शहरों तक भी जा चुके हैं जहाँ जाने के लिये पूरब की ओर २० घंटे तक हवाई यात्रा करनी पड़ती है। हमलोगों में से कुछ व्यक्तियों से यह पूछा भी गया कि क्या हमलोग भी ऐसा करने के लिये अपने भ्रमण की अवधि नहीं बढ़ा सकते हैं,? किन्तु ऐसा करना संभव नहीं था।

हमलोग सचमुच रूसी जनता के सामान्य जीवन का यथासंभव ज्ञान प्राप्त करने और उनके नगर में मनोविनोदों और मनोरंजन की विधियों तथा उपलब्ध सुविधाओं के बारे में कुछ जानने के लिये उत्कंठित थे और इसीलिये अपने मेजबानों के इस परामर्श को कि इस उद्देश्य की पूर्ति सर्वोत्तम ढंग से किस प्रकार की जा सकती है, हमलोगों ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। इस सीमा तक कदाचित् हमलोग 'परिचालित' होने के लिये तैयार थे। परन्तु हमलोगों को स्वेच्छापूर्वक बाहर जाने के लिये पर्याप्त अवकाश प्राप्त था। तो भी यह पूर्ण सत्य है कि हमलोग इसकी आशा नहीं करते थे। क्वेकर लोग वस्तुतः प्रचलित मत के विरोधी रहे हैं और उन्हें चौकसी में रहने या पीछा किये जाने के लिये आसानी से राजी नहीं किया जा सकता। कैथलीन लौन्सडेल ने अपना अनुभव यों व्यक्त किया है—

"अपने भ्रमण के प्रारम्भ में एक दिन मैं उषाकाल में उठी और यथा-संभव एकाकी विचरण के लिये ७-३० बजे (प्रातःकाल) ही होटल से निकल पड़ी। अन्य दिनों की भाँति आज भी पुलिसमैन होटल के सामने खड़ा था और उसे देखकर मैं सहम गई। मैंने सोचा कि संभव है, मैं रोक ली जाऊँ, और शायद कैद भी कर ली जाऊँ। मुझे इस बात का भी निश्चय नहीं था कि दल के शेष व्यक्ति मेरे इस कार्य का समर्थन करेंगे और इसी कारण मैंने अपनी इच्छाओं से उन्हें अवगत नहीं किया था। मुझे सड़क पर घूमते देखकर पुलिसमैन ने मुझमें कोई दिलचस्पी नहीं दिखलाई और मैं दूसरी ओर मुड़ गई। कुछ रूसी लोग दीवाल पर टँगे हुए समाचार-पत्र को पढ़ रहे थे, किन्तु उन लोगों ने भी मेरी ओर कोई ध्यान नहीं दिया और जब मैं करीब २ मील का चक्कर लगाकर ८-३० बजे जलपान करने के लिये लौटी तब मैं यह निश्चय नहीं कर पाई थी कि इस बात से मुझे प्रसन्न होना चाहिये अथवा लज्जित कि मेरा पीछा करना अत्यन्त अनावश्यक समझा गया। इसके बाद मुझे पता चला कि हमारे दल के दो और सदस्य जेराल्ड बेली और लेसली मेटकाफ ने भी गत संध्या को ऐसा ही साहस किया था। यह जानकर मुझे (अपने) अत्यधिक डरने के कारण लज्जा भी हुई। किन्तु इससे यह मालूम हुआ कि मुझे इस तरह डराने में मेरे सन्देह का कितना अधिक हाथ था।" तदुपरान्त हमारे दल के पुरुष सदस्य संध्याकालीन सम्मेलनों के बाद दुभाषियों का संग छोड़कर होटल तक अकेले ही आते और महिला सदस्याएँ भी अनेक बार गलियों में अकेली घूमने चली जातीं और दिन में कई बार दूकानों की वस्तुओं के मूल्य और ग्राहकों की वेश-भूषा नोट करती फिरतीं।

हमलोगों के दुभाषियों का दल भी बड़ा दिलचस्प था और बिदा की बेला तक उनलोगों से हमलोगों की काफी घनिष्टता हो गई थी। उनमें एक 'सोरोकिन' के नाम से प्रसिद्ध थे, जिनके साथ हमलोगों में से बहुतों को अत्यन्त मनोरंजक संभाषण करने का मौका मिला था; दूसरे का नाम 'नेकरासोव' था, जिन्होंने श्री कोरनीचक के साथ इंगलैंड में रूककर लोगों और विश्वशान्ति परिषद् के सदस्यों के बीच होनेवाले सम्मेलन में भाग लिया था। इस कारण हममें से कुछ लोग उनसे पूर्व परिचित थे। वे मास्को विश्वविद्यालय में इतिहास का अध्ययन कर रहे थे। तीसरी का नाम इरेना नेलिडोवा था। वे एक विवाहिता महिला थीं और उन्हें दो पुत्र थे। वे 'मास्को विश्व-विद्यालय' में भाषा-विज्ञान की प्राध्यापिका थीं और उन्होंने यह बतलाया कि वे शान्ति समिति के लिये दुभाषिये के काम को सामाजिक कार्य का एक अंग

समझकर स्वेच्छापूर्वक कर रही हैं। दमित्री एमोलेंको चौथे व्यक्ति थे, जो पहले तो कुछ लोगों को अत्यन्त तटस्थ से लगे, किन्तु बाद में अत्यन्त सद्भाव एवं औदार्य-पूर्ण सिद्ध हुए। अन्य दो व्यक्ति ग्रीगोरीव और चरडैन्डसेव थे। ग्रीगोरीव एक बड़े अच्छे नवयुवक थे और उनके सिर के बाल लाल थे। चरडैन्डसेव, सोवियत शान्ति समिति के एक सहायक-मंत्री हैं। उन्होंने ही हमलोगों के लिये अधिकांश व्यवस्थायें की थीं। वे लोग अत्यन्त योग्यता-पूर्वक और ईमानदारी के साथ हमलोगों के लिये भाषानुवाद का कार्य करते थे। फ्रैन्क एडमीड तथा लेसली मेटकाफ ने रूसी भाषा के अपने सीमित ज्ञान के द्वारा हमलोगों को यह बतलाया था कि वे लोग हमलोगों के कथन के अभिप्राय या उसके महत्वारोपण को तनिक भी परिवर्त्तित नहीं करते थे। यह जान-कर हमलोगों का गर्व चूर्ण हो गया, क्योंकि आने के पहले हमलोगों को सन्देह था कि वे इतने ईमानदार होंगे, जितने कि वे वास्तव में थे। वे लोग हमलोगों की सहायता के लिये सदैव प्रस्तुत रहते थे और हमलोगों का कोई भी अनुरोध उनलोगों को अत्यन्त कष्टकर नहीं प्रतीत होता था। वे लोग तर्क-वितर्क में बहुत पटु थे और सोवियत सरकार के प्रत्येक कार्य को उचित सिद्ध करने के लिये उनके पास सभी उत्तर मौजूद रहते थे। हमलोगों ने उन्हें वर्त्तमान अवस्था के प्रति कभी भी असन्तोष प्रकट करते नहीं देखा। तो भी उनलोगों ने हमलोगों की सभी युक्तियों को सदैव धैर्यपूर्वक सुना और कभी भी तीव्रतापूर्वक जवाब नहीं दिया। हमलोग भी उनलोगों के साथ अत्यन्त स्पष्ट-वादिता से पेश आये। हमलोगों ने उनलोगों के साथ अपने समस्त कार्यों के विषय में विचार-विमर्श किया और अपने मनोभावों तक को भी उनलोगों से गुप्त नहीं रक्खा।

●

तृतीय अध्याय

प्रथम दो दिवस

भोजन की समाप्ति के बाद रविवार के सायंकाल में हमलोग अपने दुभाषियों के संग विचरण करने निकले और रेड स्क्वायर होकर क्रेमलिन के बहिर्भाग का चक्कर लगाते हुए मास्को नदी तक गये। वहाँ हमलोगों ने अनेक परिवारों से परिपूर्ण एक स्टीमर को जलधारा के विपरीत धीरे-धीरे अग्रसर होते देखा। यह वैसा ही दृश्य था जैसा हमलोग टेम्स नदी में बराबर देखा करते हैं। दूरवर्त्ती तट पर कुछ स्नान करनेवाले ताप-तरंग का आनन्द ले रहे थे। रविवार की रात्रि में मास्को का मध्यभाग मनोरम प्रतीत हुआ। पॉल कैडबरी ने अपनी डायरी में लिखा था—"क्रेमलिन की दीवालों के बाहर पथ, नदीतट, और उद्यान की पतली पगडंडियाँ उल्लसित एवं जनपूर्ण दीख पड़ीं। सभी लोग स्वच्छ एवं सन्तुष्ट थे। किशोर अत्यन्त प्रफुल्ल दीख पड़े। बहुत संभव है कि इस नगर के मध्यभाग में निर्मित गृह अधिक वेतनभोगियों के लिये हों, परन्तु किसी भी हालत में रूसी मित्रों का बाह्य सादृश्य अत्यन्त आकर्षक लगता है।"

तदुपरान्त हमलोगों को मास्को और उसके ५० लाख निवासियों के सम्बन्ध में विशेष ज्ञान प्राप्त करने के लिये मोटर पर बैठाकर घुमाया गया। अत्यधिक जनाकीर्ण, गन्दी बस्तियों की ओर भी हमलोगों का ध्यान आकर्षित किया गया। वास्तव में वे दृष्टि से छिपी भी नहीं रह सकती थीं, क्योंकि पुनर्निर्माण के स्थलों को छोड़कर मास्को के अन्य भाग इनसे भरे पड़े हैं।

दूसरे दिन (१६ जुलाई) प्रातःकाल में जब हमलोग उठे, तब तापमान ६२° फारेनहीट था। हमलोगों को बतलाया गया कि इतना अधिक तापमान कई वर्षों से इधर कभी नहीं हुआ था। हमलोगों के जलपान की सामग्रियों में दही, उजली या काली रोटी, मक्खन, पनीर एवं ठंढा कबाब (सौसेज) था। इनके सिवा आमलेट खानेवालों के लिये बड़े-बड़े आमलेटों की तथा रूसी चाय

अथवा कॉफी और यार्कशायर के केकों के समान बड़े-बड़े 'टी केकों' की भी व्यवस्था की गई थी। जलपान के बाद हमलोगों ने थोड़ी देर तक एक साथ उपासना भी की। इस प्रकार शारीरिक एवं आध्यात्मिक शक्तियों से मजबूत होकर हमलोग एक बड़े एवं क्रान्तिजनक दिवस को व्यतीत करने के लिये तैयार हुए।

प्रातःकाल दो प्रकार के कार्यों में व्यतीत हुआ। पहले कुछ देर तक हमलोग 'होटल सर्विस ब्यूरो' में कुछ फार्म भरते रहे और इसके बाद फोटोग्राफरों के यहाँ गये, जहाँ पर हमलोगों के दो-दो चित्र लिये गये। इनकी आवश्यकता हमलोगों के आन्तरिक पासपोर्ट के लिये हुई, जिसे हमलोग एक नगर से दूसरे नगर में जाने के लिये काम में लाते थे। (दूसरे किसी कार्य के लिये हमने उसका कभी उपयोग नहीं किया)। हमलोगों के बाह्य पासपोर्ट 'होटल सर्विस ब्यूरो' में सुरक्षित रक्खे हुए थे (कुछ अन्य यूरोपीय देशों में भी यही प्रथा है) और मास्को से प्रस्थान करते समय हमलोगों को पुनः लौटा दिये गये।

हमलोगों ने फोटोग्राफर को दूकान को आस्ट्रिया के फासिस्ट-विरोधी महिला प्रतिनिधिमण्डल से भरा पाया। वे लोग वहाँ वियेना से पहले से ही पहुँची हुई थीं। गर्मी से व्याकुल और पसीने से लथपथ फोटोग्राफर, सबको प्रसन्न करने की चेष्टा में, तुर्गनेव के उपन्यास के पात्र का प्रतिरूप प्रतीत होता था। हमलोगों की बारी आने में अभी देर थी। अतएव हमलोग गर्मी से बचने के लिये एक सुन्दर उद्यानस्थित जलपानगृह में जाकर बैठ गये।

तदुपरान्त हमलोग मोटर द्वारा कोपाटकिन स्ट्रीट स्थित सोवियत शान्तिसमिति के कार्यालय में गये। वहाँ पर श्री तिखोनोव के नेतृत्व में करीब उनके दस सदस्य हमलोगों से मिले। हमलोगों ने एक टेबुल के चारो ओर आसन-ग्रहण किया, जो उत्तम केकों, खुबानियों, चॉकलेटों और फलों के रस से भरा हुआ था। बाद में रूसी चाय भी लाई गई। हमलोगों का विहित एवं अविहित सम्मेलन ४-३० बजे तक हुआ। दुभाषियों को ऐसे स्थान पर बैठाया गया जहाँ से वे सर्वाधिक सहायता पहुँचा सकते थे। हमलोगों के कुछ मेजबान भी अँगरेजी बोलते थे और समय-समय पर हमलोग भी अपनी सुविधा के लिये फ्रेन्च और जर्मन (भाषा) का प्रयोग करते थे। सभी विहित भाषण थोड़ा-थोड़ा करके दिये गये। कुछ वाक्य एक बार बोल दिये जाते थे, तदुपरान्त उनका अनुवाद किया जाता

था। इससे क्रमभंग तो उपस्थित होता था, किन्तु विचार के लिये कुछ समय अवश्य मिल जाता था। हमलोगों के बाद के अन्य सम्मेलनों में भी यही विधि काम में लाई गई।

सोवियत शान्ति समिति ने रूस के राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन का एक प्रभावपूर्ण प्रतिनिधित्व प्रस्तुत किया। वस्तुतः वहाँ पर ऐसे अनेक व्यक्ति विद्यमान थे, जिनसे हमलोगों को मिलने की आशा थी और जिनसे हमलोग बाद में मिले भी थे। उपस्थित व्यक्तियों में मास्को ऑर्थोडॉक्स चर्च के प्रधान मेट्रोपोलिटन निकोलाई, चेम्बर ऑफ नेशनलिटिज के परराष्ट्र कार्य आयोग के सभापति शिक्षा शास्त्री ग्रेकोव, रूसी बैपतिस्ट यूनियन के अध्यक्ष एवं कोषाध्यक्ष श्री भिडकोव और श्री करोव, शेक्सपियर साहित्य के विद्वान तथा नव प्रकाशित अँगरेजी पाक्षिक 'न्यूज' के सम्पादक प्रो० मोरोजोव, * सिंचाई के विख्यात विशेषज्ञ इंजिनियर डेवीडोव एवं मास्को विश्वविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन के प्रोफेसर, एकेडेमीशियन इवानोव के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इनके सिवा वहाँ पर शिक्षा-विभाग के अनेक पदाधिकारी भी उपस्थित थे।

सभापति श्री तिखोनोव एवं लेसली मेटकाफ के छोटे, विनम्र एवं अधिकारयुक्त भाषणों के बाद मुक्त वार्त्तालाप का मौका मिला। पॉल कैडबरी ने प्रो० इवानोव से, जो इंगलैंड में छः मास और युद्ध के बाद करीब इतने ही दिन कनाडा में भी रह चुके थे, बातचीत कर यह पता लगाया कि उन्होंने अमेरिका के क्वेकर लोगों द्वारा प्रकाशित 'यूनाइटेड स्टेट्स ऐंड सोवियत यूनियन' को पढ़ा है और क्वेकर लोगों के दृष्टिकोण से कुछ-कुछ परिचित हैं। बैपतिस्ट मंत्रियों ने ग्रेट-ब्रिटेन की अवस्थाओं के सम्बन्ध में प्रश्न किये और यह जानने में रुचि दिखलाई कि लन्दन के पूर्वी और पश्चिमी छोरों का वैषम्य आज भी विद्यमान है या नहीं।

करीब एक घंटे के बाद पुनः हमलोगों का कार्य विधिवत् प्रारम्भ हुआ। कैथलीन लौन्सडेल ने क्वेकर-सिद्धान्त पर एक वक्तव्य दिया, जो इस पुस्तक की भूमिका में लिखित तत्सम्बन्धी वर्णन के सदृश ही था। इसके बाद उन्होंने यह भी बतलाया कि किस प्रकार क्वेकर लोगों ने इन सिद्धान्तों को कार्य में परिणत करने की चेष्टा की है और किस प्रकार उन लोगों ने इनका उपयोग विशेष रूप से शान्ति-निर्माण एवं समाज-सेवा के लिये ही करने

* प्रो० मोरोजौव की मृत्यु का दुःखद समाचार हमलोगों को हाल ही में प्राप्त हुआ है।

का प्रयत्न किया है। तदुपरान्त श्री जेरल्ड बेली ने वर्त्तमान अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में सुधार लाने के लिये सात व्यावहारिक सुझाव पेश किये। (इन्हें बाद में सोवियत उप-वैदेशिक मंत्री श्री मलिक को भेंट किया गया)। इन भाषणों के पश्चात् हमारे सोवियत मेजबानों ने उत्तर देना प्रारम्भ किया। ये उत्तर बहुत ही मनोरंजक सिद्ध हुए, क्योंकि इनसे क्वेकर लोगों के शान्तिवाद के प्रति सोवियत प्रतिक्रिया ही ज्ञात नहीं हुई, वरन् उनसे यह भी पता चला कि उनलोगों ने हमलोगों के सिद्धान्तों को अथवा हमलोगों को ही कितना कम समझा है।

शिक्षाशास्त्री येकोव ने 'ओल्ड टेस्टामेंट' (प्राचीन बाईबिल) का उद्धरण देकर यह सिद्ध करने की चेष्टा की कि ईश्वर भी दुष्टता के प्रतिकार के पक्ष में थे। उन्होंने भी समस्त लोगों को नष्ट कर डाला था। एक कट्टर मार्क्सवादी के लिये तो यह एक विलक्षण युक्ति प्रतीत हुई और अगर समय होता तो हममें से कुछ व्यक्ति उन्हें 'ओल्ड टेस्टामेन्ट' के इतिहास एवं उपाख्यान के प्रति क्वेकर लोगों के दृष्टिकोण से अवगत कराते। उन्होंने यह भी बतलाया कि यद्यपि वे क्वेकर सिद्धान्तों को स्वीकार नहीं कर सकते, तथापि महत्वपूर्ण बात यह है कि क्वेकर सम्प्रदाय और सोवियत शान्ति-समिति एक ही पथ के पथिक हैं और दोनों का गन्तव्य 'शान्ति' है।

इसके बाद प्रोफेसर मोरोजोव का भाषण हुआ। उन्होंने हमलोगों के सद्भावना-सूचक वक्तव्यों के प्रति अपनी स्वीकृति प्रकट की और हमलोगों से यह समझने के लिये अनुरोध किया कि पश्चिमीय देशों के प्रति रूस में भी बहुत सद्भावना है। उन्होंने कहा कि फिर भी हमलोगों को यह नहीं भूलना चाहिये कि हाल ही में हिटलर ने रूस पर आक्रमण किया था और रूसी लोग उसका दुःखद परिणाम अभी भी भुगत रहे हैं। इस समय वे लोग रचनात्मक कार्यों में लगे हुए हैं। 'मास्को विश्वविद्यालय' का उदाहरण प्रत्यक्ष है। तदुपरान्त उन्होंने यह कहा कि ब्रिटिश संस्कृति के प्रति रूसी लोगों में श्रद्धा है, किन्तु ब्रिटेन का पुनःशस्त्रीकरण उन्हें सन्देह में डाल रहा है। उन्होंने यह इच्छा भी प्रकट की कि हमलोग ब्रिटेन वापस जाकर वहाँ के लोगों को यह बतलायें कि सोवियत संघ के लोग शान्तिप्रिय हैं और वे पुनर्निर्माण के कार्यक्रम को चालू रखने के लिये शान्ति चाहते हैं।

हमलोगों को उनसे और उनके बाद के वक्ता इंजीनियर डेवीडोव से अत्यधिक सहानुभूति हुई। डेवीडोव ने कहा कि वे मानवता की रक्षा के निमित्त प्रकृति के

संग कार्य कर रहे हैं; जनकल्याण के लिये देश के प्राकृतिक साधनों का उपयोग करना उनका कर्त्तव्य है। उन्होंने यह भी कहा कि वे लोग वायु की क्षति से अपने खेतों को रक्षा करने के लिये वन प्रान्तों का निर्माण कर रहे हैं और वोल्गा, दोन एवं अन्य नदियों के जल-प्रवाह को नियंत्रित कर जल-विद्युत केन्द्र स्थापित कर रहे हैं, जिनका कुल वार्षिक उत्पादन करीब २,३०,००० किलोवाट के बराबर होगा। वे लोग सिंचाई की व्यवस्था कर कोई २८० लाख हेक्टर मरुभूमि को कृषियोग्य बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं, जिससे वहाँ के लोग पहले की अपेक्षा और अच्छी अवस्था में रह सकें। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि यह समस्त कार्य शान्ति की भावना से किये जा रहे हैं और उनकी पूर्त्ति के लिये शान्ति की आवश्यकता है। इंजीनियर डेवीडोव एक मिस्त्री के पुत्र थे। 'कजाक सोवियत साम्यवादी गणतंत्र' में उनका पालन-पोषण हुआ था। उन्होंने मध्य-एशिया के एक विश्वविद्यालय से ग्रैजुएट की डिग्री ली थी और इस समय उपर्युक्त कार्य का दायित्व ग्रहण किये हुए थे। उन्होंने 'न्यूज' (सितम्बर १९५१, पृष्ठ १७) में प्रकाशित एक निबंध में इस कार्य का अधिक विस्तार पूर्वक वर्णन किया है।

उनके बाद प्रोफेसर दिकीक ने बोलना प्रारंभ किया। उन्होंने केवल यही बतलाया कि यद्यपि वे स्वयं नास्तिक हैं और मेट्रोपोलिटन निकोलोई और उनके दर्शनों के बीच काफी अन्तर है, तथापि वे लोग परस्परविरोधी दृष्टिकोण रखते हुए भी शान्ति के लिये एक साथ कार्य कर सकते हैं।

तदुपरान्त विश्व-विद्यालय की एक प्राध्यापिका का भाषण हुआ। उन्होंने यह बतलाया कि जब हमलोगों का लक्ष्य एक है तब अपने तरीकों को एक दूसरे पर लादना अनुचित है। हमलोगों को तो भेद उत्पन्न करने वाली बातों को छोड़कर उन्हीं बातों पर विचार-विमर्श करना चाहिये, जिनपर हम सभी एकमत हो सकते हैं। भेद होने के संबंध में कोई संदेह नहीं था; जब हमलोग सर्वप्रथम इसाई धर्म के मूलभूत सिद्धान्तों को बतला रहे थे, तब उनके चेहरे पर इसके प्रति उत्कट घृणा के भाव देखकर ही हमलोगों को यह ज्ञात हो गया था। (भले ही उन्हें इसके आधिक्य का ज्ञान नहीं हुआ हो)। उन्होंने यह भी बतलाया कि 'सोवियत (साम्यवादी गणतंत्र) संघ' में युद्ध-प्रचार अवैध है। (आगे चलकर एक अन्य सम्मेलन में प्रो० गेक्रोव ने इस सम्बन्ध में और अधिक बातें बतलाईं)। हमें राज्य के व्यय के आँकड़े प्राप्त हैं तथा बजट का स्वयं अध्ययन कर हम यह पता लगा सकते हैं कि किस स्थान में और किस प्रकार रुपया खर्च किया जा रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि हमलोग आन्दोलन

में भाग लेकर युद्ध को केवल कोरिया और हिन्दचीन तक ही सीमित रखने का प्रयत्न कर सकते हैं। इस बीच वैयक्तिक परिचय पारस्परिक अन्तर्ज्ञान की अभिवृद्धि में सहायक होगा।

मेट्रोपोलियन निकोलाई ने थोड़े से शब्दों में अपने साथ साथ होनेवाली हमलोगों की भावी वार्ताओं की ओर संकेत किया और उसके बाद बैपतिस्ट यूनियन के अध्यक्ष भाषण के लिये उठे। उनका शरीर छोटा था, तथा वे एक ईमानदार व्यक्ति थे। उनकी 'चुकी' दाढ़ी स्वच्छ एवं सँवारी हुई थी। युद्ध के स्थान पर किसी दूसरे उपाय को खोज से उन्होंने सहमति प्रकट की और यह बतलाया कि बैपतिस्ट प्रेम में विश्वास करते हैं, पर ईश्वर ने भी बल का प्रयोग किया था; 'न्यू टेस्टामेंट' (बाईबिल) में भी मनुष्य का खड्गधारी बतलाया गया है और उसका ऐसा होना उचित भी है, इसमें सन्देह नहीं कि एक समय आयगा जब खड्ग को हल के फार में परिणत कर दिया जायगा, किन्तु ऐसा तभी होगा जब ईश्वर दुर्वृत्तियों को अंकुश में रखेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि दस्युओं के साथ मैत्री होना असंभव है; अगर कोई दस्यु आपके बच्चों पर आक्रमण करे, तो उनकी रक्षा के लिये आपको तैयार रहना ही होगा। (सच पूछिये तो यही तर्क हमलोग अपने यहाँ के चर्च के नेताओं के मुख से भी बहुधा सुना करते हैं। अन्तर केवल इतना ही है कि वे लोग सोवियत सरकार को दस्यु समझते हैं और हमारे सोवियत मित्र, ब्रिटिश तथा अमरीकी सरकारों को। हमलोगों को इस पर प्रकाश डालने का मौका बाद में मिला।) उन्होंने अपना भाषण जारी रखते हुए बतलाया कि रूस में २० करोड़ से ज्यादा लोग निवास करते हैं और उनमें से एक भी व्यक्ति युद्ध के पक्ष में नहीं है, किन्तु विदेशों में कुछ बैप-तिस्ट, धर्मसभावादी और विधिवादी युद्धाभिलाषी हैं। उन्होंने कहा कि उदाहरणार्थ ट्रूमैन और बेविन बैपतिस्ट हैं। अन्त में उन्होंने हमलोगों से यह आशा प्रकट की कि हमलोग ईसाई सम्प्रदाय को समस्त शाखाओं को शान्ति आन्दोलन का सहयोगी बनाने में सहायता करें और अगर बैपतिस्ट ट्रूमैन को भी अपने पथ का पथिक बना लें तो वे लोग और अधिक कृतज्ञ होंगे।

अंतिम भाषण शिक्षा-शास्त्री इवानोव और श्री तिखोनेव के हुए। इन लोगों ने सोवियत और ब्रिटिश जनता के मैत्री-सम्बन्ध की ओर संकेत किया और इस बात पर जोर दिया कि हम सभी एक दूसरे के दृष्टिकोणों का आदर करें और शान्ति-रक्षा के लिये एकता बनाये रक्खें। सभा समाप्त होने पर हमलोगों ने भी अविहित ढंग से यह स्पष्ट कर दिया कि क्वेकर लोग

दुर्वृत्ति का विरोध करने में विश्वास तो करते हैं, किन्तु उनका विश्वास है कि इसका विरोध केवल सद्वृत्ति द्वारा ही किया जा सकता है और वे शान्ति की रक्षा करने की अपेक्षा शान्ति-निर्माण अथवा शान्ति एवं सद्भाव की स्वाभाविक वृद्धि के लिये उपयुक्त वातावरण की सृष्टि में कहीं अधिक विश्वास रखते हैं।

क्रोपाटकिन स्ट्रीट से हमलोग मोटर द्वारा टॉल्सटाय के मास्कोभवन में गये। यद्यपि हमलोगों को थोड़ी ही दूर की यात्रा तय करनी पड़ी, तथापि हमलोगों को रूसी मोटरगाड़ियों में व्यवहृत स्प्रिंग की मजबूती और लचकदारी का प्रमाण मिल गया। क्योंकि रास्ता बहुत ऊबड़-खाबड़ और ऊँची-नीची भद्दी गलियों से होकर गुजरा था जिनके किनारे पुराने भग्नप्राय किन्तु जनाकीर्ण गृह थे। टाल्सटाय का भवन अब एक म्यूजियम बन गया है और इसलिये हमलोगों को मुलायम कपड़ों के पूरे जूते अपने जूतों के ऊपर से पहनकर अन्दर प्रवेश करना पड़ा जिससे वहाँ की पालिश की कई फर्श खुरच अथवा गन्दी न हो जाय! यह भवन करीब-करीब ठीक उसी अवस्था में है, जिस अवस्था में टॉल्सटाय ने इसे छोड़ा था। भोजन-गृह का टेबुल, जिसपर परिवार के सभी सदस्यों के स्थान अंकित हैं, अपने स्थान पर ज्यों-का-त्यों रक्खा हुआ है। हमलोगों ने उस 'डेस्क' को भी देखा, जिसपर टॉल्सटाय ने 'वार ऐण्ड पीस' (युद्ध और शान्ति) नामक पुस्तक का कुछ अंश लिखा था। इनके सिवा, हमलोगों ने उनकी बिल्कुल पुराने ढंग की साइकिल और वह विशाल पियानो देखा, जिसे उनके समसामयिक अधिकांश प्रसिद्ध संगीतज्ञ बजा चुके थे। लेसली मेटकाफ ने इसका वर्णन यों किया है—"एक सुन्दर वृद्ध महिला ने हमलोगों को भवन में चारों ओर घुमाया। उनके वर्णन करने के स्नेहपूर्ण ढंग से ऐसा प्रतीत हुआ कि उनका उस परिवार से उनका कुछ-न-कुछ सम्बन्ध अवश्य रहा होगा। वे इतनी सुन्दर रशियन (रूसी भाषा) बोलती थीं कि हृदय पुलकित हो उठता था। वस्तुतः उस प्रकार बोले जाने पर यह भाषा अत्यन्त सुन्दर लगती भी है।"

उस शाम को डिनर के समय हमलोगों को यह ज्ञात हुआ कि दूसरे दिन ७ बजे प्रातः से ५ बजे शाम तक का समय टॉलस्टाय की सम्पत्ति के दर्शनार्थ निश्चित किया गया है। इसके लिये हमलोगों को मास्को से तीन घंटे की मोटर-यात्रा करनी पड़ती। हमलोगों को यह भी ज्ञात हुआ कि इसी सिलसिले में हमलोगों को एक सामूहिक कृषि-फार्म का दर्शन भी कराया जायगा। परन्तु हमलोगों ने इसके विपरीत निश्चय किया, क्योंकि हमलोग अपना समस्त समय केवल दृश्यावलोकन में ही नहीं लगाना चाहते थे।

डिनर के बाद हम सभी ब्रिटिश दूतावास में गये। वहाँ पर राजदूत सर डेविड केली ने हमलोगों का हार्दिक स्वागत किया। श्री हर्बर्ट मौरिसन के द्वारा उन्हें हमारे मास्को आगमन की सूचना पहले ही मिल चुकी थी। विक्टोरिया-कालीन सजावटों से परिपूर्ण इस सुखप्रद स्थान में प्रवेश करना मनोरंजक प्रतीत हुआ। वहाँ राजमहिषी विक्टोरिया, सप्तम एडवर्ड और इसी भाँति अन्य लोगों के पूर्णाकृति वाले चित्र मौजूद थे। हमलोग दूतावास की पिछली ड्योढ़ी में गये, क्योंकि अभी बहुत गर्मी थी। वहाँ सर डेविड के साथ हमलोगों का मुक्त एवं मित्रवत् वार्त्तालाप हुआ। उन्होंने हमलोगों की स्थिति समझी और हमलोगों को स्पष्ट रूप से अपने विचारों को प्रकट करने का परामर्श दिया। हमलोग भी ऐसा करना ही उचित समझते थे। हाँ, हमलोगों के दुभाषिये इस भेंट के समय साथ नहीं थे।

दूसरे दिन प्रातःकाल (मंगलवार, जुलाई १७) में हमलोगों ने भावी उपासना के लिये आधा घंटा तक शान्तिपूर्वक तैयारी की। यह बैपतिस्ट मित्रों के संग होनेवाली थी। तदुपरान्त हमलोग मोटर द्वारा मास्को के कुछ नव-निर्मित भवनों को देखने के लिये गये। हमलोगों ने अनेक वृहत् फ्लैटों की पंक्तियाँ देखीं, जिनमें कुछ बन रहे थे और कुछ बनकर आबाद भी हो चुके थे। किन्तु हमलोगों को भवन-वितरण-विधि के सम्बन्ध में कोई सन्तोषजनक उत्तर नहीं प्राप्त हो सका। हमलोगों को बराबर यही कहा गया कि यह वितरण लोगों की आवश्यकता के अनुसार होता है। हमलोग तो वास्तव में जानना यह चाहते थे कि साम्यवादी दल के सदस्यों को प्रधानता दी जाती है कि नहीं; अतः, यह उत्तर पूर्ण सन्तोषजनक नहीं प्रतीत हुआ। तो भी हमलोगों को यह ध्यान रखना चाहिये था कि हमलोग भी नवागन्तुकों से ग्रेट-ब्रिटेन के नव-निर्मित भवनों के वितरण के नियमों की व्याख्या करने अथवा वैयक्तिक साहस के फलस्वरूप निर्मित गृहों का आय के अनुसार वितरण न्यायसंगत सिद्ध करने में कठिनाई का अनुभव करते।

लेसली मेटकाफ ने इस प्रातःकालीन भ्रमण के सम्बन्ध में अपना विचार यों व्यक्त किया है—"मास्को एक मनोरम नगर होता जा रहा है और इसके लिये रूसी लोगों को अत्यधिक गर्व है, जो उचित भी है। मेरी २५ वर्ष पहले की इसकी स्मृति धुंधली पड़ गई है। यद्यपि क्रेमलिन, पाइनएपुल चर्च, मास्को नदी एवं प्राचीन मास्को के अनेक चिह्न अभी भी वर्त्तमान हैं तथापि नवीन मास्को कितनी बातों में पहचाना ही नहीं जाता।" उन्होंने जो दो महत्वपूर्ण परिवर्त्तन देखे, उनमें प्रथम था एक घोड़ावाली विचित्र रूसी गाड़ी 'ड्रोश्कीज'

का अंत और द्वितीय इन गर्मी के दिनों में भी आधुनिक मास्को में मक्खियों का सर्वथा अभाव क्योंकि बड़ी-बड़ी मशीनों द्वारा खूब सबेरे ही गलियों की धुलाई कर दी जाती थी।

यातायात के सम्बन्ध में कुछ कहना कौतूहलवर्द्धक होगा। हमलोग जहाँ जाते, वहाँ हमलोगों को दो या तीन मोटरगाड़ियों में ले जाया जाता। इन गाड़ियों में कम से-कम एक अवश्य 'जिस' होती ('जिस' से उस कारखाने का बोध होता है जिसका नामकरण स्तालिन के नाम पर हुआ है)। ये गाड़ियाँ युद्ध पूर्व की वृहद् 'पैकार्ड' गाड़ियों के सदृश प्रतीत होतीं। मोलोतोव के नाम पर नामकरण किये गये एक अन्य कारखाने में इनकी अपेक्षा छोटी गाड़ियाँ बनती हैं, जो 'विक्ट्री कार' कहलाती हैं। ये सभी गाड़ियाँ अत्यन्त मजबूत होती हैं और उनकी निर्माण-कला उत्कृष्ट होती है। मास्को के मध्यभाग के मार्ग सुन्दर हैं। वे इतने प्रशस्त हैं कि उनको पार करना वस्तुतः साहस का कार्य है, क्योंकि उनके मध्य में कोई "द्वीप" नहीं, केवल 'तटस्थ भाग' (न्यूट्रल जोन) हैं। ट्रैफिक लाइट (सवारियों के नियंत्रण के लिये बत्तियाँ) के नियंत्रण का दायित्व पुलिसमैनों पर रहता है। जिन चौराहों पर प्रकाश से यातायात का नियंत्रण है, वहाँ भी वे ही लोग पथ का संरक्षण करते हैं। सवारियाँ मार्गों के दाँये भाग में चलती हैं और संगम (क्रॉसिंग) पर सीधे बाँये घूम जाना मना है। जो गाड़ियाँ बाँयें घूमना चाहती हैं, उन्हें सर्वप्रथम सीधे जाना पड़ता है, तदुपरान्त वे १०० गज जाकर सड़क के मध्यभाग में खड़े पुलिसमैन का गोलाकार चक्कर लगाती हुई पुनः संगम (क्रॉसिंग) की ओर बढ़ती हैं और वहाँ जाने पर वे ठीक घूमने की स्थिति में होती हैं। नगर के कुछ भागों में पैदल चलने वालों के लिये बनी हुई 'क्रॉसिंग' को छोड़कर दूसरे स्थलों पर पथ को पार करने वालों के लिये उसी स्थान पर जुर्माने के दण्ड का विधान है। मिल्ड्रेड क्रीक के साथ भी एक बार ऐसी ही घटना घटने वाली थी। एक दिन वे एकाकी विचरण करते समय एक गली को तिरछे पार करने जा रही थीं। ठीक उसी समय उन्हें पुलिसमैन की सीटी का निश्चित निषेधात्मक स्वर सुनाई पड़ा। इससे वे केवल आश्चर्यित ही नहीं हुई, वरन् कुछ-कुछ भयभीत भी हो गई थीं। तो भी कैथलीन लॉन्सडॉल को एक जनपूर्ण संगम (क्रॉसिंग) पर यह अनुभव हुआ कि वे सोवियत नागरिकों की अपेक्षा कहीं अधिक नियमबद्ध हैं, क्योंकि ये लोग सड़क पार करने के लिये उपयुक्त (आवागमन संकेत) ट्रैफिक सिगनल की सदैव प्रतीक्षा नहीं करते।

इस प्रातःकालीन सैर के समय और दूसरे दिन भी प्रेस के फोटोग्राफर प्रत्येक स्थान पर हमलोगों के पीछे-पीछे घूमते फिरे (लेसली मेटकाफ ने भी कुछ चित्र

लिये), क्योंकि हमलोगों के आगमन की विज्ञप्ति प्रातःकालीन समाचार-पत्रों में प्रकाशित हो गई थी।

प्रातःकाल में इसके बाद हमलोग 'डायनेमो फुटबाल स्टेडियम' देखने गये। वहाँ पर हमलोगों ने बाहर में कुछ मनुष्यों और बालकों की भीड़ देखी। ये लोग एक प्रकार के 'स्कोर-बोर्ड' (एक प्रकार का खेलों का परिणाम दिखलाने वाला बोर्ड) को पढ़ रहे थे। दल के पुरुष सदस्य प्रशस्त अन्तर्भाग को देखने चले गये और महिलायें उधर चली गईं, जिधर कुछ लोग बर्फवाले, रंगीन पेयों को खरीद रहे थे। कुछ झिझक के साथ वे सब भी उन्हीं लोगों में सम्मिलित हो गईं। इस समय भी बहुत गर्मी पड़ रही थी।

तब हमलोग 'डॉयनेमो (अन्तर्वर्त्ती) अन्डर ग्राउन्ड स्टेशन' देखने गये। कुछ समय बाद 'रेभोल्यूशन स्क्वेयर' स्टेशन पर विख्यात 'मास्कोमेट्रो' के एक मुख्य इंजीनियर से हमलोगों की भेंट हुई। हमलोग रेलगाड़ी द्वारा कई स्टेशनों की यात्रा को ले जाये गये और जब भी रेल किसी स्टेशन पर पहुँचती, तब हमलोग उतर कर उस स्टेशन का भलीभाँति निरीक्षण करते। वहाँ का प्रत्येक स्टेशन कला की वस्तु है। संगमर्मर पत्थर और प्रकाश का कलात्मक प्रबन्ध आश्चर्यजनक प्रभाव उत्पन्न करते हैं। फर्श को स्वच्छ रखने के लिये बुहारने और धोने की बिजली की मशीनों की व्यवस्था की गई है। कहीं भी गन्दगी का लेश नहीं है। हमलोगों को मालूम हुआ कि गाड़ियाँ लंदन के 'मेट्रोविक' द्वारा बेची गई हैं और यहाँ की गाड़ियाँ भी लन्दन की अन्तर्वर्त्ती (अंडरग्राउंड) गाड़ियों के सदृश ही हैं। प्रत्येक प्लेटफार्म के एक छोर पर एक सैनिक खड़ा रहता है, जिसका प्रत्यक्ष रूप में काम रेलवे लाइनों पर गलती से आ पड़नेवाले लोगों को रोकना है। गाड़ियों को अन्दर और बाहर भेजनेवाली लड़कियाँ अत्यधिक कार्यनिपुण हैं। प्रत्येक 'एस्कलेटर' (एक प्रकार की घूमती सीढ़ी) के अंतिम छोर पर भी एक लड़की रहती है, जिसका काम यही देखना है कि लोग बिना कठिनाई के चढ़-उतर रहे हैं या नहीं। कम-से कम एक स्थान पर 'एस्केलेटर' के बगलवाले लगे डंडे इस तरह से बनाये गये थे कि वे भी इसी गति से खिसकते थे जिस गति से 'एस्केलेटर' की सीढ़ियाँ! किसी भी दूरी तक जाने का एक निश्चित भाड़ा है। मेट्रो गाड़ियों की निम्नलिखित विशेषता अन्यत्र अनुकरणीय है। प्रत्येक गाड़ी के सामने का डब्बा बच्चों, गर्भवती स्त्रियों और असमर्थ लोगों के लिये सुरक्षित रक्खा जाता है, जिससे भीड़ होने पर भी इन लोगों को स्थान पाने में कोई कठिनाई नहीं होने पाये। बच्चे इस डब्बे में अकेले अथवा अपने माँ-बाप के संग बैठ सकते हैं। प्रत्येक स्टेशन पर 'फर्स्ट एड' (प्राथमिक) सहायता के लिये एक जगह रहती है जिसमें एक नर्स श्वेत-परिधान में मौजूद रहती है।

मेट्रो ने हम सभी को प्रभावित किया, यद्यपि इसका प्रभाव सब पर एक-सा नहीं पड़ा। पॉल कैडबरी ने अपनी डायरी में लिखा था—"जब हमलोग यह अनुभव करते हैं कि बाहर अनेक स्त्री-पुरुष और बच्चे अत्यधिक जनाकीर्ण गृहों में निवास कर रहे हैं, तब प्रथम दृष्टि में ही यह अन्तर्वर्ती रेलों की इतने बड़े पैमाने पर सजावट (जो वस्तुतः सुन्दर है) विरोधाभास उत्पन्न करता है। इसे देखकर मुझे तो यह बात ध्यान में आई कि विश्व का प्रत्येक सुन्दर भवन ऐसी परिस्थिति में ही निर्मित हुआ था।" किन्तु मिल्ड्रेड क्रीक ने लिखा था—"मुझे तो ऐसा प्रतीत हुआ कि उपासना के रूप में ही इसकी कल्पना की गई होगी। नैराश्य एवं विनाश के नरक के बाद एक ऐसा समय आया होगा, जब समस्त कारीगरी एवं निपुणता 'सुन्दर' के सृजन में लगी होगी······ मास्को की जनता का गर्व उचित है······इसे देखते समय हमलोगों के चारों ओर लोगों की भीड़ लग जाती थी, जो हमलोगों को देखने के लिये नहीं, वरन् हमलोगों के पथ-प्रदर्शकों की बातें सुनने के लिये एकत्र हो जाते थे।"

उस दिन लंच में हमलोगों को देर हो गई। फिर भी भोजन के पश्चात् हमलोग रूसस्थित भारतीय राजदूत सर सर्वपल्ली राधाकृष्णन् से भेंट करने गये। इस बार भी दुभाषिये हमलोगों के साथ नहीं थे। हमलोग लन्दन में उनसे दो अवसरों पर मिल चुके थे। उस समय उन्होंने गर्मी के ६ महीनों के बीच मास्को में भेंट करने के लिये हमलोगों को आमंत्रित भी किया था। वे 'ऑल सोल्स कालेज' के 'फेलो' और ऑक्सफोर्ड में 'प्राच्य धर्म एवं नीति शास्त्र' के प्रोफेसर हैं। वे जाड़े के ६ महीने ऑक्सफोर्ड में ही बिताया करते थे और 'क्रिसमस' के अवसर पर 'भारत सरकार' को अपनी रिपोर्ट देने के लिये जाया करते थे (हाल ही में डॉ॰ राधाकृष्णन् भारत-सरकार के उपराष्ट्र-पति निर्वाचित हुए हैं)। अंगरजों द्वारा राष्ट्रवादी चीन के प्रतिनिधि के पक्ष में मतदान दिये जाने के बाद और हमलोगों के इंगलैण्ड से प्रस्थान करने के ठीक पूर्व उन्होंने जेनेवा में साम्यवादी चीन के प्रतिनिधि के चुनाव के पक्ष में एक स्मरणीय भाषण दिया था। यह चुनाव 'संयुक्तराष्ट्र-संघ' की 'शिक्षा-विज्ञान-संस्कृति परिषद्' (यूनेस्को) के लिये हुआ था।

हमलोगों को इस भेंट से बड़ी प्रेरणा मिली। डॉ॰ राधाकृष्णन् ने हमलोगों की यात्रा और विचारदृष्टि के औचित्य के प्रति तथा हमलोगों के प्रयत्नों के संबंध में अत्यधिक व्यावहारिकता, बोधमयता एवं आशावादिता का परिचय दिया। उन्होंने रूसी लोगों को और अच्छी तरह समझने में

हमारी सहायता की तथा उनके उन कार्यों के लिये खेद प्रकट किया, जिन्हें हमलोग अनुचित मानते हैं।

इस भेंट के पश्चात् हमलोग होटल वापस आये और अपने दुभाषियों के साथ बैपतिस्ट चर्च के लिये रवाना हुए (मास्को में यह केवल एक ही है)। वहाँ पर हमलोगों को ६ बजे (सन्ध्या) कुछ बैपतिस्ट मंत्रियों से मिलना था और एक घंटा बाद उनलोगों की मंगलवार की नियमित सायंकालीन उपासना में भाग भी लेना था।

●

चतुर्थ अध्याय

चर्चों के दर्शन

बैपतिस्ट नेताओं के निमंत्रण के फल-स्वरूप हमलोग उनके मास्कोस्थित चर्च में गये और संध्या का समय वहीं व्यतीत किया। यह हमलोगों की यात्रा के सर्वाधिक स्मरणीय प्रसंगों में से है। हमलोग तो वहाँ ६ बजे पहुँचे, किन्तु इसके पूर्व ही वहाँ भीड़ होने लगी थी।

हमलोग सर्वप्रथम चर्च से संयुक्त एक छोटे परिधान-गृह में एकत्र हुए। वहाँ पर हमलोगों का हार्दिक स्वागत किया गया। तदुपरान्त हमलोग एक घंटे तक शान्तिवाद और डुखोबोर्स आदि के विषय में वार्तालाप करते रहे। लगभग ५३ वर्ष पूर्व डुखोबोर्स लोगों ने काउन्ट टॉलसटाय एवं अमेरिका तथा कनाडा के क्वेकर लोगों की सहायता से कैनेडा में मनोवांछित धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त की थी। उनलोगों ने अपने चर्च के संगठन एवं क्रमिक विलयन के सम्बन्ध में भी कुछ बातें बतलाईं। इन विलयनों के कारण ही 'बैपतिस्ट इवैन्जेलिकल्स आन्दोलन' को वर्त्तमान रूप प्राप्त हुआ था। इनमें एक विलयन ने तो एक धार्मिक सम्प्रदाय के अधिकांश सदस्यों को संयोगित कर लिया था। हमलोगों ने सुना था कि यह सम्प्रदाय १६ वीं सदी में विद्यमान था और इसके विचार एवं कार्य क्वेकर लोगों के समान ही थे। हमलोगों ने शान्ति-समिति के साथ हुए अपने प्रथम सम्मेलन में ही बैपतिस्ट प्रतिनिधियों को अपनी (क्वेकर लोगों की) शान्तिवादी घोषणाओं का बड़े जोर से विरोध करते देखा था। इस समय हमलोगों को यह भी ज्ञात हुआ कि सोवियत क्रान्ति के कुछ वर्षों के बाद ही उनलोगों के चर्च के एक भाग का परम्परागत शान्तिवाद त्याग दिया गया था।

इस अवसर पर तथा बैपतिस्ट नेताओं के संग बाद में होनेवाले सम्मेलनों में हमलोगों ने उनलोगों के वर्त्तमान आन्दोलन के सम्बन्ध में कुछ सूचनायें प्राप्त कीं। हमलोगों को ज्ञात हुआ कि इस समय सोवियत संघ में ४००० बैपतिस्ट चर्च हैं और उनमें सबसे बड़ा कीव में है। सोवियत संघ में प्रबलतम प्रोटेस्टेन्ट

सम्प्रदाय 'बैपतिस्ट 'इवैन्जेलिकल्स' लोगों का ही है। समस्त चर्च में इस समय ४०,००,०० सदस्य और करीब ३०,००,००० अनुयायी अथवा चच के मित्र हैं। चर्च में 'रविवार की पाठशाला' की व्यवस्था नहीं है और न किशोर लोगों को धार्मिक शिक्षा देने के लिये चर्च की उपासना के सिवा कोई अलग प्रबन्ध ही है। हमारे मेजबानों ने बतलाया कि घर पर अपने बच्चों को धर्म की शिक्षा देना तो माँ-बाप का ही कर्त्तव्य है, क्योंकि बच्चों के लिये अलग व्यवस्था करने से चर्च में फूट पड़ने की संभावना रहती है। हमलोगों ने भी महसूस किया कि यह उस परिस्थिति की युक्तियुक्त व्याख्या है जिसपर उनलोगों का कोई नियंत्रण नहीं है। अल्पवयस्कों के घर पर अथवा चर्च की नियमित उपासना के सिवा अन्य प्रकार से धार्मिक शिक्षा देना अवैध है (परिशिष्ट 'दो' देखिये) और इस तथ्य को हमसे छिपाने की कोई चेष्टा नहीं की गई।

हमलोगों को यह भी मालूम हुआ कि चर्च में कोई सवैतनिक पादरी नहीं हैं और जिन-जिन लोगों से हमलोगों की भेंट हुई है, वे सभी सामान्य धर्मोपदेशक हे। इसी प्रकार चर्च के अधिकारियों के पुनर्निर्वाचन के लिये भी कोई मशीनरी नहीं है। फलस्वरूप वे लोग अनिश्चित काल तक पदारूढ़ रहते हैं। मास्कोचर्च के ही सदस्यों की संख्या ४००० और इसमें उपस्थित होनेवालों की संख्या इससे भी अधिक है। किन्तु चर्च में १५०० व्यक्ति ही एक बार बैठ सकते हैं। इसलिये प्रति सप्ताह ५ उपासनायें होती हैं। उनमें काफी लोग उपस्थित होते हैं और रविवार के दिन तो लगभग २००० की भीड़ इकट्ठी हो जाती है। जब हमलोगों ने यह पूछा कि १९५१ ई० के प्रथम ६ महीनों में कितने व्यक्तियों ने बपतिस्मा और चर्च की सदस्यता के लिये आवेदन पत्र दिया है, तब हमलोगों को बतलाया गया कि ३५० से अधिक ही आवेदन-पत्र आये हे, जिनमें एक तिहाई अल्पवयस्कों के है। इनमें आधे से कम तो स्वीकृत भी किये जा चुके हैं और शेष अधिकारियों द्वारा परीक्षा की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

इस वार्त्तालाप के बीच बैपतिस्ट यूनियन के अध्यक्ष तथा हमारे पूर्व परिचित श्री झिडकोव ने यह अभिलाषा प्रकट की कि उपासना के बीच हमलोगों में से कोई बोलें। यह कार्य लेसली मेटकाफ के द्वारा किया गया।

७ बजे के बाद शीघ्र ही हमलोग पंक्तिबद्ध होकर चर्च में गये। वहाँ उपासना प्रारम्भ हो गई थी और १५०० सीटों में एक भी खाली नहीं थी। लगभग ३०० व्यक्ति तो चर्च के अन्तर्वर्त्ती रास्तों पर, गैलरियों में सीढ़ियों पर और पीछे की ओर खड़े थे। स्त्रियों की संख्या अधिक थी

जिनमें अधिकांश प्रौढ़ा थीं। नवयुवतियाँ और मध्यवयस्कायें—उनकी उपस्थिति कुल उपस्थिति के पंचमांश के लगभग थीं। पुरुष भी लगभग इसी अनुपात में थे। हमलोगों को पता चला कि अनेक नियमित सदस्य रात के काम पर गये हुए हैं और रविवार के सिवा अन्य दिनों में वे नहीं आ सकते। कभी-कभी हमलोगों से यह भी कहा गया है कि हमलोगों पर प्रभाव डालने के लिये अधिकारियों की आज्ञा से चर्च को इस प्रकार भरा गया था। अगर यह सत्य हो तो काम चतुराई से सम्पन्न नहीं किया गया। हमलोगों पर तो इससे कहीं अधिक प्रभाव तब पड़ा होता जब इसमें और अधिक अल्पवयस्क भाग लेते और इसमें भिन्न-भिन्न प्रकार के लोगों का प्रतिनिधित्व होता। श्रीमती केली ने इधर लन्दन के सायंकालीन पत्र 'स्टार' में कतिपय निबन्ध लिखकर सोवियत संघ के वर्तमान जनाकीर्ण गिरजाघरों पर टीका-टिप्पणी की है। वे मास्को स्थित ब्रिटिश राजदूत की सहधर्मिणी हैं और मास्को में वर्षोंतक अपने पति के साथ रहकर उन्होंने वहाँ का पर्यवेक्षण किया है।

उपासना अत्यन्त सरल एवं भक्तिपूर्ण थी। प्रार्थनाओं और भाषणों के बीच सामूहिक रूप से भजन गाये गये। भजन सुपरिचित थे और उनके स्वर को भी हममें से कुछ व्यक्ति पहचानते थे। स्तुतियाँ एक सुशिक्षित भजन-मण्डली द्वारा गाई गईं। निश्चयतः यह प्रदर्शन नहीं वरन् अत्यन्त भावपूर्ण उपासना थी। हमलोग उपदेश-मंच पर बैठे हुए थे और धर्मसभा के वयोवृद्ध सदस्यों की ध्यानमग्न मुखाकृति देखकर यह समझ सकते थे कि वर्षों की यातना के बाद अब स्वतंत्रतापूर्वक ईश्वरोपासना उनके लिये क्या अर्थ रखती है।

कुछ देर पश्चात् लेसली मेटकाफ भाषण मंच पर गये और करीब दस मिनट तक उन्होंने रूसी भाषा में भाषण दिया। प्रधान दुभाषिये उनकी बगल में खड़े थे और जब कभी वे किसी शब्द का उच्चारण करने में लड़खड़ाते तब ये झट संकेत कर देते थे। वस्तुतः उनके भाषण-स्वातन्त्र्य को नियंत्रित करने या उसपर प्रतिबन्ध लगाने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया। उन्होंने जो कुछ कहा उसका सारांश यह था —

"सोवियत संघ में आने से हमलोगों को प्रसन्नता हुई है। हमलोग 'सोवियत शान्ति समिति' के सद्भावपूर्ण निमन्त्रण एवं आपलोगों के हार्दिक स्वागत के लिये अत्यन्त कृतज्ञ हैं। और, हम सभी व्यक्ति जिस 'सोसायटी ऑव फ्रेन्ड्स' के सदस्य हैं, वह लोगों से सीधे एवं वैयक्तिक सम्बन्ध की

स्थापना को सर्वाधिक महत्व देता है। हमलोग इस अवसर पर आपलोगों से और आपके देशवासियों से अपने वैयक्तिक सम्बन्ध स्थापित होने के कारण अत्यन्त आनन्द का अनुभव कर रहे हैं। हमलोगों के आगमन के पीछे एक ही महदुद्देश्य है और वह है विश्व के समस्त राष्ट्रों के बीच वास्तविक शांति-सहयोग की संभावना को यथासंभव दृढ़ करना और इसी तरह सोवियत देश और हमारे अपने देश के संबंध को दृढ़ करना। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिये हमलोग आपलोगों के चर्च के अधिकारियों से उन सभी पारस्परिक समस्याओं पर मित्रता एवं स्पष्टवादिता से विचार-विमर्श करना चाहते हैं, जो हमलोगों के सामने युद्ध की आशंका निर्मूल करने और वास्तविक शान्ति को सुदृढ़ करने के मार्ग में उपस्थित होती हैं। हमलोगों को पूर्ण विश्वास है कि इस यात्रा से सोवियत संघ और रूसी जनता के सम्बन्ध में हमलोगों के अन्तर्ज्ञान की अभिवृद्धि होगी। हमलोग यह भी आशा करते हैं कि इससे हमलोगों के देश के सम्बन्ध में आपलोगों का भी अन्तर्ज्ञान पुष्टतर होगा। हमलोग आपलोगों के उदार स्वागत के लिये पुनः हार्दिक धन्यवाद देते हैं।"

तब उन्होंने समस्त लोगों के प्रति सद्भावना का सन्देश पढ़ा, जिसे गत वर्ष ब्रिटिश क्वेकर लोगों ने अंगरेजी, फ्रांसीसी, जर्मन और रूसी भाषाओं में प्रकाशित करवाया था (और जो इस पुस्तक के अग्रभाग में मुद्रित भी है)। तदुपरान्त उन्होंने भाषण-मंच पर 'रूसी बाइबिल' से एफेसियन्स के पत्र के कुछ पदों को (अध्याय ३, १४-२१) पढ़कर सुनाया। 'ईश्वर प्रेम है' इस वाक्य की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए उन्होंने वक्तृता समाप्त की। यह वाक्य हमलोगों के पीछे चर्च की खिड़की पर लिखा हुआ था। अन्त में उन्होंने सभी लोगों को कुछ देर मौन रहकर खड़ा होने के लिये अनुरोध किया। सोरोकिन ने धर्मसभा के लोगों को बतलाया कि मौन क्वेकर लोगों की उपासना का महत्वपूर्ण अंग है। पॉल कैडबरी ने उस रात को अपनी डायरी में लिखा था--

"इसके पूर्व मुझे सर्वव्याप्त ईश्वर की उपस्थिति का इतना निकट ज्ञान कभी नहीं हुआ था और न भविष्य में फिर कभी होने की आशा है। यह एक ऐसा क्षण था जिसका असर हम सभी पर अवश्य पड़ा होगा।"

"गौड बी विद् यू टिल वी मीट अगेन" (पुनर्मिलन के पूर्व तक ईश्वर तुम्हारे साथ रहें।) के गान के साथ उपासना समाप्त हुई। यह भजन रूसी अनुवाद में गाया गया, किन्तु, इसका स्वर परिचित था और हमलोग भी इसमें सम्मिलित हो सके। इसे गाते समय धर्मसभा की सभी महिलाओं ने

अपनी-अपनी रूमालों को निकालकर हमारी ओर हिलाया। आशीर्वाद दिये जाने के बाद भी कुछ छोटे बालक अपनी-अपनी रूमालों को हिला रहे थे। अतः हमलोगों ने अनुभव किया कि उनलोगों के पास अवश्य जाना चाहिये। क्वेकर लोग प्रायः भावुक नहीं होते, किन्तु रूसी लोग तो भावुक अवश्य होते हैं। फिर भी जब वे लोग हमलोगों के हाथों को स्नेह से मसलते थे और चुम्बन लेते थे, तब हममें से कितनों का हृदय आत्मग्लानि से भर उठता था और आँखें सजल हो उठती थीं। हमलोगों का आलिंगन करते समय उनमें से अधिकांश व्यक्तियों ने केवल "मिर" कहा। (यह शब्द शान्ति का रूसी पर्याय है) और इस निश्छलता से यह शब्द कहा कि यह कल्पना करना असंभव हो जाता है कि ये लोग अभिनय मात्र कर रहे थे या कि उनको शान्ति के आवेदन पत्रों पर हस्ताक्षर करने के लिये बाध्य किया गया है जैसा कुछ पश्चिमीय समाचारपत्रों में हमें इस संबध में कहा गया था। कम-से-कम उनलोगों के लिये (जो वहाँ पर वर्त्तमान थे) यह वास्तविक था और उनलोगों ने हमारा स्वागत हमारे धर्म के कारण भी किया और इसलिये भी कि हम शांति का संदेश लेकर आये थे। हमलोग उनके बीच से बड़ी कठिनाई से बाहर हुए। उस समय हमलोगों की भावनायें आलोड़ित हो चुकी थीं और हमलोग अत्यन्त द्रवित हो उठे थे।

धर्मसभा के पूर्णतः तिरोधान हो जाने के उपरान्त हमलोग चर्च वापस आये और भाषण-मंच पर रक्खे गये एक टेबुल पर पादरियों के संग भोजन किया। समस्त संसार के चर्च-स्वयंसेवकों की रीति के अनुसार यहाँ भी चर्च की महिलाओं ने अत्यन्त रुचिकर भोजन बनाया था। भोज्य सामग्रियों में बड़ी स्ट्रावबेरिज, मलाई, उत्तम केक, स्ट्राबेरी का मुरब्बा जो शीशे की तश्तरियों में से चम्मच द्वारा निकाल-निकाल कर नीबूवाली चाय के साथ रूसी ढंग से खाया जाता था और कुछ बढ़ियाँ चॉकलेटें थीं। भावना से क्षुधा तीव्रतर हो जाती है। अतः, हमलोगों ने भी उनलोगों के आतिथ्य से उचित लाभ उठाया। भोजनोपरान्त अध्यक्ष ने अनेक शान्ति-संदेशों को पढ़कर सुनाया, जिन्हें उन्होंने समय-समय पर इंगलैंड एवं अन्य देशों के अपने बंधु बैपतिस्टों के पास भेजा था। इन सन्देशों में एक अपील संसार के समस्त बैपतिस्टों के नाम भी थी जिसमें यह अपील की गई थी कि वे "कोरिया में संयुक्त-राज्य के आक्रमण" का खुलकर विरोध करें। साथ ही समस्त चर्चों से शान्ति की शिक्षा देने के लिये तथा समस्त अनुयायियों से शान्ति के लिये सच्चे हृदय से प्रार्थना करने और "शान्ति के रक्षकों" के आन्दोलन की सहायता करने के लिये अनुरोध किया गया था। उनलोगों ने यह शिकायत की कि ब्रिटिश और अमेरिकी बैपतिस्टों ने उनकी बातों पर नहीं के

बराबर अथवा बिलकुल ही नहीं ध्यान दिया है। उनलोगों की शिकायत में चिन्ता तो थी किन्तु कटुता नहीं थी।

इसके बाद कुछ देर तक मौन का साम्राज्य रहा। इस बीच लेसली और जेरल्ड ने एक अत्यन्त शीघ्र गुप्त वार्त्तालाप किया जिसका सार यों है—"इस भ्रम को दूर करना हमलोगों का आवश्यक कर्त्तव्य है, किन्तु उनलोगों के संग उपासना और भोजन करने के उपरान्त तथा उनलोगों के उदार स्वागत को दृष्टिगत रखते हुए अप्रिय बनना भी उचित नहीं प्रतीत होता। तो भी प्रेम में सत्य-भाषण के आधार पर हमलोगों को उत्तर अवश्य देना चाहिये।" अतः इस निश्चय के अनुसार जेरल्ड बेली ने भ्रम का निराकरण किया। उन्होंने बतलाया कि इन सन्देशों को पानेवाले व्यक्तियों को यह प्रतीत होता था कि जो धार्मिक दल या शान्ति-आन्दोलन युद्ध में केवल एक ह पक्ष के राजनैतिक उद्देश्यों के साथ अभिन्नता दिखलाता है, वह शान्ति के लिये वास्तविक प्रयत्न नहीं कर सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि 'शान्ति के रक्षकों (हितैषियों)' का सोवियत सरकार की नीति से गहरा लगाव और अव्यक्त रूप से उनका यह मान लेना कि भिन्न विचार रखनेवाले अन्य सभी लोग आक्रमणकारी हैं, यही कारण क्वेकर लोगों के लिये इस आन्दोलन की सहायता कर सकने में कठिनाई बना। उन्होंने यह भी पूछा कि उनलोगों ने राजनीतिक शान्ति-आन्दोलनों की विवाद-ग्रस्त घोषणाओं को एक किनारे कर अपनी अन्तर्भूत आध्यात्मिक एकता के आधार पर पश्चिमीय देशों के अपने बंधु बैपतिस्टों के साथ क्यों नहीं सम्बन्ध स्थापित किया? इस प्रश्न से उनलोगों में कुछ घबराहट दीख पड़ी और कुछ देर तक बेसुरी शान्ति व्याप्त रही। तदुपरान्त अध्यक्ष महोदय ने किंचित् कारुणिक शब्दों में उत्तर दिया कि राजनीति के सम्बन्ध में उनलोगों का ज्ञान अत्यल्प है और कार्य में विश्वास ही उनलोगों के शान्ति-प्रयास का पथ-प्रदर्शक है। हमलोगों को यह विश्वास हो गया कि शान्ति के लिये उनलोगों की अभीप्सा उतनी ही वास्तविक थी जितनी हमलोगों की। अन्यान्य देशों के बन्धु बैपतिस्टों के संग सच्ची मैत्री स्थापित करने की उन लोगों की आकांक्षा के पीछे भी गहराई की भावना थी। हमलोगों के प्रश्नों और स्पष्टीकरणों से उन्हें पाश्चात्य देशों के अपने ईसाई बन्धुओं की कठिनाइयों को भलीभाँति समझने में सहायता मिली। पूर्व और पश्चिम के चर्चों में सहकारिता का अभाव इन (पश्चिमीय) देशों में भी अत्यन्त चिन्ता का विषय है। (यह जानकर हमलोग प्रसन्न हैं कि हमलोगों की यात्रा के फलस्वरूप ग्रेट-ब्रिटेन के बैपतिस्ट यूनियन और रूसी बैपतिस्ट (इवैन्जेलिकल्स) लोगों में अब कुछ पत्राचार होने लगा है।)

रात्रि-भोजन के पश्चात् हमलोगों को फिर एक बार परिधान-गृह में बुलाया

गया। वहाँ पर हमलोगों को भिन्न-भिन्न आकार के रँगे हुए बक्स दिये गये, जिनके ढक्कनों पर क्रेमलिन का चित्र अंकित था। ये कलाकृतियाँ पलेख ग्राम के विख्यात कारीगरों द्वारा निर्मित की गई थीं। चर्च की महिलाओं ने भी दल के महिला सदस्याओं को पुष्पगुच्छ भेंट किये। इस प्रकार एक स्मरणीय अवसर का अन्त हुआ।

बुधवार, १८ जुलाई को हमलोग सबेरे उठे। ७-१५ बजे, १५ मिनट तक हमलोगों का पारस्परिक मिलन होता रहा। तब हमलोग ८ बजे ३ मोटरगाड़ियों में बैठकर प्रसिद्ध ट्राटस्की मठ को देखने के लिये रवाना हुए। यह मास्को से ५० मील दूर जैगोर्स्क में स्थित था। १५ वीं शताब्दी में सेंट सर्जियस ने इसकी स्थापना की थी। सड़क पर सवारियों की भरमार थी। हमलोगों को ज्ञात हुआ कि सेंट सर्जियस के वार्षिक त्योहार में सम्मिलित होने की इच्छा रखनेवालों को लाने के लिये मास्को से यात्री-गाड़ियाँ खुली हुई हैं। हमलोग करीब ६-५० मिनट पर जब वहाँ पहुँचे तब पहले से ही एक जनसमूह एकत्रित हो गया था, जिसमें अधिकांश किसान और उनमें भी अधिकाधिक महिलायें थीं। जो लोग इस समय आस-पास के खेतों में काम कर रहे थे वे लोग भी इसमें सम्मिलित होनेवाले थे। अनुमान किया गया था कि इस त्योहार में ३०,००० व्यक्ति उपस्थित होंगे। यह एक द्वितीय प्रकाशमय दिवस था। समस्त जन-समूह पैट्रिआर्क, आर्चबिशप और चर्च के अन्य बड़े पादरियों के जुलूस की प्रतीक्षा कर रहा था। अलंकृत एवं विभिन्न रंगों के गुम्बजों सहित विभिन्न प्रकार के ११ चर्चों की पृष्ठभूमि में यह भी एक विलक्षण दृश्य प्रतीत होता था।

हमलोग पंक्तिबद्ध होकर 'कैथेड्रल ऑव एसम्पशन' में गये। वहाँ खड़े हुए लोगों के बीच से अत्यन्त कठिनतापूर्वक राह बनाते हुए हमलोग धार्मिक चित्रित पट की दाहिनी ओर एक छोटे चौखुटे बक्स अथवा 'प्रार्थनामंच' के पास गये (खड़े हुए लोगों में ५००० से भी अधिक लोग तो चर्च के अन्दर ही भरे हुए थे। कहीं भी स्थान रिक्त नहीं था)। यहाँ से हमलोग धूपदानी दिखलानेवाले, भजन गानेवाले और उच्च शास्त्रीय अनुष्ठान करनेवाले पादरियों को भलीभाँति देख सकते थे। क्वेकर लोगों की उपासना सभा की नीरवता इस प्रकार की उपासना के लिये कोई प्रशिक्षण नहीं है और दर्शकों के रूप में हमलोगों का उपासकों के संग पूर्णतः एक हो जाना भी कठिन था, क्योंकि उनमें से अधिकांश पूरे तीन घंटों तक खड़े रहने के लिये कटिबद्ध थे (ऑर्थोडॉक्स (सनातन) चर्चों में सीटों की व्यवस्था नहीं होती)। द्वार के समीप के लोगों का अन्दर से बाहर और बाहर से अन्दर आवागमन जारी था। जब वे लोग अन्दर आते तब

एक या दो मोमबत्तियाँ खरीद लेते थे थे और एक के बाद दूसरे के हाथों से बढ़वाकर उन्हें चर्च के अग्रभाग में पहुँचा देते थे, जहाँ उन मोमबत्तियों को जलाकर आधारों पर रक्खा जाता था। वे लोग द्रव्य भी इसी प्रकार हाथों-हाथ पादरीलोगों तक पहुँचा रहे थे। हमलोग किसी (एक) किसान स्त्री को अपने सामने की स्त्री को थपथपा कर कुछ द्रव्य देते देखते, यह किसी दूसरे व्यक्ति को देती और इस प्रकार यह क्रम तबतक चलता जबतक वह द्रव्य किसी पुजारी या महन्त के हाथ में नहीं पहुँच जाता। जब पादरी लोगों या कीर्त्तन-मण्डली के द्वारा भजन गाया जाता था, तब सभा के लोग साथ नहीं देते थे। किन्तु हमलोगों के ठीक नीचे एक श्वेत बालों वाली बूढ़ी स्त्री थी, जो बराबर गाती जाती थी। इस कारण उसके आस-पास के व्यक्ति क्रुद्ध हो-होकर उसे चुप होने के लिये धकियाते और ढकेलते थे, परन्तु परिणाम कुछ नहीं होता था। लेसली मेटकाफ, जो कुछ अधिक लम्बे हैं, भजन-मंच पर बैठे-बैठे यह दृश्य देख रहे थे और उस वृद्धा को चुप कराने के लिये उनसे बारबार अधिकार प्रयोग करने का अनुरोध किया जा रहा था, किन्तु वे किसी दूसरी बात में ध्यानमग्न हो गये।

धार्मिक विधि सम्पन्न करनेवाले पादरियों में समस्त रूस, जॉर्जिया रूमानिया एवं बल्गेरिया के पैट्रीआर्क सम्मिलित थे। उनके भड़कीले लबादे महिलाओं के साधारण परिधान और उनके श्वेत उत्तरीय के सम्मुख असामञ्जस्य दिखलाते थे। वे लोग श्रद्धा एवं धैर्य के साथ धार्मिक भजनों को सुनतीं अथवा स्थान रहने पर भूमि पर सिर झुकातीं। मोमबत्तियों के बंडल को सामने के पादरी तक हाथों-हाथ पहुँचाना तो निरन्तर जारी रहता। चर्च का अग्रभाग बड़ी-बड़ी मोमबत्तियों द्वारा प्रकाशित था और एक व्यक्ति एक छोटे टेबुल को लेकर एक बत्ती के बाद दूसरी बत्ती के पास जा रहा था जहाँ बत्ती के लौ को ठीक करने की आवश्यकता थी। वह अपनी कृषक की कमीज पर सुन्दर बूटेदार कोट पहने था। रूसी उपन्यासकारों ने अपनी छोटी कहानियों में इस कोटि के पात्रों का सजीव चित्रण किया है।

एक घंटे के बाद हमलोगों ने गिरजाघर से प्रस्थान किया। हमलोग इस उपासना-कार्य में सक्रिय भाग नहीं ले सके, केवल दर्शक ही बने रहे। तो भी यह एकाकी गान हमलोगों को मधुर प्रतीत हुआ और इसे हमलोगों ने एक महत्वपूर्ण वस्तु समझा कि सैनिक-वृत्ति-सम्पन्न, अनीश्वरवादी सोवियत संघ की राजधानी में भी श्रद्धालुओं की इतनी बड़ी भीड़ एकत्र हो सकती है।

हमलोगों को जलपान करने के लिये अथवा (धार्मिक विद्यालय) में निमन्त्रित किया गया था। यहाँ पर पुजारी लोगों को चर्च की शिक्षा दी जाती है। वहाँ एक कमरे में प्राध्यापक और उनके सहकर्मियों ने हमलोगों की अभ्यर्थना की। कमरे की छत में बेलबूटे के चित्र बने हुए थे जो पीटर महान् के जीवन संबंधी वेजवुड चाइना की वृहत् कलाकृतियों के समान दीख पड़ते थे।

जलपान की सामग्री छोटे-छोटे टेबुलों पर रक्खी गई। हमलोगों ने बिना शीघ्रता किये बड़े मजे में भोजन किया। यहीं पर एक भाषा-तत्वज्ञ और प्राणि-विज्ञानवेत्ता से हमलोगों की भेंट हुई। उन्होंने ४० वर्ष पूर्व के उन दिनों का सहर्ष स्मरण किया, जो उन्होंने ट्रिनिटी कालेज में व्यतीत किये थे। उन्होंने ब्रिटेन के आधुनिक जीवन एवं घटनाओं के संबंध में पूछ-ताछ की। यहाँ पर हमलोगों ने मैत्रीपूर्ण ढंग से इस बात का ऊहापोह किया कि (आर्थोडाक्सिज्म) 'सनातनवाद' और कैकरवाद में से कौन 'प्राथमिक ईसाई धर्म' को अधिक स्पष्ट रूप से चरितार्थ करता है। हमलोगों ने नवयुवक पुजारियों की सतत वृद्धि के सम्बन्ध में भी वार्त्तालाप किया। इनमें कितने उन परिवारों से आये हुए थे, जो परम्परा के अनुसार सनातन चर्च के साथ संयुक्त थे। चर्च भी नवयुवकों को आकर्षित कर सकता है अथवा करता है—इसका प्रत्यक्ष अनुभव भी हमलोगों को हुआ। हमलोगों ने मठों अथवा चर्च के विभिन्न भवनों में ऐसे किशोरावस्थावाले साधुओं को अपनी आँखों देखा, जिनकी अभी मसें ही भींग रही थीं। हमलोगों को ज्ञात हुआ कि जहाँ पर आजीवन ब्रह्मचर्य का नियम नहीं है वहाँ पर पुजारी-वृत्ति अपनानेवाले नवयुवकों की संख्या आवश्यकता से करीब दुगुनी अधिक हो गई है। परन्तु ऐसे लोगों की संख्या पर्याप्त नहीं है जो पूर्ण साधु होना चाहते हैं और चर्च के उच्च पदों पर नियुक्ति अन्ततोगत्वा इन्हीं साधुओं में से होती है।

जलपान के बाद हमलोग एक छोटे चर्च में गये। यहाँ भी भीड़ थी और बहिर्भाग में एक जन-समूह 'क्यू' में खड़ा होकर यथाशीघ्र प्रवेश करने की प्रतीक्षा कर रहा था। पूजा-विधि सम्पन्न करानेवाला पुजारी वेदी पर रक्खे नोटों को धीरे-धीरे एकत्र कर रहा था। उसने अथवा उसकी धर्म-सभा ने हमलोगों की ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया। जिस समय हमलोगों के पथ-प्रदर्शक पादरी ने कुछ प्राचीन प्रतिमाओं (आइकोन) के सम्बन्ध में एक संक्षिप्त वक्तव्य दिया उस समय हमलोगों की परेशानी और बढ़ गई। इन चर्चों की प्रतिमाओं एवं चित्रकारियों को ऐतिहासिक (धार्मिक अथवा धर्म

निरपेक्ष) स्मारकों के पुनरुद्धार के अन्तर्गत अत्यधिक कौशल एवं सावधानी के साथ पूर्वावस्था में लाने का प्रयत्न किया जा रहा है। सोवियत सरकार इस कार्य में निश्चित रूप से उत्कृष्ट साधनों का उपयोग और अत्यधिक व्यय कर रही है। जैगोर्स्क से प्रस्थान करने के पूर्व हमलोगों को वह संग्रहालय दिखलाया गया जहाँ पर मठ की अमूल्य निधियाँ और उसका अतीत गौरव विद्यमान है। यह मठ पहले एक सैनिक दुर्ग था और हमलोग उस समय के तोपों को बाहरी दीवालों पर देख चुके थे। १७ वीं शताब्दी में जब पोलैंडवासियों ने इसपर आक्रमण किया था तब यह अभेद्य प्रमाणित हुआ था। तदुपरान्त हमलोगों ने सुन्दर बेल बूटे, रत्नजटित क्रूस एवं परिधान तथा आश्चर्यजनक सुन्दर जड़ाऊ काम देखे। हमलोगों को यह सब एक अत्यन्त सुयोग्य महिला द्वारा दिखलाया गया, जो उस विद्यालय में अध्यापिका थीं और बहुत अच्छी अँगरेजी बोलती थीं। इसी बीच पैट्रीआर्क और चर्च के अन्य अधिकारियों के जुलूस ने बृहत् गिरजाघर से प्रस्थान किया और उस स्थल से होकर गुजरा जहाँ दर्शकों की अपार भीड़ पुलिस दल की सतर्कता से सुव्यवस्थित खड़ी थी। हमलोग पीछे ही खड़े रहे और फलस्वरूप हमलोगों में से कुछ व्यक्तियों ने एक साधारण किन्तु उल्लेखनीय घटना देखी। एक नाटी बूढ़ी स्त्री, जो जुलूस को भलीभाँति देखने के लिये दृढ़-संकल्प थी, प्रतीक्षकों के बीच उचक-उचककर देखती और सामने आ-आकर खड़ी हो जाती थी, जिससे वहाँ किसी और देर से खड़े व्यक्ति को भी देखने में बाधा पहुँचती थी। यद्यपि वह अत्यन्त कष्टकर सिद्ध हो रही थी, तथापि पुलिस के लोग उसके साथ अत्यन्त धैर्य पूर्वक पेश आ रहे थे। उनलोगों ने उसे अनेक बार नम्रतापूर्वक पीछे भी हटाया। भीड़ और पुलिस के बीच का सम्बन्ध अच्छा था।

इस बार भी प्रत्येक स्थान पर हमलोगों का चित्र लिया गया। मास्को लौटते समय हमलोगों ने अपने दुभाषियों के संग सभी प्रकार की बातों के सम्बन्ध में वार्त्तालाप किया (अबतक उन लोगों से हमलोगों की अत्यन्त घनिष्ठता हो गई थी)। वार्त्तालाप के विषय थे आलोचनात्मक शक्तियों के उपयोग के लिये बालकों की शिक्षा, काम करनेवाली माताएँ, धार्मिक शिक्षा, संयुक्त-राज्य-अमेरिका का जीवन-स्तर, सोवियत संघ के राजनीतिक बन्दी, अधिकारियों की आज्ञा के बिना उत्तरी कोरिया जाने के अपराध में मोनिका फेल्टन की पदच्युति और अपनी सरकार की आलोचना करने का सोवियत नागरिकों का अधिकार। निश्चय ह हमलोगों के दृष्टिकोण में बहुत अन्तर था, तो भी स्पष्टोक्ति के कारण किसी भी प्रकार की दुर्भावना नहीं उत्पन्न हुई।

शाम को हमलोग सिनेमा देखने गये। रूसवासी अपनी फिल्मों को गंभीर देखना चाहते हैं। उनलोगों का विचार है कि अमेरिका के अधिकांश फिल्म अवनति की ओर ले जानेवाले हैं। उन लोगों ने इस फिल्म 'दी कैवलियर ऑव दी गोल्डेन स्टार' को अवश्य ही पसन्द किया। इस फिल्म में एक रूसी युवक की कथा थी, जिसने युद्ध से अपने सामूहिक कृषि-फार्म में वापस आकर एक जल विद्युत्-शक्ति-केन्द्र स्थापित करने का दृढ़ संकल्प किया और समाज के वयोवृद्ध एवं अनुदार व्यक्तियों के विरोध के बावजूद उसने अपना संकल्प पूरा किया। रंग असाधारण रूप से अच्छा था। फिल्म में रूसी ग्राम, कृषि, मैदान और सुदूर पहाड़ियों के आश्चर्यजनक सुन्दर दृश्य थे। सुनने में आता है कि उनलोगों ने यह कला अगफा नामक जर्मन फर्म से सीखी थी और युद्धोपरान्त इसी फर्म की प्रणाली को ग्रहण किया था। सिनेमा हॉल छोटा था और उसमें कड़ी कुर्सियाँ सजाई हुई थीं। ८½ बजे रात में भी हॉल एकदम भरा हुआ था, यद्यपि वहाँ पर १२-३० बजे दिन से १२½ बजे रात तक दो-दो घंटे का खेल निरंतर जारी था। मास्को में ऐसे-ऐसे अनेक छोटे सिनेमा हैं, जिनमें कम-से-कम एक 'स्टीरिओस्कोपिक' फिल्मों को अवश्य दिखलाता है। हमलोगों ने इस सिनेमा के लिये टिकट तो कई बार कटाया था, किन्तु सम्मेलनों के बीच में पड़ते रहने के कारण देखने नहीं आ सके थे, क्योंकि हमलोगों की दृष्टि में सम्मेलन कहीं अधिक महत्वपूर्ण थे। अब 'कैवेलियर ऑव दी गोल्ड स्टार' के विषय में कुछ और! इस खेल के बीच हमलोगों को अपने दुभाषियों के अपने कार्य के प्रति सच्ची लगन का एक मनोरंजक उदाहरण प्राप्त हुआ। एक दुभाषिया कैथलीन लौन्सडेल के समीप बैठा अविराम अनुवाद करता जा रहा था। कथा में थोड़ा प्रेम-प्रसंग भी था और चित्र एक ऐसे विन्दु पर पहुँच चुका था कि उस समय अनुवाद की कोई आवश्यकता ही नहीं रह गई थी। किन्तु दुभाषिये ने ईमानदारी के साथ लौंसडेल के कानों के पास फुसफुसाकर यह कहना जारी रक्खा—"तुम मुझे बहुत प्रिय हो" और इस समय वे अत्यन्त कठिनता पूर्वक अपनी हँसी रोकने का प्रयत्न कर रही थीं। फिल्म के अन्तिम दृश्यों में जल-विद्युत् केन्द्र से उत्पन्न शक्ति के द्वारा ग्राम-ग्राम को आलोकित होते और स्तालिन के सम्मान में दिये गये भोज में उन सभी व्यक्तियों को सम्मिलित होते दिखलाया गया था, जिन्होंने इस साहसिक कार्य को सफल करने में सहयोग किया था। इन सभी दृश्यों का दर्शकों ने अत्यन्त उत्साहपूर्वक स्वागत किया। किन्तु हमलोगों ने अनुभव किया कि इस प्रकार का व्यवहार हमलोगों के आडम्बरप्रिय पाश्चात्य दर्शकों को अत्यन्त गँवारू प्रतीत होता। तो भी हमलोग इस फिल्म से अत्यन्त आनन्दित हुए।

●

पंचम अध्याय

प्रथम सप्ताह का अन्त

दूसरे दिन (वृहस्पतिवार, १६वीं जुलाई) प्रातःकाल हमलोगों को अवकाश था। इस समय हमलोगों ने पत्र लिखे, डायरियाँ भरीं, भविष्य के लिये वक्तव्य तैयार किये और अन्त में स्वेच्छापूर्वक विचरण के लिये बाहर गये। तुलनात्मक दृष्टि से विचार करने पर समान विस्तारवाले अन्य नगरों की अपेक्षा मास्को में दूकानों की कमी दीख पड़ी। यहाँ 'मल्टी स्टोर टाइप' की कुछ बड़ी दूकानें और अनेक छोटी दूकानें थीं। नवनिर्मित क्षेत्रों की गृहावलियों के पास कुछ 'वैगन टाइप' की दूकानें भी थीं। हमलोगों को ज्ञात हुआ कि ये बड़ी दूकानों द्वारा बाहर भेजी जाती हैं। 'डिपार्टमेन्ट स्टोर्स' में तो सदैव जमघट लगा रहता था। ११ बजे इन दूकानों के खुलने का समय है, किन्तु ११ बजने के पहले से ही लोग लम्बा 'क्यू' बनाकर खड़े रहते थे। प्रदर्शन-स्थल एवं आन्तरिक सामान्य व्यवस्थायें भी उतनी उत्तम नहीं थीं और एक तरह से वस्तुएँ भी मध्यम श्रेणी की प्रतीत हुईं। पहले तो हमलोगों के पास द्रव्य था ही नहीं, क्योंकि हमलोगों के मेजबान 'ट्रैवलर्स-चेक' के विनिमय की सुविधा प्रदान करने की ओर से अनिच्छुक थे। उनलोगों की दृष्टि में हमलोगों को चेक भुनाने की कोई आवश्यकता ही नहीं थी। यदि हम यह कहते कि हमलोगों को अमुक वस्तु की आवश्यकता है तो वे उसे हमारे लिये खरीद कर दे डालते! तो भी लेसली मेटकाफ के सतत् किन्तु विनम्र दबाव का प्रभाव पड़ा और अन्ततोगत्वा उन्हें वृहस्पतिवार को प्रातःकाल में बैंक से कुछ चेक भुनाने का अवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने प्रत्येक सदस्य को कुछ रूबल बाँटे। विनिमय की दर प्रति पौंड ११ रूबल थी और इस दर से अँगरेजों को प्रत्येक वस्तु अतिशय व्ययसाध्य प्रतीत होती है। उदाहरणार्थ, होटल 'लौबी' में एक पैकेट पोस्टकार्ड का मूल्य १ पौंड था। परन्तु इसी मापदण्ड के अनुसार पारिश्रमिक की दर भी बहुत ऊँची है। सर डेविड केली ने 'सन्डे टाइम्स' (द्वितीय दिसम्बर, १६५१) में प्रकाशित एक निबन्ध में औसत वेतन (पारिश्रमिक) प्रतिमास ८०० रूबल

बतलाया है। यही अंक हमलोगों को 'वृहत् उद्योगों' में काम करने वाले एक अकुशल कार्यकर्त्ता और 'लघु उद्योगों' के एक कुशल कार्यकर्त्ता के वेतन के लिये भी दिया गया था। यह हमलोगों की सरकारी विनिमय की दर के अनुसार ६०० पौंड प्रतिवर्ष होगा। निश्चयतः यह असंगत है।

कैथलीन लौन्सडेल जीवन-यापन-व्यय के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करने के लिये विशेष उत्सुक थीं। बुधवार को दोपहर बाद यह जानकर उन्हें अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि सुविख्यात भारतीय सांख्यिक प्रो० महालनोबिस, एफ० आर० एस०, सपत्नीक हमलोगों के साथ ही होटल में ठहरे हुए हैं। वे दम्पतियुगल से वैयक्तिक रूप से परिचित थीं। प्रोफेसर महलनोबिस 'स्टैटिस्टीकल इंस्टीच्यूट' (सांख्यिक अनुसंधानशाला) दिल्ली के निर्देशक, भारत-सरकार के सांख्यिक परामर्शदाता और संयुक्त राष्ट्र के विशेषज्ञ हैं। वे सोवियत सरकार का निमंत्रण पाकर कुछ सप्ताहों से सोवियत संघ में थे और अपनी सरकार के लिये वहाँ के जीवन-स्तरों की पैमाईश तैयार कर रहे थे। वे सपत्नीक वायुयान द्वारा कजाकिस्तान के शहरों तक जा चुके थे। अतः उन्होंने इन एशियाई नगरों के पुनर्निर्माण सम्बन्धी कुछ कार्यों को देखा भी था। इन स्थानों की समस्यायें भी अधिकांशतः उनके अपने देश के नगरों के सदृश ही थीं। वे सोवियत संघ के विभिन्न भागों में जीवन-यापन के व्यय एवं वेतन (पारिश्रमिक) की तुलना करने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुँचे थे कि इन सबमें अत्यल्प अन्तर है। दो या तीन अवसरों पर कैथलीन लौन्सडेल के साथ उन्होंने अपने अनुभवों के सम्बन्ध में काफी तर्क-वितर्क किया था। कैथलीन लौन्सडेल ने भी स्वयम् इस संबंध में छानबीन की थी। इसके निमित्त वे एक दूकान से दूसरी दूकान में जातीं, वस्तुओं के मूल्य एवं कोटि तथा ग्राहकों की वेश-भूषा नोट करतीं। उन्होंने केवल दुभाषियों से ही नहीं वरन् बैपतिस्ट पादरियों तथा अन्यान्य ज्ञातव्य एवं विश्वसनीय व्यक्तियों से भी वेतन संबंधी बातों का पता लगाया था। वे इस निष्कर्ष पर पहुँची थीं कि तुलनात्मक मानदण्डों के आधार पर विनिमय की वास्तविक दर प्रति रूबल ६ पेंस अथवा प्रति पौंड ४० रूबल होगी। इस दर को मान लेने से सभी वस्तुओं पर और अच्छी तरह से प्रकाश पड़ता था और इसने हमलोगों के भिन्न देशों में विद्यमान मूल्यों और वेतन के वैषम्य को कम कर दिया।

निश्चयतः एक ऐसे देश में, जहाँ कृषि एवं उद्योग-धंधे दोनों साथ-साथ चल रहे हैं और जिसमें भिन्न लोगों की आय में बहुत अन्तर है, औसत वेतन (पारिश्रमिक) बतलाने का प्रयत्न करना वास्तव में भ्रममूलक नहीं तो कठिन

अवश्य है। वेतनों का विश्लेषण तो अवश्य करना पड़ेगा। इसी प्रकार जीवन-यापन व्यय में भोजन, वस्त्र, किराया, तापन आदि, पुस्तक, शिक्षा और मनोरंजन का व्यय और सामाजिक सेवा तथा प्रत्यक्ष कर का अनुमान भी सम्मिलित कर लिया जाना चाहिये। सोवियत संघ में खाद्य-पदार्थों के लिये राशनिंग की व्यवस्था नहीं है। तोभी रोटी और दूध को छोड़कर अन्य खाद्य-पदार्थ मँहगे हैं, परन्तु किराये बहुत कम हैं। लेकिन किरायों की दृष्टि से वास-स्थान का विस्तार भी अत्यन्त कम है। सभी बातों पर एक साथ विचार करने से यह पता चलता है कि रूसी मजदूर ब्रिटिश मजदूरों से उत्तमतर अवस्था में नहीं है, किन्तु निवास के प्रबन्ध को छोड़कर, जो अभी भी अत्यन्त दैन्ययुक्त है, वह किसी भी दृष्टि से उतना पीछे भी नहीं है जितना कभी-कभी माना जाता है। यह भी बिल्कुल निश्चित ही है कि उसकी अवस्था में दिनोंदिन सुधार होता जा रहा है।

हमलोगों ने अपनी छानबीन में कुछ अद्भुत बातें कीं। पॉल कैडबरी एक गली के कोने में खड़े हो गये और उस स्थान से गुजरनेवाले १०० व्यक्तियों के पैरों की ओर ध्यानपूर्वक देखते रहे। सभी व्यक्ति बढ़ियाँ जूते पहने हुए थे। दल के पुरुष सदस्यों में से कुछ व्यक्ति एक सार्वजनिक शौचालय का स्वयम् पता लगाने और उसका निरीक्षण करने पर तुले हुए थे। हमलोगों को हवाई स्टेशन पर जो अनुभव हुए थे उनसे हमलोगों ने यह अनुमान किया था कि यह शौचालय निकृष्टतम ही होगा। किन्तु उनलोगों ने जिस सार्वजनिक शौचालय का पता लगाया, वह अत्यन्त स्वच्छ और 'फ्री' था। हमलोग नवीन एवं 'सेकेन्ड हैन्ड' पुस्तकों की दूकान (जिनसे मास्को भरा हुआ है) पर यह जानने के लिये बार-बार गये कि विज्ञान संबंधी पुस्तकें कितनी सस्ती हैं तथा कितने युवक एवं प्रौढ़ उन्हें खरीद रहे हैं (उत्तम कोटि के सजिल्द शब्दकोष का मूल्य ६ रूबल था, जो विनिमय की वास्तविक दर के अनुसार ३ शिलिंग के बराबर हुआ और अनेक विज्ञानों की मुख्य-मुख्य बातों का परिचय करानेवाली, विभिन्न प्रकार की, कागज के जिल्दोंवाली, छोटी-छोटी पुस्तकों का मूल्य प्रति पुस्तक एक रूबल था)। हमलोगों से यह कहा गया था कि वहाँ युद्ध सम्बन्धी खिलौने नहीं बिकते। इस बात की परीक्षा करने के लिये हमलोगों ने खिलौनों की दूकानों को जाकर देखा। हमलोगों ने देखा कि ऐसी बात नहीं है; वैसे खिलौने तो हैं, किन्तु उनकी संख्या अत्यल्प है। खिलौने उतने अच्छे नहीं थे और मँहगे भी थे।

इस बृहस्पतिवार को जेरल्ड बेली, फ्रैन्क एडमीड और लेसली मेटकाफ ने मेट्रोपोल होटल में 'रायटर' और 'सन्डे टाइम्स' के संवाददाताओं के संग

जलपान किया। इनमें एक अमेरिकन था और दूसरा अंग्रेज। वैदेशिक मुद्रा विनिमय की विषम दर के कारण अंग्रेज यात्रियों को अथवा मास्को में निवास करनेवाले विदेशियों को बहुत व्यय पड़ता है। 'सन्डे टाइम्स' के संवाददाता ने बतलाया कि उनको वहाँ रखने के लिये उनके समाचार-पत्र को प्रतिवर्ष २०,००० पौंड से अधिक व्यय करना पड़ता है। मास्को में हमलोगों के देश के इतने कम संवाददाताओं के रहने के अनेक कारणों में एक कारण यह भी है (अन्य कारण नवम अध्याय में दिये गये हैं) और मुद्रा विनिमय की यह दर किसी भी अवस्था में अंग्रेज यात्रियों के निर्बाध प्रवेश में एक बड़ी रुकावट है। वर्त्तमान काल में रूस जानेवाले सभी यात्री प्रायः बिना अपवाद के प्रतिनिधि-मण्डलों के सदस्य होते हैं और मेजबान के रूप में कार्य करनेवाली सरकारी अथवा अर्द्ध सरकारी संस्थायें उनका व्यय वहन करती हैं। इस कारण प्रतिनिधि-मण्डलों का ईमानदारी से एवं रचनात्मक रूप में आलोचना करना यदि असंभव नहीं तो कठिन अवश्य हो जाता है।

दोपहर बाद हममें से चार व्यक्तियों ने भवन-प्रदर्शनी देखी, जो अत्यन्त उत्कृष्ट ढंग से सजायी प्रतीत हुई। यह प्रदर्शनी गत २० वर्षों से खुली हुई है। हमलोगों को बतलाया गया कि इसे अबतक २,००,००,००० लोग देख चुके हैं। हमलोगों ने वहाँ ऐसे कितने भवनों के नमूनों को निर्माण, आन्तरिक सजावट आदि के सविस्तर वर्णन सहित देखा जिन्हें निर्मित होते हुए हमलोग स्वयम् देख चुके थे। नवीन गृहावलियों में से एक में, जिसे हमलोगों ने नदी के किनारे निर्मित होते देखा था, ३४० फ्लैट हैं और उन्हें ७६४ रहनेवाले कमरों में विभक्त किया गया है। उसमें १७ महल होंगे और केन्द्र में २५ महलों ऊँचा एक टावर भी होगा। चूँकि मास्को चट्टानों पर निर्मित नहीं है अतएव इन गगनचुम्बी अट्टालिकाओं को कंक्रीट के ऊपर ही स्थित होना पड़ेगा। ये भवन इस्पात के फ्रेमों द्वारा निर्मित हैं और इनके बहिर्भाग में छिद्रदार ईंटें हैं। इन भवनों के फर्शों और दीवालों का कारखानों में पहले से निर्माण कर लिया जाता है और उचित स्थानों पर उनको बड़ी-बड़ी भार उठाने वाली मशीनों से बैठा दिया जाता है और यह समस्त कार्य आश्चर्यजनक गति से होता है। प्रदर्शनी व्यावहारिक बातों पर अत्यधिक ध्यान देती है और इसका उद्देश्य सोवियत संघ में भवन-निर्माण योजना के प्रति बौद्धिक अभिरुचि उत्पन्न करना है। प्रदर्शनी विद्युत-शक्ति, इस्पात का उत्पादन, खान, पथ-निर्माण, नहर-निर्माण और इसी प्रकार की अन्य बातों के विकास का भी प्रदर्शन करती है। जैसा कि पॉल कैडबरी ने 'दर्शनार्थी-पुस्तक' में लिखा कि हमलोगों की कामना है कि अंगरेज गृह-विशेषज्ञ इस प्रदर्शनी और मास्को तथा अन्य स्थानों के निर्माण-कार्य को देख सकते और इसी

प्रकार रूसी विशेषज्ञ भी हमलोगों के यहाँ के निर्माण का निरीक्षण कर सकते तो हमलोग एक दूसरे से बहुत कुछ सीख सकते हैं। इस बात को जानकर हमलोगों के एक दुभाषिये ने हँसकर कहा कि यद्यपि हमलोगों की शक्ति के सम्बन्ध में उनके विचार अब बहुत ऊँचे हो गये हैं तथापि अगर हमलोग रूसी-गृह-विशेषज्ञों के एक दल को इंगलैंड में सर्वत्र निर्बाध भ्रमण करने की आज्ञा देने के लिये ब्रिटिश सरकार को राजी कर सकें तो वे इसे हमलोगों का जादूगरी का चमत्कार ही समझेंगे।

इस बीच अन्य तीन क्वेकर लोगों ने दोपहर के बाद का समय स्तालिन के सत्तरवें जन्म-दिवस के उपहार के संग्रहालय का निरीक्षण करने में व्यतीत किया। मिलड्रेड क्रीक ने इसके सम्बन्ध में लिखा—"हमलोगों ने स्तालिन को तैल-चित्रित, पंख, काष्ठ-कोयला, अन्न और—मेरा तो विश्वास है कि अन्य सभी स्थानीय वस्तुओं में जो लोगों को प्राप्य थे, निर्मित पाया। ऐसा प्रतीत होता था कि सोवियत संघ के प्रत्येक भाग ने और प्रत्येक नर, नारी और बालक ने इस उपहार-संग्रह में दान किया है। विदेशी राष्ट्रोंवाला विभाग सर्वाधिक मनोरंजक था। फ्रांसीसी साम्यवादियों का उपहार फ्रांस में जर्मन-आधिपत्य के समय उनके (साम्यवादियों) प्रतिरोध की समस्त विपाक्तता का चित्रण करता था। वियना के साम्यवादियों ने सुनिर्मित फर्नीचर का एक मनोमोहक सेट और अँगरेज साम्यवादियों ने काँटेदार वृक्ष की लकड़ी से निर्मित पाईप भेंट किया था। चीनी साम्यवादियों ने सुन्दर लाल झंडा भेजा था और गायन की कविताएँ भी भेजी थीं। ये दोनों वस्तुएँ स्वभाव एवं सौन्दर्य दोनों दृष्टियों से चीनदेशीय ही लगती थीं। इस प्रदर्शनी में अभी भी प्रतिदिन बड़ी भीड़ होती थी।

होटल वापस आने पर हमलोगों को रूसी ऑर्थोडॉक्स चर्च के प्रधान पैट्रीआर्क अलेक्सियस का एक सन्देश मिला। उन्होंने हमें शाम को ८ बजे अपने यहाँ बुलाया था। फलतः हमलोग ७-५५ पर मोटर द्वारा उनके निवास-स्थान पर गये। शीघ्र ही हमलोगों को अन्दर बुला लिया गया। उनके साथ हमलोगों के पूर्व-परिचित निकोलाई और चर्च के दो अन्य पादरी थे, जिनमें एक का काम बातों को लिखित रूप में नोट करना था।

पैट्रीआर्क की आकृति बहुत-कुछ स्वस्थ रेन्डेल हैरिस के समान थी, जो कभी वुडब्रुक कौलेज, बर्मिंघम में अध्ययन के निर्देशक थे और उनकी दृष्टि में इन्हीं के समान चातुर्य की झलक थी जिसका हममें से कुछ व्यक्तियों को भलीभाँति स्मरण था।

लेसली मेटकाफ द्वारा संक्षेप में क्रूकर-यात्रा के उद्देश्यों पर प्रकाश डालने के बाद जेरल्ड बेली ने अविहित ढंग से पश्चिमीय चर्च के नेताओं तथा विश्व-चर्च परिषद् के सचिवालय के ईसाई स्वागत-सन्देशों को दिया। उन्होंने रूसी चर्चों के प्रति पश्चिमीय चर्चों की निश्चित सद्भावना और उनके साथ निकटतर एवं अधिक मैत्रीपूर्ण पारस्परिक सम्बन्ध की अभिवृद्धि के लिये इन चर्चों की उत्कट अभिलाषा पर प्रकाश डाला उन्होंने पैट्रीआर्क से रूसी चर्च और पश्चिमीय चर्चों के नेताओं का सम्मेलन कराने के लिये अग्रसर होने के लिये अनुरोध किया। उन्होंने बतलाया कि अगर इस प्रकार के सम्मेलन में राजनीतिक एवं अन्य विवादग्रस्त दृष्टियों से काम नहीं लिया जाय तो वे अपनी आध्यात्मिक एकता के आधार पर उपयुक्त साधन की खोज करने का प्रयत्न कर सकेंगे और इससे जिस अनुकूल वातावरण की सृष्टि होगी उसमें राजनीतिज्ञ उचित समझौता करने की आशा कर सकेंगे।

पैट्रीआर्क ने अपने उत्तर में हमलोगों की उन बातों को स्वीकार किया जिन्हें हमलोगों ने विश्व चर्च परिषद् के सम्बन्ध में कहा था, किन्तु उन्होंने यह कहने का भी साहस किया कि परिषद् का राजनीति से गहरा सम्बन्ध है। वर्त्तमान परिस्थिति में यह हमलोगों को आश्चर्यजनक कथन प्रतीत हुआ। चर्च के नेताओं के सम्मेलन के सम्बन्ध में उन्होंने हमलोगों को बतलाया कि इन विषयों में उन्हें अपने अधिकारों की सीमा से सजग रहना पड़ता है, क्योंकि केवल कान्सटैन्टीनोपुल के सीनियर पैट्रीआर्क ही अपने आप को ऑर्थोडॉक्स चर्च से सम्बन्धित ऐसे कार्यों को करने के योग्य समझते हैं। हमलोगों को इस स्पष्टोक्ति से सन्तोष तो नहीं हुआ, किन्तु यह स्वीकार करना पड़ता है कि इसे अत्यन्त नम्रतापूर्वक कहा गया था। जब हमलोगों ने पैट्रीआर्क से यह पूछा कि क्या हम पश्चिमीय देशों के धार्मिक नेताओं से यह कह सकते हैं कि कोई भी काम जो वे लोग पूर्व-पश्चिम के धार्मिक नेताओं के एक संयुक्त कान्फ्रेन्स के बुलाने की करें तो यह पैट्रीआर्क द्वारा सहानुभूति पूर्वक विचार किया जायगा तो उनका इस संबंध में सतर्क उत्तर असहानुभूतिपूर्ण नहीं था।

जब पैट्रीआर्क ने यह पूछा कि पश्चिमीय चर्चों ने 'स्टॉकहोम की शान्ति अपील' का समर्थन क्यों नहीं किया तब कैथलीन लौन्सडेल ने उत्तर दिया कि एक वैज्ञानिक के रूप में वे परमाणुबम की वृद्धि और उसके प्रयोग के उत्तरदायित्व को समझती हैं तथा परमाणुयुद्ध अथवा अन्य किसी प्रकार के युद्ध के विचार से घृणा करती हैं, परन्तु परमाणुबम या उसका प्रयोग करनेवालों पर मात्र दोषारोपण

ही पर्याप्त नहीं । हमलोगों को यह स्वीकार करना होगा कि केवल इस या उस पक्ष के लोगों ने ही नहीं वरन् हमसबों ने पाप किया है। उन्होंने स्पष्ट टीका करते हुए इन शब्दों के साथ अपना वक्तव्य समाप्त किया—"किसी वस्तु के सामने उपस्थित होने पर तुम केवल उसके गुण एवं प्रशंसनीय अंश पर विचार करो...और शान्तिमय प्रभु तुम्हारे पास विद्यमान रहेंगे।" (फिलिप्पियन्स ४, ८-९) बाइबिल की भाषा से दुभाषियों को कुछ कठिनाई हुई। अतएव एक बाइबिल मँगवाई गई और पैट्रीआर्क ने उस अध्याय को आद्योपान्त पढ़ा। वार्त्ता समाप्त होते समय सर्वव्यापी 'तास' के फोटोग्राफर ने, जो एक दूसरे कमरे से निकला, हमलोगों का चित्र लिया। "महिलाओं को देखते समय पैट्रीआर्क" का एक चित्र खींचने के लिये वह विशेष रूप से उत्सुक था। तदुपरान्त पैट्रीआर्क ने हमलोगों में से प्रत्येक व्यक्ति को अँगरेजी में मुद्रित एक पुस्तक की एक-एक प्रति प्रदान की, जिसका नाम 'दी रशियन ऑर्थोडॉक्स चर्च इन दी फाइट फौर पीस' (शान्ति संग्राम में रूसी ऑर्थोडॉक्स चर्च का योगदान) था। इस पुस्तक में शान्ति समिति की विभिन्न शान्ति सभाओं एवं सम्मेलनों के अवसर पर ऑर्थोडॉक्स चर्च के प्रमुखों द्वारा दिये गये भाषणों के अनुवाद और शान्ति की वृद्धि के लिये ऑर्थोडॉक्स चर्च द्वारा किये गये विभिन्न महत्वपूर्ण निर्णयों के रेकर्ड थे।

मार्च, १९५० ई० में रूसी ऑर्थोडॉक्स चर्च के प्रधान, पैट्रीआर्क अलेक्सियस ने कॉन्सटैन्टीनोपुल, सिकन्द्रिया, एन्टिओक, जेरुसलेम, ऑल जॉर्जिया, सर्बिया, रूमानिया, साइप्रस, यूनान, बल्गेरिया, अलबेनिया और पोलैंड के ऑर्थोडॉक्स चर्चों के प्रमुखों के नाम एक अपील की थी और उसके जो उत्तर मिले थे उन्हें पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया है। अपील में लिखा है—"हमलोगों के रूसी ऑर्थोडॉक्स चर्च के पादरियों ने इस प्रश्न को पहले से ही हल कर रक्खा है। उन लोगों ने शान्ति की रक्षा करने और उसे स्थायी बनाने का निश्चय करके विश्व-शान्ति के सैनिकों की श्रेणी में अपना नाम लिखा लिया है।"

प्राप्त उत्तर मनोरंजक हैं। पौलैंड, रूमानिया, बल्गेरिया, अलबेनिया और आर्मेनिया के सभी ऑर्थोडॉक्स चर्चों के प्रमुखों ने 'डिफेन्डर्स ऑव पीस' आंदोलन में सम्मिलित होने की पूर्ण सहमति दिखलाई है। जेरूसलेम, एथेन्स, सिकन्द्रिया और एन्टिओक अधिक संयत हैं, यद्यपि ईसाई नेताओं के रूप में वे स्वभावतः पैट्रीआर्क द्वारा यीशु की शिक्षा और शान्ति के बीच अभेद सम्बन्ध बतलाये जाने से सहमत हैं। पुस्तक में कॉन्सटैन्टीनोपुल से कोई उत्तर मिला नहीं दीखता। इस पुस्तक के दूसरे विशिष्ट उद्धरण निम्न-

लिखित हैं—"रूसी ऑर्थोडॉक्स चर्च पूर्णतया उनलोगों के साथ है जो सभी राष्ट्रों की स्वतन्त्रता एवं स्वाधीनता के लिये लड़ रहे हैं, जो सभ्य मानव-जाति के लिये कलंकरूप औपनिवेशिक एवं अर्द्ध औपनिवेशिक जन-शोषण से लोहा ले रहे हैं और जो वास्तविक जनतंत्र एवं विश्व शान्ति के लिये प्रयत्न कर रहे हैं··· ।"

"विश्व के सभी ईमानदार एवं प्रगतिशील जनों के साथ-साथ रूसी चर्च का भी यह विश्वास है कि हमलोग शान्ति के लिये युद्ध करनेवाले सभी राष्ट्रों की भावना एवं कार्य की एकता द्वारा युद्धाभिलाषियों की समस्त योजनाओं को छिन्न-भिन्न कर शान्ति के आधार को दृढ़ करेंगे ।"

"इतिहास का निर्माण हो रहा है और उसको जनतंत्र की अजेय एवं अपरिमित शक्तियों द्वारा, जिनका प्रेरक सोवियत संघ है और जिसके प्रधान शान्ति के सर्वप्रथम रक्षक महान् स्तालिन हैं, प्रगति एवं सभ्यता के नवीन पथ पर अग्रसर कराया जा रहा है ।"

"शान्ति के मित्र तथा शान्ति के शत्रु के रूप में समग्र मानवता के विभाजन" का विचार ही इस पुस्तक में आद्योपान्त व्याप्त है। पैट्रीआर्क स्वयं "शान्ति एवं 'पीपुल्स डेमोक्रेसिज' के प्रति अमानुषिक घृणा प्रकट करने के कारण पोप की सत्ता एवं कैथोलिक पुरोहितवर्ग" तथा "नवीन युद्ध से लाभ उठाने के अभीप्सु थोड़े से रक्तपिपासु ऐंग्लोअमेरिकन व्यापारियों" की निन्दा करते हैं ।"

पुनः "कोई भी व्यक्ति ईसाई नहीं कहला सकता, अगर वह उस जनतंत्रात्मक पद्धति का विरोधी है जो मौलिक सिद्धान्तों के अनुसार अभूतपूर्व मात्रा में न्याय का कार्य करती है, जिसके अन्तर्गत लोग असमता-विनाशक अधिकारों का उपभोग करते हैं और जिसमें बुढ़ापा, रोग एवं असमर्थता की अवस्था में लोगों को आर्थिक सहायता प्राप्त होती है। इन महान् एवं पवित्र कार्यों के प्रति शत्रुता रखनेवाले ईसाई लोग भयंकर पाप कर रहे हैं ।"

शांति आंदोलन के प्रति रूस के चर्चों का दृष्टिकोण तथा उनके द्वारा इसके राजनीतिक पहलुओं की सहायता करने के संबंध में पर्याप्त रूप से कहा जा चुका है।

जो लोग ईर्ष्यालु स्वभाव के हैं वे स्वेच्छापूर्वक कह सकते हैं कि ये नेता खरीदे हुए हैं। पर उनलोगों से मिलने के बाद हमलोग

ऐसा नहीं कह सकते। उनलोगों ने एक कठिन स्थिति की युक्तियुक्त व्याख्या की है। पश्चिमीय देशों के उन ईसाइयों के लिये भी यही बात सत्य है जिन्होंने युद्धों में भाग लेना और उनके लिये तैयारी करना न्याय संगत बतलाया है, यद्यपि वे युद्धों को "ईश्वरेच्छा के विरुद्ध" मानते हैं। रूसी आर्थोडॉक्स चर्च के ये नेता सत्यरूप एवं स्पष्टवादिता से अपनी बात करते हैं लेकिन उनके कथनों में भी 'ओल्ड टेस्टामेंट' (प्राचीन बाईबिल) के धर्मोपदेशकों के कथनों की तरह निंदा और कटुता वर्त्तमान है। तो भी हमलोगों का यह विश्वास है कि उनलोगों का यह दृष्टिकोण गलत है। एक ही साथ शान्ति एवं घृणा (घृणा भी लोगों से, उनके पाप से नहीं) का उपदेश देना असंभव है और ये नेतागण वस्तुतः यही कर रहे हैं। इस विचित्र संयोग को हमलोगों ने सोवियत संघ में सर्वत्र देखा और फलस्वरूप इसका सर्वत्र हमलोगों ने विरोध भी किया।

हमलोग सोवियत संघ में इतने अधिक समय तक नहीं रहे कि आधुनिक रूस के चर्चों की सामान्य स्थिति के सम्बन्ध में सतर्कतापूर्वक खोज कर सकें। परन्तु यह कहा जा सकता है कि चर्च और राज्य के बीच कार्य के स्पष्ट विभाजन के फलस्वरूप धार्मिक स्थिति अब कुछ स्थायित्व प्राप्त कर चुकी है। इसी समझौते के ऊपर चर्च का जीवित रहना संभव हुआ है। जर्मन आक्रमण का विरोध करने में चर्च ने पूर्ण सहयोग किया था। इस कारण युद्धपूर्व के वर्षों की ही दृढ़ता से और उसी मात्रा से चर्च को दण्डित करना अब अगर असंभव नहीं तो अनुचित अवश्य हो गया है। परिणाम स्वरूप चर्च और राज्य के अधिकारियों का सम्बन्ध संभवतः १६१७ के बाद के किसी भी समय से अधिक सुगम है। बैपतिस्ट और आर्थोडॉक्स दोनों प्रकार के नेताओं ने उत्साहपूर्वक बपतिस्मा लेनेवालों और धार्मिक विद्यालयों में भर्ती होनेवालों की संख्या बतलाई। फिर भी धर्मसभाओं में प्रौढ़ाओं का ही प्राधान्य रहता है। संभवतः साम्यवादियों का विचार यह है कि धर्मसभाओं में भाग लेनेवालों की बढ़ती उम्र और नवीन पीढ़ियों की वस्तुवादी शिक्षा का संयोग कालक्रम से रूस के धार्मिक प्रश्न को स्वतः हल कर लेगा।

फिर भी रूसी लोगों की मूलभूत धार्मिक भावना उनलोगों की आशा से अधिक प्रबल सिद्ध हो सकती है जो धर्म के शत्रु हैं। सोवियत संघ में इतना अधिक परिवर्त्तन हो सकता है और होगा कि आज जो देश की अनिवार्य एवं पूर्ण धर्म-निरपेक्षता की भविष्यवाणी करते हैं अंत में वे गलत सिद्ध हों। निश्चयतः रूस में ईसाइधर्म केवल जीवित ही नहीं वरन् निरंतर प्रगतिशील भी है।

पैट्रीआर्क के संग वार्त्तालाप समाप्त होने के बाद हमलोग सन्ध्याकालीन विचरण के लिये 'गोर्की पार्क ऑव रेस्ट ऐंड कलचर' (गोर्की-विश्राम-संस्कृति उद्यान) में गये। यह उनलोगों के उचित गर्व की वस्तुओं में एक है। हमलोगों ने यहाँ सोवियत रूस के जीवन एक दूसरा पहलू देखा। यहाँ का प्रवेश शुल्क एक रूबल था और इसके अन्दर रूसी किशोर चिकने खंभों पर चढ़ रहे थे और अपनी शक्ति की परीक्षा कर रहे थे। सामान्यतः उनलोगों का समय अत्यन्त सुखपूर्वक व्यतीत हो रहा था। हमलोग वहाँ के सार्वजनिक व्यवहार की उच्चकोटि देखकर चकित रह गये।

रात गर्म थी। उद्यान प्रशस्त एवं सुप्रकाशित था। उसमें बैठने और खाने-पीने के स्थानों की अधिकता प्रत्यक्ष थी। परन्तु वहाँ अलकोहलवाले पेय वर्जित थे। कुछ और अन्दर जाने पर हमलोगों को 'ग्रीन थियेटर' मिला। वहाँ पर सहस्रों नवयुवक उन्मुक्त आकाश के नीचे शास्त्रीय संगीत का आनन्द ले रहे थे। हमलोग उसके अन्दर गये। वहाँ एक व्यक्ति गा रहा था। जब हमलोग घेरे की ओर बढ़े तब प्रतिहारिणी ने सिर हिलाकर पॉल कैडबरी को संकेत किया। उन्होंने सोचा कि वह शायद यह जानना चाहती है कि हमलोग आगे की पंक्ति में जाना चाहते हैं अथवा नहीं—जहाँ कई एक खाली सीटें थीं। अतएव उन्होंने नम्रतापूर्वक सिर हिलाकर अपनी अनिच्छा प्रकट की क्योंकि हमलोग ठहरना नहीं चाहते थे। किन्तु जब हमलोग वहाँ से कुछ दूर हुए तब दुभाषिया क्रेसोव ने हँसना प्रारम्भ किया। दुभाषिये ने बतलाया कि पॉल के गाढ़े नीले सूट और उजली कमीज को देखकर प्रतिहारिणी को यह भ्रम हो गया था कि वे ही बाद में आनेवाले दूसरे गायक हैं और उसने कहा था कि "अहा! मैं तुम्हें पहचानती हूँ। स्टेज पर इधर से जाओ न!" बाद में पॉल कैडबरी ने अनुभव किया कि उन्होंने कैसा अवसर खो दिया है। उन्हें यह सोचकर कौतूहल भी हुआ कि अगर वे मंच पर जाकर सद्भावना सन्देश को रूसी भाषा में पढ़ सके होते तो उनलोगों पर उसका क्या असर पड़ा होता। हमलोगों ने अनुभव किया कि वह उनलोगों को अवश्य अच्छा लगा होता।

कुछ मिनट बाद सभी बाहर निकल पड़े और उनलोगों ने हमलोगों को आच्छादित कर लिया। यह दल अत्यन्त उल्लासपूर्ण एवं व्यवस्थित था। उनमें से अनेक व्यक्ति दूसरा खेल देखने जा रहे थे। इस खेल में कुछ अभिनय के बाद वर्दी के संगीत का आयोजन किया गया था।

किन्तु इस उद्यान में केवल एक बात खटकने वाली थी। पोस्टरों पर एटली,

मैकआर्थर, ट्रूमैन एवं अन्यान्य व्यक्तियों को युद्धाभिलाषी के रूप में चित्रित किया गया था। लेसली मेटकाफ के इस कथन से सोरोकिन को आश्चर्य हुआ कि अगर स्तालिन अथवा प्रोमिको के ऐसे ही उपहासास्पद चित्र 'हाइड पार्क' (लंदन) में रक्खे जायँ तो उनसे बड़ी सनसनी फैलेगी और संभवतः सोवियत संघ के हितैषी, जो कोई जरूरी नहीं है कि साम्यवादी ही हों, उन्हें फाड़ डालेंगे।

दूसरे दिन (शुक्रवार, २० जुलाई) हमलोगों को किसी सभा में नहीं जाना था अतएव हमलोगों में से ६ व्यक्ति 'जिस मोटर कारखाना' देखने गये। कैथलीन लौन्सडेल ने प्रोफेसर एवं श्रीमती महालनोविस से अपनी वार्त्ता जारी की और तदुपरान्त दूकानों को गईं।

'जिस' कारखाने में सबसे बड़ी मोटर गाड़ियाँ और कुछ चौपहिया-छपहिया ट्रकें बनाई जाती हैं। इस कारखाने में ३०,००० मजदूर काम करते हैं, जिनमें ४० प्रतिशत स्त्रियाँ हैं। वे लोग प्रतिदिन ३ शिफ्ट' काम करते हैं और उनके काम का सप्ताह ६ दिनों का होता है। हमलोगों ने देखा कि उत्पत्ति की दर के सम्बन्ध में कहीं से भी सीधा उत्तर पाना संभव नहीं है। वे लोग सदैव गत पंचवर्षीय योजना के लक्ष्य को बतलाते और यह कहते कि उसे पूरा कर लिया गया है अथवा यह कि उससे भी अधिक उत्पादन हुआ है। कारखाने की रूपरेखा पश्चिमीय देशों के ऐसे कई कारखानों के सदृश ही थी, किन्तु यंत्र एवं "इंजिनियरिंग की विधियों का ढाँचा" बहुत आधुनिक नहीं प्रतीत हुआ। यह ध्यान देने की बात थी कि अनेक पेचीदे यंत्र उनके अपने कारखाने के ही बने हुए थे। वे इस समय इन यंत्रों के स्थान पर दूसरे यंत्र काम में नहीं ला सकते और न संयुक्त राज्य अमेरिका से उन्हें नवीन यंत्र ही प्राप्त हो सकते हैं। कारखाने में साइकिल का निर्माण-कार्य तो अभी प्रारंभ ही हुआ है। हमलोगों ने मास्को की गलियों में एक भी साइकिल नहीं देखी थी। पॉल कैडबरी ने इस निरीक्षण के सम्बन्ध में लिखा था—

"सुरक्षा के साधन एवं यंत्र-रक्षा का स्तर निस्सन्देह हमलोगों के देश से निम्नतर था। हमलोगों के बोर्नविले की क्लिनिक की अपेक्षा यहाँ का क्लिनिक अधिक रूप से पारिवारिक स्वास्थ्य केन्द्र के समान था। यहाँ अल्पकालीन चिकित्सा के लिये कुछ पलंग भी थे। हमलोगों के यहाँ की मनोरंजन की सुविधाओं की अपेक्षा यहाँ का 'पैलेस ऑव कल्चर' (संस्कृति भवन) अत्यन्त वृहत् पैमाने पर निर्मित था। सख्याओं की भिन्नता की दृष्टि से भी यह बात सत्य है। किन्तु उनलोगों के थियेटर में हमलोगों के थियेटर की ही भाँति केवल १००० सीटें हैं।" सामाजिक सेवायें अत्यन्त प्रभावोत्पादक

थीं परन्तु वे और स्थानों की कितनी प्रतिरूप हैं यह जानने के लिये हमलोगों के पास कोई साधन नहीं था। हमलोगों ने विचार किया कि संभवतः बोर्नविले की भाँति यह भी एक ऐसा स्थान है जो यात्रियों को विशेष रूप से दिखलाया जाता होगा।

जलपान के बाद जेरल्ड बेली, मार्गरेट बैकहाउस और पॉल कैडबरी चीनी जनवादी गणतंत्र के जनकार्य के अधिकारी (चार्ज द अफेयर्स ऑव दी पिपुल्स रिपब्लिक ऑव चाइना) से भेंट करने गये। श्री त्सेंग ने चीनी दूतावास में अत्यन्त मैत्रीपूर्ण ढंग से उनलोगों का स्वागत किया। उन्होंने जेरल्ड बेली के वक्तव्य को ध्यानपूर्वक सुना। जेरल्ड ने क्वेकर लोगों की आशाओं और विचारों पर एक वक्तव्य दिया तथा यह बतलाया कि ग्रेट ब्रिटेन के अधिकांश लोगों की यही कामना है कि हमलोगों के देशों के बीच शान्ति एवं सद्भावना बनी रहे। मार्गरेट और पॉल दोनों को इस अवसर पर चीन-विषयक अपनी वैयक्तिक अभिरुचियों एवं सम्बन्धों पर प्रकाश डालने का मौका मिला। युद्धकाल में पॉल के दो पुत्रों ने क्वेकर एम्बुलेन्स यूनिट में चीन में काम किया था। तदुपरान्त त्सेंग ने प्रतिगामी ब्रिटिश सरकार, अमेरिकन हवाई अड्डे एवं पुनःशस्त्रीकरण के कार्यक्रम का उल्लेख किया। जेरल्ड ने उत्तर दिया कि हम क्वेकर शस्त्रीकरणों का विरोध करते हैं, परन्तु ये बातें उस भय एवं मनोमालिन्य के मापदंड हैं जिन्होंने पूर्व और पश्चिम को विभक्त कर दिया है और इन बातों को इंगलैंड के बहुसंख्यक जनमत का समर्थन भी प्राप्त है। हमलोगों का उद्देश्य भय एवं मनोमालिन्य के कारणों को दूर करना और उनके स्थान पर रचनात्मक अन्तर्ज्ञान का निर्माण करना है, जिससे सभी देशों में पुनःशस्त्रीकरण के बदले निःशस्त्रीकरण संभव हो सके। श्री त्सेंग ने सभी युक्तियों को भली-भाँति सुना और अपने श्रोताओं के मन में तनिक भी संशय नहीं रहने दिया कि चीन भी शान्ति ही चाहता है।

सन्ध्याकाल में हम सभी एक "समर थियेटर" देखने गये। दुर्भाग्यवश 'बोलशोई थियेटर' ग्रीष्मकाल के लिये बन्द था और इस कारण वहाँ का प्रसिद्ध बैले (संगीतमय नृत्य) का देखना संभव नहीं था। लेकिन हमलोगों ने जो खेल देखा उसमें लोकनृत्य एवं बैले गीत सम्मिलित थे। ये गीत सोवियत संघ की विभिन्न जातियों के प्रतिनिधियों द्वारा प्रस्तुत किये गये थे। संध्याकाल के लिये यह एक आनन्दप्रद मनोरंजन था, किन्तु बैठने की जगहें फिर भी आरामदेह नहीं थीं। बैले के बाद जेरल्ड बेली, मिल्ड्रेड क्रीक और कैथलीन लौन्सडेल ने अर्द्धरात्रि की ट्रेन से लेनिनग्राड के लिये प्रस्थान किया। दूसरे दिन प्रातःकाल (२१ वीं जुलाई) मार्गरेट बैकहाउस, पॉल कैडबरी, फ्रैंक एडमीड और लेसली मेटकाफ भी कीव जानेवाले विमान को पकड़ने के लिये खूब तड़के उठे।

षष्ठ अध्याय

लेनिनग्राड और कीव

लेनिनग्राड की यात्रा गत रात्रि में प्रारंभ हुई। हमलोगों के शयन करने की बर्थ गाड़ी के एक डिब्बे में थी जो युद्ध पूर्व की "वगन-लिट" थी और उसकी सभी सूचनायें फ्रेंच भाषा में थीं। अपने भ्रमण के बीच पहली बार हमलोगों ने ठंढक का अनुभव किया। हमलोगों के पास अतिरिक्त कम्बल नहीं थे, किन्तु मास्को की अत्यधिक गर्मी के पश्चात् यह परिवर्त्तन सुखप्रद प्रतीत हुआ। यात्रा में १२ घण्टे लगे। मालूम पड़ता था कि गाड़ी निश्चिन्ततापूर्वक मन्द-मन्द गति से अग्रसर हो रही है। हमलोगों को बतलाया गया कि यह रेलवे लाईन युद्धकाल में बुरी तरह नष्ट कर दिया गया था और अत्यन्त शीघ्रतापूर्वक इसकी मरम्मत हुई है। यथेष्ट प्रकाश आने पर हमलोगों ने खिड़कियों से दृश्यावलोकन का आनन्द उठाया। वस्तुतः मीलों तक दलदल से भरी हुई नीची भूमि सहित उन्मुक्त प्रदेश की यह हमारी प्रथम झलक थी। इसका अधिकांश भाग यों ही छोड़ा हुआ प्रतीत हुआ, परन्तु इस भाग में अत्यन्त सुन्दर भोजपत्रों के वनखण्ड, अनेक वन पुष्प और यत्र-तत्र काष्ठनिर्मित छोटे-छोटे भूरे मकान दृष्टिगोचर हुए, जो ग्रामीण क्षेत्रों के विशिष्ट रूप हैं। एक स्थल पर खाइयों और छोटी-छोटी झीलों के मिलने से जल का विस्तार लगभग समुद्र के समान हो गया था। लौटती बार हमलोगों ने इसे और अच्छी तरह से देखा। हमलोगों को बतलाया गया कि यह मास्को तथा वोल्गा नदियों को संयुक्त करने के लिये निर्मित जलकार्य का एक भाग है और इससे जनक्रान्ति के बाद मास्को की अत्यधिक बढ़ी हुई जनसंख्या की जल-पूर्त्ति में वृद्धि होती है।

पथ के तटवर्त्ती स्टेशनों ने हमलोगों का ध्यान आकृष्ट किया। इनमें छोटे-छोटे जलपान-गृह मौजूद थे (गाड़ी में तो १२ घण्टे की यात्रा के बीच केवल चाय-सिगरेट ही मिल सके थे) और छोटे-छोटे लड़के नंगे पाँव जंगली 'स्ट्रॉबेरिज' की थैलियाँ बेच रहे थे। पथ पर के रेलवे अधिकारियों की ओर भी

(जिनमें अधिकांश महिलायें थीं) हमलोगों का ध्यान गया। वे लोग गाड़ी को सिगनल देने आते थे। वे लोग बागबानी भी करते थे और उनके पास घास की एक छोटी ढेरी, बकरी और कुछ मुर्गियाँ भी थीं। उनलोगों के गृह विस्तृत अनुर्वर प्रदेश में ओएसिस के समान थे। हमलोग अपने गन्तव्य पर दिन में करीब १२ बजे पहुँचे और वहाँ पर लेनिनग्राड की शान्ति समिति के सदस्यों से हमलोगों की भेंट हुई।

लंच के बाद उनलोगों ने बतलाया कि हमलोगों को एक जूते का कारखाना दिखलाने का प्रबन्ध किया गया है। इससे हमलोगों ने विशेष उत्साह अनुभव नहीं किया। हमलोग तीनों (जेरल्ड बेली, मिल्ड्रेड कीक और कैथलीन लौन्सडेल) यात्रा के बाद थके-से थे। ब्रिटिश कारखानों का विशेष ज्ञान नहीं रहने के कारण हमलोगों के पास तुलना का कोई मानदण्ड भी नहीं था। अतएव हमलोग लेनिनग्राड में बनते हुए जूतों को देखने के लिये अधिक उत्सुक नहीं थे। फिर भी हमलोगों ने उत्सुक होने की भरपूर चेष्टा की, क्योंकि हमलोगों के कुछ मेजबान निस्सन्देह कारखाने में काम करते थे और हमलोग उनलोगों की मैत्री खोना नहीं चाहते थे। कारखाने के मैनेजर से २-३ घंटे बातचीत करने, उत्पत्ति-मार्गों पर घूमने और जलपानगृह, पुस्तकालय तथा संगीत भवन की प्रशंसा करने के बाद हमलोग वस्तुतः थक गये थे। अतः हमलोगों को उन लोगों से यह कहना पड़ा और फलस्वरूप हमलोगों को पुनः होटल में पहुँचा दिया गया।

एक नगर के रूप में लेनिनग्राड, मास्को से नितान्त भिन्न है। समस्त नगर एक योजना के अनुसार निर्मित है और लन्दन के "नैश टेरसेज" की भाँति इसका निर्माण भी उस समय हुआ जब सुन्दर भवनों की कल्पना को साकार करने के लिये आवश्यक साधन भी विद्यमान थे। यहाँ की गलियाँ मास्को के समान चौड़ी नहीं हैं किन्तु उनके किनारों पर पेड़ अधिक हैं और सोने के गुम्बज वाले 'एडमिरल्टी बिल्डिंग' (जलसेना भवन) से होकर वे चारों ओर जाती हैं। *नगर में एक बन्दरगाह की दृढ़, आनन्दवर्द्धक भावना वर्त्तमान है। नेवा नदी* चौड़ी है। यह हमलगों को अत्यन्त नीलवर्ण, भँवरदार तथा और नगरों की धीमी नदियों से भिन्न, अपने किनारों से उमड़ती प्रतीत हुई। लेनिनग्राड नेवा नदी के किनारे-किनारे फैला है। जार सम्राटों का शीतकालीन महल हरमिटेज गैलरी के समीप स्थित है और वह विस्तृत जलराशि की दूसरी ओर स्थित प्राचीन दुर्ग एवं विश्वविद्यालय भवन की ओर देखा करता है।

नगर स्वयम् नहरों एवं पुलों द्वारा संयुक्त है जिनसे ऊँची अट्टालिकाओं की

पंक्तियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। १८ वीं सदी के इन भवनों के पृष्ठभाग में प्रायः भड़कीले रंग की (उदाहरणार्थ शीतकालीन महल के लिये हरे रंग की और स्मौलनी महल के लिये नीले रंग की) कलई की हुई है। इन भवनों के सुसज्जित स्तम्भ एवं त्रिकोण छज्जे श्वेतवर्ण के हैं। ऐसे भवनों का उपयोग अब सार्वजनिक कार्य के लिये होता है। 'हरमिटेज' तो चिरकाल से ही एक विश्वविश्रुत चित्र कलाभवन रहा है, किन्तु अब इसके समीप का महल भी कलाभवन का एक भाग हो गया है जिसमें अत्यन्त बृहत् संग्रह किया हुआ है। वेलाजक्वेज रूबेन्स और रेम्ब्रैन्ट तथा अन्यलोगों की कृतियाँ भी इसमें संगृहीत हैं। विशेष कर पौसिन संबंधी तो वहाँ पर बड़ा सुन्दर संग्रह विद्यमान है। हमलोगों ने इस कलाभवन का निरीक्षण दूसरे दिन किया।

एक अन्य मनमोहक भवन, जो जार के गुट के एक ख्यातिप्राप्त परिवार का निवास स्थान था, अब पायनियर पैलेस अर्थात् किशोरों का केन्द्रीय 'क्लब हाउस' हो गया है। ये किशोर सरकार द्वारा संस्थापित युवक मण्डली के सदस्य होते है। सोवियत संघ में लड़कों को गर्मी की बहुत लम्बी छुट्टियाँ मिलती हैं। अतः उनमें से अधिकांश वर्ष के इस भाग में शिविरों में रहने के लिये बाहर चले जाते है। लेकिन कुछ नगरों में ही रह जाते हैं।

होटल जाते समय हमलोगों से इस 'पायनियर पैलेस' को देखने के लिये अनुरोध किया गया। परन्तु केवल मिलड्रेड क्रीक ही इसे स्वीकार कर सकीं क्योंकि अन्य व्यक्ति अत्यन्त थकावट का अनुभव कर रहे थे। उन्होंने लिखा है—"मै इस सुन्दर भवन में घूमते समय संगमर्मर की सीढ़ी, स्फटिक प्रकाशदानों, श्वेत दीवालों, लुई क्विन्जे के समय के ललित उपकरणों एवं स्वच्छ फर्शों में कहीं भी क्षय अथवा टूट-फूट का आभास नहीं पाकर आश्चर्यचकित रह गई। इसके कुछ कमरे पुस्तकालय के काम में लाये जाते हैं और कुछ कमरों में प्रकृति का अध्ययन, पालतू पशु-पक्षी की देखरेख तथा कुछ में चित्रकारी एवं नमूना-निर्माण का कार्य होता है। वहाँ कुछ छोटे बालक भी थे। उनलोगों ने एक कल्पित रूसी कहानी के आधार पर निर्मित गुड़िये का खेल आनन्दमग्न किन्तु आत्मविस्मृत होकर हमलोगों को दिखलाया। ये बालक और बालिकायें अनेकों महिलाओं के संग काम कर रहे थे और उनके साथ एक शिक्षिका पियानो बजा रही थी। मेरे अनुमान से इन बालक-बालिकाओं की उम्र ८ से १४ वर्ष के बीच होगी। हमलोगों को बतलाया गया कि उनलोगों ने अपनी गुड़ियों को स्वयम् बनाया है और केवल संगीत में ही बाहरी सहायता लेकर उनलोगों ने उस खेल का आयोजन किया है।

उस छोटी बालिका की कथा जो जंगल में खो जाने के बाद जानवरों की सहायता से घर का मार्ग पा सकी थी अत्यन्त सरल, संक्षिप्त एवं मनोरंजक थी। उनलोगों का गाना वस्तुतः मनोहर था। यदि मेरा कथन स्वीकार्य हो तो मैं यही कहूँगी कि 'अनुभूति' की दृष्टि से मुझे ये बालक अपनी अवस्था से छोटे प्रतीत हुए। वे अपनी ही उम्र के अंग्रेज बच्चों से कहीं अधिक सुशील एवं निश्चयतः आत्मबोधरहित थे। अपने दुर्वह कार्यों के बीच उनका यह खेल देखना वास्तव में आनन्ददायक था।

"वे इस स्थान पर शारीरिक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे थे तथा अपनी-अपनी रुचि के अनुसार अनेकों प्रकार के कार्यों में संलग्न थे। इन कार्यों में सुन्दर नमूने निर्माण करना और चित्रकारी का काम भी सम्मिलित था। मैंने एक भ्रान्तिपूर्ण एवं दुःखदायी चित्र भी देखा। उसे एक नववर्षीय बालक ने बनाया था। चित्र का शीर्षक था 'न्यूयार्क के बच्चे'। उसमें दरिद्रता के शिकार दो बालकों को एक परनाले में अत्यन्त दयनीय अवस्था में बैठे हुए दिखलाया गया था। वे बच्चे चिथड़े लपेटे हुए थे और उनके पास न जूते थे, न मोजे। उस चित्र के सम्बन्ध मे मैंने उन लोगों से प्रतिवाद किया। मुझे यह यकीन नहीं है कि मैंने जिस रूसी शिक्षक के साथ बहस की वह इस बात से सन्तुष्ट हो गया होगा कि न्यूयार्क में बच्चों की समस्या उस चित्र में प्रदर्शित बच्चों की भाँति अत्यन्त दारिद्र्यपीड़ित होने के कारण नहीं वरन् अत्यधिक सामग्रीयुक्त होने के कारण उत्पन्न हुई है।"

उस शाम को हमलोगों ने लेनिनग्राड शान्ति समिति के सदस्यों से भेंट की। इनलोगों में शिशु चिकित्सालय की एक महिला डॉक्टर थीं जो प्रारम्भ में अत्यन्त रूखी प्रतीत हुईं, किन्तु ज्यों ज्यों उन्हें हमलोगों की निष्कपटता का ज्ञान होता गया त्यों-त्यों वे नम्र होती गईं; दूसरे व्यक्ति थे एक कवि जो युद्धोपरान्त 'तास' के पत्रकार हो गये थे। इनके सिवा ट्रेड यूनियन के एक अर्द्ध वृद्ध अधिकारी थे जो "स्टैखनोवाइट" थे और एक कारखाने में काम करते थे। "स्टैखनोवाइट" नाम से अत्यधिक तेजी से काम करनेवाले अथवा नयी रीति चलानेवाले मजदूरों का बोध होता है। 'जिस' कारखाने में हमलोगों ने एक विशेष स्टैखनोवाइट दल को देखा जिसमें स्त्री और पुरुषों ने अपने उत्पादन का टारजेट १५०% का रखा था। सामान्य मजदूर केवल १००% का ही टारजेट पूरा कर पाते हैं। जूते के कारखाने में हमलोगों को यह दिखलाया गया कि किस प्रकार कारखाने का एक मजदूर तल्ले काटने की क्रिया में चमड़े के उत्तमतर उपयोग द्वारा कारखाने की कुल कार्य-

क्षमता की वृद्धि करने में समर्थ हुआ था। इनमें से प्रत्येक स्टैखनोवाइट पर्याप्त आर्थिक पुरस्कार और उसीके समान स्पृहणीय "लोक ख्याति" प्राप्त करता था)। लेनिनग्राड शान्ति समिति की अन्य सदस्या एक प्रौढ़ा थीं। वे कपड़ा बुनने का काम करती थीं। उनका परिचय "उस जननी के रूप में कराया गया जिसके पुत्रों ने देश की रक्षा में अपने प्राण न्योछावर कर दिये थे।" वे स्वयं एक स्टैखनोवाइट थीं और इसके लिये उन्हें अत्यधिक गर्व भी था। वार्तालाप के बीच तो वे कम बोलीं, किन्तु वार्त्ता समाप्त होने के पूर्व उन्होंने यह प्रश्न किया कि शान्ति के लिये ग्रेट ब्रिटेन की महिलायें क्या कर रही हैं। उत्तर में उन्हें शान्ति एवं स्वतन्त्रता के लिये बहुत दिनों से संस्थापित महिला अन्तर्राष्ट्रीय संघ के कार्य एवं महिलाओं की अन्य संस्थाओं की सेवाओं के संबंध में कुछ बातें बतलाई गईं। लेनिनग्राड में हमलोग जहाँ भी गये वहाँ हमलोगों ने देखा कि लोग युद्ध की चोट को भूले नहीं हैं। हमलोगों ने ऐसे भवनों को देखा जिनपर लन्दन के भवनों की ही भाँति बम-वर्षण के आघात अभी भी विद्यमान थे। ४८० दिनों के घेरे के बीच लेनिनग्राडवासियों के अविश्वसनीय शारीरिक क्लेशों और धैर्य के सम्बन्ध में हमलोगों को ज्ञान प्राप्त हुआ। इस अवधि में गोला वर्षण प्रायः बराबर जारी रहा और अनेकों व्यक्तियों ने भूख से तड़प-तड़पकर अपनी जीवन लीला समाप्त की।

दूसरे दिन जब हमलोग ग्रीष्मकालीन महल में गये तब हमलोगों ने युद्ध काल में जर्मनों द्वारा अधिकृत भवनों में उनके द्वारा किये गये विवेकहीन ध्वंस को देखा। इस ग्रीष्मकालीन महल को लिट्ल वार्साई कहा जाता है। यह लेनिनग्राड से करीब ८ मील दूर करेलिया की खाड़ी पर मनोहर बाहरी भागों के बीच अवस्थित है। अन्त में जर्मनों को जब इससे बलपूर्वक भगाया गया तब वे लोग जाते समय इन छोटे-छोटे सुन्दर भवनों को क्रमशः नष्ट करते गये। यह लेनिनग्राड के दीर्घकालीन घेरे के उपरान्त, कटुता की अग्नि में ईंधन डालना ही था।

शायद ऐसी ही स्मृतियों ने लेनिनग्राड की शान्ति समिति के संग होनेवाले सम्मेलनों को अन्य सम्मेलनों की अपेक्षा केवल अधिक दुष्कर ही नहीं वरन् अधिक उपयुक्त भी कर दिया था। हमलोगों के होटल के एक कमरे में १५ आदमियों का एक संग होना आत्मीयता की स्थापना के अधिक अनुकूल था। उपस्थित व्यक्तियों में तीन तो हमलोग ही थे, तीन मास्को से हमलोगों के

संग आये हुए दुभाषिये थे और शेष लेनिनग्राड के मिलनसार एवं विनम्र निवासी थे। युद्ध में अधिकांशतः इन पुरुषों ने भाग लिया था।

उनलोगों ने अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति पर एक वक्तव्य देते हुए वार्त्ता प्रारम्भ की। उन लोगों ने बतलाया कि संयुक्त राज्य अमेरिका के आक्रमणात्मक कार्य द्वारा सोवियत संघ आतंकित है। कोरिया में तथाकथित "औपनिवेशिक आक्रमण का युद्ध" पराकाष्ठा पर पहुँचा हुआ है। भारत, वियतनाम और अफ्रिका की समस्याओं का भी उल्लेख हुआ। शान्तिवादी लोगों की स्थिति और क्वेकर लोगों की शान्तिवादी परम्परा उनलोगों को अत्यन्त आश्चर्यजनक प्रतीत हुई। उनलोगों में से एक ने अविश्वासपूर्वक पूछा कि क्या आपलोग सचमुच शान्ति के लिये प्रयत्न नहीं करेंगे? विचारों के मुक्त विनिमय के साथ वार्त्तालाप बहुत देर तक होता रहा। जेरल्ड बे ने अत्यन्त योग्यता-पूर्वक उन कारणों को उपस्थित किया जिनके लिये संयुक्त राष्ट्र (यूनाइटेड नेशन्स) भिन्न-भिन्न राजनीतिक पद्धतियों के बीच शान्तिपूर्ण समाधान के लिये प्रयत्नशील है। शेफील्ड सम्मेलन के लिये प्रवेशादेश के प्रतिबन्ध के प्रश्न पर बहुत तर्क-वितर्क हुआ। जो कुछ हुआ था उसका हमलोगों ने कारण बतलाया और जिस प्रकार यह हुआ था उसके लिये खेद प्रकट किया। कैथलीन लौन्सडेल ने क्वेकर सम्प्रदाय द्वारा शस्त्र ग्रहण की अस्वीकृति का आध्यात्मिक आधार स्पष्ट करने की चेष्टा की। पेनसिलवेनिया में विलियम पेन के "पवित्र प्रयोग" (होली एक्सपेरिमेंट) का उद्धरण देकर यह बतलाया गया कि यह कोई नकारात्मक दृष्टिकोण नहीं है वरन् इसमें महान् उत्तर-दायित्व सन्निहित है। एक दूसरे के बहुत ही भिन्न विश्वास एवं दृष्टि-वैषम्य के बावजूद भी शान्तिमय सहवास एवं वार्त्तालाप में अन्तर्निहित सत्य को अभि व्यक्ति के पास कदाचित् यह हमलोगों की निकटतम पहुँच थी। इस सभा का पुनःस्मरण करने पर हमलोगों को यह करीब-करीब अविश्वसनीय प्रतीत होता है कि इतनी एकता स्थापित हो जाने पर भी प्रत्येक कथन का वाक्यशः अनुवाद करना पड़ा था। उस सन्ध्या को हमलोगों के दुभाषियों को अत्यधिक श्रम करना पड़ा।

दूसरे दिन कैथलीन लौंसडेल अस्वस्थ थीं किन्तु जेरल्ड बेली और मिलड्रेड क्रीक लेनिनग्राड के एक 'ऑपेरा' को देखने गये। यह हमलोगों के मनोरंजन के अनुभवों में से कदाचित् अपूर्व था। मिल्ड्रेड क्रीक पुनः कहती हैं—"यूक्रेन की ऑपेरा कम्पनी रिमस्की कोर्सकोव की लिखी 'जार की वधू' (दी जार्स ब्राइड) गाथा अपनी भाषा में गा रही थी। हमलोगों को किसी समय जो

'रॉयल बौक्स' रहा होगा, उसमें स्थान मिला था। अभिनय का प्रबन्ध सुन्दर ढंग से किया गया था और संगीत जिस भावावेश के साथ गाया जा रहा था वह हमलोगों की उसी आशा के अनुकूल था जिसे हम अब रूसी लोगों से करने लग गये थे। अत्याचारी इवान और प्राचीन रूस के बोयरों की इस कथा का मूल्याङ्कन करने में दर्शकों एवं अभिनेताओं में हार्दिक सहानुभूति दीख पड़ती थी। ऑपेरा भवन सभी अवस्थाओं के लोगों से भरा हुआ था और उनलोगों का आत्मबोध-रहित उत्साह प्रभावोत्पादक था। यद्यपि दो महिलायें लम्बे फ्रॉक पहने हुई थीं तथापि वहाँ पर किसी प्रकार की वेश-भूषा संबंधी पाबंदी नहीं थी।

"हमलोग जहाँ भी गये वहाँ हमलोगों को आचार की इसी स्वाभाविकता का दर्शन हुआ। गली, पार्क, थियेटर और जनयातायात में हमलोगों ने रूसवासियों की मिलनसारिता देखी। भाषा के अभाव में भी मित्र बनाना सरल प्रतीत हुआ।

गत रात्रि में जब हमलोग रेलगाड़ी पर विदा हुए तब हमलोगों का ध्यान पुनः पूर्वरात्रि के सम्नेलन की ओर गया।

स्टेखनोवाइट हमलोगों से कह रहा था कि उसके साथियों ने उसका कार्य स्वयम् कर दिया है और उसको छोड़ दिया है क्योंकि हमलोगों को नगर घुमाने के कार्य को वे अधिक महत्वपूर्ण समझते हैं। शनिवार की सभा की चर्चा करते हुए उसने कहा—"वह हमलोगों की अच्छी बैठक थी, किन्तु यह थी—"। इसके बाद आगे बोलने में उसे कुछ संकोच हुआ और तब मुठ्ठी बाँधकर उसने एक शब्द का प्रयोग किया जिसे हमलोगों के दुभाषिये ने घूँसेबाजी कहकर बतलाया! क्वेकर लोगों का घूँसेबाजी से संबंध, यह एक अच्छा मजाक था। हमलोग हंसकर अत्यन्त गंभीरता पूर्वक इस बात से सहमत हो गये कि यह युद्ध पारस्परिक विश्वास के कारण ही संभव हो सका।"

हमलोग सोमवार, २३ जुलाई को बारह बजे दिन में मास्को पहुँचे।

उधर मार्गरेट बैकहाउस, पॉल कैडबरी, फ्रैंक एडमीड और लेसली मेटकाफ ने २१ जुलाई को प्रातःकाल में मास्को से विमान द्वारा कीव के लिये प्रस्थान किया था। आगे की कथा उनके वर्णनों से प्रारंभ की जाती है।

इस यात्रा ने हमलोगों को कम से कम एक रूसवासी के सामने यह प्रमाणित करने का अवसर प्रदान किया कि पश्चिमीय देशों से भी भलाई संभव है! हमलोगों का सहयात्री एक दुभाषिया यात्रा के विचार से अत्यन्त शोकाकुल था। विमान-यात्रा में वह सदैव अस्वस्थ हो जाया करता था। परन्तु मार्गरेट बैकहाउस ने उसे

एक निरोधात्मक औषध प्रदान की और उसे अपने जीवन में सर्वप्रथम वायुयान यात्रा में आनन्द का अनुभव हुआ।

कीव हवाई स्टेशन पर यूक्रेन की शान्ति समिति के प्रतिनिधिमण्डल ने हमलोगों का स्वागत किया। वहाँ से हमलोगों को मोटर पर अन्तर्यात्री होटल में पहुँचाया गया। यहाँ पर समिति के उपसभापति इवान कनडुबा को छोड़कर स्वागतार्थी दल के सभी व्यक्ति हमलोगों के पास से चले गये। उप सभापति महोदय विश्वविद्यालय में इतिहास के प्रोफेसर हैं। उन्होंने अपना जीवन एक कृषक मजदूर के रूप में प्रारम्भ किया था और क्रान्तिपूर्व की पद्धति के अन्तर्गत अभी भी वही बने रहते, किन्तु क्रान्ति ने उन्हें अध्ययन करने का अवसर प्रदान किया। वे कीव में हमलोगों के स्नेही प्रदर्शक एवं साथी बने रहे। यहाँ पर हमलोगों ने अपने आप को एक अन्य विदेशी देश में पाया। यद्यपि यहाँ पर रूसी भाषा सर्वत्र बोधगम्य है तथापि यहाँ की स्थानीय भाषा यूक्रेनियन है। हमलोगों को बतलाया गया कि जार के शासनकाल में विद्यालयों की शिक्षा का माध्यम रशियन थी, किन्तु सोवियत पद्धति के अन्तर्गत स्थिति बदल गई है। अब यूक्रेनियन का ही प्रयोग किया जाता है लेकिन रशियन भी विद्यालय की एक भाषा के रूप में सिखलायी जाती है।

जलपान के बाद हमलोगों ने मोटर पर इस सुन्दर नगर का व्यापक भ्रमण किया। हमलोगों ने पार्क, प्रशस्त मार्ग प्रतिमाओं और युद्ध द्वारा विनष्ट कई क्षेत्रों का अवलोकन किया। पर साथ ही हमलोगों ने अनेक भवनों को निर्मित होते भी देखा। इनमें प्रायः अधिकांश उन भवनों के स्थान पर बनाये जा रहे थे जिन्हें १९४३ ई० में जर्मनों ने पलायन करते समय जान बूझ कर नष्ट कर दिया था। नगर एक पहाड़ी पर अवस्थित है। इसके शिखर पर पहुँचते ही हमलोग अकस्मात् नगर के बाहर हो गये और वहाँ से (हमलोग) नीपर नदी एवं उसके सुदूरवर्त्ती मैदानों को देख सके। यह एक अद्भुत दृश्य है। नदी की दूसरी ओर हमलोगों को रंगीन छतरियों एवं स्नानार्थियों के लिये तम्बुओं से युक्त बालुकामय तट दृष्टिगत हुआ। इस आनन्दप्रद तट की उन्नति नदी के पूरे किनारे पर की जा रही है। नदी के नगर वाले भाग की तरफ पहाड़ी, नदी की सतह तक, बहुत तेजी से ढालुवाँ होती चली गई है। उसका यह भाग वृक्षों से आच्छादित है और एक सुन्दर मनोरंजन स्थल का काम करता है। इसमें खुले हुए सिनेमा एवं थियेटर हैं तथा जलपान गृह एवं आश्रय स्थान हैं जहाँ से सारे दृश्यों की सराहना की जा सकती है।

लम्बी यात्रा तय करने और विभिन्न स्थलों में विचरने के बाद हमलोगों ने

मोटर पर बैठे-बैठे 'शिशुगृह' की एक झलक ली और तब किंडर गार्टेन संख्या १ में रुके। यह एक दिवा धातृगृह है और काम करनेवाली माताओं के ३ से ७ वर्ष तक के बच्चों के लिये चलाया जाता है।

जब हमलोग इस विशाल भवन में पहुँचे तब हमलोगों ने कोई २०० स्वस्थ बच्चों को उद्यान में खेलते हुये पाया। ये बच्चे नीले रंग के छोटे जांघिये और धूपत्राण पहने हुये थे। उनलोगों के रात्रि भोजन करने जाने का समय समीप था। हमलोगों ने उनके हाथ मुँह धोने का और कपड़ा बदलने का घर देखा। प्रत्येक बच्चे के लिए एक एक अलमारी थी जिसका अग्रभाग उठा दिया जा सकता था।

भोजन एक साथ चार अथवा छः बच्चों के लिये अलग-अलग टेबुलों पर आकर्षक ढंग से रक्खा गया था। भोज्य-सामग्री में गर्म मांस के गोले का एक टुकड़ा, उबाले हुए आलू जिनमें मक्खन एवं अजवायन भलीभाँति मिश्रित थे, टमाटर, सलाद, पावरोटी और फल का रस था। बालक सुशील थे किन्तु पर्याप्त रूप से स्फूर्तिमान और अत्यधिक प्रसन्न थे। निरीक्षिका की उम्र ५० के लगभग थी और ऐसा लगता था कि उसे बच्चों से प्रगाढ़ स्नेह था।

खेल गृहों में शिक्षात्मक एवं रचनात्मक खिलौनों की बड़े पैमाने पर व्यवस्था थी। उन्हें रात्रि के लिये अत्यन्त सुन्दर ढंग से हटाकर रख दिया गया था। वहाँ पर नव प्रस्फुटित पुष्प प्रचुर मात्रा में दृष्टिगोचर हुए। वहाँ एक सुन्दर व्यायामशाला भी थी और अनेक कमरे भी थे। इन कमरों में बालवृन्द नमूना निर्माण, चित्रकारी तथा प्रकृति-अध्ययन करते थे।

पॉल कैडबरी ने अपनी डायरी में एक विशेष आनन्दप्रद घटना का उल्लेख किया है।—

"इंगलैंड से मैं प्रस्थान करने के पूर्व एक क्वेकर मित्र ने मेरे पास ५ शिलिंग भेजा था। उनकी अभिलाषा थी कि मैं उसका कोई खिलौना खरीदकर किसी रूसी बालक को प्रदान करूँ और यथासंभव यह खिलौना किसी पशु का हो। बालक तो यहाँ मौजूद थे किन्तु अपने द्रव्य-प्राप्ति में कठिनाई के कारण मैं अभी तक खिलौना नहीं खरीद सका था। परन्तु मेटकाफ ने बैंक से कुछ द्रव्य निकालने की व्यवस्था की थी और फलस्वरूप मेरी जेब में इस समय ६ रूबल थे। अतएव उपहार की प्रेमपूर्ण भावना को स्पष्ट करते हुए, मैंने यह जिज्ञासा प्रकट की कि क्या मैं इस द्रव्य को

एक खिलौना खरीदने के लिये दे सकता हूँ। कुशल निरीक्षिका द्रव्य लेना अस्वीकार कर रही थीं, किन्तु उन्होंने इसकी अन्तर्निहित भावना को पहचाना। अन्तर्राष्ट्रीय अन्तर्ज्ञान की वृद्धि के लिये बालकों को वास्तविक उपहार देने की भावना उनके मन में जँच गई। उनके पास (पशुओं के) कुछ नवीन खिलौने थे। उन्होंने उन्हीं में से एक का उपयोग मेरे द्वारा किये जाने की इच्छा व्यक्त की। अतः जब हमलोगों का पर्यटन समाप्त हो गया तब बड़े उजले फीतों वाले छोटे-छोटे दो सुन्दर काले भालुओं को हमलोगों के समक्ष उपस्थित किया गया। उनमें एक को मार्गरेट बैकहाउस ने सबसे छोटे दल के एक बालक को प्रदान किया और दूसरे को मैंने एक छोटी बालिका को। ये खिलौने उन सभी बालकों को "इंगलैण्ड की ओर से सप्रेम" भेंट किये गये थे। मैंने बालिका के मस्तक का चुम्बन किया और मुझे विश्वास है कि अगर अक्षरशः नहीं तो कम-से-कम भावना की दृष्टि से मेरे मित्र की अभिलाषा पूरी हुई। हमलोग असामान्य (भाग्यवान) दूत थे।

"परन्तु बात यहीं तक समाप्त नहीं हुई। अब बालकों ने इंगलैण्ड के बालकों के लिये उपहार भेजने की इच्छा प्रकट की। दो (छोटे-छोटे) सुन्दर बालकों ने आगे बढ़कर हमलोगों को दो रूसी काष्ठनिर्मित गुड़ियों के जोड़े भेंट किये। मैंने उन लोगों को बतलाया कि यह उपहार 'पंगु शिशु विद्यालय' में भेज दिया जायगा। जिस समय हमलोग कार्यालय में गये उस समय मार्गरेट बैकहाउस ने 'दर्शनार्थी पुस्तक' में हमलोगों के उद्देश्य एवं सन्देश को संक्षेप में लिखा और हम सबों ने उसपर अपने हस्ताक्षर किये। इसका अनुवाद सुनने पर निरीक्षिका ने कहा—"मैं इन बालकों को सदा शिक्षा देती हूँ कि वे अंगरेजों और अमेरिकावासियों से अवश्य प्रेम करें।"

परन्तु यहाँ भी, जैसा कि बाद के वार्त्तालापों से प्रकट हुआ, शान्ति अभिलाषी साधारण जनता और युद्धायोजनकारी उनकी दुष्ट सरकारों में अन्तर दिखलाया गया। हमलोगों को यहाँ फिर इस बात को स्पष्ट करना पड़ा कि यद्यपि क्वेकर सम्प्रदाय के रूप में हमलोग पुनःशस्त्रीकरण का विरोध करते हैं—और कर सकते हैं—किन्तु पश्चिमीय देशों की सरकारें स्वतन्त्र रूप से निर्वाचित होती हैं। वे जनता का प्रतिनिधित्व करती हैं और उनके भय एवं सन्देहों को अभिव्यक्त करती हैं।

बालकों को नर्सरी में प्रातःकाल के प्रारंभ से सन्ध्या के ७ या ७-३० बजे तक रहना पड़ता है और उनके माँ-बाप को अपनी आय के अनुसार ३० से ८०

रूबल प्रतिमास देना पड़ता है। हमलोगों के प्रस्थान करने के समय तक कितने माँ-बाप अपने बच्चों को घर ले जाने के लिये पहुँच चुके थे। उनमें से कुछ के पिता समीप ही में होने वाले एक फुटबॉल मैच को देख कर आ रहे थे। खेल एकपक्षीय ही रहा था क्योंकि अन्तिम गोल के समय की स्थिति १८:० थी।

किंडरगार्टेन से हमलोग कीव के गुफावाले मठ की ओर चले। यह रूस के तीन बड़े मठों में एक है। इन गुफाओं अथवा शवस्थानों में शीशे के आवरण-वाली शवपेटिकाओं के अन्तर्गत अनेक सन्तों का मसालों द्वारा सुरक्षित शरीर रक्खा हुआ है। यह हमलोगों द्वारा देखी हुई अनेक स्मारकों में एक अपूर्व सा था। स्वयम् आर्किमैन्ड्राइट हमलोगों को इन शवस्थानों के पास ले गये (उनका मुखमण्डल अत्यन्त सौन्दर्ययुक्त था)। वे हमलोगों को जनपूर्ण चर्च में भी ले गये जहाँ पर विशप (पादरी) उपासना करा रहे थे। पॉल ने लिखा है—"प्रिय वृद्ध आर्किमैन्ड्राइट ने हमलोगों के सद्भावना सन्देश को ग्रहण कर हमलोगों के लिये सद्कामना प्रकट की। मैं उनकी सदाशयता और अपने आस-पास के लोगों के लिये उनकी असंदिग्ध उदाहरणशीलता से अभिज्ञ था। वस्तुतः सरल पुरोहितों और महन्तों से वार्त्तालाप करना सुगम है। वे लोग मुझे दैवी पुरुष प्रतीत होते हैं।" मठ के मुख्य भवन को जर्मनों ने जानबूझ कर नष्ट कर दिया था। उनलोगों ने दीवालों में छिद्र बनाकर और उन छिद्रों में 'डायनामाइट' लगाकर भवन को ध्वस्त कर दिया था। यह विवेकहीन कार्य ही था, क्योंकि सैनिक दृष्टि से स्पष्टतः मठ का कोई महत्व नहीं था।

रविवार, २२ जुलाई को हमलगों ने होटल से १० बजे कीव से २५ मील दूर स्थित 'मोलोटोव सामूहिक कृषिफार्म' को देखने के लिये मोटर द्वारा प्रस्थान किया। हमलोग वहाँ मिश्रित भावनाओं को लेकर गये। यद्यपि हमलोग भूमि के सामूहिकीकरण की निर्ममता एवं उसके फलस्वरूप करोड़ों लोगों के प्रा 'भिक कष्टों को भूले नहीं थे तथापि हमलोग वर्त्तमान स्थिति का यथासंभव तटस्थ एवं पक्षपात-रहित ज्ञान प्राप्त करने की आकांक्षा रखते थे। कच्ची सड़कों से यूक्रेन को चौरस भूमि की यात्रा धूलिमय होते हुए भी मनोरम थी और कृषि-फार्म का दर्शन तो अधिकतम प्रसन्नता का अवसर था। हमलोगों ने कृषि, अर्थ, बाजार, श्रमिकों की नियुक्ति आदि बातों के सम्बन्ध में विवरण नोट किया। यद्यपि हमलोगों को निस्सन्देह एक अपेक्षाकृत अधिक सफल कृषि फार्म में ले जाया गया था तथापि वायुमार्ग द्वारा एवं अपनी लम्बी मोटर-यात्रा के परिणाम स्वरूप हमलोगों को ग्रामों की जो झलक मिली थी उससे यह तनिक भी सन्देह नहीं रह गया कि इस फार्म की कृषि-प्रणाली भी अन्य स्थानों से भिन्न नहीं है

भूमि की अवस्था भी उत्तम रूप में है। हमलोग इस बात से अभिज्ञ हुए कि यहाँ यह पद्धति सफलता पूर्वक काम कर रही है और यहाँ जलसेना के तथा-कथित 'आनन्दमय जहाज' का सा वातावरण विद्यमान है। जब हमलोग फार्म के मध्य भाग होकर से ५० पलंगवाले अस्पताल की ओर जा रहे थे तब एक लारी मिली। हमलोगों को धूल से बचाने के लिये वह रुक गई। इसमें एक बैन्ड बजानेवाला दल था जिसमें विशेषतः बालक ही थे। खेतों की कटाई में नहीं लगे रहनेवालों के लिये रविवार विश्राम दिवस होता है। हमलोगों ने बैंडवालों से एक ताल सुनाने के लिये अनुरोध किया। उनलोगों ने स्वीकार तो कर लिया किन्तु हमलोगों को सचेत कर दिया कि इस बैंड के दल का निर्माण हुए अभी केवल ३ महीने हुए हैं। बैंड बजाने के ढंग से यह बात प्रमाणित भी हो गई। यह सारी घटना बिल्कुल अकृत्रिम थी।

इस कृषि फार्म को १६३० ई० में प्रारंभ किया गया था। युद्धपूर्व यह अत्यधिक समृद्ध था और ग्राम भी सुसंघटित था। हमलोगों को बतलाया गया कि जर्मनों ने अपने आधिपत्यकाल में क्लिनिक के साथ-साथ समस्त भवनों को जला डाला था और समस्त यंत्रों एवं मवेशियों को यहाँ से हटाकर फार्म के कुछ भाग में एक बन्दी शिविर खोला था। यहाँ पर ४०,००० बन्दी रक्खे गये थे जिनमें ३००० काल कवलित हुए अथवा मार डाले गये। हमलोगों को एक सामूहिक कब्रगाह दिखलाया गया जहाँ पर ५०० नागरिक दफनाये गये थे। फार्म का पुनर्निर्माण किया गया था और इसकी आर्थिक स्थिति एक बार पुनः दृढ़ हो गई थी। पुनर्निर्माण के बाद राज्य ने भी आर्थिक सहायता प्रदान की है। यह फार्म एक वृहत् को-ऑपरेटिव सोसाइटी (सहकारी समाज) है जिसमें सदस्यों को राज्य से एक लिखित प्रमाण-पत्र मिला हुआ है। इस पत्र के द्वारा भूमि सदा के लिये उनलोगों के हाथ में सौंप दी गई है। विद्युत् शक्ति का उपयोग विस्तृत रूप से दूध दुहने, धुनने, पानी खींचने और घरों को प्रकाशित करने के लिये किया जाता है। फार्म के यंत्र एक ट्रैक्टर स्टेशन द्वारा प्रदान किये जाते हैं जो इसी तरह के ६ सामूहिक फार्मों का काम चलाता है।

राज्य द्वारा दिये गये प्रमाण-पत्र (चार्टर) में यह व्यवस्था की गई है कि एक साधारण सभा द्वारा इस फार्म के परिषद्, इसके सभापति और उपसभापति का चुनाव किया जायगा। परिषद् का कार्यकाल २ वर्ष है जिसके बाद वह पुनर्निर्वाचन के लिये पुनः नाम दे सकती है। सभापति की रिपोर्ट सुनने के लिये प्रत्येक दो मास में कम-से-कम एक बार साधारण सभा का होना आवश्यक है। सभापति को कभी भी पदच्युत किया जा सकता है। सभापति ने हमलोगों

को बतलाया कि वे १० बार पुनर्निर्वाचित हो चुके हैं। फलतः २० वर्षों से वे इस पद पर हैं (युद्ध काल में इसमें व्यवधान अवश्य पड़ा था।)। वे अत्यन्त सुयोग्य एवं ईमानदार व्यक्ति प्रतीत होते थे। अतः उनके बार-बार पुनर्निर्वाचित होने से हमलोगों को आश्चर्य नहीं हुआ। वहाँ एक रेडियो रिले (प्रसारक) स्टेशन भी है जो भिन्न-भिन्न घरों के २५०० ध्वनि विस्तारक यंत्रों से संयुक्त हैं। यहाँ से सभापति महोदय लोगों को संबोधित कर सकते हैं। वे प्रत्येक संध्याकाल में कृषि के प्रगति की रिपोर्ट देते हैं। कृषि एवं ओषधि विशेषज्ञों का भाषण भी यहाँ से प्रसारित किया जाता है।

ग्राम में विद्यालय जाने योग्य ६०० बालक हैं। यहाँ ४ विद्यालय हैं जिनमें एक माध्यमिक विद्यालय है। इस विद्यालय में ४० शिक्षक हैं। हमलोगों के भ्रमण के समय ६००० की जनसंख्या में से ३०० से भी अधिक नवयुवक औद्योगिक विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में उच्चशिक्षा अन्यत्र प्राप्त कर रहे थे। गत वर्षों में यहाँ की जनसंख्या ने २०० व्यवसायियों को उत्पन्न किया था जिनमें अनेक डॉक्टर, शिक्षक आदि थे, किन्तु आश्चर्य की बात यह थी कि समुद्र से १००० किलोमीटर दूर होने पर भी केवल एक एडमिरल उत्पन्न हो सके थे। क्रान्ति के पहले इस क्षेत्र में २ शिक्षक और ३० छात्र थे और दस में सात-आठ व्यक्ति निरक्षर थे। इस ग्राम में ६ पुस्तकालय हैं; सप्ताह में दो बार स्थानीय भवन में उन्हें ध्वनि संयोजित चलचित्रों को दिखलाया जाता है और महीने में दो बार कीव के कलाकार वहाँ नाटक करने आते हैं।

चिकित्सा सम्बन्धी सुविधाओं के अन्तर्गत एक पोलिक्लिनिक और एक औषधालय है। यहाँ आठ सुयोग्य डॉक्टर और ओषधिवेत्ता हैं। चिकित्सा सम्बन्धी सहायता निःशुल्क मिलती है। डॉक्टरों एवं शिक्षकों का वेतन राज्य देता है। सामूहिक फार्म के प्रत्येक परिवार के पास (१ एकड़ के लगभग) वैयक्तिक भूमि है, जिसमें थोड़ा बगीचा भी सम्मिलित है। वे लोग इसमें एक-दो गायें, सुअर, मुर्गी एवं मधुमक्खियाँ पालते हैं। वे लोग सामूहिक फार्म से अपने उपयोग के लिये अन्न, चारा-घास और तरकारियाँ प्राप्त करते हैं। प्रत्यक्षतः यहाँ निश्चित पारिश्रमिक की प्रथा नहीं है, किन्तु लोगों को अपने कार्य के अनुसार पारिश्रमिक मिलता है और प्रोत्साहन के लिये उन्हें भिन्न-भिन्न प्रकार के पुरस्कार दिये जाते हैं। ये पुरस्कार दूध, अंडे आदि के उत्पादन पर अवलम्बित हैं। इस सामूहिक फार्म की छः दूकानें कीव में हैं। इसके सिवा यह सोवियत संघ के अन्य भागों के लिये निर्यात भी कर रहा है। इस फार्म में लगभग २७,००० एकड़ भूमि है

और यहाँ के ६००० निवासियों में से २००० व्यक्ति इसमें कार्य करते हैं। यह हमलोगों के अनुमान से कहीं अधिक वृहत् साहसिक कार्य था।

सभापति के कार्यालय में विचार-विमर्श करने के बाद कुछ देर तक हमलोग समीप के कृषि-भवनों के चारों ओर गये और तदुपरान्त औषधालय देखने गये। हमलोग वहाँ की अधिकारिणी महिला डॉक्टर से भी मिले। हम लोगों ने उनसे सैकड़ों प्रश्न पूछे और हमलोगों को सबका तत्क्षण एवं सन्तोषजनक उत्तर प्राप्त हुआ। यंत्र का अधिकाधिक प्रयोग होने पर भी यहाँ अभी हाथ द्वारा बहुत काम किये जाते हैं। लौटते समय हमलोगों ने दो किसानों को हँसिये से घास काटते देखा। हमलोगों ने तिनपतिये घास के ऊपर मवेशियों के अनेकों झुंडों को देखा जिनकी रक्षा एवं देखभाल बच्चे कर रहे थे। लगभग आधे बच्चे तो नंगे पाँव ही दौड़ रहे थे। मार्ग में कुछ स्त्रियाँ भी नंगी पाँव दीख पड़ीं। काम करने के समय की पोशाकें अत्यन्त रूक्ष प्रतीत हुई। (मार्गरेट बैकहाउस ने एक महिला की सूक्ष्म दृष्टि से उनमें से कुछ को "जीर्णशीर्ण" बतलाया) किन्तु एक या दो व्यक्ति, जिन्हें प्रत्यक्षतः आधे दिन का अवकाश मिला हुआ था, स्वच्छ वस्त्र धारण किये हुए थे।

पुराने स्वामियों के हाथ से इन सामूहिक कृषि फार्मों को लेने की विधि चाहे न्यायपूर्ण रही हो अथवा अन्यायपूर्ण, किन्तु यह निर्विवाद है कि ये फार्म अब समाज के अविच्छिन्न अंग हो गये हैं और इनमें अत्यन्त सफलतापूर्वक कार्य हो रहा है।

भ्रमण के बाद सभापति महोदय हमलोगों को अपने घर ले गये। उनके घर के सबसे बड़े कमरे में १५ आदमी बैठ सकते थे। उन्होंने हमलोगों को स्थानीय खाद्यपदार्थों का एक वृहत् भोज दिया। हमलोगों ने जैकोस्का, रान का मांस, टमाटर, ककड़ी, कैवियार और पनीर आदि के साथ भोजन प्रारंभ किया। तदुपरान्त सूअर के मांस और आलू की एक बड़ी प्लेट आई। इसके बाद यूक्रेन के पैनकेक (लिट्टी) की बारी थी। वे कुछ कड़ी तो थीं, किन्तु मलाई और मधु में भलीभाँति भिगाई हुई थीं। हमलोगों से एक गलास अत्यन्त खट्टी गाढ़ी मलाई, एक गलास लाल दाख और उसका रस भी पीने अथवा खाने की आशा की गई। इसके बाद सेव, क्रीमकेक, चॉकलेट और चाय के साथ हमलोगों का भोजन समाप्त हुआ। सभापति महोदय की पत्नी को हम अंग्रेजों की वर्षों की कमी से संयमित भूख से निराशा ही हुई किन्तु हमलोगों के सोडावाटर के व्यवहार से उन उनलोगों को कुछ विनोद हुआ, क्योंकि टेबुल पर वोडका, चेरी-ब्रान्डी आदि की बोतलें पर्याप्त मात्रा में रक्खी हुई थीं।

जलपान के टेबुल पर हमलोगों ने सभापति महोदय, उनकी पत्नी, एक ट्रेडयूनियन के अधिकारी, तथाकथित दो या तीन ब्रिगेड लीडर, प्रारंभ से ही हमलोगों के साथ रहनेवाले प्रो० कनडुबा और ग्राम विद्यालय की एक प्रधान शिक्षिका के साथ खूब वाद-विवाद किया। शिक्षिका महोदया अधेड़ अवस्था की एक अत्यन्त बुद्धिमती महिला थीं। प्रतीत होता था कि वे अँगरेजी समझती हैं। वे हमलोगों की मुख्य प्रश्नकर्त्री सिद्ध हुईं। उन्होंने पूछा कि हमलोग अभी भी इंगलैंड के विद्यालयों में शारीरिक दण्ड को क्यों कायम रक्खे हुए हैं। लेसली मेटकाफ ने उत्तर दिया कि यह प्रथा द्रुतगति से नष्ट होती जा रही है। उन्होंने शिक्षिका महोदया से यह जिज्ञासा की कि वे अपने विद्यालय में किस प्रकार अनुशासन रखती हैं। शिक्षिका महोदया ने बतलाया कि विद्यालय में किशोर पथ-प्रदर्शक एवं किशोर साम्यवादी संस्थायें हैं और उनसे अनुशासन की भावना को अत्यन्त प्रोत्साहन मिलता है।

प्रेस के सम्बन्ध में बात चलने पर शिक्षिका महोदया ने कहा—"हमलोगों को विरोधी प्रेस की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि हमलोग एक संगठित कौम हैं। हमलोगों के यहाँ महिलाओं, कृषकों एवं बालकों आदि के लिये अलग-अलग पत्र-पत्रिकायें हैं। परन्तु सबका राजनीतिक मार्ग एक ही है। और ऐसा हो क्यों नहीं?"

पॉल कैडबरी ने रूसी 'थ्री इम्पल्स' और अँगरेजी "टू इम्पल्स" दूध दुहने-वाले विद्युत्-यंत्रों के सापेक्षिक महत्व पर एक टेकनिकल विवाद उपस्थित कर दिया (इससे हमलोगों के दुभाषियों को घबराहट भी हुई)। इसी प्रसंग में पुरुष-महिला के समान कार्य के लिये समान पारिश्रमिक, क्केकर सम्प्रदाय, कोरिया, वियतनाम एवं विश्व के अन्य बृहत् प्रश्नों पर ग्रेट-ब्रिटेन के लोकमत से सम्बन्धित विषयों का ऊहापोह हुआ। पॉल कैडबरी ने हमलोगों के दल के उन लोगों से जो वहाँ उपस्थित नहीं थे अत्यन्त निष्कपटता पूर्वक पीछे कहा—"मुझे तो प्रतीत होने लगा कि किसी भी तरह संसार के सारे देशों का नाम इस विवाद में आ ही जायगा। मैं मलाया के सम्बन्ध में लम्बे विवाद से बचना चाहता था। अतः भारत, पाकिस्तान, लंका और बर्मा के सम्बन्ध में चर्चा करना प्रारंभ कर मैंने वस्तुस्थिति को लाभ के रूप में सामने उपस्थित किया। वहाँ हमलोग भारत के संग स्थायी एवं वास्तविक मैत्री जैसी वस्तु का दावा कर सकते थे। तदुपरान्त वार्त्ता समाप्त हुई।"

लेसली मेटकाफ आगे लिखते हैं—"हमलोग ३ बजे दिन में रवाना हुए और मोटर द्वारा कीव पहुँचने पर एक घंटा तक विश्राम करने के बाद ६ बजे

यूक्रेन की शान्ति समिति से मिलने के लिये एक अन्य खाद्य पदार्थों से भरी बड़ी टेबुल के पास एकत्र हुए। इस बार हमलोगों को वस्तुतः अधिकांश भोजन अस्वीकार करना पड़ा और यही बात उन रूसवासियों ने भी किया जो हमलोगों के साथ सामूहिक कृषि फार्म पर थे।

समिति के सभापति श्री कोरनीचक और उनकी पत्नी इस सभा में उपस्थित थीं। सभापति महोदय से तो हमलोग इंगलैंड में मिल चुके थे (प्रथम अध्याय देखिये)। वे यूक्रेन सोवियत के सभापति हैं और एक नाटककार के रूप में विख्यात हैं (हमलोगों को उनका परिचय रूसी शेक्सपियर कहकर कराया गया)। वहाँ विश्वविद्यालय के ७ प्रोफेसर (जिनमें ३ महिलायें थीं), कीव के पादरी और एक प्रमुख बैपतिस्ट भी उपस्थित थे। बैपतिस्ट महोदय ने मास्को के एक अन्य बैपतिस्ट से फोन द्वारा बातचीत की थी; फलतः हमलोगों के उनके चर्च में जाने के सम्बन्ध में उन्हें सभी बातें मालूम थीं। मुख्यतः विधिवत् भाषणों से बचने की चेष्टा की गई, किन्तु प्रस्तावित मास्को आर्थिक सम्मेलन, ग्रेट ब्रिटेन और उससे भी अधिक अमेरिका में शान्ति आंदोलन के सम्बन्ध में सन्देह होने के कारणों, शत्रुतापूर्ण प्रचार, गलत वक्तव्यों के संशोधन के लिये इन दोनों देशों में शुभाकांक्षियों की आवश्यकता और एक शान्ति संगठन द्वारा अन्य देशों को आक्रमणकारी कहने के आरोपण से सम्बन्धित प्रश्नों पर वार्त्तालाप हुआ। श्री कोरनीचक ने कहा कि इंगलैंड में हमलोगों के संग सम्मेलन समाप्त होने के बाद जब वे कोपेनहेगेन में आयोजित विश्वशान्ति समिति की कार्यकारिणी की एक सभा में उपस्थित हुए थे तब डेनमार्क की एक महिला ने इसी प्रकार की युक्तियाँ उपस्थित की थीं वे उनसे प्रभावित भी हुए थे। फ्रैंक एडमीड करीब ३ घंटे तक रूसी भाषा में तीनों महिला प्रोफेसरों से सत्य के पक्ष में बोलते रहे। मार्गरेट बैकहाउस ने श्रीमती कोरनीचक से वार्तालाप किया। शेफील्ड सम्मेलन के लिये अपना प्रवेशादेश अस्वीकृत कर दिये जाने के कारण उन्हें बड़ा क्षोभ था।

अन्ततः करीब १० बजे (रात में) लेसली मेटकाफ ने यूक्रेनवासियों के नाम बिना किसी पूर्व तैयारी के एक ब्रॉडकास्ट किया (जिसे 'रेकर्ड' कर लिया गया)। यह ब्रॉडकास्ट मुख्यतः १६५० ई० के सद्भावना सन्देश पर आधारित था। उन्होंने अँगरेजी में भाषण किया और यूक्रेनियन (यूक्रेन की भाषा) में साथ-साथ उसका अनुवाद भी होता गया। पुनः इसका उपयोग हुआ कि नहीं—यह हमलोगों को ज्ञात नहीं है, किन्तु इस कार्य के बदले में

उन्हें ५०० रूबल प्रदान किये गये और तब से हमलोगों के दल ने अपने को धनी अनुभव किया।

लेसली मेटकाफ आगे लिखते हैं—"ब्रॉडकास्ट के बाद फ्रैंक एडमीड और मैं कीव में विचरण करने निकले और रूस में आने के बाद हमलोगों ने गलियों में सर्वप्रथम कुछ पियक्कड़ों को देखा।"

दूसरे दिन प्रातःकाल हमलोगों का दल विमान द्वारा मास्को के लिये रवाना हुआ और वहाँ ११ बजे (दिन में) मूसलाधार वर्षा में पहुँचा।

●

सप्तम अध्याय

सम्मेलनों के तीन दिन

ऋतु-परिवर्तन हो चुका था और कुछ दिनों तक खूब जोरों की वर्षा होती रही। कीव और लेनिनग्राड से वापस आये हुए दोनों दलों ने सोमवार, २३ जुलाई को जलपान के समय एकत्र होकर अपने-अपने अनुभवों का आदान-प्रदान किया। दोपहर बाद सोवियत महिला फासिस्ट विरोधी समिति की सभा-नेत्री मर्घारिता जखरोवा ने कैथलीन लौंसडेल से एक अप्रत्याशित भेंट की। वे स्टॉकहोम शान्ति अपील, पंच राष्ट्रीय सन्धि एवं कोरिया की स्थिति के लिये की गई अपील पर विचार-विमर्श करना चाहती थीं। जब उनसे इन बातों पर पश्चिमीय देशों की धारणा स्पष्ट की गई थी तब वे बिल्कुल भ्रम में पड़ गई थीं। उन्हें यह बिल्कुल स्पष्ट प्रतीत होता था कि आक्रमण की समस्त भावना संयुक्त राष्ट्रसंघ की ओर से ही है। यह वाद-विवाद जरा भी आगे नहीं बढ़ सका। किन्तु जब कैथलीन लौन्सडेल ने उन्हें यह सुझाव दिया कि कोरिया में शान्ति की आवश्यकता है यह नहीं कि कोरिया युद्ध के लिये दोष किसे दिया जाय तब उनका मुखमण्डल चमक उठा और उन्होंने यह बात गहरी भावनाओं के साथ मान ली। मिल्ड्रेड कीक भी वार्त्ता में सम्मिलित हो गई थीं। श्रीमती जखरोवा का सम्बन्ध चिकित्सा-जगत था। अतः, मिल्ड्रेड ने उनसे शिशुओं की देखभाल की समस्याओं पर विचार विमर्श किया क्योंकि रूस में बहुसंख्यक मातायें कार्य करनेवाली ही हैं। पीछे, सप्ताह के अन्त में उन्होंने एक शिशुचिकित्सालय और एक पोलिक्लिनिक का निरीक्षण भी किया। इनमें दूसरे के प्रति हमारी विशेष अभिरुचि थी क्योंकि वह पहले से ही उन कार्यों को कर रहा है जिनको अन्ततोगत्वा ग्रेटब्रिटेन के स्वास्थ्यकेन्द्र करेंगे। उन्होंने लिखा था—"चिकित्सा-सम्बन्धों की दृष्टि से सबसे प्रभावोत्पादक वस्तु चिकित्सा सामग्री की अपेक्षा शिशु रोगियों के प्रति प्रदर्शित सहृदयता थी क्योंकि इन दोनों स्थानों की चिकित्सा सामग्रियाँ इंगलैंड अथवा

सामान्यतः पश्चिमीय यूरोप की अपेक्षा अपर्याप्त एवं कम उन्नत थीं। उदाहरणार्थ शिशु विभाग में रेफ्रिजेरेटर के स्थान पर बर्फ का एक बड़ा बक्सा था, किन्तु शिशुओं की शुश्रूषा में सहायता करने के लिये देखने आनेवाले माता-पिता का पूर्णोपयोग किया जाता था। किसी-किसी वार्ड में माँ का पलंग बच्चे के पलंग के साथ ही था, किन्तु किसी प्रकार का नकाब चेहरों पर नहीं लगाया जाता था। हमलोग भी ग्रेट-ब्रिटेन में कीटाणुओं से बचाने के लिये जो कड़ी पाबंदियाँ रोगग्रसित शिशुओं के उनके माता-पिताओं के संसर्ग में आने पर लगाते हैं और माता-पिता एवं शिशु के अलग रखने के फलस्वरूप जो मानसिक आघात शिशुओं पर होता है, उसके खतरे को पहचानने लग गये हैं। सामान्यतः यद्यपि शिशु संरक्षण गृह एवं नर्सरी स्कूलों की संख्या ग्रेट ब्रिटेन में निरन्तर बढ़ती जा रही है तथापि सोवियत संघ में (ग्रेट ब्रिटेन) की अपेक्षा शिशुओं की देखभाल विशेष रूप से स्नेहयुक्त एवं व्यक्तिगत प्रतीत हुई।"

सन्ध्या के कुछ पूर्व हमलोगों को रूसी संघात्मक गणतंत्र के शिक्षा मंत्री श्री कैरोव से भेंट करने के लिये आमंत्रित किया गया। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि वे सोवियत संघ के स्वायत्तशासक गणतंत्रों के १६ समान मंत्रियों में से एक हैं। समस्त संघ के लिये एक शिक्षा मंत्रणालय नहीं है किन्तु अगर संघ की सरकार ऐसा निर्णय करती है जिससे सभी गणतंत्रों का सम्बन्ध है तो इन सभी मंत्रणालयों को सहमत होना पड़ेगा। हमलोगों ने अनेकों प्रश्न पूछे और करीब १½ घंटे तक विश्वविद्यालय एवं विद्यालय की शिक्षा प्रारंभ होने के पूर्व की सोवियत शिक्षण पद्धति का योग्य वर्णन सुनते रहे। (द्वितीय परिशिष्ट देखिये)। नर्सरी स्कूलों का वर्णन विशेषरूप से मनोरंजक था। उनका सर्वाधिक वाक्कौशल तो तब दीख पड़ा जब उन्होंने विद्यालयों में शारीरिक दण्ड व्यवस्था के अनौचित्य पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि केवल अयोग्य शिक्षक को ही अनुशासन कायम रखने के लिये बल-प्रयोग की आवश्यकता पड़ेगी। सोवियत संघ में शारीरिक दण्ड अवैध करार कर दिया गया है। इस प्रकार के दंड से झूठ बोलने की आदत एवं धोखा देने की आदत पड़ती है, किन्तु आत्म-संयम का विकास कदापि नहीं होता, जो आन्तरिक गुणों का मापदण्ड है। जब उनसे अंगरेज एवं रूसी विद्यालयों के छात्रों के बीच पत्राचार के सम्बन्ध में पूछा गया तब उन्होंने उत्तर दिया—"मैं अपने देश के विधानों एवं नियमों के अधीन इस प्रकार के आदान-प्रदान की वृद्धि का समर्थन करता हूँ।" संयुक्त राष्ट्रसंघ और उसके विशिष्ट विभागों के सम्बन्ध में शिक्षा कहाँ तक दी जाती है, यह प्रश्न किये जाने पर उन्होंने कहा कि इसका कोई विशेष प्रशिक्षण नहीं दिया

जाता किन्तु अन्तिम साल में आधुनिक इतिहास पढ़ाते समय इन बातों की चर्चा होती है। मंत्री महोदय ने यह कहकर अपना वक्तव्य समाप्त किया कि वे लोग अपने बालकों को स्वदेश एवं समस्त विश्व में अपने देश के मित्रों से प्रेम करने की शिक्षा देते हैं। जब पॉल कैडबरी ने उन्हें यह ध्यान दिलाया कि अपने शत्रुओं से भी प्रेम करना आवश्यक है तब उन्होंने तत्काल उत्तर दिया—"इस सम्बन्ध में ईसाई सिद्धान्त "शान्ति नहीं बल्कि खड्ग" प्रतीत होता है।" कैथलीन लौन्सडेल ने उन्हें विलियम पेन के कथन की स्मृति दिलाई—"बल प्रयोग बाध्य कर सकता है किन्तु विजय प्रेम की ही होती है।" कुछ द्विविधा के साथ उन्होंने यह स्वीकार किया कि यह आवश्यक तो है किन्तु अत्यन्त कठिन है। जब हमलोग बिदा हुए तब उन्होंने हमलोगों का परिचय प्राप्त करने के लिये दुभाषियों को वापिस बुलाया। प्रतीत होता था कि हमलोगों ने उन्हें अशान्ति में डाल दिया है। हमलोगों को वे अत्यन्त योग्य एवं ईमानदार व्यक्ति प्रतीत हुए।

उस सन्ध्या को हमलोगों ने ब्रिटिश दूतावास में भोजन किया। इस बार भी वहाँ हमलोगों का बड़ा स्वागत हुआ। हमलोगों ने अपने अतिथि-स्वामी और अतिथि-स्वामिनो से देखी हुई वस्तुओं के सम्बन्ध में कुछ बातें बतलाईं। उनलोगों के संग का विचार-विमर्श अत्यन्त मनोरंजक रहा, जिससे वस्तुस्थिति को पूर्ण रूप से समझने में हमें सहायता मिली।

दूसरे दिन प्रातःकाल मार्गरेट बैकहाउस और मिल्ड्रेड क्रीक ने उपर्युक्त शिशु चिकित्सालय का निरीक्षण किया और अन्य व्यक्ति त्रेत्याकोव कला भवन को देखने गये। इस कला भवन में रूसी कला का निदर्शन है। इसमें ५०,००० चित्र हैं, यद्यपि निस्सन्देह उनमें से अनेक प्रदर्शित नहीं किये जाते। ५० फुट लम्बे एक स्मरणीय चित्र में "स्वजनों को यीशुमसीह के दर्शन" दिखलाया गया था। कलाकार अलेकजेन्डर इवानोव ने इस चित्र के निर्माण में अपना समग्र जीवन लगा दिया था। इस चित्र वाले कमरे में उन व्यक्तियों एवं दलों के रेखाचित्र भी दिखलाये गये हैं जिन सब की सहायता से चित्र पूर्ण हुआ था। हमलोगों की प्रदर्शिका एक बुद्धिमती प्रौढ़ा थीं। उन्होंने उस चित्र का अत्यन्त भक्तिभावपूर्ण वर्णन किया। उनकी धारणा थी कि यथार्थवाद ही कला की पराकाष्ठा है। वे १६ वीं शताब्दी के चित्रों का मूल्यांकन उनमें कितनी यथार्थवादिता थी इससे करती थीं।

यद्यपि मूसलाधार वर्षा हो रही थी तथापि उस दिन दल के अधिकांश व्यक्तियों ने कुछ समय विचरण करने या वस्तुएँ खरीदने में बाहर ही व्यतीत

किया। मास्को की नालियों एवं जलमार्गों की शक्ति से अधिक जल वर्षा द्वारा गिर रहा था, किन्तु गलियाँ अभी भी लोगों से परिपूर्ण थीं।

दोपहर बाद कैथलीन लौन्सडेल स्फटिक अनुसंधानशाला देखने गईं (अध्याय ६ देखिये)। उनकी मोटर को वहाँ पहुँचने में कुछ कठिनाई हुई क्योंकि यह अनुसंधानशाला एक छोटी गली में था और यह गली अत्यन्त जलप्लावित थी। लेसली मेटकाफ बहुशिल्पी अनुसन्धानशाला देखने गये। वे उसके जलावन एवं शक्ति विभाग में जाकर खान उद्योग के सम्बन्ध में यथासंभव ज्ञान प्राप्त करना चाहते थे। इस यात्रा के विषय में उन्होंने लिखा है—"जिस महिला ने मुझे प्रदर्शनीय वस्तुओं को दिखलाया उसमें यह दावा करने की प्रवृत्ति दीख पड़ती थी कि अधिकांश प्रदर्शित यंत्र रूसवासियों द्वारा ही आविष्कृत हैं। मुझे पता चला कि १६१३ ई० में खानों का उत्पादन २६१ लाख टन था और १६५१ ई० में यह २५०० लाख टन तक पहुँच चुका है इसके सिवा मास्को तथा क्यूबीसेव के बीच ४,००,००० वोल्ट की एक प्रयोगात्मक ट्रान्समीसन लाइन बनाई जा रही है।"

५ बजे हमलोग बर्मा के राजदूत श्री मौंग ओन से मिलने गये। उनके साथ हमलोगों ने चाय पी। उन्होंने बतलाया कि बर्मा एक छोटा देश है और इस कारण बर्मा ने यह निश्चय कर लिया है कि उसके प्रतिनिधि मिथ्यापूर्ण आडम्बर से दूर रहेंगे। इस कारण वे अपने परामर्शदाता के संग अकेले रहते हैं। उनके पास न कोई नौकर है, न कोई मोटरगाड़ी। वे लोग पाकशाला एवं गृह के कार्य आदि स्वयम् कर लेते हैं। उनका व्यवहार मैत्री एवं सहायतापूर्ण था और उन्होंने इन शब्दों के साथ हमलोगों का स्वागत किया—"मैं आपलोगों के 'कन्सर्न-(चिन्ता) से अवगत हूँ—यह क्वेकर लोगों का शब्द है।" उन्होंने हमलोगों को अत्यन्त धैर्यवान् एवं निष्कपट होने का परामर्श दिया। उन्होंने रूसवासियों की अत्यधिक भावुकता की ओर संकेत किया। उन्होंने बतलाया कि रूसवासी आलोचना से घृणा करते हैं और पश्चिमीय देशों के संग की गई किसी प्रकार की तुलना को बुरा मानते है। सामान्य जन तुलना को तो इसलिये बुरा मानते हैं कि वे इसमें विश्वास ही नहीं करते और विचारवान् व्यक्ति इसे इसलिये बुरा मानते हैं कि वे यह नहीं सुनना चाहते कि रूस के समान या यहाँ से अच्छी कोई वस्तु अन्यत्र भी है, यद्यपि ये लोग पश्चिमीय देशों की अनेक संस्थाओं के मूल्यों से अवगत हैं। इनलोगों के लिये इनके अतीत की ही तुलना वास्तविक मापदण्ड है।

हमलोगोंने उस रात्रि को सोवियत शान्ति समिति के व्यय से अपने होटल में बैपतिस्ट मित्रों को एक डिनरपार्टी दी। डिनर के समय और उसके बाद हमलोगों ने अपने पाँच अतिथियों के संग भिन्न-भिन्न दलों में विभक्त होकर बचत, कर, शान्तिवाद, फन्डामेंटलिज्म (तत्ववाद) (वे लोग तत्ववादी हैं) और क्रेकरवाद के सभी पहलुओं पर विचार-विमर्श किया। हमलोगों में से कुछ व्यक्तियों ने सोवियत संघ में युद्ध या युद्धात्मक कार्यों में अंतःकरण की भावना से प्रेरित होकर भाग लेने से इनकार करनेवालों की वैधानिक स्थिति के विषय में भी वाद-विवाद किया। ऐसे लोग वहाँ अत्यल्प हैं और उनका अस्तित्व सह्य प्रतीत होता है। संभवतः इसका कारण उनका इतना कम होना ही है। जब हमलोग इन सरल, निष्कपट व्यक्तियों से अलग हुए तब हमलोगों ने महसूस किया कि वे लोग सच्चे अर्थों में हमलोगों के मित्र हो गये हैं।

दूसरे दिन (बुधवार, २५ जुलाई) लेसली मेटकाफ को कोयले की एक खान देखने और खान इंजीनियर के रूप में अपनी व्यक्तिगत लालसा पूर्ण करने का मौका मिला।

उन्होंने लिखा है—

"प्रातःकाल ५-३० बजे थोड़ा जलपान कर सोरोकिन और मैंने तुला की ओर प्रस्थान किया। यह मास्को के ठीक दक्षिण है। मुझे एक कोयले की खान दिखलाने का वचन दिया गया था, किन्तु सुप्रसिद्ध डोनबास कोयला-क्षेत्र को देखने का समय नहीं रहने का कारण मुझको तुला क्षेत्र की खान संख्या ६ को दिखलाने का प्रबन्ध किया गया। यह मास्को बेसिन कोयला-क्षेत्र का एक भाग है, यद्यपि खानें मास्को से १५० किलोमीटर की दूरी पर हैं।

"दुर्भाग्यवश इस बार हमलोगों के पास लचकदार स्प्रिंगों वाली बड़ी 'जिस' मोटर गाड़ी नहीं थी। इसका कारण निस्सन्देह केवल दो व्यक्तियों का ही जाना था। हमलोग एक छोटी 'विक्ट्री' गाड़ी पर रवाना हुए थे। ड्राइवर भी विचित्र प्रकृति का था। वह गाड़ी की गति अकस्मात् प्रतिघंटा ७० मील तक बढ़ाकर इंजिन चलाना तबतक के लिये बन्द कर देता था जबतक गाड़ी की गति प्रतिघंटा ३० मील तक नहीं हो जाती थी। सच में पहाड़ियों की ऊँचाइयों का अधिक से अधिक लाभ उठाया गया और (गाड़ी चलाने) का कार्य पेट्रोल जला कर करने की जगह गुरुत्वाकर्षण के ऊपर छोड़ दिया गया। सोरोकिन ने मुझे बतलाया कि प्रतिमील जितने गैलन पेट्रोल-व्यय स्वीकृत है उतने गैलन से कम व्यय करने पर ड्राइवरों को पेट्रोल की बचत के अनुसार पारितोषिक दिया

जाता है। हमलोगों के ड्राइवर में व्यावसायिक भावनायें बहुत प्रबल थीं, क्योंकि उसने तुला आने-जाने में लगभग २५० मील रास्ते भर अपनी यह हरकत जारी रक्खी। मैं सोरोकिन को ड्राइवर का विरोध करने के लिये बाध्य नहीं कर सका। दुर्भाग्यवश मेरा अन्तर्राष्ट्रीय मोटर चलाने का लाइसेन्स रूस में लागू नहीं था।

"पथ उत्तम था और उसका अधिकांश भाग पूर्णतया सीधा था। भूभाग कहीं कुछ ऊँचा था, तो कहीं कुछ नीचा। किनारे पर सिल्वर बर्च वृक्षों के अनेक वन मिले जिनसे दृश्य की शोभा और बढ़ी हुई थी।

"हमलोग १० बजे के लगभग तुला पहुँचे और वहाँ से हमलोगों को खान में ले जाया गया। यह नगर के बाहर कुछ दूरी पर है। खान के पास पहुँचने और परिचय देने के बाद हमलोगों ने अन्दर जानेवाले वस्त्रों को धारण किया। हमलोगों को कड़े हैट, रबर के जूते और तेल से जलनेवाले 'सेफ्टी लैम्प' प्रदान किये गये। दिये गये वस्त्रों की कोटि, उन्हें बदलने तथा स्नान करने की सुविधायें मेरे द्वारा देखे हुए यूरोपीय महादेश के अन्य देशों के बिल्कुल समान ही थीं।

"तुला के आस-पास कोयला सतह के अत्यन्त समीप है। जिस सुरंग से हमलोग नीचे उतरे वह केवल ६४ फुट गहरी थी। वहाँ तीन सुरंगें थीं जिनकी १६४८ में खुदाई हुई थी। अन्तर्वर्त्ती 'ट्रॉली लोको' एक टनवाली खान की गाड़ियों को गढ़े के निम्न भाग में ले जाती थीं और उन्हें दो टनवाली ठेला गाड़ियों में उड़ेल देती थी।

"एक क्षैतिज 'सीम' (फाक) में ४ मीटर तक मोटा कोयला पाया जाता है। यह भूरे रंग का और निम्नकोटि का है। खान की अवस्थायें सुखप्रद है और वहाँ गैस नहीं है। मैंने जिस क्षेत्र का अवलोकन किया उसमें कोयला २ मीटर के लगभग मोटा था। वहाँ रूस के बने कुछ दिलचस्प यंत्र काम में लाये जा रहे थे। एक शीर्षस्थल पर एक प्रकार अविरत 'माइनर' (खातक) था, जिसकी दो जंजीरें एक शीर्ष पर नाच रही थीं और वह शीर्ष ६०° के कोण को आड़ी चाप रेखा पर आगे-पीछे घूमता था। एक दूसरे स्थान में मैंने एक बोझाईवाले यंत्र देखा जो 'अमेरिकन 'ज्वॉय लोडर' के सिद्धान्त पर काम कर रहा था।

"रास्ते नील प्रकाश युक्त बत्तियों से सुप्रकाशित थे, यद्यपि ये बत्तियाँ केवल खुले ट्यूब के रूप ही में थीं और किसी चीज में घुसाकर नहीं रक्खी गई थीं।

"मुझे भूमि के अन्दर कार्य करनेवाली स्त्रियों की संख्या देखकर आश्चर्यित होना पड़ा। वहाँ पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों की संख्या अधिक थी। वे खान की गाड़ियों को ठीक खान के मुख द्वार तक संचालित कर रही थीं। रूस में स्त्री पुरुषों को पूर्ण समानता है। वहाँ स्त्रियाँ मार्ग पर अलकतरा फैलाती हैं, बड़ी-बड़ी भवन-योजनाओं के लिये गारा मिलाती हैं तथा अन्य सभी प्रकार के कार्यों को करती हैं जिन्हें हमलोग निश्चित रूप से पुरुष श्रमिकों के क्षेत्र के अन्तर्गत मानते हैं। अतएव रूस में भूमि के अन्दर स्त्रियों को कार्य करते देखना वास्तव में कोई आश्चर्यजनक वस्तु नहीं है। मोटी 'सीम' (फाँकें), ट्रॉली तारों के लिये पर्याप्त जगह एवं उपयुक्त प्रकाश व्यवस्था वाले उत्तम मार्गों के सहित टुला को खान की अवस्थाओं के कारण किसी भी व्यक्ति के लिये रूस में होनेवाले इस कार्य (खानों में स्त्रियों का काम करना) के विरोध में जबर्दस्त युक्ति उपस्थित करना कठिन हो गया है। तो भी यदि हमलोग अपनी खानों में स्त्री-श्रमिकाओं से काम लेना आरंभ करें तो बहुत बड़ा आन्दोलन शुरू हो जायगा!

"सुरंग के बाहर आकर वर्षा की एक बौछार ग्रहण करने के बाद हमलोग विचार-विमर्श के लिये व्यवस्थापक के कार्यालय की ओर बढ़े। व्यवस्थापक उग्र किन्तु विनोद-प्रिय प्रकृति के एक खान इंजीनियर थे। उन्हें देखकर मुझे कुछ अपने परिचित यॉर्कशायर वासियों की याद आ गई। उन्होंने मुझसे पूछा कि उनके खान के सम्बन्ध में मेरे क्या विचार हैं। मैंने सतर्कता पूर्वक पसन्द आई हुई वस्तुओं की प्रशंसा करनी प्रारंभ की। किन्तु वे बीच ही में रोक कर बोल उठे— 'मैं वह सब जानता हूँ। आप मुझे इसकी त्रुटियाँ बतलाइये।" अतएव मैंने समस्त आलोच्य वस्तुयें कह डालीं, किन्तु वे और अधिक कहने के लिये अनुरोध करते रहे।

"हमलोगों ने प्रातःकाल में जलपान किया था और मोटर में दो चार कैवियार सैन्डविच खाये थे। अतएव चार बजते-बजते सोरोकिन और मैंने अपने आपको थका महसूस किया। हमलोगों ने इसलिए कुछ उपयुक्त संकेत किया और तब हमलोगों को 'कैन्टीन' (भोजनालय) में ले जाया गया। वहाँ पर हमलोगों के लिये अद्‌भुत भोजन तैयार किया गया था।

"भोजन की टेबुल पर यांत्रिक इंजीनियर, विद्युत् इंजीनियर, ट्रेडयूनियन के नेता एवं खान के दो इंजीनियर भी थे। हमलोग एक छोटे कमरे में बैठे हुए थे जो स्पष्टतया अधिकारियों के लिये रक्खा गया था। यह श्रमिकों के कैन्टीन (भोजनालय) की बगल में ही पड़ता था। हमलोग टुला से कुछ

दूर थे, अतः भोजन की व्यवस्था कैन्टीन (भोजनालय) की अपनी सामग्री से ही की गई होगी। भोजन वस्तुतः उत्तम था। कोलियरी के समीप अनेकों छोटे-छोटे खेत थे जिनमें सूर्यमुखी, टमाटर आदि लगे हुए थे। व्यवस्थापक ने बतलाया कि वे विलोप की चिन्ता नहीं करते और उसे उपस्थित होने देते हैं।

"तुला छोड़ने में हमलोगों को इतनी देर हो गई कि सोरोकिन ने वहीं रात्रि व्यतीत करने की राय दी। यह दिलचस्प तो होता, किन्तु वहाँ कोई 'अन्तर्यात्री होटल' नहीं होने के कारण मुझे नेशनल होटल के अपने सुखप्रद कमरे की याद आई। अतः हमलोग मास्को लौट पड़े और वहाँ करीब १०-३० बजे (रात) पहुँचे।"

इस बीच दल के अन्य व्यक्तियों का दिन अत्यन्त कार्यव्यस्तता में व्यतीत हुआ। प्रातःकाल का समय उनलोगों ने क्रेमलिन देखने में व्यतीत किया। इस भ्रमण में लम्बे कद वाला और साधारण पोशाक पहने हुए एक नवयुवक, जो सदा चुप ही रहा, दो-चार सैनिक और पूर्व की ही भाँति सुविज्ञ एवं अपने कार्य में तत्पर एक महिला प्रदर्शिका—ये लोग हमलोगों के साथ सर्वत्र रहे। प्रदर्शिका महिला का हैट अत्यन्त सुन्दर था और जब वर्षा हुई तब उन्होंने मिलड्रेड क्रीक का चमकीला छाता सहर्ष माँग लिया। फ्रैंक एडमीड भी छाते में स्थान ग्रहण करते क्योंकि उनकी बरसाती अनुमानतः अभी भी पेनिसिलीन के नीचे थी या उन्हें अभीतक प्राप्त नहीं हुई थी। हमलोगों ने कुछ कुछ आश्चर्यजनक प्राचीन चर्चों को देखा, जिनकी मध्य युग की चित्रकारियों को जैगोर्स्क की भाँति ही अत्यन्त सावधानी के साथ स्वच्छ कर पूर्वावस्था में लाया जा रहा था। कलाकार, वैज्ञानिक और शिल्पवेत्ता सभी संयुक्त होकर इस कार्य को भलीभाँति कर रहे थे। लगभग आधा कार्य समाप्त हो चुका था और हमलोग उनके आश्चर्यजनक मौलिक रंगों को देख सकते थे। यह एक अजीब बात लगती है कि एक नास्तिक और सच पूछिये तो धर्मविरोधी राज्य इन चर्चों की रक्षा के लिये इतना कष्ट उठा रहा है और विशेषकर जब कि ये चर्च बहुत प्राचीन काल से एक मठ के भाग रहे हैं और सम्मिलित उनमें जार सम्राटों का व्यक्तिगत गिरजाघर भी है। परन्तु वहाँ पर एक प्रबल भावना विद्यमान है कि ये स्मारक राष्ट्र की कलात्मक सम्पत्ति के अंग हैं; उन पर समस्त राष्ट्र का अधिकार है और भावी पीढ़ियों के लिये उनकी रक्षा अवश्य की जानी चाहिये। हमलोगों ने इच्छा की कि इंगलैंड के कुछ कला के विद्यार्थी भी अतीत की इन निधियों को देख सकते। हमलोगों को बतलाया गया कि नेपोलियन मास्को से अपने दुर्भाग्य के साथ-साथ कितना अधिक सोना-चाँदी गाड़ी पर लादकर ले

गया, फिर भी बहुत कुछ शेष रह गया था। हमलोगों ने सुन्दर उपकरणों एवं भव्य कमरों से युक्त जार सम्राटों के महलों और शस्त्रागार को देखा (जिसके चारों ओर लाल सेना की एक टुकड़ी भी दिखलाई जा रही थी)। शस्त्रागार बहुमूल्य रत्नों का सुन्दर प्रदर्शन है। उसमें एलिजाबेथ प्रथम और जेम्स प्रथम द्वारा जार सम्राटों को भेंट की गई चाँदी का थाल, मुक्तामय एवं रत्नजटित परिधान, हीरे की मूठवाली तलवारें (जो परमाणु बम से अत्यन्त दूर की चीज है) एवं अनेकों सदियों के कुलीन वर्ग की फैशनेबुल पोशाकें थीं। हमलोग 'चेम्बर ऑव सोवियत' (सोवियत सदन) में गये और वहाँ प्रतिनिधियों के आसन पर बैठकर हमलोगों ने सोवियत संविधान पर एक भाषण सुना। ये समस्त भवन क्रेमलिन की वृहत् दीवाल से आबद्ध, बगीचों से घिरे हुए हैं और प्रत्येक टावर के बुज पर एक लालतारा बना हुआ है।

जलपान के बाद हमलोग सोवियत संघ की ट्रेड यूनियनों के प्रधान कार्यालय में गये। वहाँ हमलोगों ने भी कुद्र्यत्सेव का जो ट्रेड यूनियन के अन्तर्राष्ट्रीय विभाग के उपसभापति है और ट्रेड यूनियन पारिश्रमिक विभाग के श्री लर्नर का भाषण सुना। यद्यपि उनलोगों के भाषणों में हमलोगों की अत्यन्त अभिरुचि थी तथापि हममें से कुछ व्यक्तियों को कुछ अन्य कार्य भी करने थे। अतः, उनलोगों के पूर्व निर्धारित भाषण को सुनते समय हमलोग कुछ उद्विग्न चित्त हो गये। मिल्ड्रेड क्रीक ने इस समस्या के सम्बन्ध में लिखा था :— "हमलोग सरल प्रश्नोत्तरों और वस्तुतः मुक्त विचार-विमर्श द्वारा आधे समय में ही उनलोगों के विचारों को अधिक स्पष्ट रूप से समझ ले सकते थे। अंततः जब हमलोगों ने इसके लिये अनुरोध किया और अपने प्रश्नों को उपस्थित किया तब इन नेताओं को विधि-मर्यादा से बाहर आने में कोई कठिनाई नहीं हुई। मुझे प्रतीत हुआ कि इस पूर्व निर्धारित योजना के अपसरण से केवल हमलोगों का ही नहीं वरन् उनलोगों को भी प्रसन्नता हुई। परन्तु मैंने अनुभव किया कि उनकी पहली विधि ही प्रतिनिधि लोगों की सभाओं के लिये साधारणतया मान्य नमूना हो गई है।"

रूस से वापस आने के बाद हमलोगों से अनेकों ऐसे प्रश्न पूछे गये हैं जो सोवियत संघ की ट्रेड यूनियनों के कार्यों से सम्बन्धित हैं (हमलोगों के दृष्टिकोण से इन ट्रेड यूनियनों का अस्तित्व ही कुछ अजीब बात थी)। मिल्ड्रेड क्रीक द्वारा लिखित, सम्मेलन के सारांश को तृतीय परिशिष्ट के रूप में संकलित किया गया है।

इस मीटिंग से पॉल कैडबरी जिस स्थान को देखने गये उसमें उनकी दिलचस्पी थी। वे कहते हैं—"रेडऑक्टोबर चॉकलेट और मिठाइयों की फैक्टरी में मेरा समय अत्यन्त मनोरंजक ढंग से व्यतीत हुआ। सच पूछा जाय तो यह हमलोगों के कारखानों की कार्यपद्धति की दृष्टि से कई वर्ष पीछे है, किन्तु एक या दो विभागों में और आधुनिक ढंग के उत्पादन के लिये हाल ही में परिवर्तन किये गये हैं। हमलोगों को कुछ ऐसे रूसवासियों से भेंट हुई थी जो पश्चिमीय देशों के सम्बन्ध में नहीं सुनना चाहते थे। यहाँ एक विपरीत उदाहरण ही प्रस्तुत था। निर्देशक श्री जोटोव और उनके दो सहकर्मियों ने पश्चिमीय देशों के सम्बन्ध में मेरे कथन के प्रत्येक शब्द को अत्यन्त रुचिपूर्वक सुना। कच्चे कोको और विशेषकर गोल्ड कोस्ट का कृषि सम्बन्धी समस्याओं में उनकी विशेष रुचि देखकर मुझे सर्वाधिक प्रसन्नता हुई। मैंने श्री जोटोव को बोर्नविले आने के लिये हार्दिक निमंत्रण किया है। समान अभिरुचि वालों के लिये अन्तर्राष्ट्रीय मनोमालिन्यों को भूलना कितना सहज है! कारखाना एक नवीन आलपीन के समान स्वच्छ था। वहाँ के ३००० मजदूरों के वस्त्रों के सम्बन्ध में भी यही बात थी।"

इसी समय कैथलीन लौन्सडेल मास्को स्थित 'विज्ञान एकेडेमी' के एक स्वागत समारोह में गईं (नवम अध्याय में देखिये)। वैज्ञानिक विषयों पर कुछ विचार-विमर्श के बाद उनसे शान्ति के निमित्त क्वेकर सम्प्रदाय द्वारा किये गये कार्यों का वर्णन करने के लिये अनुरोध किया गया। उन्होंने जब यह कहा कि क्वेकर लोग युद्ध काल में जहाँ तक संभव हो सकता है दोनों पक्षों के घायलों की शुश्रूषा करते हैं तब उनके श्रोताओं को विश्वास नहीं हुआ। उनलोगों ने प्रश्न किया—"युद्ध में एक पक्ष तो निस्सन्देह ही आक्रमणकारी है? आपलोगों की सहानुभूति निस्सन्देह उनलोगों के साथ होगी जिनपर आक्रमण किया गया होगा।" परन्तु वे उनलोगों को यह विश्वास कराने में समर्थ हुईं कि यद्यपि किसी झगड़े में क्वेकर लोगों की सहानुभूति बहुधा एक पक्ष की अपेक्षा दूसरे पक्ष के साथ अधिक हो जाती है तथापि मैत्री का कार्य करना तो दोनों ओर आवश्यक होता है और इसी प्रकार दुःखनिवारण का कार्य भी दोनों ओर ही होगा।

उस सन्ध्या को भोजनोपरान्त हमलोगों में से ६ व्यक्तियों ने अंगरेजी अर्द्धमासिक 'न्यूज' के सम्पादकमण्डल से भेंट की। इस पत्र के सम्पादक श्री मोरोजोव से हमलोगों की भेंट यहाँ आने के साथ ही हो चुकी थी। पॉल कैडबरी ने अपनी डायरी में लिखा था—"यह हमलोगों के सर्वाधिक निश्छल, मैत्रीपूर्ण

एवं जोरदार-वाद-विवादों में एक था। यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि उनलोगों के प्रथम अंक की हमलोगों ने जो आलोचनायें की थीं उनका हार्दिक स्वागत किया गया। रूसी लेखों में अपने देश की उन्नति को अनुचित महत्त्व दिया जाता है, किन्तु अपनी कठिनाइयों का उल्लेख नहीं किया जाता— उदाहरणार्थ, रहनेवाले घरों की कमी। अन्य देशों की अवस्थाओं का वर्णन तो भ्रान्तिजनक ही होता है। हमलोगों ने इसे उदाहरण देकर बतलाया कि इससे लाभ की अपेक्षा हानि ही होती है। मैंने यह भी बतलाया कि अंगरेज लोगों में अतिशयोक्ति की अपेक्षा अल्पोक्ति से अधिक प्रतीति होती है।

"प्रोफेसर मोरोजोव सम्पादक हैं। उनको मुखाकृति मेरे प्रिय मित्र आर्नल्ड राउन्ट्री की आश्चर्यजनक रूप से याद दिलाती है। अतएव मैं उनकी ओर स्वभावतः आकृष्ट भी हुआ। उन्होंने शेक्सपियर के सम्बन्ध में अंगरेजी में पुस्तकें लिखी हैं और बहुतों की अपेक्षा हमलोगों के दृष्टिकोण को और अच्छी तरह से समझते हैं। मेरा तो विचार है कि अगर 'न्यूज' के रवैये में परिवर्त्तन हो जाय तो रूस को समझने में यह अंगरेज जाति की बहुत सहायता कर सकेगा। जो भी हो, उनका सम्पादक मण्डल हमलोगों के दृष्टिकोण को जानता है और उनलोगों ने हमलोगों के सुझावों का अच्छी तरह स्वागत किया। अगर 'न्यूज' सूचनात्मक एवं दोषारोपण रहित मार्ग ग्रहण कर अपने पृष्ठों में रूस-सम्बन्धी तथ्यपूर्ण निबन्धों को स्थान दे सके तो इंगलैंड में उसे सभी प्रकार के प्रोत्साहन अवश्य दिये जाने चाहियें।

"सम्मेलन के बाद फ्रैंक एडमीड के साथ मैं 'गोर्की स्ट्रीट' में करीब १½ मील के लगभग चलकर वापस लौटा। १० बजे (रात में) दूकानें खुली थीं और गलियाँ जनपूर्ण थीं। प्रत्येक व्यक्ति सुविनीत एवं सोद्देश्य प्रतीत हुए। एक भोजनालय भी भरा हुआ था। उसको लंदन के ल्योनस् चाय गृह से तुलना की जा सकती है।"

सोवियत प्रेस-अधिकारियों से दूसरी भेंट फ्रैंक एडमीड और जेरल्ड बेली की हुई जब वे लोग प्रभावशाली सोवियत पत्र 'लिटरेरी गजेट' के सम्पादकों से मिलने गये थे। यह पत्र प्रति सप्ताह तीन बार प्रकाशित होता है और इसका वितरण ७½ लाख है। इसका प्रकाशक 'सोवियत लेखक संघ' (यूनियन ऑव सोवियत राइटर्स) है ('प्रवदा' कम्यूनिस्ट पार्टी द्वारा और 'ट्रड' ट्रेड यूनियनों द्वारा प्रकाशित होता है)। कॉन्स्टैन्टीन सिमोनोव जो एक प्रमुख कवि हैं इसके सम्पादक हैं। इस अवसर पर वे, सहकारी सम्पादक, परराष्ट्र सम्पादक एवं विज्ञान सम्पादक सभी उपस्थित थे।

सिमोनोव और उनके सहकर्मियों ने उस दिन के 'लिटरेरी गजेट' की एक प्रति लेकर उसमें छपे लेखों को हमलोगों को दिखलाया। जेरल्ड बेली ने उनलोगों से पूछा कि क्या वे लोग ब्रिटिश विज्ञान की सफलताओं के सम्बन्ध में निबन्ध प्रकाशित करते हैं? उन्होंने यह भी पूछा कि वे लोग अपने पुनरावलोकनों में साम्यवाद से विचारात्मक सहानुभूति रखनेवाले लेखकों की पुस्तकों के सिवा अंगरेजी की अन्य पुस्तकों को क्यों नहीं स्थान देते? उदाहरणार्थ उनलोगों ने प्रिस्टले के 'फेस्टिवल ऐट फारब्रिज' नामक उपन्यास का पुनरावलोकन क्यों नहीं किया था जो एक त्योहारवर्ष के अवसर पर इंगलैंड के एक साधारण नगर के जीवन का चित्र उपस्थित करता है।

फ्रैंक एडमीड ने तत्सम्बन्धी उत्तर का वर्णन यों किया है—"सिमोनोव ने अन्तिम प्रश्न द्वारा ही समस्त प्रश्नों का उत्तर दिया। वे प्रिस्टले से भली-भाँति परिचित थे। वे लन्दन में उनके फ्लैट में जा चुके थे और उनके मास्को आने पर उनसे उन्होंने भेंट भी की थी। युद्ध के दिनों में सोवियत संघ में प्रिस्टले के अनेक नाटकों का अभिनय किया गया था। परन्तु जब 'लिटरेरी गजेट' ने इल्या एहरेनबर्ग के उस पत्र को प्रकाशित किया जिसमें लेखकों से शान्ति आंदोलन के समर्थन के लिये अनुरोध किया गया था, तब प्रिस्टले ने इस अपील के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण कर लिया था। सिमोनोव का कथन था—"हमलोग ऐसे किसी व्यक्ति का समर्थन नहीं कर सकते जो इस विषय पर तटस्थ रह सकता है।" जेरल्ड ने अत्यन्त नम्रतापूर्वक यह निवेदन किया कि किसी पुस्तक के साहित्यिक गौरव का निश्चय राजनीतिक दृष्टि से करना उचित नहीं है और तब उन्होंने विश्व शान्ति परिषद् की नीतियों का समर्थन करने में पश्चिमीय (देशों के) शान्ति प्रेमियों के समक्ष उपस्थित होनेवाली कठिनाइयों को बतलाते हुए पूर्व की ही भाँति उत्तर दिया। उन्होंने कहा—"हम क्वेकर लोग ३०० वर्षों से शान्ति के लिये प्रयत्न करते और कष्ट सहते आ रहे हैं। अतएव मैं आपलोगों से प्रार्थना करता हूँ कि आपलोग 'स्टॉकहोम शान्ति अपील' का समर्थन नहीं करने के कारण ही हमलोगों को अथवा प्रिस्टले को युद्धाभिलाषी मत समझें।'

फ्रैंक एडमीड आगे लिखते हैं—"निश्चयतः सिमोनोव को संतुष्टि नहीं हुई। परन्तु उन्होंने इंगलैंड के सम्बन्ध में अपने पत्र द्वारा प्रकाशित निबन्धों को खोज कर हमें देने का वचन दिया (हमलोगों ने इसके सम्बन्ध में फिर कुछ नहीं सुना)। उन्होंने 'फेस्टिवल ऐट फारब्रिज' की उपयोगिता की जाँच कर उसका पुनरावलोकन करने का भी वचन दिया। अगर उन्हें यह ज्ञात होता कि

इस समय प्रिस्टले 'कोलियर्स मैगजिन' के २१ वीं अक्टूबर, १६५१ के संस्करण के लिये एक निबन्ध लिख रहे हैं तो हमलोगों की इतनी बातें भी मानी जातीं इसमें संदेह है। इस निबन्ध का शीर्षक 'प्रीभिड ऑव दि वार वी डू नौट वान्ट' (उस युद्ध की पूर्व दृष्टि जिसे हम नहीं चाहते) था और इसकी व्यापक तौर पर निन्दा की गई थी, उतनी ही जितनी अमेरिका में और वैसे ही अन्य देशों में भी।

●

अष्टम अध्याय

मास्को में अन्तिम दिन

'वीक-एन्ड' (सप्ताह के अन्तिम दिनों की छुट्टी) के लिये अलग होने के पूर्व हमलोगों ने मास्को स्थित परराष्ट्र कार्यालय में श्री ग्रोमिको के पास एक पत्र भेज दिया था। इस पत्र में हमलोगों ने अपनी रूस यात्रा के उद्देश्य को स्पष्ट करने के साथ-साथ उन सातों युक्तियों का विवरण भी भेजा था जो हमलोगों के मतानुसार पूर्व एवं पश्चिम के बीच अधिकाधिक मैत्री-सम्बन्ध स्थापित करने का आधार बन सकती हैं। इन्हें भेजने का कारण यह था कि हमलोगों को यह ज्ञात नहीं था कि हमें को सोवियत राजनीतिक अधिकारियों में से किसीसे मिलने का अवसर प्राप्त होगा या नहीं। मास्को लौटने पर हमलोगों ने सुना कि श्री मलिक ने गुरुवार को २ बजे (दिन) हमलोगों से मिलने की अभिलाषा प्रकट की है। हमलोग निश्चित समय पर परराष्ट्र कार्यालय में गये। श्री मलिक का व्यवहार मित्रवत् था। हमलोगों में से कुछ की धारणा के विपरीत उनकी अवस्था बहुत कम थी। उनकी आकृति अमेरिका के एक युवक 'एक्जीक्यूटिव' (प्रबंधक) से भिन्न नहीं थी। उनके व्यवहार में कूटनीतिज्ञ की कुशलता विद्यमान थी और उन्होंने हमलोगों की अशांति को शीघ्र दूर कर दिया। यद्यपि वे अंगरेजी अच्छी तरह से बोलते हैं तथापि हमलोगों के वार्त्तालाप का विहित भाग परराष्ट्र कार्यालय के दुभाषिये की सहायता से ही किया गया। दल की ओर से बोलने का प्रधान दायित्व जेरल्ड बेलो पर पड़ा। उन्होंने ही मौलिक वक्तव्य तैयार किया था। उनके भाषण एवं श्री मलिक के उत्तर का पूर्ण विवरण प्रथम परिशिष्ट के रूप में प्रस्तुत किया गया है। द्वादश अध्याय में इस सभा के साथ-साथ अन्य सभाओं में की शान्ति-चर्चा सम्बन्धी बातों पर हमलोगों के कुछ निरूपित विचार दिये गये हैं।

संक्षेपतः हमलोगों ने शत्रुतापूर्ण प्रोपेगेंडा (प्रचार) रोकने, पूर्व एवं पश्चिम के बीच पत्राचार एवं यात्राओं में वृद्धि करने, अन्य राष्ट्रों के आन्तरिक

शासन में हस्तक्षेप नहीं करने, अन्तर्राष्ट्रीय निःशस्त्रीकरण में भाग लेने, अनुन्नत देशों को आर्थिक सहायता प्रदान करने वाले संयुक्त राष्ट्र की योजनाओं में भाग लेने, संयुक्त राष्ट्र के संविधान एवं संघटन में सुधार करने एवं इन विषयों पर उच्चस्तरीय वार्त्ता चलाने के निमित्त कार्य करने के लिये भिन्न-भिन्न प्रस्ताव किये। श्री मलिक ने जो उत्तर दिये उनसे सोवियत सरकार का इन सवालों के प्रति दृष्टिकोण का पता चला। प्रायः ये सभी उत्तर सोवियत सरकार की नीति का समर्थन करते थे और साथ ही यह दोषारोपण भी करते थे कि सोवियत संघ ने संयुक्तराष्ट्र की सभा में शान्ति के लिये जितने प्रारंभिक प्रयत्न किये हैं वे सभी अमेरिका तथा ग्रेटब्रिटेन की हठधर्मी के कारण विफल सिद्ध हुए हैं। हमलोगों ने यह अनुभव किया कि श्री मलिक एक राजनीतिज्ञ हैं और एक पद पर आसीन हैं और उनसे एक छोटे धार्मिक समुदाय के प्रयत्नों के फल स्वरूप सोवियत नीति के परिवर्त्तन की घोषणा कर देने की आशा नहीं की जा सकती। और न उनसे उनमें से किसी नीति का अस्वीकार हो कर देने की आशा की जा सकती है। परन्तु हमलोग उनके कृतज्ञ थे क्योंकि उन्होंने हमलोगों को अपना दृष्टिकोण प्रकट करने का मनोवांछित अवसर प्रदान किया था।

विहित वार्त्तालाप के बीच जब हमलोगों को आधे घंटे का समय चाय-पानी के लिये प्राप्त हुआ तब हमलोगों ने एक राष्ट्र का दूसरे के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करने की नीति सम्बन्धी युक्ति पर अविहित ढंग से जोर डाला। हमलोगों ने बतलाया कि पश्चिमीय देशों के अधिकांश भय एवं संदेह का मूल कारण यह है कि वहाँ अन्तर्राष्ट्रीय षड्यंत्र के अन्तर्गत असाम्यवादी देशों में साम्यवादी दलों द्वारा किये जाने वाले विध्वंसात्मक कार्यों को क्रेमलिन द्वारा प्रोत्साहित एवं नियंत्रित समझा जाता है। श्री मलिक द्वारा सोवियत सरकार की दूसरे देशों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करने की नीति को स्वीकार कर लेने पर भी इस प्रश्न का अन्त नहीं होता। इसके उत्तर में श्री मलिक ने श्री स्तालिन के निम्नस्थ वक्तव्य को मँगवा भेजा और उद्धृत किया। इसे स्तालिन ने १ मार्च १९३५ को अमेरिका के एक पत्र-प्रतिनिधि श्री रॉय हावर्ड को दिया था—

''क्रान्ति का निर्यात निरर्थक है। इच्छा होने पर प्रत्येक देश अपनी क्रान्ति स्वयं करेगा, किन्तु इच्छा के अभाव में कोई क्रान्ति नहीं होगी। उदाहरणार्थ, हमलोगों के देश ने क्रान्ति की इच्छा की और १९१७ ई० में क्रान्ति वस्तुतः

हुई भी। अब हमलोग वर्गविहीन समाज का निर्माण कर रहे हैं। परन्तु यह कथन कि हमलोग अन्य देशों के जीवन में हस्तक्षेप कर अनुचित रूप से क्रान्ति कराने के इच्छुक हैं असत्य को प्रश्रय देना ही है और हमलोगों ने कभी ऐसा नहीं किया है।" क्वेकर दल ने पूछा कि फरवरी, १६४८ ई० में जब साम्यवादियों ने चेकोस्लोवेकिया में सत्ता पर बलपूर्वक अधिकार कर लिया था उस संबंध में यह सूत्र उपयुक्त सिद्ध हो सकता है कि नहीं। इस प्रश्न की समालोचना में श्री मलिक ने करीब-करीब यह कहा—'क्या क्वेकर दल ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि पश्चिमीय राष्ट्रों ने—और विशेषकर फ्रांस तथा ग्रेट-ब्रिटेन ने—१६३८ ई० में म्यूनिक सन्धि द्वारा चेकोस्लोवाकिया के संग विश्वासघात कर उसे हिटलर के हाथों में सौंप दिया था।' इस कथन का तात्पर्य यही था कि इस विश्वासघात के फलस्वरूप एक ऐतिहासिक प्रक्रिया प्रारंभ हुई जिसका यदि अनिवार्य नहीं तो तर्कसंगत परिणाम १६४८ ई० की क्रान्ति थी जिसने साम्यवादियों को सत्तारूढ़ कर दिया। इस उत्तर से हमलोगों को सन्तोष नहीं ही हुआ और हमलोगों ने इसे प्रकट भी किया।

जब तैयार किये हुए वक्तव्य का पढ़ना समाप्त हुआ तब हमलोगों ने सविस्तर विवेचन और उन सातों युक्तियों के उत्तर के लिये श्री मलिक को धन्यवाद दिया। हमलोगों ने यह आशा प्रकट की कि अपने शान्ति सम्बन्धी प्रारंभिक प्रस्तावों को अस्वीकृत कर दिये जाने पर भी सोवियत सरकार उन प्रस्तावों को सदैव उपस्थित करती रहेगी जिनसे शान्तिमय समझौते की सचमुच आशा की जा सकती है। इसके उत्तर में श्री मलिक ने फरवरी, १६५१ को प्रवदा में प्रकाशित श्री स्तालिन के एक अन्य वक्तव्य का उल्लेख किया जिसमें निम्नलिखित बातें कही गई थीं—

"सोवियत संघ सदैव युद्ध निवारण एवं शान्तिरक्षण की नीति का अनुसरण करेगा।"

इसके आगे श्री मलिक ने कहा—"न्यूयार्क से प्रस्थान करने के पूर्व रेडियो से भाषण करते हुए मैंने घोषणा की थी कि प्रत्येक शान्ति अभिलाषी व्यक्ति को समस्याओं के समाधान के लिये शान्तिमय साधनों को प्राप्त करने की कामना अवश्य करनी चाहिये।"

तब जेरल्ड बेली ने कहा कि उन्होंने वैयक्तिक रूप से विशेष अभिरुचि के साथ उन सिद्धान्तों की पुनरावृत्ति सुनी है जिनके अनुसार आर्थिक दृष्टि से उन्नत एवं अनुन्नत राष्ट्रों के आर्थिक सम्बन्धों का नियमन होते देखना सोवियत



क्वेकर दल ट्राटस्की मठ में (तास एजेन्सी)



क्रेमलिन (लेस्ली मेटकाफ)



दो नन्हें सोवियत नागरिक (लेस्ली मेटकाफ)



कीव डे नर्सरी के बच्चे (लेस्ली मेटकाफ)

सरकार को अभीष्ट है। वे यह सुझाव रखना चाहते हैं कि सोवियत सरकार इन सिद्धान्तों पर आधारित एक विश्वव्यापी आर्थिक सहायता योजना को प्रस्तावित करने की संभावना पर और समस्त मानव जाति की सामान्य आवश्यकताओं की पूर्त्ति के लिये संयुक्त राज्य एवं सोवियत संघ के साधनों के उपयोग की संभवनीयता पर भली भाँति विचार करे।

इसके उत्तर में श्री मलिक ने कहा—"मैं यह सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हूँ कि श्री बेली संयुक्त राष्ट्रसंघ में हमलोगों द्वारा आर्थिक सहयोग, अनुन्नत देशों की उन्नति एवं अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के सम्बन्ध में उपस्थित किये गये प्रस्तावों से विशेष प्रभावित हुए थे। तो भी एक बार मैं अवश्य कहूँगा कि इन प्रस्तावों को अमेरिका और ग्रेट-ब्रिटेन दोनों ने अस्वीकार कर दिया।"

श्री मलिक ने तब जिज्ञासा की कि जिन प्रश्नों को उनके समक्ष उपस्थित किया गया है। उनपर "ब्रिटिश अधिकारियों" के क्या मत हैं। उत्तर में हमलोगों ने बतलाया कि वह वक्तव्य अभी तक ब्रिटिश परराष्ट्र कार्यालय के समक्ष नहीं रक्खा गया है। परन्तु हमलोगों ने लन्दन से प्रस्थान करने के पूर्व ब्रिटिश परराष्ट्र सचिव के संग हुए वार्त्तालाप का और विशेषकर श्री मौरिसन द्वारा उस समय दिये गये आश्वासनों का उल्लेख किया। उन्होंने यह आश्वासन दिया था कि पेरिस की प्रारंभिक वार्त्ताओं के विफल होने और पश्चिमीय देशों में पर्याप्त प्रतिरक्षात्मक शक्ति कायम रखने की आवश्यकता में विश्वास करने के बावजूद ब्रिटिश सरकार सोवियत संघ के साथ अन्तर्ज्ञान एवं सहयोग के वास्तविक आधार को प्राप्त करने के लिये अत्यन्त उत्सुक है।

इस वार्त्तालाप का अन्त "ब्रिटेन में क्वेकर सम्प्रदाय के प्रभाव" के सम्बन्ध में जिज्ञासा, मलिक से भेंट करने आने के कारण दल की प्रशस्ति और विश्वशान्ति के लिये दल द्वारा सम्पन्न कार्यों के लिये प्रोत्साहन के शब्दों के साथ हुआ। उन्होंने 'स्टेप्स टू पीस' नामक पुस्तक को पढ़ा था और उनका विचार था कि उसके लेखक अमरीकी क्वेकर लोग अत्यन्त साहसिक व्यक्ति हैं।

यह सत्य है कि श्री मलिक ने हमलोगों की सातों युक्तियों का जो उत्तर दिया वह सोवियत संघ द्वारा इसके पूर्व ही संयुक्त राष्ट्र में एवं अन्यत्र की गई नीति-घोषणाओं की अधिकांशतः पुनरुक्ति था। निश्चयतः उनके उत्तर ने कितने स्थलों पर विशिष्ट प्रश्न को अछूता छोड़ दिया था और हममें से कोई भी यह नहीं कहेगा कि इससे हमलोग वस्तुतः अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़े।

उन परिस्थितियों में ऐसा होना संभव नहीं था। परन्तु यह कदाचित् महत्वपूर्ण है कि हमलोग मास्को में ही सोवियत सरकार से शान्तिमय कार्य प्रारंभ करवाने के लिये भेंट करने में समर्थ हुए और सरकार ने भी हमलोगों के सुझावों पर अत्यन्त गंभीरता पूर्वक विचार करना उचित समझा। मास्कोस्थित पश्चिमदेशीय प्रेक्षक, जो अति आशावादी लोग नहीं ही होते हैं, ग्रेट-ब्रिटेन के एक गैर-सरकारी दल के विचारों के प्रति सोवियत सरकार का यह बर्त्ताव देखकर अत्यन्त प्रभावित हुए। उनलोगों ने इसे सोवियत संघ की परिवर्त्तित होती नीति का एक अन्य लक्षण समझा और उन्हें इस परिवर्त्तन से रूस का पश्चिमीय देशों के साथ अधिक शान्तिमय सम्बन्ध के स्थापित होने की संभावना थी।

श्री मलिक के संग हमलोगों का वार्त्तालाप ५-३० बजे (संध्या) समाप्त हुआ। होटल लौटते समय हमलोगों ने 'रेड स्क्वायर' से 'रेभोल्यूशन स्क्वायर' तक विस्तृत एक ६ कतारों वाला लम्बा 'क्यू' देखा। लोग लेनिन के शवस्थान में प्रवेश करने के लिये पंक्तिबद्ध खड़े थे। यह 'क्यू' प्रति सप्ताह तीन दिन २ बजे तक लगती है और कभी-कभी तो आधी मील लम्बी होती है। मिल्ड्रेड क्रीक और कैथलीन लौन्सडेल की अकस्मात् उनलोगों के साथ जाने और यथासंभव उनकी भावनाओं में भाग लेने की अभिलाषा हुई। कदाचित् उनलोगों को यह जिज्ञासा हुई कि यह सच्चे अर्थों में पूजा है अथवा केवल दृश्यावलोकन, क्योंकि जब लोगों का ईश्वर में विश्वास नहीं होता तब कभी-कभी वे अपने आप के लिये ईश्वर बना लेते हैं। मिल्ड्रेड क्रीक लिखती हैं—"जब हमलोगों का परिचय दिया गया तब धीरज से प्रतीक्षा करते हुए जन समूह से आगे निकालकर हम-लोगों को बढ़ा दिया गया; जनसमूह ने इसका विरोध नहीं किया। लोग शान्ति-पूर्वक अन्दर प्रवेश करते हैं और अब वहाँ प्रारंभिक दिनों की तरह का कोई भावना प्रदर्शन नहीं होता। पुरुष, स्त्रियाँ और बालक लेनिन के दर्शन करते हैं और सारे समय गंभीर मुद्रावाले सैनिक लेनिन के मस्तक एवं पैरों के पास खड़े रहते हैं। लेनिन का मसालों द्वारा सुरक्षित शव अनेकों प्रदीपों से प्रकाशित रहता है और यह साधारण वस्त्रों में आवृत कर एक अर्थी पर रक्खा हुआ है। यह सोवियत संघ के (इस) नव संसार में अभी भी होनेवाले अपरिमेय क्रान्तिकारी परिवर्त्तन की यथार्थता में विश्वास कराने में अनेक सरल व्यक्तियों की अवश्य सहायता करता होगा।" हमलोगों को यह न पूजा ही प्रतीत हुई, न केवल जिज्ञासा; हाँ, यह स्नेह-सदृश अधिक जान पड़ा। परन्तु इतना होते हुए भी हमलोग (लेनिन के) राजनीतिक विरोधियों के साथ की जानेवाली निर्मम

व्यवहारों की कथाओं एवं बन्दी-शिविरों को नहीं भुला सके। इन बन्दीगृहों के अस्तित्व को अस्वीकार नहीं किया गया था।

इस बीच दल के शेष व्यक्तियों ने श्री मलिक से भेंट के सम्बन्ध में समाचार प्राप्त करने के लिये रायटर, एसोसियेटेड प्रेस, न्यूयार्क टाइम्स और सन्डे टाइम्स के वैदेशिक सम्वाददाताओं को होटल में प्रतीक्षा करते पाया। इस घटना के पश्चात् उन्होंने यह महसूस किया कि उन्हें सोवियत प्रेस को भी निमंत्रण देना चाहिये था। आमंत्रित नहीं करना उनकी गलती थी।

उस सन्ध्या को ६ बजे हमलोगोंको चैम्बर ऑव नैशनलिटिज के फॉरेन एफेयर्स कमीशन (परराष्ट्र कार्य आयोग) के प्रो० ग्रेकोव और श्रीमती पोपोवा से मिलना था, किन्तु हमलोग अत्यन्त थके हुए थे और इसलिये यह कदाचित् हमलोगों के अन्य सम्मेलनों में सबसे कम लाभदायक हुआ। श्री ग्रेकोव ने यह कहते हुए प्रारंभ किया कि उनलोगों में और क्वेकर सम्प्रदाय में बहुत बातें समान हैं। यथा—सोवियत संघ में कोई जाति श्रेष्ठतर नहीं है और सभी लोगों को समानाधिकार हैं। इंगलैंड और रूस तो प्रायः १६ वीं सदी से ही मित्रवत् रहे हैं। फिर भला इस समय वे क्यों न हों ? सोवियत संघ युद्ध से डरता तो नहीं किन्तु वह युद्ध नहीं चाहता, क्योंकि उसे पुनर्निर्माण-सम्बन्धी अमित कार्य करने हैं। सरकार शान्ति की रक्षा के लिये दृढ़ है। 'परराष्ट्र कार्य आयोग' के कार्य एवं संविधान के सम्बन्ध में प्रश्न किये जाने पर ग्रेकोव ने हमलोगों से कहा कि इस आयोग ने एक बिल तैयार किया है जिसमें युद्ध-प्रचार को अवैध घोषित किया गया है। हमलोगों ने इस नियम के सम्बन्ध में कई बार सुना था। इस नियम के अनुसार सोवियत संघ का कोई भी व्यक्ति जो दूसरे देश के संग युद्ध करने के लिये जनता को उत्तेजित करता है अपराधी समझा जायगा। कोई भी समाचार पत्र न किसी अन्य देश पर आक्रमण करने की संभावना का सुझाव दे सकता है, न दूसरे राष्ट्रों को धमकी ही दे सकता है। हमलोगों को बतलाया गया कि किसी भी समाचारपत्र में हमलोग वाशिंगटन अथवा लन्दन को परमाणुबम द्वारा ध्वस्त करने के लिये लघुतम मार्ग का चित्र भी नहीं पा सकते। परन्तु पश्चिमीय देशों के समाचार पत्रों में मास्को को लक्ष्य मान कर ऐसे चित्र प्रकाशित किये गये हैं।

हमलोगों ने इस नियम की प्रशंसा की, किन्तु यह पूछा कि यह नियम सोवियत संघ में किसके विरुद्ध बनाया गया है ? हमलोगों को पता चला कि इस नियम को सोवियत संघ में स्वीकृत कराने का निश्चय विश्वशान्ति परिषद् के अनुरोध से किया गया किन्तु सोवियत संघ में इस नियम के अन्तर्गत किसीको भी

दण्ड नहीं मिलता और कोई इस प्रकार का दंड पावेगा यह बात सोची भी नहीं जा सकती। कोई सोवियत नागरिक युद्ध प्रिय नहीं होता। यह नियम दूसरे राष्ट्रों के सामने उदाहरण पेश करने के लिये किया गया है।

हमलोगों ने तब शत्रुतापूर्ण प्रचार, पोस्टरों, व्यंग्यचित्रों आदि के द्वारा पश्चिमीय सरकारों को युद्धाभिलाषी बतलानेवाली अपमानजनक अभिव्यक्ति के प्रश्न को उपस्थित किया। क्या ये सोवियत संघ के लोगों में युद्ध की प्रवृत्ति प्रोत्साहित नहीं करते? हमलोगों ने यह स्वीकार किया कि संयुक्तराज्य और ब्रिटिश नीति में भूलें हुई हैं, किन्तु पश्चिमीय देशों की सरकारें युद्ध की योजना नहीं तैयार कर रही हैं। उनलोगों ने उत्तर दिया कि विदेशी प्रेसों द्वारा प्रकाशित निंदापूर्ण लेखों का उत्तर देना सोवियत प्रेस का कर्त्तव्य है। पश्चिमीय देशवासी रूस के सम्बन्ध में सत्य से अनभिज्ञ हैं और सोवियत संघ के सभी शान्ति-प्रस्ताव पश्चिमीय देशों की सरकारों द्वारा तत्त्वण ही अस्वीकृत कर दिये गये हैं। श्रीमती पोपोवा ने स्पष्ट शब्दों में कहा—"हमलोगों के पत्र सत्य भाषण करते हैं जबकि पश्चिमीय देशों के समाचार-पत्र आदि असत्य। हमलोग क्या विश्वास करें जब काँग्रेस (अमेरिका) और हाउस ऑव कमन्स (लोक सभा, ग्रेटब्रिटेन) में मास्को पर परमाणुबम बरसाने के लिये भाषण दिये जाते है। हमलोग एक महान् शान्तिप्रिय राष्ट्र हैं। हमलोग विश्वविद्यालयों, नहरों एवं विद्युत् शक्ति के केन्द्रों का निर्माण कर रहे है। हमलोग इन शान्तिमय कार्यों के लिये इतना व्यय कर रहे है कि युद्ध के लिये हमारे पास कुछ बच नहीं जाता। यह बात हमलोगों के सम्बन्ध मे कथित असत्यों का खण्डन करेगा। ये सारी बातें पूर्णतया स्पष्ट है।" उन्होंने आशा की कि हमलोगों को यात्रा से कुछ लाभ होगा, किन्तु प्रस्तावित शेफिल्ड शान्ति सन्मेलन के लिये अपना 'विजा' (प्रवेशादेश) अस्वीकृत किये जाने के कारण उनके मन में कटुता थी। इस स्थल पर वातावरण कुछ विद्वेषयुक्त हो गया था। अतः मिल्ड्रेड क्रीक ने यह कहा कि यद्यपि यहाँ हमलोग जितने व्यक्ति बैठे हुए हैं उनमें सभी शान्ति-अभिलाषी और एतदर्थ काम करनेवाले हैं, तथापि एक दूसरे के दृष्टिकोण से सहमत होने और उसे समझने में अत्यन्त कठिनाई का अनुभव कर रहे हैं। और, अगर इतने ही लोगों में ऐसी बात है तो क्या विभिन्न राष्ट्रों का एक दूसरे को समझना और अधिक कठिन नहीं है तथा उनका एक दूसरे को समझने की चेष्टा करना और अधिक आवश्यक नहीं है?

एक प्याली चाय पीने के बाद हमलोगों का विद्वेष कुछ कम हुआ और तब श्रीमती पोपोवा ने फाइव पावर पैक्ट (पंचराष्ट्रीय सन्धि) के प्रश्न को उपस्थित

किया। हमलोगों ने बतलाया कि जबतक इन सन्धियों से शान्ति की वास्तविक अभिलाषा और जागरूक एवं मैत्रीपूर्ण लोकमत सूचित नहीं होता तबतक वे स्वतः उपयोगी नहीं हो सकतीं। तदुपरान्त हमलोगों ने संसार के विभिन्न भागों में क्वेकर सम्प्रदाय द्वारा की गई सेवाओं पर--और बहुधा दोनों ओर की गई सेवाओं पर जिनके उदाहरण चीन और स्पेन हैं—वाद विवाद किया। इससे उनलोगों को पुनः आश्चर्य हुआ। श्री ग्रेकोव ने तर्क किया कि क्या अमेरिका के गृहयुद्ध में क्वेकर लोग सचमुच नीग्रो जाति के पक्ष में थे? हमलोगों ने यह स्वीकार किया कि निस्सन्देह क्वेकर सम्प्रदाय ने दासता का अन्त करने के लिये कठिन प्रयत्न किया है और नीग्रो लोगों के भाग निकलने में सहायता की है किन्तु क्वेकर लोग हिंसा में विश्वास नहीं करते।

हमलोगों का सम्मेलन ११ बजे रात में समाप्त हुआ। पॉल कैडबरी, फ्रैंक एडमीड और लेसली मेटकाफ ने तब टहलते हुए होटल जाने का विचार किया। ज्योंही उनलोगों ने कार्यालय से प्रस्थान किया त्योंही उनलोगों ने एक व्यक्ति को अपने हाथ में कुछ लिये हुए भागते और कुछ अन्य व्यक्तियों को उसका पीछा करते देखा। तब एक पुलिसमैन दिखलाई पड़ा और उसने अधिक गुलागपाड़ा किये बिना ही उसे कैद कर लिया। उसके कार्य-सम्पादन में भी लन्दन के कांस्टेबुलों जैसी ही स्थिर-चित्तता थी। संभवतः मास्को विश्व भर के सर्वोत्तम पुलिस व्यवस्था वाले नगरों में से है। वहाँ करीब प्रत्येक ५० गज पर सवारी की देख-भाल करनेवाला एक पुलिसमैन रहता है और ट्रैफिक सिगनल की बत्तियों से बढ़ जानेवाले ड्राइवर की तो मानो शामत ही आ जाती है। हमलोगों के ड्राइवर ने भी एक बार यही गलती की थी। बस क्या था। एक पुलिसमैन आया और उसने उसे बड़े जोरों से फटकारा—"क्या तुम नहीं समझते कि इससे दुर्घटना हो सकती है? क्या तुम किसी के प्राण लेना चाहते हो?" ड्राइवर ने केवल "प्रतिनिधिमण्डल" कहकर उससे छुटकारा पाया। इससे हमलोगों के दुभाषियों को हँसी भी आई।

शुक्रवार, २७ जुलाई, हमलोगों का मास्को में अन्तिम दिन था और अन्ततोगत्वा हमलोगों को कहा गया कि हमलोगों को कारागार दिखलाने का प्रबन्ध किया गया है। हमलोगों में से कुछ व्यक्तियों ने इसके लिये अभिलाषा प्रकट की थी। शायद यह हमलोगों के समस्त अनुरोधों में सर्वाधिक दुःसाध्य प्रतीत हुआ था और इसके पूर्ण किये जाने में हमलोगों को अन्तिम क्षण तक संशय बना रहा। मार्गरेट बैकहाउस, मिलड्रेड क्रीक और कैथलीन लौन्सडेल ने करीब १० बजे प्रस्थान किया। मोटर द्वारा उनलोगों को मास्को के बाहर ले जाया गया। अन्त में

उनलोगों को प्रधान मार्ग छोड़कर गड्ढों से भरे एक कच्चे मार्ग से होते हुए रेल पथ के पास अवस्थित कंटकाकीर्ण तारों के एक बाड़े के समीप उतरना पड़ा। कारागार अनेक अस्थायी झोपड़ियों द्वारा निर्मित था। वे युद्धकाल में दूसरे अभिप्राय से बनाई गई थीं और इन झोपड़ियों में इस समय ८८५ पुरुष और १५ स्त्रियाँ थीं। बाड़े के अन्दर एक कारखाना भी था जो १६५० ई० में निर्मित हुआ था। उन झोपड़ियों के स्थान पर एक स्थायी दोमंजिला भवन निर्मित हो रहा था।

कारागार के गवर्नर एवं उनके सहकारी से हमलोगों की प्रारंभिक वार्त्ता हुई। वे एक सैनिक के समान दीख पड़ते थे। कैथलीन लौन्सडेल को अँगरेजी कारागारों का अत्यधिक ज्ञान था। अतएव उन्होंने ही अधिकांश प्रश्नों को पूछा। इस अवसर पर कोई पूर्वलिखित भाषण नहीं हुआ। ज्ञात हुआ कि हमलोग ही उनके सर्वप्रथम कारागार देखने आनेवाले विदेशी हैं। जब हमलोगों ने यह पूछा कि क्या यहाँ राजनैतिक बन्दी भी हैं तब उन्होंने नकारात्मक उत्तर दिया। यह अनेक दृष्टियों से सर्वोत्तमकोटि के एक अंगरेजी कारागार के सदृश प्रतीत हुआ जिसे हमलोग अपने देश में किसी विदेशी अतिथि को दिखलाते। परन्तु यहाँ दो भिन्नतायें वर्त्तमान थीं। पहली बात यह थी कि कैदियों का शयन-स्थान जन-संकुल था। हमलोग ऐसा नहीं होने देते। उनलोगों ने बतलाया कि नवीन भवन में इसका सुप्रबन्ध होगा और शयन-स्थान में वृद्धि होगी। दूसरी बात यह थी कि वहाँ करीब-करीब सभी बन्दी कारखाने में कार्य करते थे (स्त्रियाँ लॉरी-ड्राइवर का काम करती थीं) और उन्हें अपने काम के लिये बाहर की दर के अनुसार पूरा पारिश्रमिक मिलता था। इसके सिवा उन्हें योजना की क्षतिपूर्त्ति करने पर अधिक उत्पादन की मात्रा के अनुसार अतिरिक्त पारिश्रमिक का बाहर की तरह ही प्रोत्साहन मिलता था और सर्वोत्तम मजदूरों के चित्रों का प्रदर्शन भी किया जाता था। उनके पारिश्रमिक का १५-१८ प्रतिशत भोजन एवं प्रशासन प्रबन्ध के लिये तथा १५ प्रतिशत अनिवार्य बचत के लिये काट लिया जाता था। शेष पर (यह रकम एक बार १०० रूबल से अधिक नहीं दी जाती थी) बन्दी का अधिकार होता था जिसे वह जेल की दूकान से (जिसे हमलोगों ने देखा भी था) क्रय-विक्रय करने में खर्च करता, सम्बन्धियों के पास भेजता अथवा सेविंग्स बैंक में जमा कर देता था जहाँ उस रकम पर ब्याज भी मिलता था। कुछ बाहरी (स्वतंत्र) मजदूर भी जेल की फैक्टरी में काम करते थे। फैक्टरी ठीकेदारों को बेंचने के लिये पम्प और 'कन्वेयर' (एक प्रकार का यंत्र) का निर्माण करती थी।

वहाँ कुछ मनोरंजक घटनायें घटीं। जब हमलोगों ने गवर्नर से पूछा कि

कैदियों ने किस प्रकार के अपराध किये हैं तब उन्होंने उत्तर दिया—"चोरी, डकैती, खून एवं हत्या इत्यादि सभी प्रकार के समाज-विरोधी अपराध जो पूँजीवादी मनोवृत्ति के अवशेष हैं।" इसका अनुवाद करते समय हमलोगों के दुभाषियों को अवश्य आन्तरिक विनोद हुआ होगा। उनलोगों ने इच्छा प्रकट की कि हमलोगों को विजिटर्स बुक (दर्शनार्थी पुस्तक) में कुछ बातें अवश्य लिखनी चाहिये, परन्तु हमलोगों के लिखने के लिये एक यथोपयुक्त नोट-बुक लानी पड़ी। उसमें सर्वप्रथम हमलोगों ने ही लिखना प्रारंभ किया। जब हमलोग वहाँ से रवाना हुए तब हमलोगों की महिला दुभाषिया हँस रही थीं। कैथलीन लौन्सडेल के पूछने पर उन्होंने बतलाया कि कारागार के गवर्नर ने उनसे उनके (कैथलीन लौन्सडेल) संबंध में यह प्रश्न किया था—"ये इतनी भद्र महिला होते हुए भी कारागारों के सम्बन्ध में इतना अधिक ज्ञान कैसे रखती हैं?" अबतक इरेना (महिला दुभाषिया) को ज्ञात हो चुका था कि युद्ध या युद्ध-सम्बन्धी कार्यों में अपनी अन्तरात्मा की आवाज के कारण भाग लेने से इन्कार करने पर कैथलीन लौन्सडेल को हॉलोवे कारागार में एक मास व्यतीत करना पड़ा था। परन्तु इरेना ने गवर्नर से यही कहना पसन्द किया कि उनकी दर्शनार्थी कैथलीन लौन्सडेल ब्रिटिश कारागारों की एक प्रधान अधिकारिणी हैं।

इसी बीच अन्य व्यक्ति दूकान से वस्तुएँ खरीद रहे थे अथवा प्रेस सम्मेलन के लिये तैयारी कर रहे थे जो दोपहर के बाद होनेवाला था। लेसली मेटकाफ ने कुछ मानचित्र, मसनद की एक बूटेदार खोल तथा टेबुल 'रनर' खरीदा। तदुपरान्त वे फर (जानवरों का रोयेंदार चमड़ा) की जनपूर्ण दूकान में घूमते रहे। वहाँ पर लोग अत्यधिक मूल्य पर उजली लोमड़ियों के सुन्दर फर खरीद रहे थे। वे कहते हैं—"मैंने एक स्थान पर पुलिस द्वारा रक्षित एक लम्बा 'क्यू' देखा। मैं इसके मूल स्थान तक गया और मुझे पता चला कि लोग एक दूकान में प्रवेश करने की प्रतीक्षा कर रहे थे जिसमें बड़े पैमाने पर विक्रय-कार्य आरंभ होनेवाला था। 'क्यू' को उपयुक्त स्थान पर करने के लिये मुख्य प्रवेशद्वार के ठीक बाहर मार्ग के आर-पार भवन से समकोण बनाती हुई एक खाली 'बस' खड़ी कर दी गई थी। चार लॉरियाँ भी 'बस' के बाद मार्ग पर पंक्तिबद्ध खड़ी कर दी गई थीं जिनसे उमड़ती हुई भीड़ उमड़कर द्वार के भीतर न पहुँच जाय बल्कि एक-एक कर घुसे। जब द्वार खुला तब सब कुछ अत्यन्त सुव्यवस्थित था।"

कदाचित् अन्य किसी समय हमलोग इस अन्तिम प्रेस सम्मेलन से अधिक कठिन परिस्थिति में नहीं पड़े थे। यह सम्मेलन कौन्स्टैनटिन सिमोनोव के सभापतित्व में, हमलोगों के स्वदेश लौटने के पूर्व, दोपहर के समय हुआ था।

एडवर्ड क्रैंकशॉ ने केवल रविवार के दिन ही निकलने वाले एक पत्र में प्रकाशित निबन्ध में, जिसे द्वितीय अध्याय में उद्धृत किया गया है, बतलाया है कि सोवियत संघ में आनेवाला प्रत्येक यात्री जब कभी भी सोवियत संघ के किसी एक विशेष पहलू की प्रशंसा करता है तब उसका यह कथन उसके सोवियत संघ की सारी बातों के प्रति की आम प्रतिक्रिया के रूप में व्यापक रूप से उद्धृत किया जाता और उसपर यह चमकीला आवरण चढ़ाया जाता है कि इस प्रकार की चीज अन्यत्र कहीं नहीं है। वे आगे कहते हैं—"वस्तुतः इन निर्दिष्ट भ्रमणों का द्वैध प्रयोजन होता है। यात्रीगण केवल अपने देशों में ही सोवियत प्रचार के मुख्य साधन नहीं बनते अपितु राज्यसत्ता की प्रत्यक्ष सफलताओं की प्रबल प्रशंसा द्वारा वे रूस के अन्तर्गत भी सोवियत प्रचार में सहायता पहुँचाते हैं।"

यद्यपि हमलोगों का भ्रमण तथाकथित "पूर्वनिर्धारित" भ्रमण नहीं था तथापि हमलोगों ने यह अनुभव किया कि इस चेतावनी में सत्य का पर्याप्त अंश विद्यमान हो सकता है और हमलोग विशेषकर चिन्तित—शायद अतिचिन्तित—थे कि कहीं हमलोगों के कथनों के सम्बन्ध में सोवियत प्रेस अथवा अपने देश के प्रेस द्वारा ही गलत उद्धरण नहीं दे दिया जाय।

पॉल कैडबरी ने अपनी डायरी में उस सन्ध्या की घटनाओं का वर्णन यों किया :—"करीब ६० रूसी, अमरीकी और ब्रिटिश पत्रकारों ने सोवियत शान्ति समिति के कार्यालय में हमलोगों से भेंट की। जेरल्ड ने हमलोगों के उद्देश्यों, अनुभवों एवं हमलोगों की रूसवासियों के प्रति कृतज्ञता पर वक्तव्य देकर कार्य आरंभ किया। आज से पूर्व लेसली मेटकाफ रूस में १२ वर्ष की अवस्था में तथा फिर २५ वर्ष पहले भी आ चुके थे। उन्होंने इस अवधि के बीच की सोवियत प्रगति के सम्बन्ध में भाषण दिया। रूसी और अमरीकी दोनों पत्रकारों द्वारा १२ अथवा १५ प्रश्न पूछे गये और ब्रिटिश पत्रकारों ने दो प्रश्न पूछे। रूसी लोगों की यह आम भावना हुई कि हमलोगों ने रूस में जो देखा था उसके सम्बन्ध में जो कुछ कहा है वह पर्याप्त नहीं है। हमलोगों ने और अधिक प्रश्नों की आशा की थी। अतः मैंने उनलोगों को धन्यवाद दिया और मास्को, अन्य नगरों और सामूहिक कृषि फार्मों के पुनर्निर्माण के सम्बन्ध में एक दो बातें कहीं। किन्तु यह तो स्वीकार करना ही पड़ेगा कि इससे कोई सन्तुष्ट नहीं हुआ।" हमलोगों के वक्तव्य से निस्सन्देह रूसी पत्रकार सन्तुष्ट नहीं हुए और उनलोगों ने अपनी प्रेस सूचनाओं में हमलोगों के वक्तव्य के आलोचना पूर्ण सभी अंशों को छोड़ दिया। और यह स्पष्ट था कि वहाँ वर्त्तमान अमरीकी और

ब्रिटिश पत्रकार हमलोगों की इस चुप्पी से प्रत्यक्षतः प्रसन्न थे और इस कारण हमलोगों के दुभाषिये डावाँडोल हो उठे थे। उनलोगों ने जितनी उदारता दिखलाई थी उसकी दृष्टि से अपनी इस अकृतज्ञता के कारण हमलोगों में से बहुतों को थोड़ा दुःख भी हुआ। इस भावना की अभिव्यक्ति लेसली मेटकाफ के उस पत्र द्वारा हुई जिसे उन्होंने लौटने के बाद शीघ्र ही लिखा था और जिसमें उन्होंने प्रेस-सम्मेलन तथा इससे संबंधित हमलोगों की अपनी एवं दुभाषियों की प्रतिक्रियाओं का वर्णन निम्नस्थ ढंग से किया था—

"प्रेस सम्मेलन के समय हमलोगों ने अपने को अत्यधिक संयत रक्खा, और जो कुछ हमलोगों ने रूस में देखा था उसकी प्रशंसा में अपने को बह नहीं जाने दिया, क्योंकि हमलोगों को अपने देश के प्रेस द्वारा ही गलत ढंग से रिपोर्ट किये जाने का भय बना हुआ था। फलतः सम्मेलन बड़ा उदासीनता पूर्ण रहा। रूसियों ने हमलोगों से केवल राजनीतिक प्रश्न ही पूछे। हाँ, 'लिटरेरी गजेट' की एक महिला प्रतिनिधि ने सोवियत संघ के सांस्कृतिक जीवन के सम्बन्ध में हमलोगों की अपनी धारणाओं के सम्बन्ध में जिज्ञासा की। पाश्चात्य-वासी और विशेषाधिकार-प्राप्त वर्ग के सदस्य होने के कारण हमलोग 'संस्कृति' शब्द से अधिक संकुचित अर्थ ग्रहण करते हैं। इस कारण हमलोगों ने यह नहीं कहा कि 'गोर्की पार्क ऑव रेस्ट ऐंड कल्चर (विश्राम एवं संस्कृति सम्बन्धी गोर्की पार्क)' में से शास्त्रीय संगीत को सुनकर बाहर निकलती हुई शिष्ट, प्रसन्न युवा-मण्डली को हमलोगों ने एक अनुप्रेरणा समझी। हमलोगों ने प्रदर्शनियों एवं पिक्चर गैलरियों (कलाभवनों) में एकत्र भीड़ अथवा 'ओपन एयर' (खुले हुए) थियेटरों और उन सांस्कृतिक सुविधाओं की संख्या पर टीका-टिप्पणी नहीं की जो श्रमिक वर्ग को प्रदान की गई थीं। कदाचित् इसका कारण यह था कि उनलोगों की संस्कृति प्रोपेगेंडा के साथ अत्यधिक रूप से मिश्रित हो गई है और इसलिये हमलोगों को भी उसमें मिश्रित हो जाने का भय था। वहाँ का प्रेस नियंत्रित है और सनसनीखेज बनने से दूर रहता है। पुस्तकों की दूकानें हत्या एवं अपराध की सस्ती कथाओं से भरी हुई नहीं हैं।

"मास्कोवासी कदाचित् अत्यधिक अनुशासित एवं शिष्ट प्रतीत हुए, किन्तु हमलोग उनलोगों की संस्कृति के सम्बन्ध में और अधिक उदार हो सकते थे जो क्रान्ति के पूर्व केवल समृद्ध व्यक्तियों का ही विशेषाधिकार थी। मैं विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के पक्ष में हूँ और निकृष्टतम नाटकों एवं गन्दे से गन्दे चलचित्रों को लोगों द्वारा चुनाव(यदि लोग उन्हें चाहते हों) की आजादी देने के पक्ष में हूँ। परन्तु यह स्वतंत्रता बहुत मँहगी पड़ती है और हमलोग इसका अत्यन्त दुरुपयोग

करते हैं। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि उनलोगों की संस्कृति का स्तर हमलोगों के समकक्ष है। ग्रेट-ब्रिटेन में इस 'फेस्टिवल' (त्योहार) वर्ष के अवसर पर कई वर्षों की अपेक्षा अधिक मनोरंजक नाटक खेले गये हैं, उत्तम चलचित्र तैयार हुए हैं, कला सम्बन्धी पुनरुत्थान हुआ है एवं सुन्दर संगीत का आयोजन हुआ है और यह फेस्टिवल (एक वृहत् प्रदर्शनी जो ब्रिटेन में १९५१ में हुई थी) ही स्वयं ऐसा है जिसके लिये हमलोगों को गर्व होना उचित है। इतना होते हुए भी स्वयं तुष्ट होने की कोई आवश्यकता नहीं है और अपने प्रेस-सम्मेलन में हम-लोग कुछ ऐसे ही हो गये थे।"

भोजनोपरान्त हमलोग शान्ति समिति कार्यालय में वापस आये। वहाँ हमलोगों की समिति के छःसात सदस्यों के साथ एक आनन्ददायक और अविहित ढंग की सभा हुई। उपस्थित व्यक्तियों में श्री तिखोनोव, मेट्रोपोलिटन, दो बैपतिस्ट और एकेडॉमिशियन (शिक्षा-शास्त्री) इवानोव थे। पॉल कैडबरी ने इवानोव को एक पुराना फोटोग्राफ भेंट किया जो १८५४ ई० में तीन क्वेकर लोगों के जार सम्राट् से मिलने के सम्बन्ध में था (जिनमें से एक रशेल कैडबरी के पितामह थे) और अमरीकी क्वेकर लोगों की पुस्तिका 'स्टेपस् टू पीस' भी उन्हें उपहार में दी। इल्या एहरेनबर्ग ने कुछ समय तक लेसली मेटकाफ से वार्त्तालाप किया। परन्तु यह स्पष्ट था कि जिस प्रकार वे लोग यह मानने के लिये तैयार नहीं थे कि सोवियत संघ भी कभी-कभी गलती कर सकता है उसी प्रकार हमलोग भी अपनी मौलिक मान्यताओं को छोड़ने के लिये तैयार नहीं थे।

हमलोगों ने दूसरे दिन प्रातःकाल ६ बजे हवाई स्टेशन के लिये प्रस्थान किया। उस समय मास्को मनोरम प्रतीत हुआ। सूर्य की किरणें क्रेमलिन पर चमक रही थीं और 'स्विफ्ट' पक्षी तुरंत की धुली गलियों एवं मार्गों पर द्रुतगति से झपट्टे मार रहे थे (मास्को में इन पक्षियों से भरा पड़ा है)। हमलोगों के अधिकांश दुभाषिये श्री तिखोनोव के साथ हमलोगों को विदा करने आये थे। लेसली मेटकाफ आगे लिखते हैं—"जिस समय हमलोग विमान की प्रतीक्षा कर रहे थे उस समय सोरोकिन मेरे पास आकर बैठे और उन्होंने करीब २० मिनट तक हमलोगों के प्रेस सम्मेलन की खूब आलोचना की, किन्तु इसमें क्रोध की अपेक्षा दुःख का ही भाव अधिक था। हमलोग अत्यन्त घनिष्ठ मित्र थे। अतः मुझे उनके लिये दुःख हुआ क्योंकि मेरा विश्वास है कि सोवियत संघ की प्रदर्शित वस्तुओं के सम्बन्ध में प्रतिनिधिमण्डलों द्वारा प्रकट किये हुए विचारों पर ही उनकी सफलता निर्भर रहती है। मास्को से प्रस्थान करने के बाद कुछ समय तक मैंने अपने आपको अत्यन्त दुःखग्रस्त अनुभव किया। उसके बाद की अपनी भावनाओं

का विश्लेषण करने पर वे कुछ-कुछ इस प्रकार की मालूम होती हैं। रूसवासियों की सफलताओं के लिये मन में प्रशंसा की एक भावना और वैयक्तिक रूप से उनसे मित्रवत् होने की अभिलाषा। इसके सिवा उन सभी व्यक्तियों से मित्रवत् होने की अभिलाषा जिनसे हमलोगों की भेंट हुई थी अथवा जिन्हें हमलोगों ने देखा था (ऐसे व्यक्तियों में हमलोगों से हाथ मिलाने वाले बैपतिस्ट, ईमानदारी और सचाई से अपने कार्य करने वाले दुभाषिये, और गलियों, 'जिस' कारखाने, मठ, सामूहिक कृषि फार्म, खान एवं कला भवनों में हमसे मिलने वाले सारे लोग हैं)। 'कोल्ड वार', साम्यवाद, लौह आवरण, शान्ति समिति, विनिमय की दर और मेल-मिलाप के मार्ग की समस्त बाधाओं के विस्मरण की एक आकांक्षा। इतना होते हुए भी यह अनुभव कि राजनीति को जीवन से अलग नहीं किया जा सकता और आधुनिक विश्व की अशान्ति का उत्तरदायित्व हमलोगों की स्वार्थपरता एवं उदासीनता पर है। उपर्युक्त ऐतिहासिक चरणों पर की गई कुछ साधारण चेष्टाओं ने एशिया, अफ्रिका, पर्शिया और रूस में भी बिल्कुल परिवर्त्तन ला दिया होता। मेरा अभिप्राय भय द्वारा उत्पन्न तुष्टिकरण से नहीं वरन् उन पूर्णतया हार्दिक चेष्टाओं से है जिसके बदले में बराबरी वाली शर्तों पर मैत्री करने के सिवा अन्य किसी वस्तु की आशा नहीं की जाती। सोरोकिन भी दोषरहित नहीं हैं क्योंकि वे सोवियत संघ के प्रत्येक कार्य को उचित सिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं और इस प्रकार की चिन्तनशैली से आबद्ध होने के कारण ही उन्हें इतनी अधिक निराशा हुई क्योंकि हमलोगों ने प्रेस और रेडियो द्वारा प्रशंसा का जयघोष नहीं किया। क्योंकि उनका काम यही था कि हमलोगों से ऐसा जयघोष कराते और इसीलिये वे हमलोगों के हृदय के स्नेह को नहीं देख सके।"

एक रात ऐमस्टर्डम में व्यतीत कर हमलोग रविवार, १६ जुलाई को करीब २-३० बजे पुनः लन्दन वापस आ गये। वहाँ फोटोग्राफरों एवं संवाददाताओं का समुदाय हमलोगों की प्रतीक्षा कर रहा था।

●

नवम अध्याय

मेलमिलाप, आवागमन एवं प्रचार की समस्याएँ

द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् पश्चिमीय यूरोप अथवा संयुक्त राज्य अमेरिका के लोगों का वैयक्तिक रूप से सोवियत संघ में जाना प्रायः असंभव हो गया है और सोवियत नागरिकों का अपने देश के बाहर जाना बहुत कम हो गया है। इसके अपवाद भी हैं। लेनिनग्राड से मास्को जाने वाली रेलगाड़ी पर हमलोगों को कुछ अंगरेज भी मिले जो सपरिवार थे। वे लोग फर-ग्राहक थे और अपने व्यापार के सिलसिले में स्वाभाविक कारणों से सोवियत संघ में आये हुए थे। कूटनीतिज्ञ भी एक देश से दूसरे देश में जाते हैं परन्तु वे लोग जिस देश में भेजे जाते हैं उसमें उनकी गति नियंत्रित हो सकती है। सोवियत संघ में निस्सन्देह यही स्थिति है हालाँकि, यह वास्तव में समझ लिया जाना चाहिये कि एक विदेशी राजदूत किसी भी देश के लिये एक उत्तरदायित्व है और उसकी सुरक्षा का पूर्ण प्रबन्ध होना चाहिये।

व्यवसायियों और कूटनीतिज्ञों के अतिरिक्त वैज्ञानिकों एवं पत्र-पत्रनिधियों को भी अन्तर्राष्ट्रीय यात्री होने का प्रबलतम दावा है। अतएव वैज्ञानिकों के सम्बन्ध में भी कुछ कहना उचित है—

१९४५ ई० में 'मास्को एकेडमी ऑव साइन्सेज' (मास्को विज्ञान एकेडमी) के निर्मंत्रण पर अनेक ब्रिटिश वैज्ञानिक सोवियत संघ में गये। दुर्भाग्यवश, अन्तिम क्षणों में उनमें से कुछ व्यक्तियों को इस देश (ग्रेट ब्रिटेन) से जाने से रोक दिया गया। इससे वैज्ञानिकों में सामान्यतः अत्यधिक अशान्ति मची। जब कुछ सप्ताहों के बाद जापान पर परमाणु बम गिराया गया तब यह बात समझ में आई कि रोके गये व्यक्तियों को कदाचित् गुप्त सूचनाएँ उपलब्ध थीं। अनुमानतः उनकी ईमानदारी की अपेक्षा उनके विवेक पर सन्देह किया गया, किन्तु हमलोगों के मित्र राष्ट्र सोवियत संघ में इस अवरोध का स्वागत होना कदाचित् ही संभव था। फिर भी १९४६ ई० में ही अनेक सोवियत वैज्ञानिकों को इस देश में आने,

वैज्ञानिक सम्मेलनों में उपस्थित होने, विश्वविद्यालयों, अनुसंधानशालाओं और वैज्ञानिक यंत्र निर्माता कारखानों का कुछ ज्ञान प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ था। चार सोवियत वैज्ञानिक रॉयल सोसाइटी के 'न्यूटन ट्रिसेन्टरी सेलिब्रेशन्स' (न्यूटन त्रिसदीय समारोह) में सम्मिलित हुए। अन्य चार वैज्ञानिक जुलाई, १६४६ ई० में रॉयल इन्स्टीच्यूसन लन्दन के तत्वावधान में हुए 'स्फटिक-विज्ञान सम्मेलन' में उपस्थित हुए थे। उनलोगों ने स्फटिक-विज्ञान के एक 'अन्तर्राष्ट्रीय संघ' की स्थापना एवं एक अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिका के प्रकाशन से सम्बन्धित प्रारंभिक वार्त्तालापों में पूर्ण भाग लिया। उनलोगों ने पत्रिका का नाम 'ऐक्टा क्रिस्टैलोग्रैफिका' रखने का सुझाव दिया जो स्वीकृत कर लिया गया। उनलोगों में से एक सम्पादकमण्डल में सम्मिलित होने के लिये राजी हो गये और अन्य सोवियत वैज्ञानिकों को विभिन्न कार्यकारिणियों का सदस्य मनोनीत किया गया। परन्तु सोवियत संघ में लौटने के बाद शीघ्र ही उनलोगों ने बिना कारण बतलाये इन सभी पदों को त्याग दिया। न वे लोग अन्तर्राष्ट्रीय संघ में सम्मिलित हुए जिसके निर्माण में उनलोगों ने सहायता पहुँचाई थी और न स्फटिक-विज्ञान की परवर्त्ती अन्तर्राष्ट्रीय महासभाओं में ही उनलोगों ने भाग लिया (इसकी सर्वप्रथम सभा १६४८ ई० में हावर्ड, संयुक्त-राज्य अमेरिका और द्वितीय १६५१ ई० में स्टॉकहोम, स्वेडेन में हुई थी)। अन्य अन्तर्राष्ट्रीय संघों को भी ऐसे ही अनुभव हुए हैं। सोवियत वैज्ञानिक कभी-कभी इन महासभाओं में आते तो हैं किन्तु इसकी कोई पूर्व सूचना नहीं देते। फिर भी सोवियत संघ की विज्ञान एकेडेमी के निमंत्रण पर लेनिनग्राड में १ से ८ अगस्त, १६५१ ई० तक अन्तर्राष्ट्रीय नक्षत्र-विज्ञान संघ की एक अन्तर्राष्ट्रीय महासभा का वास्तव में आयोजन किया गया था। जनवरी, १६५१ ई० में अन्तर्राष्ट्रीय नक्षत्र-विज्ञान संघ की (पूर्णतया असोवियत) कार्यकारिणी द्वारा यह सभा अनिश्चित रूप से स्थगित कर दी गई। संघ के अध्यक्ष स्वेडेन वासी प्रो० बी० लिन्डब्लैन्ड ने इसका कारण "यात्रा और योजना की कठिनाइयाँ" तथा "सर्वाधिक महत्व की बात, अन्तर्राष्ट्रीय नक्षत्र-विज्ञान संघ को राजनीतिक उलझनों एवं जटिलताओं से परे रखना" बतलाया। सोवियत संघ की विज्ञान एकेडेमी की नक्षत्र-विज्ञान परिषद् ने इस निश्चय पर अत्यन्त खेद प्रकट किया। परिषद् ने इस संबंध के कागजातों को टिप्पणियों के साथ (जो उचित हों अथवा नहीं हों) सोवियत संघ के ऐस्ट्रोनौमिकल जर्नल (नाक्षत्रिक पत्रिका) संख्या ३, १६५१ में प्रकाशित किया। इन तथ्यों को अस्वीकार नहीं किया गया है।

सोवियत संघ के विभिन्न वैज्ञानिकों के पास भेजे गये पत्रों का उत्तर कदाचित् ही मिलता है तब भी, जबकि इन पत्रों पर पता रशियन में ही लिखा रहता है। प्रायः निश्चित रूप से यह जानना संभव नहीं होता कि वे गन्तव्य स्थान पर पहुँचते हैं कि नहीं। ग्रेट ब्रिटेन के सर्वाधिक महत्वशाली वैज्ञानिक पुस्तकालयों का भी अनुभव यही है कि सोवियत पत्रिकाओं को नियमित रूप से प्राप्त करना असम्भव है। इस कारण ऐसी असह्य स्थिति उत्पन्न होती है कि अनेक असोवियत वैज्ञानिकों एवं पुस्तकालयाध्यक्षों ने अपने सोवियत साथियों से मैत्री-स्थापना के प्रयत्न को प्रायः अथवा पूर्णतया त्याग दिया है। वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि कम से कम वर्त्तमान के लिये उनकी उपेक्षा करना ही सर्वोत्तम है। फिर भी, कुछ आदान-प्रदान हो रहे हैं।

अब सामान्य जनों के सम्बन्ध में। प्रायः एक वर्ष पूर्व एक क्वेकर ने सोवियत दूतावास में एक पत्र भेजा था जिसमें उन्होंने यह लिखा था कि वे सपरिवार सोवियत रूस में छुट्टी व्यतीत करने के लिये जाना चाहते हैं और यह पूछा था कि क्या यह संभव हो सकता है। उन्हें यह विनम्र उत्तर मिला कि सोवियत संघ में पुनर्निर्माण के समस्त प्रयास फ्लैटों एवं भवनों की पूर्ति पर केन्द्रित हैं जिनकी श्रमिकों को अभी भी अत्यधिक आवश्यकता है। अतः यात्रियों के लिये निवास का प्रबन्ध अभी संभव नहीं है।

यदि यात्रा या मुद्रा सम्बन्धी नियंत्रण नहीं भी रहे तो भी अधिकाश व्यक्तियों के लिये सोवियत संघ में छुट्टी व्यतीत करने जाना मान्य नहीं है। परन्तु लोग तो यह अनुभव करना चाहते हैं कि इच्छा होने पर वे वहाँ जा सकते हैं। यह निश्चित है कि इस समय वैयक्तिक रूप से कोई रूस नहीं जा सकता और न कोई रूसवासी ही इस देश के किसी मित्र से व्यक्तिगत रूप में भेंट करने आ सकता है। दोनों देशों के व्यक्ति विशेष के बीच अविहित पत्र-व्यवहार अत्यल्प अथवा नहीं के बराबर है। सोवियत संघ से लौटने के बाद हमलोगों में से कुछ व्यक्तियों ने दुभाषियों के पास पत्र (एवं पोस्टकार्ड) भेजे हैं क्योंकि उनलोगों के साथ हमलोगों की अत्यन्त घनिष्ठता हो गई थी। परन्तु हमलोगों को कोई उत्तर नहीं प्राप्त हुआ है। इसके विपरीत हमलोगों ने मास्को से वायुमार्ग द्वारा जो पत्र यहाँ भेजे थे वे एक सप्ताह के अन्दर ही पहुँच गये थे और उनका प्रत्यक्षतः 'सेंसर' भी नहीं हुआ था।

कुछ वर्ष पूर्व पश्चिमीय देशों के अनेक लोगों को सोवियत संघ में रहने वाले अपने सम्बन्धियों के पत्र मिले थे। उनमें उनसे और पत्र नहीं लिखने के लिये

अनुरोध किया गया था। तब से इन सम्बन्धियों के कोई पत्र नहीं आये हैं। प्रतीत होता है कि कुछ सरकारी मार्ग खुले हुए हैं, किन्तु उनसे सामान्य कोटि के व्यापक पैमाने पर मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध की संभावना नहीं है। कुछ वैयक्तिक पत्राचार की स्वीकृति मिली हुई है। सोवियत संघ के पदाधिकारी व्यक्ति इस देश के प्रभावशाली व्यक्तियों के नाम पत्र लिख-लिखकर उनपर 'पार्टिजन्स ऑव दि पीस' (शान्ति-हितैषी आन्दोलन) आन्दोलन के समर्थन के लिये दबाव डालते रहे हैं। यह पत्राचार तब तक चलता रहा जब तक लाभ की संभावना दीखती रही है।

मेल-मिलाप एवं पत्राचार का प्रश्न विशेष रूप से श्री मलिक के समक्ष उपस्थित किया गया था और उनका उत्तर प्रथम परिशिष्ट में दिया गया है

निस्संदेह अनेकों प्रतिनिधिमण्डल सोवियत संघ में जा रहे थे। जिस होटल में हमलोग ठहरे हुए थे उसमें हमलोगों के अतिरिक्त दूसरे लोगों के कई एक दल थे: रूस के अनुयायी देशों के चर्च-पादरियों का दल, भारतीय कलाकारों और लेखकों का दल और इस अवधि के बीच थोड़े समय के लिये ऐंग्लो-सोवियत मैत्री समाज द्वारा भेजा गया एक अंग्रेज प्रतिनिधिमण्डल। इनमें कुछ दल सोवियत संघ में बहुत दूर-दूर तक भ्रमण कर चुके थे—जितना भ्रमण करने का समय हमलोगों को नहीं था। कुछ व्यक्ति विदेशों से भी आये थे। उदाहरणार्थ भारतीय अंकशास्त्रवेत्ता प्रो० महालनोबिस और उनकी पत्नी। इनलोगों के सम्बन्ध में पहले ही कहा जा चुका है। ये लोग रूस में जीवन-स्तर का अध्ययन कर रहे थे। यह सत्य है कि सोवियत संघ में हमलोगों की उपस्थिति से ही यह बात अच्छी तरह दिखाई जा सकती थी कि असाम्य-वादियों को भी विजा (प्रवेशादेश) प्रदान किया जा सकता है। यह भी सत्य है कि सोवियत संघ के प्रतिनिधिमण्डल इंगलैंड में आ चुके हैं। मिस्र के मुसलमानों ने हमलोगों को यह सूचना दी है कि सोवियत देशीय मुसलमानों को भी मक्का-यात्रा की स्वीकृति है। परन्तु फिर भी इन सबसे वैज्ञानिकों और साधारण जनों के स्वाभाविक, बंधनहीन मेल-मिलाप एवं पत्राचार की अभिलाषा पूर्ण नहीं होती।

कैथलीन लौन्सडेल को इस प्रश्न पर सोवियत वैज्ञानिकों से प्रत्यक्ष सम्भाषण का अवसर प्राप्त हुआ था। उनका कथन है—"मैंने एक दिन मास्को स्थित स्फटिक-विज्ञान अनुसन्धानशाला में अपराह्नकाल व्यतीत किया। वहाँ मैंने अनेकों रूसी अनुसंधानकारियों से भेंट की। निर्देशक और अनेकों सहकर्मी उन दिनों छुट्टियों में गये हुए थे। मैंने एक दुभाषिये द्वारा पुछवाया कि

१९४६ ई० में अन्तर्राष्ट्रीय स्फटिक-संघ का संगठन करने के लिये लन्दन में आमंत्रित प्रारम्भिक सम्मेलन में भाग लेने पर भी वे लोग स्फटिक-विज्ञान की अन्तर्राष्ट्रीय महासभा में क्यों नहीं उपस्थित हुए जो हाल ही में स्टॉकहोम में हुई थी और वे लोग अन्तर्राष्ट्रीय स्फटिक संघ में क्यों नहीं सम्मिलित होते ? उनलोगों ने उत्तर दिया कि सभा का आयोजन जिस समय किया गया था उस समय रूसी अध्यापकों का वहाँ जाना सम्भव नहीं था (यदि वे लोग संघ के सदस्य होते तो निस्सन्देह इस बात को वे पहले ही बतलाने में सक्षम होते)। इसके अतिरिक्त मैंने उनलोगों में (पश्चिमीय देशों से) वैज्ञानिक क्षेत्र में पृथक्त्व के कारण गहरे क्षोभ की भावना भी पाई। परन्तु हमलोग महसूस करते हैं कि इसके लिये वे लोग स्वयं उत्तरदायी हैं।

"उनलोगों की कुछ खास शिकायतें थीं। उनमें सबसे गम्भीर यह थी। १९४६ ई० के लन्दन सम्मेलन के बाद उनलोगों ने अनुसंधान कार्य के लिये ग्रेटब्रिटेन में स्फटिक अनुसंधान सम्बन्धी यंत्र का ऑर्डर दिया था। किन्तु सोवियत संघ में उन्हें भेजे जाने देने की आज्ञा (ब्रिटेन में) अस्वीकृत कर दी गई थी। जाँच द्वारा उसका पुष्टिकरण संभव नहीं हुआ है। संभवतः कुछ गलतफहमी हो गई थी। ब्रिटिश निर्माता सोवियत संघ में स्फटिक अनुसंधान के यंत्रों का निर्यात अवश्य करते हैं, किन्तु वे लोग अपने सोवियत ग्राहकों से सीधा सम्पर्क नहीं स्थापित कर सके हैं। फलस्वरूप वे यह नहीं बता सकते कि उनका यंत्र अभीष्ट अनुसंधानशाला के पास पहुँचता है अथवा, प्रस्तुत उदाहरण की तरह, नहीं पहुँचता। बाद में मास्को के स्फटिक निर्माताओं ने अपने यंत्र क निर्माण स्वयं किया किन्तु इसमें समय लगा है।

"वे लोग यह जानने के लिये अत्यन्त व्यग्र थे कि विदेशों में क्या अनुसन्धान कार्य हो रहा है। मैंने उनलोगों को अपनी अनुसन्धानशाला के कार्य के सम्बन्ध में बतलाया। उनलोगों ने तब अपने कार्यों का पूर्ण विवरण सुनाकर मुझे अनुसंधान सम्बन्धी नवीन प्रकाशन एवं पाठ्य-पुस्तकें भेंट कीं। किन्तु दुःख की बात है कि वे रूसी भाषा में हैं और यद्यपि चित्रों एवं आँकड़ों की दृष्टि से विचार करने पर वे रोचक एवं महत्वपूर्ण प्रतीत होती हैं तथापि मैं उन्हें स्वयं नहीं पढ़ सकती। तो भी मैं इस तथ्य से अभिज्ञ हूँ कि यह आशा करना कि २० करोड़ की जनसंख्यावाले देश के वैज्ञानिक अपनी भाषा में अपने कार्यों का विवरण नहीं प्रकाशित करें, अत्यन्त असंगत होगा। सोवियत संघ में कुल ५३ भिन्न-भिन्न भाषायें बोली जाती हैं, किन्तु प्रत्येक विद्यालय में उस क्षेत्र की स्थानीय भाषा का उपयोग होता है। उच्च वर्गों में रशियन

भाषा की शिक्षा प्रथम अतिरिक्त भाषा के रूप में दी जाती है और एक तिहाई विद्यालयों में अँगरेजी द्वितीय भाषा के रूप में (फ्रेंच और जर्मन वैकल्पिक हैं)। उच्च शिक्षा के लिये व्यापक भाषा रशियन है।

"दूसरे दिन मैं मास्को स्थित 'विज्ञान एकेडेमी' के एक स्वागत-समारोह में गई। उसका आयोजन मेरे ही लिये अत्यन्त शीघ्रतापूर्वक किया गया था। अनुसंधान-शाला के निर्देशक कालाशागर के पास अपनी छुट्टियाँ व्यतीत कर रहे थे, किन्तु वे भी मुझसे भेंट करने के लिये ही लौट आये थे। इस बात को जानकर मुझे विशेष आनन्द हुआ।

"एकेडेमी का स्वागत कुछ कष्टकर अवसर रहा क्योंकि वहाँ के अधिकारियों को और मुझे बारी-बारी से अनेक सार्वजनिक भाषण देने पड़े। रूस के शैक्षणिक जीवन में एकेडेमी के स्थान का हृदयग्राही वर्णन सुनने (जिसके सुनने के लिये मैंने इच्छा व्यक्त की थी) के बाद मैंने उनलोगों से प्रश्न किया कि अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्बन्ध के सुधार करने में कौन वस्तु सर्वाधिक सहायक हो सकती है? इस प्रश्न से उनलोगों को अच्छा मौका मिला और उन लोगों ने समस्त प्रमाणों के साथ अपनी शिकायतों की एक ऐसी सूची प्रस्तुत की कि मैंने अपने आपको एक 'ह्विपिंग-ब्वाय' (प्राचीन जमाने में राजकुमार के साथ-साथ रहकर शिक्षा प्राप्त करने वाला एक बालक जिसे राजकुमार के बदले राजकुमार की गलतियों का दंड दिया जाता था) की अवस्था में महसूस किया। मैंने उनलोगों से यह बात ग्लानिपूर्वक बतलाई भी। इसउपमा का अनुवाद करने में दुभाषियों को थोड़ा कष्ट हुआ, परन्तु इसने उस अवसर में सुशीलता फिर ला दी।

"हमलोगों की अनेक कठिनाइयाँ हमारे विभिन्न कार्य-प्रणालियों और शिष्टाचार के सम्बन्ध में पूर्णतया भिन्न विचारों से उत्पन्न होती हैं। उदाहरणार्थ उनलोगों को पुस्तकालय से सम्पर्क स्थापित करने की प्रणाली यह प्रतीत होती है। वे लोग किसी वैज्ञानिक पत्र के एक या एक से अधिक अंकों को दुनिया के विश्वविद्यालयों की पुस्तकालयों को भेज देते हैं और इनके साथ ही इनमें सामयिक पत्रिकाओं के आदान-प्रदान का सुझाव भी रख देते हैं (यह सुझाव रूसी भाषा में ही रहता है और भला रशियन में क्यों न रहे।) अगर दो तिहाई अथवा आधी के लगभग जगहों से उत्तर नहीं प्राप्त होता तो इसे सोवियत संघ के प्रति जान बूझकर की गई उपेक्षा समझी जाती है। इसके विपरीत हमलोग कुछ चुने महत्वशाली पुस्तकालयों के बीच ही आदान-प्रदान की नियमितता पर अधिक जोर देते हैं।

"श्री मलिक ने प्रस्तावित शेफील्ड शान्ति सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिये ब्रिटिश सरकार द्वारा रूसवासियों को 'विजा' (प्रवेशादेश) देने से इन्कार करने का उल्लेख किया था। ये व्यक्ति सोवियत विज्ञान, संस्कृति और साहित्य के प्रबल प्रतिनिधियों में से थे। अन्य स्थानों में भी हमारे सम्मुख इसी बात ('विजा नहीं देने की बात') को दोहराया गया। यही प्रश्न वैज्ञानिकों के संग हुई बैठकों में भी उपस्थित किया गया। मैंने निःसंकोच उत्तर दिया कि शेफील्ड का अवसर वास्तव में राजनीतिक था, वैज्ञानिक नहीं और यद्यपि हमलोगों का यह आशा करना उचित ही है कि वैज्ञानिक सभाओं के साथ हस्तक्षेप नहीं किया जाय तथापि अन्यान्य अवसरों पर हमलोगों को एक वैज्ञानिक के रूप में 'स्वतंत्रता' की आशा नहीं रखना चाहिये। फिर भी ब्रिटिश सरकार के उक्त कार्य के लिये मैंने वैयक्तिक रूप से खेद प्रकट किया। अवरोध से अवरोध का अन्त नहीं होता और न इस तरह के अनुकरण से अशिष्ट व्यवहार का सुधार ही होता है।

"गमनागमन एवं मेल-मिलाप की स्वतन्त्रता के प्रश्न पर और भी विचार करते हुए मैंने एकेडेमी के वैज्ञानिकों से बतलाया कि पारस्परिक सद्भावना की रक्षा का सर्वोत्तम मार्ग पूर्ण एवं मैत्रीपूर्ण निश्छलता है। इसलिये हमलोगों को विशेषकर एक दूसरे के साथ सम्बन्ध बनाये रखना चाहिये। उनलोगों ने इस बात पर जोर दिया कि उनलोगों की भी यही कामना है और एकेडेमी के पास भेजे गये पत्रों में अथवा उनके (एकेडेमी के मेम्बरों) अन्तर्राष्ट्रीय सभाओं में जाने पर सोवियत सरकार की ओर से कुछ हस्तक्षेप नहीं किया जाता। एकेडेमी से पार्सल बाहर भेजने अथवा बाहर से यहाँ मँगाने में भी चुँगी विभाग का कोई हस्तक्षेप नहीं होता। मैंने बतलाया कि जब वे लोग सम्मेलनों में उपस्थित नहीं होते तो पश्चिमीय देशों में इसका स्वाभाविक निष्कर्ष यही निकलता है कि वे लोग वैज्ञानिक होने के नाते स्वभावतः इन सभाओं में उपस्थित होना चाहते हैं, किन्तु उनकी सरकार उनलोगों को ऐसा नहीं करने देती। इससे उनकी सरकार की वास्तविक शान्तिमय अभिलाषाओं के सम्बन्ध में सन्देह उत्पन्न होता है।

"मुझे तो प्रतीत होता है कि यदि हमलोग अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्बन्धों में सुधार करना चाहते हैं तो हमलोगों को असीम धैर्य एवं समझदारी से काम लेना पड़ेगा। हमलोगों को बार-बार क्षुब्ध हो जाने के लिये तैयार रहना होगा और साथ ही यह अनुभव करना होगा कि उन लोगों के दृष्टिकोण से सचाई पूर्णतया हमलोगों की ओर ही नहीं है। भले ही वे लोग हमलोगों के यहाँ नहीं आ सकें अथवा नहीं आयें किन्तु हमलोगों को उनलोगों के यहाँ जाने के लिये तैयार रहना होगा। साथ ही उनलोगों को यथासंभव सहज ढंग से यहाँ आने

का प्रत्येक अवसर भी प्रदान करते रहना होगा। अन्ततः यदि उनलोगों की पद्धति के अन्तर्गत रहना हमलोगों को स्वीकार नहीं भी हो तो भी हमलोगों को विशेषकर उनलोगों के प्रति उदार तो होना ही होगा जो उसके अन्तर्गत रहने के लिये विवश हैं।"

एक बात कदाचित् उल्लेखनीय है। हमलोगों की मित्र महिला दुभाषिये ने यह मानने से पूर्णतया अस्वीकार कर दिया कि अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में सोवियत वैज्ञानिकों की अनुपस्थिति का कारण केवल 'विजा' (प्रवेशादेश) की अस्वीकृति ही नहीं है।

हमलोगों को ब्रिटेन के किसी भी विश्वविद्यालय अथवा किसी अन्य संस्था के अधिकारी क्षेत्र से पारस्परिक आधार पर छात्रों के आदान-प्रदान करने के सुझाव को रूसवासियों के सामने रखने की अनुमति नहीं मिली थी। परन्तु वार्त्तालाप के बीच यह प्रश्न अविहित ढंग से उठाया गया था। इससे कदाचित् सामान्य रूसवासियों की मनोवृत्ति का उपयोगी ढंग से पता चलता है, क्योंकि इस विचार को उनलोगों ने अत्यन्त अनुत्साह पूर्वक ग्रहण किया। उनलोगों का उत्तर यही था कि सोवियत संघ में तो उच्च शिक्षा के लिये पर्याप्त स्थान हैं ही। अतएव छात्रों को नवीन विचार ग्रहणार्थ विदेशों में जाने की आवश्यकता नहीं है। संभवतः यह विद्वानों का विचार नहीं है, किन्तु इस प्रकार के विनिमय अथवा वस्तुतः किसी भी आधार पर विदेश-यात्रा के लिये आन्दोलन करना सोवियत जनता के लिये बिल्कुल असंभव है। निश्चयतः हमलोगों ने सोवियत सहयोग द्वारा सोवियत संघ के अन्दर अथवा बाहर स्थापित हो सकने वाले कार्य-शिविरों एवं अन्तर्राष्ट्रीय छात्र सेमिनारों के प्रश्न को भी उपस्थित किया। उनलोगों ने नम्र होकर इस पर विचार करने का वचन दिया, किन्तु इससे हमलोगों को नाम मात्र का ही प्रोत्साहन मिला। हमलोगों को इस बात की संभावना स्वीकार करने के लिये भी प्रोत्साहन नहीं प्राप्त हुआ कि वे लोग वैयक्तिक एवं ऐच्छिक आधार पर अन्य देशों के अकाल पीड़ित अथवा आपत्ति ग्रस्त क्षेत्रों के अन्तर्गत 'रिलीफ प्रोजेक्ट' (सहायता कार्य) को करने में क्वेकर लोगों के संग संयुक्त रूप से कार्य करेंगे। शिक्षा शास्त्री श्री ग्रेकोव के संग वार्तालाप के बीच मास्को में 'क्वेकर केन्द्र' स्थापित करने की संभावना पर एक सुझाव प्रयोग के रूप में दिया गया। परन्तु इसे भ्रमवश धर्म प्रचार की संभावना से सम्बन्धित समझ लिया गया। अतः, बात जहाँ की तहाँ रह गई।

इंगलैंड आने के बाद हमलोगों से बार-बार ये प्रश्न पूछे जाते रहे हैं कि

सोवियत सरकार क्यों न तो यात्रियों के आगमन को ही प्रोत्साहन देती है और न सोवियत नागरिकों को ही विदेश-यात्रा की स्वीकृति प्रदान करती है जिससे यात्रीगण और नहीं तो कम से-कम वैदेशिक मुद्रा प्राप्त करने के साधन अवश्य होते हैं। और, यह भी पूछा जाता रहा है कि हमलोग रूस में कम-से-कम युद्ध पूर्व के दिनों की भाँति ही 'अन्तर्यात्री एजेन्सी' की पुनःस्थापना की आशा कर सकते हैं कि नहीं। इसका सरल एवं स्पष्ट उत्तर देना सहज नहीं है और जो भी उत्तर हमलोग देते हैं वह अवश्य ही हमलोगों की अपनी धारणाओं एवं अनुमानों से प्रभावित होता है।

यह सत्य है कि सोवियत संघ में अभी भी प्रचुर मात्रा में पुनर्वास की व्यवस्था करनी है और विशेषकर मास्को जैसे बड़े नगरों में फ्लैट और गृह हमलोगों के यहाँ की अपेक्षा अधिक जनाकीर्ण हैं। मास्को की भवन प्रदर्शनी में हमलोगों को बतलाया गया है कि गत पंच-वर्षीय योजना—जिसको निर्धारित लक्ष्य से आगे बढ़ाया जा चुका है—के परिणाम स्वरूप सोवियत संघ के नगरों में (फ्लैटों के घरेलू कार्यालयों को छोड़कर फर्श का क्षेत्रफल) १० करोड़ वर्ग मीटर वास स्थान की व्यवस्था की जा चुकी है। यह लगभग २५ लाख तीन कमरों वाले फ्लैट के बराबर होगा। इसके सिवा ग्रामीण क्षेत्रों में २७,००,००० मकान बन चुके हैं अथवा उनकी मरम्मत की जा चुकी है। १९५० ई० में केवल मास्को के ही लिये ५,३५,००० वर्ग मीटर वासस्थान की व्यवस्था को गई थी, १९५१ ई० में 'टारजेट' (लक्ष्य) ७,०७,००० वर्गमीटर था और १९५२ ई० के बाद यह १० लाख वर्गमीटर रहा है (जो अनुमानतः २५,००० तीन कमरों वाले फ्लैट के बराबर होगा)। हमलोगों ने इन फ्लैटों के ब्लॉकों को निर्मित होते देखा। हमलोगों ने विस्तृत गन्दगीपूर्ण महल्लों को भी देखा। यह स्पष्ट है कि नवीन फ्लैटों के निवासियों को छोड़कर करीब-करीब सभी मास्कोवासियों को पुनर्वास की आवश्यकता है। १९१७ ई० में वहाँ की जनसंख्या २० लाख से भी कम थी, आज यह निस्सन्देह ५० लाख के लगभग है। यदि हमलोग प्रत्येक दो व्यक्तियों के लिये एक कमरा दें और जो पुनर्वास का कार्य हो चुका है उसे ज्यों-का-त्यों छोड़ दें, तब भी अनुमानतः मास्को का पुनर्निर्माण कार्य पूरा करने के लिये कम-से-कम २० शान्तिपूर्ण वर्षों की आवश्यकता होगी।

सोवियत संघ के पश्चिमी भागों के नगर युद्ध के कारण अधिक ध्वस्त हुए हैं। इन स्थानों में भी इसी प्रकार की समस्या है। लेनिनग्राड से आते और जाते समय हमलोगों ने अनेकों छोटे-छोटे शहरों एवं इक्के दुक्के गृहों को देखा। उनमें अधिकांश काष्ठ निर्मित और बिना रंगे हुए ही थे। अनेक भग्नावस्था में

थे। किंडरगार्टेनों, विद्यालयों, विश्वविद्यालयों एवं उच्चशिक्षा की अन्य संस्थाओं, छात्रावासों, चिकित्सालयों एवं क्लिनिकों और श्रमिकों के विश्राम एवं अवकाशगृहों की व्यवस्था पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है। कोई भी व्यक्ति यह निःसंकोच मान ले सकता है कि होटलों एवं बोर्डिंग हाउसों के निर्माण को रूस में ऐसी स्थिति में कम प्राधान्य दिया जायगा और इस प्रकार के जो भी होटल वहाँ हैं उनको (हमलोगों की भाँति दूसरे प्रतिनिधि मण्डलों का आवास स्थान बनाने के बदले) उन सोवियत नागरिकों के लिये काम में लाया जायगा जो अपने अत्यन्त विस्तृत देश के अन्य भाग की यात्रा करने की अभिलाषा करते होंगे। अतः सोवियत संघ में अपने परिवार को लाने की इच्छा रखने वाले क्वेकर को (रूस में नहीं आने देने का) जो कारण बतलाया गया था, वह निस्सन्देह ठीक ही था।

परन्तु हमलोगों का विश्वास है कि अन्य गंभीर कारण भी हैं। सोवियत सरकार निश्चित रूप से यह विश्वास करती है कि पश्चिमीय देशों में ऐसे राजनीतिक एवं व्यावसायिक स्वार्थ वाले लोग वर्त्तमान हैं कि वे आन्तरिक विभेद अथवा पूर्ण युद्ध द्वारा रूस की साम्यवादी सरकार के पतन का स्वागत करेंगे। सोवियत नेता निश्चयतः भयभीत हैं कि यात्रियों के आवागमन की स्वीकृति दे देने से अनेकों विदेशी एजेन्टों का रूस में पहुँचकर जनता में विद्रोह का प्रचार करने और सैनिक रहस्यों का पता लगाने का रास्ता खुल जायगा। गोपनीयता पश्चिमीय राष्ट्रों की अपेक्षा रूस के लिये अधिक श्रद्धास्पद वस्तु रही है और पृथकत्व सेना सम्बन्धी बातों की सुरक्षा के लिये एक ढंग है। यह युक्ति दी जा सकती है कि यदि सरकार इतनी सुसंघटित है कि उसे पूर्ण जन समर्थन प्राप्त होना निश्चित है तो फिर क्रान्ति विरोधी एजेन्टों से डरने की कोई आवश्यकता ही नहीं है। किन्तु साथ ही वर्त्तमान अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण में ग्रेट-ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका अथवा पश्चिमीय राष्ट्रों की किसी भी सरकार द्वारा सोवियत संघ से वृहत् रूप में यात्रियों के आवागमन का स्वागत किया जायगा यह भी सन्देहपूर्ण है। सोवियत संघ से ग्रेट ब्रिटेन में आने वाले यात्रियों को प्रायः कार्य पूर्ण करने के लिये आवश्यक अल्पतम समय तक ही ठहरने की स्वीकृति मिलती है।

यदि इस ओर कोई अवरोध नहीं भी रहे तब भी यह सन्देह रहित नहीं है कि सोवियत नागरिकों को सोवियत सरकार द्वारा वृहत् संख्या में पश्चिमीय यूरोप की यात्रा करने की आज्ञा मिल सकेगी। सोवियत प्रेस, रेडियो और साहित्य ने ग्रेट-ब्रिटेन एवं संयुक्त राज्य अमेरिका को सदैव ऐसे देशों के रूप में चित्रित किया है जहाँ के श्रमिक बुभुक्षित, उत्पीड़ित और शोषित हैं। इस चित्र को बदलना होगा यदि (उदाहरण के लिये लीजिये कि) सोवियत छात्र ग्रेट-ब्रिटेन

के छात्रों के संग उनके घरों में रहने के लिये आते हैं और इन अंगरेज छात्रों में से बहुतेरों को राज्य द्वारा शिक्षा के लिये सहायता मिलती है। सोवियत संघ ने अपने २० करोड़ निवासियों के जीवन एवं शिक्षा-स्तर को ऊपर उठाने में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त की है। क्रान्ति पूर्व की अवस्थाओं से तुलना करने पर उनके भौतिक सुखों में अत्यधिक वृद्धि हुई है। सोवियत कृषक अथवा नागरिक को बुभुक्षित एवं उत्पीड़ित चित्रित करना मूर्खता और गलती है। परन्तु जैसा कि पहले कहा जा चुका है, वहाँ अभी भी गृहों का अभाव है और उन वस्तुओं की भी कमी है जो पश्चिमीय यूरोप में सुलभ हैं। कारखानों में काम करने वाले सोवियत मजदूर का जीवन स्तर अपने पाश्चात्य बन्धुओं के जीवन स्तर से उतना पीछे नहीं है जितना प्रायः हमलोग कल्पना करते हैं। परन्तु वह इससे उतना आगे भी नहीं बढ़ा हुआ है जितना कि उसे बतलाया जाता है। आवागमन प्रारम्भ होने पर सोवियत नागरिकों के मन में उन सूचनाओं की यथार्थता में सन्देह उत्पन्न होगा जो उस सम्बन्ध में उन्हें प्राप्त हुई हैं।

खास सोवियत संघ के अन्तर्गत ही यात्रियों के मुक्त आवागमन के मार्ग में अन्य, कदाचित् गौण, बाधायें हो सकती हैं। हमलोग सोवियत संघ के मजदूरों की शालीनता से प्रभावित हुए थे। उनमें किसी को 'टिप' (इनाम, जो छोटी सेवाओं के बदले में स्वेच्छापूर्वक दी जाती है) देने अथवा अपने से निम्नतर समझने की बात सोची भी नहीं जा सकती थी। वे लोग प्रत्येक दृष्टि से हमलोगों की समान कोटि के थे। घर आते समय हमलोग पश्चिमीय यूरोप के एक होटल में ठहरे थे जहाँ पर यात्रियों का एक दल अशिष्ट व्यवहार एवं बड़प्पन के ढोंग का प्रदर्शन कर रहा था। यह देखकर हमलोगों ने आपस में कहा कि यदि सोवियत सरकार इस प्रकार के यात्रियों को अपने देश के बाहर ही रखना चाहती है तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। ज्यों-ज्यों सोवियत संघ में अधिक माध्यमिक विद्यालयों (दस वर्षीय विद्यालयों) की स्थापना होती जायगी त्यों-त्यों भाषा सम्बन्धी अवरोध अधिकाधिक कम होता जायगा। १६३६ ई० में सोवियत संघ के अन्तर्गत माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की संख्या ६० लाख से अधिक थी। अब उनकी संख्या और अधिक हो गई है और इनमें, जैसा कि पहले कहा जा चुका है, एक तिहाई अंगरेजी सीखते हैं।

यदि रूस-यात्रा के व्यय की बात छोड़ भी दी जाय तो भी ब्रिटेन का कोई भी यात्री विनिमय की प्रतिकूल दर के कारण वहाँ ठहरना अत्यधिक व्ययसाध्य समझेगा। पंचम अध्याय में इसका उल्लेख किया जा चुका है। इसके सिवा यद्यपि किराये की दर (जो नागरिकों के लिये लाभप्रद है परन्तु यात्रियों के लिये

नहीं) कम है तथापि भोजन-व्यय अत्यन्त अधिक है। अन्य छोटी-मोटी वस्तुओं के लिये भी, जिन्हें यात्रीगण आवश्यक समझते हैं, यही बात है। उदाहरणार्थ पोस्टकार्डों (जो बहुत अच्छे नहीं छपे थे) का मूल्य प्रति पोस्टकार्ड १ रूबल है। इस बात की बहुत कम ही संभावना है कि भविष्य में बहुत दिनों तक यात्रियों के आवागमन को प्रोत्साहन नहीं दिया जायगा। परन्तु प्रोत्साहन देने के लिये "यात्रियों के लिये विशेष विनिमय की दर" स्थापित करना अथवा रूबल का पुनर्मूल्यन अत्यावश्यक होगा।

सोवियत संघ में आने वाले यात्रियों को अन्तर्देशीय पासपोर्ट रखना पड़ता है जो ब्रिटिश आइडेंटिटी कार्ड (पहचान पत्र) से अधिक जटिल होता है। क्रान्ति के पूर्व भी वास्तव में यही अवस्था थी। हमलोगों को कभी भी अपनी अँगुलियों की छाप देने की आवश्यकता नहीं पड़ी। फलस्वरूप यद्यपि संयुक्त राज्य अमेरिका के राज्य विभाग के पास हमलोगों में से कुछ व्यक्तियों की अँगुलियों की छापें हैं तथापि सोवियत संघ के 'पोलित्ब्यूरो' के पास एक भी नहीं है। हमलोगों का पासपोर्ट होटल सर्विस ब्यूरो के पास रक्खा हुआ था, किन्तु जब हमलोगों ने मास्को से क्रमशः कीव और लेलिनग्राड के लिये प्रस्थान किया तब उनकी आवश्यकता पड़ी थी। जब हमलोग क्रेमलिन देखने गये थे तब हमारे साथ के दुभाषियों को अपना पासपोर्ट दिखलाना पड़ा था, किन्तु हमलोगों को नहीं। मास्को में विचरण करने के लिये हमलोगों को इन पासपोर्टों की जरूरत नहीं पड़ी। हमलोग बिना दुभाषियों के अथवा उनलोगों के साथ जहाँ इच्छा होती घूमने चले जाते थे। वहाँ पर गोपनीयता अथवा सन्देह के वातावरण की भी कोई झलक नहीं दिखी।

कैथलीन लौन्सडेल कहती हैं :—एक दिन अपने एकाकी विचरणों के बीच मे एक गली के कोने में खड़ी होकर सड़क पार करने की प्रतीक्षा कर रही थी। इतने में एक स्त्री ने आकर मुझसे थोड़ी देर तक कुछ बातें पूछीं। मैं उसकी भाषा नहीं समझ सकी और इसलिये मे केवल मुस्कराती और अपना सर हिलाती रही। तदुपरान्त वह अपने अनुरोध को लिये एक अन्य व्यक्ति की ओर बढ़ी जिसने उसे उसका अभीष्ट बतला दिया। अन्य स्त्रियों ने भी मुझको दूकानों में उसी प्रकार सम्बोधित किया जिस प्रकार मुझे स्वदेश में सम्बोधित किया जाता। कदाचित् यह इस बात का प्रमाण था कि मेरी वेशभूषा और रूसी गृहिणियों की वेशभूषा में कोई अन्तर नहीं था। जब मैंने अपनी महिला दुभाषिया इरेना से इसकी आलोचना की कि रूसी महिलाओं ने मुझे रूसी समझकर सम्बोधित किया

था तब उन्होंने उत्तर दिया —'वाह, क्यों नहीं ? आप रूसी प्रतीत होती ही हैं।' मुझे इससे कम आश्चर्य नहीं हुआ।"

गमनागमन की यह स्वतंत्रता प्रत्येक व्यक्ति के लिये संभव नहीं है। पश्चिमीय यूरोप के संवाददाताओं को केवल विनिमय की प्रतिकूल दर के कारण ही नहीं वरन् सेंसर के कारण विभिन्न स्थानों में जाने पर प्रतिबन्ध और यात्रा सम्बन्धी कठिनाइयों के कारण भी बाधा पहुँचती है। कुछ समाचारपत्रों को तो सोवियत संघ में संवाददाताओं के रखने की भी आज्ञा नहीं है।

रूस में छपी सूचनाओं का व्यापक अभाव किसी भी विदेशी को अवश्य खटकेगा। यद्यपि अनेक व्यक्तियों के पास टेलीफोन हैं तथापि कोई टेलीफोन डायरेक्टरी (टेलीफोन निर्देशिका) प्राप्य नहीं है। (जो इंगलैंड में पता भी ज्ञात करने में अत्यन्त उपयोगी है) इसकी असुविधाओं के सम्बन्ध में प्रश्न करने पर उत्तर मिला कि प्रत्येक व्यक्ति उन व्यक्तियों के टेलीफोन नम्बरों की तालिका रखता ही है जिनसे उसे प्रायः बतचीत करनी पड़ती है और अनुरोध करने पर अन्य नम्बर 'टेलीफोन एक्सचेंज' द्वारा दिये जा सकते हैं। वहाँ पर 'हूज हू' (कौन क्या है ?) जैसा कोई ग्रन्थ नहीं है। हमलोगों को 'स्ट्रीट मैप' (गलियों का रेखा-चित्र) अथवा निर्देशिकायें कहीं नहीं दृष्टिगत हुईं। अन्य कठिनाइयाँ व्यक्तियों के संग सम्बन्ध स्थापित करने में भी उत्पन्न हुई। लेनिनग्राड में कैथलीन लौन्सडेल ने विज्ञान एकेडेमी की लेनिनग्राड शाखा के मुख्य पुस्तकाध्यक्ष से भेंट करने की अभिलाषा प्रकट की लेकिन इसे पूरा करने में हमलोगों के उत्साही मेजबानों को अत्यधिक कठिनाई हुई। कैथलीन लौन्सडेल से पूछा गया कि वे किस मुख्य पुस्त-काध्यक्ष से भेंट करना चाहती हैं ? क्योंकि वहाँ समान पदवाले २५ पुस्तकाध्यक्ष हैं। इससे हमलोगों को यह समझने में सहायता मिली कि किस प्रकार कभी-कभी पत्रों अथवा पार्सलों पर अपर्याप्त पता लिखने से पत्रव्यवहार-सम्बन्धी कठिनाइयाँ उत्पन्न हो सकती हैं, यद्यपि यहाँ ऐसा सुझाव नहीं दिया जा रहा है कि यही बात पत्र-व्यवहार के अभाव का एक बहुत बड़ा कारण है।

छपी सूचना का अभाव केवल "आवागमन एवं पत्र-व्यवहार की सुविधाओं" के सम्बन्ध में ही नहीं लागू होता। यद्यपि कुछ प्रदर्शनियों में चित्रों के 'अलबम' थे जिन्हें उसी स्थान पर देखा जा सकता था तथापि कोई हैन्डबुक अथवा छपी निर्देशिका, छपे कार्यक्रम अथवा 'कैटलग' (सूचीपत्र) नहीं दृष्टिगोचर हुए। हाँ, हमलोगों को साधारण ढंग से मुद्रित एक 'थियेटर गाइड' अवश्य देखने में आई। पुस्तकें और विशेषकर छोटी औद्योगिक पाठ्य-पुस्तकें तथा पैम्फलेट बहुत

थे एवं अत्यन्त सस्ते थे। तो भी अपने होटल में हमलोगों को अंगरेजी समाचार पत्र नहीं मिल सके और न हमलोगों ने पश्चिमीय समाचारपत्रों को किसी पत्र-विक्रेता के यहाँ अथवा मास्को की किसी पुस्तक की दूकान पर बिकते देखा। अंगरेजी-रशियन शब्दकोष और अंगरेजी किताबें बहुतेरी थीं एवं अमरीकी 'क्लासिक्स' (उच्च कोटि का साहित्य) का रूसी भाषा अथवा अन्य सोवियत भाषाओं में अनुवाद किया जा चुका है। किन्तु इससे भी भ्रम उत्पन्न हो सकता है। हमलोगों के कुछ महत्तम ब्रिटिश लेखक सुधारक रहे हैं और उनलोगों ने हमलोगों के दोषों एवं अनुचित सामाजिक अवस्थाओं पर जोर देने एवं उनकी ओर ध्यान आकृष्ट करने के लिये उनका उपहास किया है। हमलोग उन्हें दूसरे रूप में पाना भी नहीं चाहते। "डूदी व्यायज हॉल" के आज इंगलैन्ड में नहीं विद्यमान रहने पर भी निकोलस निकलबी हमलोगों को प्रिय हैं। परन्तु रूस-वासियों का ऐसा विश्वास मालूम होता है कि उस युग की यह अवस्था अभी भी इंगलैंड में विद्यमान है और वहाँ की वर्त्तमान अवस्थायें डिकेन्स के समय की हैं। हमलोगों ने दो ऐसे नवयुवकों से वार्त्तालाप किया था जो स्वयं सुन्दर अंगरेजी बोलते थे। हमलोगों ने जब उनलोगों को 'एन्टी नैटेल' (प्रसव पूर्व) एवं 'पोस्ट नैटेल' (प्रसवोपरान्त) क्लिनिकों (चिकित्सालयों), डिस्ट्रिक्ट नर्सों (परिचारिकाओं), सान्ध्य विद्यालयों, औद्योगिक विद्यालयों और इंगलैन्ड के विश्वविद्यालयों में राज्य के सहायता से शिक्षा प्राप्त करनेवाले छात्रों की संख्याओं को बतलाया तब उनलोगों को विश्वास ही नहीं हुआ।

हमलोगों को फॉरेन लैंगवेजेज पब्लिशिंग हाउस (वैदेशिक भाषा प्रकाशन गृह) मास्को से वितरित "सोवियत संघ में सार्वजनिक शिक्षा", "सोवियत संघ में सार्वजनिक स्वास्थ्य", "सोवियत संघ में जननी एवं शिशु का संरक्षण", "समाजवादी देश की महिलायें", "एक जन-न्यायाधीश के विचार" और "एक इंजीनियर के विचार" का वर्णन करने वाली अंगरेजी की अनेक पुस्तिकाएँ प्रदान की गईं। यद्यपि वे सभी अत्यन्त रोचक एवं सूचना से पूर्ण हैं तथापि अपनी पद्धतियों से पूँजीवादी देशों को पद्धतियों की निन्दापूर्ण तुलना से वे सभी दूषित हो गई हैं। उदाहरणार्थ, ब्रिटिश न्यायालयों के सम्बन्ध में फ्रेडरिक एन्जिल्स का यह कथन अनुमोदन करते हुए उद्धृत किया गया है—"न्यायाधीश एवं जूरी स्वयं सम्पत्तिशाली व्यक्ति हैं; उनलोगों की नियुक्ति मध्यम वर्ग से होती है और इसलिये वे अपने वर्ग के प्रति पक्षपाती और गरीबों के जन्मजात शत्रु होते हैं।"

पुनः, अंगरेजी और अमरीकी शिक्षा के सम्बन्ध में यह कहा जाता है—

"बुर्जुआ (मध्यम वर्गीय) विद्यालयों का उद्देश्य नवीन पीढ़ी से पूँजीवादी व्यवस्था के विश्वस्त रक्षकों और सेवकों को तैयार करना एवं युवकों में शोषक शासक वर्गों और उनके द्वारा संस्थापित सरकारों के प्रति भक्ति-भावना उत्पन्न करने वाली शिक्षा देना है।" वास्तव में रूसी लोगों की मनोवृत्ति ऐसी बना दी गई है कि वे अपनी पद्धति के सिवा अन्य पद्धतियों को दोषपूर्ण अथवा पतित समझते हैं। ग्रेट-ब्रिटेन के सामाजिक अथवा राजनीतिक कार्यों में उनकी विशेष अभिरुचि नहीं प्रतीत होती, यद्यपि शिष्टाचार के नाते वे लोग कुछ अभिरुचि अवश्य दिखलाते हैं। इसका एक कारण निस्सन्देह उनलोगों का अपने विस्तृत भूभाग के लिये प्रस्तुत की गई योजनाओं की प्रगति में ही अत्यधिक रुचि रखना है। हमलोगों के यह पूछने पर कि सोवियत संघ के विद्यालयों में संयुक्त राष्ट्र-संघ-सम्बन्धी सूचना-सामग्री का उपयोग किया जाता है अथवा नहीं—रूस के शिक्षा-मन्त्री ने नकारात्मक उत्तर दिया। उन्होंने बतलाया कि माध्यमिक विद्यालयों के उच्चवर्गीय छात्रों को संयुक्त राष्ट्र संघ के सम्बन्ध में पूर्ण ज्ञान है, क्योंकि यह सूचना समाचार-पत्रों से प्राप्त हो सकती है।

परन्तु, यही तो कठिनाई है। सोवियत लोगों की पहुँच केवल अपने समाचार-पत्रों, रेडियो एवं अपनी पत्रिकाओं तक ही सीमित है जिससे उन्हें विश्व की घटनाओं का बिल्कुल एकपक्षीय ज्ञान प्राप्त होता है। ये पत्र-पत्रिकाएँ वस्तुतः उन्हीं तथ्यों एवं वक्तव्यों को प्रकाशित करती हैं जो पश्चिमीय देशों के कार्यों एवं प्रवृत्तियों को निकृष्टतम रूप में उपस्थित करते हैं। हाँ, यह तर्क पेश कियाजा सकता है कि अनेक पश्चिमीय समाचार-पत्र भी एकपक्षीय ही हैं। परन्तु पश्चिमीय देशों में किसी भी व्यक्ति के लिये स्वेच्छापूर्वक कम-से-कम, उदाहरणार्थ, परमाणु शक्ति के अन्तर्राष्ट्रीय नियंत्रण से सम्बन्धित व्याख्यानों एवं कागजातों का पूर्ण विवरण प्राप्त कर सकना सम्भव है। सोवियत नागरिकों के लिये यह संभव नहीं है। 'वॉयस ऑव अमेरिका' (अमरीकी ब्रॉडकास्ट) के ब्रॉडकास्ट स्वभावतः अवरुद्ध (रेडियो तरंगों को अस्पष्ट कर देना) कर दिये जाते हैं क्योंकि उसे क्रान्ति विरोधी भावना से युक्त समझा जाता है। सोवियत संघ के लिये बी० बी० सी० के ब्रॉडकास्टों के सम्बन्ध में भी यही बात है। तो भी कुछ रूसवासी इन भाषणों को अवश्य सुनते हैं, ऐसा प्रतीत होता है। यदि इन ब्रॉडकास्टों का उद्देश्य पारस्परिक अन्तर्ज्ञान की वृद्धि है, तब इनका निश्चयतः प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। हमलोगों को प्रतीत हुआ कि मनोवैज्ञानिक दृष्टि से ये सारी बातें गलत हैं। इन ब्रॉडकास्टों से कहाँ तक यह भावना रूसी लोगों में फैलेगी कि हमलोग भी मैत्री चाहते हैं और उतने खराब नहीं हैं जितना कि सोवियत सरकार हमलोगों को चित्रित करती

है—उसके बजाय जो लोग इन्हें सुनते हैं उनके मन में उलटे इससे अत्यधिक क्रोध उत्पन्न होता है और ये ब्रॉडकास्ट इसीलिये सुने जाते हैं कि सोवियत संघ के प्रति पश्चिमीय सरकारों की शत्रुतापूर्ण नीति को उनसे पुष्टि मिलती है। ये बातें हमलोगों को उनलोगों ने बतलाई जो यदाकदा इन ब्रॉडकास्टों को सुना करते थे। कदाचित् यह कहना अनावश्यक है कि ग्रेट-ब्रिटेन के लिये प्रसारित मास्को रेडियो का कार्य-क्रम अधिक उत्तम नहीं है। सोवियत संघ के लोगों को वहाँ के समाचार-पत्रों और रेडियो ने यह विश्वास करा दिया है कि कोरिया युद्ध संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा प्रारंभ एवं प्रोत्साहित किया गया था। उदाहरणार्थ, सोवियत अँगरेजी अर्द्धमासिक 'न्यूज' में प्रकाशित 'डेवलपमेन्ट्स इन् कोरिया' (कोरिया की घटनाएँ) शीर्षक निबन्ध में "अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करने वाले एक छोटे राष्ट्र के विरुद्ध युद्ध का अन्याय" और "औपनिवेशिक विजय के अभिलाषितों" की चर्चा की गई थी। सोवियत जनता को सदैव यह बतलाया जाता है कि संयुक्त राज्य अमेरिका एवं ग्रेट ब्रिटेन की सरकारें तथा वहाँ के व्यवसाय-हितैषी युद्ध चाहते हैं, किन्तु वहाँ की जनता नहीं। उनके शान्ति सम्मेलनों का भी विषय यही है। हमलोगों ने अपने वार्त्तालापों में इस बात पर जोर दिया कि यह सत्य नहीं है कि संयुक्त राज्य अमेरिका तथा ग्रेट ब्रिटेन की सरकारें सोवियत संघ के विरुद्ध युद्ध का आयोजन कर रही हैं तथापि हमलोगों को यह स्वीकार करना पड़ा कि कुछ पश्चिमीय समाचार-पत्र एवं राज-नीतिज्ञ ऐसे हैं जो विवेकशून्य एवं गैरजिम्मेदार वक्तव्य दिया करते हैं। यही वह मूल्य है जिसे हमलोगों को भाषण एवं प्रेस की स्वतंत्रता के लिये चुकाना पड़ता है और कभी-कभी यह बहुत मँहगा भी पड़ जाता है। यदि २७ वीं अक्टूबर, १६५१ की "कोलियर्स मैगजिन" का 'प्रिविउ ऑव दि वार वी डू नॉट वान्ट' (उस युद्ध की रूप रेखा जिसे हम नहीं चाहते हैं) वाला अंक, जिसकी चर्चा पहले ही हो चुकी है और जिसमें विश्वव्यापी परमाणुयुद्ध के बाद स्थापित होने वाले 'यूटोपिया' (कल्पित आदर्श संसार) का अति लुभावना चित्रण किया गया था, प्रकाशित हो चुका होता तो हमलोगों का कार्य कदाचित् असंभव ही हो जाता।

फिर भी हमलोगों ने, जैसा कि सप्तम अध्याय में कहा जा चुका है, 'न्यूज' के सम्पादक मण्डल के साथ सचाई के साथ समाचारों के रिपोर्ट करने के प्रश्न पर विचार किया। इस पत्र का प्रथम अंक अभी-अभी प्रकाशित हुआ था। 'न्यूज' के निबन्धों को कभी-कभी सोवियत समाचार-पत्रों में अनूदित एवं पुनः प्रकाशित किया जाता है। इस पत्र का उपनाम 'ए फोर्टनाइटली सर्चलाइट ऑन् वर्ल्ड इवेन्ट्स' (विश्व की घटनाओं पर पाक्षिक प्रकाश) है। एक सम्पादकीय में

इसके उद्देश्यों को "सोवियत संघ और ऐंग्लो सैक्सन जगत की जनता के बीच अधिक अन्तर्ज्ञान की वृद्धि करने की उत्कट अभिलाषा" एवं "शान्ति तथा जनतंत्र की हितवृद्धि की दृष्टि से अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं का संयत एवं सन्तुलित चित्र उपस्थित करना" बतलाया गया था। जब हमलोगों ने यह सुझाव दिया कि प्रथम अंक में प्रकाशित कुछ निबन्धों से अन्तर्ज्ञान में वृद्धि होने की अपेक्षा उनसे शत्रुता का उद्रेक होगा तब उनलोगों ने इसे ध्यानपूर्वक सुना। तत्पश्चात् हमलोगों ने प्रधान सम्पादक श्री मोरोजोव के पास यह बतलाते हुए एक पत्र लिखा की जिन व्यक्तियों के कार्यों एवं वक्तव्यों से हम असहमत हैं उन्हें गलत बतलाना ठीक है किन्तु यह कल्पना कर लेना कि वे दुष्ट हैं, अन्याय करना है।

मेल-मिलाप, पत्र-व्यवहार एवं प्रचार की समस्याएँ वस्तुतः भयानक हैं। कभी-कभी हमलोगों को ऐसा प्रतीत हुआ कि हमलोगों का (और सभी लोगों का) शब्दों के अर्थ का ज्ञान उतना ही भिन्न-भिन्न है जितनी हमलोगों की चिन्तन-शैली एवं राष्ट्रीय प्रथाएँ भिन्न हैं। इन समस्याओं का कोई समाधान तब तक असंभव प्रतीत होता है जब तक अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण में सुधार नहीं होता। और ये स्वयं अन्तराष्ट्रीय गलतफहमी एवं संदेह की वृद्धि में अत्यधिक योगदान देते हैं।

हमलोगों को (जैसा कि मास्को से लौटने पर हमलोगों ने एक संक्षिप्त रिपोर्ट में सोसायटी ऑव फ्रेंड्स को सुझाव दिया था) इसके समाधान में सहायता पहुँचाने के लिये आत्मनिर्दोषिता एवं हानिकारक आलोचना से बचना होगा और जिन कार्यों एवं दुर्गुणों को हमलोग दूसरों के लिये अनुचित समझते हैं उनसे हमलोगों को स्वयं दूर रहना होगा। दुर्भाग्यवश यह अवश्य स्वीकार करना पड़ेगा कि इस समय पश्चिमीय देशों में प्रतिबन्ध लगाने वाले कार्यों की वृद्धि होती जा रही है। यह बात संयुक्त राज्य अमेरिका के 'मैककैरन ऐक्ट' जैसे विधानों के लागू होने और अन्य देशों में लोगों की यात्रा पर लगाये गये अनेक प्रतिबन्धों से प्रकट होती है।

●

दशम अध्याय

धारणा एवं सम्मतियाँ

सोवियत संघ के लिये प्रस्थान करने के पूर्व हमलोगों ने अध्ययन द्वारा और रूसवासियों, वहाँ रहे हुए विदेशियों एवं रूस गये पूर्व प्रतिनिधिमण्डल के सदस्यों के संग वार्त्तालाप द्वारा वहाँ के सम्बन्ध में यथासंभव ज्ञान करने की चेष्टा की थी। वहाँ पहुँचने पर हमलोगों ने प्रायः ठीक वही पाया जिसकी आशा हमलोगों ने की थी, किन्तु कुछ विषयों में—और वे बहुधा सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण थे—हमलोगों को आश्चर्यचकित हो जाना पड़ा।

सर्वप्रथम हमलोगों ने सोवियत संघ का जीवन अपनी आशा से अत्यधिक "स्वाभाविक" पाया। "स्वाभाविक" से हमलोगों का तात्पर्य "पश्चिमीय यूरोप के अधिक सदृश" से है। हमलोगों को वहाँ तनाव, चोर सदृश मनोवृत्ति और अपने लोगों के प्रति संदेह तथा हरएक लोगों के प्रति संदेह के वातावरण की आशंका थी। दूसरे शब्दों में हमलोगों को उन सभी बातों की आशंका थी जिन्हें हमलोगों के दल के, नाजी जर्मनी से परिचित व्यक्ति एक सर्वसत्ताधारी शासन का अंग मानते हैं। प्रॉग की उस रात्रि ने इन सन्देहों की पुष्टि की। हमलोगों को निश्चयतः ऐसा प्रतीत हुआ था कि हमलोग एक दुःखी नगर में हैं। इसका कारण संभवतः 'आइरन कर्टेन (लौह आवरण)' की पृष्ठभूमि में प्रथम रात्रि बिताने में हमलोगों का अपना मानसिक तनाव रहा हो।

हमलोगों की अपनी ये सभी आशंकाएँ निर्मूल सिद्ध हुई हैं और मास्को आने पर कुछ दिनों के भीतर ही हमलोग इन निर्मूल आशंकाओं की हँसी उड़ा सके। हमलोगों ने कल्पना की थी कि वहाँ हमलोगों के लिये अकेले बाहर जाना असंभव होगा। अतः हमलोगों ने अलग-अलग से इसकी जाँच करनी चाही और यह भी पता लगाना चाहा कि हमलोगों का अनुसरण किया जाता है कि नहीं। परन्तु वहाँ ऐसी कोई बात नहीं थी। एक दो दिन में हमलोग नगर में इस प्रकार स्वच्छन्द विचरने लगे मानो हमलोग अपने लन्दन, बर्मिंघम

अथवा मैनचेस्टर में हों। हमलोगों के विदेशी होने से निश्चयतः किसी को भी कुछ चिन्ता नहीं हुई।

हमलोग दूकानों में और ट्रॉली बसों से गये। वहाँ हमलोगों के साथ वैसा ही वर्त्ताव किया गया जैसा हमलोगों के देश में भी एक विदेशी यात्री के साथ होता। हमलोगों की टूटी-फूटी रशियन धैर्य पूर्वक सुनी जाती थी। यदि किसी बात को हमलोग रशियन में नहीं व्यक्त कर पाते तो बस के समस्त यात्री हमलोगों की सहायता को उद्यत हो जाते और अति सुशीलता से हमलोगों और बस के 'कंडक्टर' (टिकट देने वाला) को परामर्श और सहायता देने की चेष्टा करते। दुभाषियों के सम्बन्ध में कहा गया था कि वे लोग सदैव हमलोगों के साथ लगे रहेंगे। किन्तु ऐसी बात नहीं थी। हमलोगों को जब आवश्यकता होती तब वे हमलोगों के संग सदैव जाने को तैयार हो जाते और जब आवश्यकता नहीं होती तब नहीं जाते। प्रायः कहा जाता है कि दुभाषिये गुप्त पुलिस के सदस्य होते हैं। हमलोगों के दुभाषिये निस्सन्देह सच्चे एवं योग्य कम्यूनिस्ट थे। इस कारण हमलोगों को प्रसन्नता ही हुई, क्योंकि इससे हमलोग उनलोगों के दृष्टिकोण को और अधिक समझ सके और अपने दृष्टिकोण के सम्बन्ध में उनलोगों को भी समझा सके। वे लोग हमलोगों के सम्बन्ध में जो (गुप्त) रिपोर्ट तैयार कर रहे हैं उसका उल्लेख कर हमलोग उनसे मजाक भी करते थे। यह वस्तुतः हमलोगों की निष्कपट एवं मैत्रीपूर्ण भावना का ही मापदण्ड था।

हमलोगों को सोवियत नागरिकों पर लगे कुछ प्रतिबन्धों का भी अनुभव हुआ। हमलोगों को भी अन्तर्देशीय पासपोर्ट रखना पड़ता था (जार-शासन में भी यह व्यवस्था थी) और उनपर कीव तथा लेनिनग्राड जाने की आज्ञा लिखवानी पड़ी थी। जब हमलोग किसी टैक्सी पर नगर के बाहर जाते तब ड्राइवर नगर की सीमा पर यात्रा की दूरी लिखने के लिये गाड़ी रोक देता और यह इसलिये कि यदि उससे पूछा जाय कि नगर की सीमा के बाहर वह क्या कर रहा था तब वह उत्तर दे सके। एक रविवार को प्रातःकाल कीव से बाहर जाते समय एक छोटी लाल झंडी वाले मनुष्य ने हमलोगों को रोका। हमलोगों के ड्राइवर ने क्रुद्ध होकर "अंगरेज" शब्द उच्चारित किया। तब वह व्यक्ति लज्जित होकर हट गया और हमलोग आगे बढ़े। मास्को में टैक्सी पर बैठ कर घूमते समय हमलोगों ने यह भी देखा कि किस प्रकार सभी सवारियाँ यदा-कदा दृष्टिगोचर होने वाली (चारो सामान्य प्रकार की गाड़ियों में वृहत्तम एवं सर्वोत्कृष्ट) एक

'जिम' मोटर गाड़ी के लिये स्थान छोड़ कर हट जाती हैं। इस गाड़ी की खिड़कियों में पर्दे लगे रहते हैं और यह "ट्रैफिक लाइट", पैदल चलने वालों की क्रौसिंग एवं अन्य सभी बातों की परवाह किये बिना चलती चली गई।

गलियों में चलने वाले व्यक्ति प्रसन्न और स्थिरचित्त दीखते थे और उनके वार्त्तालापों से इसकी पुष्टि होती थी। हमलोगों ने जिससे भी वार्त्तालाप किया उनमें से किसी के मुख से अपने समाज अथवा अपने नेताओं के सम्बन्ध में कोई आलोचना नहीं सुनी। इन व्यक्तियों में मंत्री, धार्मिकनेता, विद्यालयों के शिक्षक अथवा सामूहिक कृषिफार्म के कार्यकर्त्ता एवं 'जिस' मोटर कारखाने के श्रमिक तक थे। परन्तु इसके विपरीत हमलोगों का कोई भी यह सुझाव कि उनकी पद्धति को—औद्योगिक बातों को छोड़कर—हमलोगों की पद्धति से कुछ भी सीखना है, उनलोगों को चुभ जाती थी। पॉल कैडबरी से मास्को स्थित 'रेड ऑक्टोबर चॉकलेट फैक्ट्री' में घंटों प्रश्न पूछे गये; तुला के खान-इंजीनियर लेसली मेटकॉफ से ब्रिटेन की खान-सम्बन्धी प्रगति के बारे में सब कुछ जानना चाहते थे और कैथलीन लौन्सडेल से सोवियत वैज्ञानिक यह सुनने के लिये उत्सुक थे कि ग्रेट-ब्रिटेन में स्फटिक-विज्ञान के अन्तर्गत अभी हाल तक कौन से कार्य हुए हैं। इन सब बातों का उल्लेख पहले हो चुका है।

सोवियत संघ में आने वाले दूसरे यात्रियों का—विशेषकर उन लोगों का जो रशियन भलीभाँति बोलते है—अनुभव भिन्न हुआ प्रतीत होता है। ऐसा प्रतीत होता है कि उन लोगों के सम्मुख सामान्य सोवियत नागरिक अपने असंतोष को उतनी ही कटुता से व्यक्त कर चुके हैं जितनी कि एक अंगरेज गृहिणी इंगलैंड में मांस की एक दूकान में। हमलोगों में से कुछ व्यक्तियों ने भी जर्मनी में सोवियत रूस के पूर्व नागरिकों के बीच काम किया था। ये नागरिक कईएक कारणों से सोवियत संघ में वापस नहीं जाते थे अथवा नहीं जा सकते थे और हमलोगों ने उन लोगों की कहानियाँ सुनी थीं। हमलोग केवल इतना कह सकते हैं कि हमलोगों ने सोवियत संघ के अन्तर्गत पूर्ण एकमतता, किसी आलोचना को स्वीकार नहीं करने की प्रवृत्ति, किसी भी दूसरे दृष्टिकोण को समझने की शक्ति के पूर्ण अभाव का अनुभव किया और यही हमलोगों के लिये सर्वाधिक खटकने वाली बात थी। ऐसी सर्वव्यापक एकरूपता निश्चयतः कुछ अंशों में उनकी शिक्षा का परिणाम थी। कुछ अंशों तक इसका कारण असाम्यवादी देशों से जान बूझकर उनका अलगाव था, किन्तु सोवियत प्रेस इसके लिये मुख्य रूप से उत्तरदायी था। तो भी सोवियत प्रेस में विशिष्ट दुरुपयोगों और व्यक्तियों की अत्यन्त आलोचना होती थी। यह कथन किसी भाँति सत्य नहीं है कि अफसर मनमानी करके बचे रह सकते हैं।

हमलोग जिससे भी मिले उसे संतुष्ट एवं प्रसन्न पाया। हमलोगों को सर्वसाधारण के चलने के ढंग में भी इसकी झलक मिली। सोवियत सत्ता के तीस वर्षों के शासन-काल की सफलताओं को देखते हुए रूसवासियों में ऐसी भावना का वर्त्तमान होना बहुत युक्तिसंगत है हालाँकि जब शासन की बागडोर वर्त्तमान सत्ता के हाथ में आई तब देश बहुत पिछड़ा हुआ था और इस भयानक युद्ध ने भी ग्रेट-ब्रिटेन की अपेक्षा सोवियत संघ को ही अत्यधिक क्षति पहुँचाई है। प्राचीन रूस के चिह्न मास्को जाने वालों को सर्वत्र मिलेंगे। नगर के मध्य भाग से बाहर होते ही क्रान्ति से पहले के समय के जीर्ण-शीर्ण, काष्ठ-निर्मित, बिना रँगे हुए भद्दे घर दीख पड़ते हैं जिनमें अनेकों परिवार अत्यन्त संकीर्णतापूर्वक जीवन व्यतीत करने के लिये बाध्य हैं। सड़कें भी खराब मिलने लगती हैं जो गड्ढों से भरी रहती हैं और वे गर्मी पड़ने पर धूल से तथा वर्षा होने पर कीचड़ से भरी रहती हैं। तो भी शहर के मध्य भाग की ही भाँति नगर के बाहर भाग वाले हिस्सों में अनेक महलों वाले भवन हैं जो नगर के विभिन्न भागों में फ्लैटों, कार्यालयों, होटलों एवं विश्व-विद्यालयों के लिये निर्मित हो रहे हैं। फ्लैटों के छोटे-छोटे 'ब्लॉक' जो किसी भी प्रकार कम प्रभावोत्पादक नहीं है अतिशीघ्रता से सर्वत्र निर्मित किये जा रहे हैं। हमलोगों ने लेनिनग्राड और कीव में ठीक इसी प्रकार की बात देखी। मिल्ड्रेड क्रीक ने लेनिनग्राड में क्षितिज पर ऐसे ३० ब्लॉकों की गणना की थी। वहाँ के शहरों के घरों में जनसंकीर्णता की समस्या जितनी गंभीर है उतनी ही शीघ्रता से उसका हल भी किया जा रहा है और यदि पहली बात (जनसंकीर्णता की समस्या) रूस में स्वीकार कर ली जाय तो दूसरी बात (भवनों का अति शीघ्रता से निर्माण) को रूस के बाहर और अधिक मान्यता मिलेगी।

सोवियत नीति एवं कार्य में अन्तर्निहित ऐसी बहुत सी बातें हैं जिन्हें हम गलत एवं भ्रान्ति पूर्ण मानते हैं किन्तु इनकी आकांक्षाओं और सफलताओं की अन्तर्भूत अच्छाइयों और विशेषकर सर्वसाधारण के सामाजिक एवं आर्थिक उन्नति की दिशा में की गई यथार्थ प्रगति को मान्यता प्रदान करनी ही चाहिये।

हमलोगों को कारखानों, प्रदर्शनियों एवं अन्य संस्थाओं को दिखलानेवाले अधिकांश प्रदर्शकों ने अपनी वार्त्ता "डू रिवोलुत्सी" से प्रारंभ किया, जिसका अर्थ "क्रान्ति के पहले तक" होता है। यथा—"क्रान्ति के पूर्व (वस्तुतः १९२४ ई० तक) रूस में मोटर गाड़ियों के कारखाने नहीं थे।" "क्रान्ति के पूर्व यूक्रेन के विद्यालयों में रशियन के ही माध्यम से शिक्षा दी जाती थी।"

और इसी प्रकार और भी। वे लोग तब यह बतलाते कि सोवियत सरकार के अन्तर्गत कितना कार्य हुआ है हमलोगों ने सर्वत्र रूसी लोगों में अपनी सफलताओं (अपनी सरकार के द्वारा संभव) के प्रति प्रचुर अभिमान वर्तमान पाया। इन सफलताओं को वे निस्सन्देह अपनी ही समझते थे। यथा—"हमलोगों ने युद्ध के पूर्व बाँधों और पुलों का निर्माण किया था"; "हमलोग अपने ट्रैक्टरों के (अथवा जो भी वस्तु रहती उसके) उत्पादन में इतना प्रतिशत वृद्धि कर रहे हैं"; "हमलोग पर्वतों को तोड़ रहे हैं, नदियों के प्रवाह को परिवर्तित कर रहे हैं और एशिया की मरुभूमि को उर्वर क्षेत्र में रूपान्तरित करने के लिये वहाँ की जलवायु में परिवर्तन कर रहे हैं"। इनमें से कोई भी कार्य "उनलोगों" का अर्थात् शासकों अथवा नेताओं का नहीं था।

मास्को का 'मेट्रो' (जमीन के भीतर चलनेवाली रेलों के संघटन का रूसवासियों द्वारा दिया गया नाम), सोवियत सफलता के समस्त गर्व का प्रतीक है। जिस प्रकार मध्ययुगीन चर्चों का निर्माण ईश्वर की महिमा में हुआ था उसी प्रकार 'मेट्रो' का निर्माण सोवियत सत्ता की महिमा में हुआ है। इसके स्टेशन संगमर्मर के बड़े-बड़े भवन हैं जो मूर्त्तियों, प्लास्टर के काम, सोने की कलई और 'न्यून ट्यूब' के दीपवृन्तों से सुशोभित हैं। प्रत्येक के निर्माता शिल्पकार भिन्न-भिन्न थे और प्रत्येक की कल्पना सम्पूर्णता की दृष्टि से एवं कलाकृति के रूप में की गई थी। प्रायः इनमें एक स्पष्ट प्रसङ्ग रहता। उदाहरणार्थ 'रेभोल्यूशन स्कायर' के 'मेट्रो' स्टेशन में कृषकों, खान-मजदूरों, छात्रों, नाविकों एवं युवक नेताओं आदि विभिन्न प्रकार के लोगों की पंक्तिबद्ध मूर्त्तियाँ थीं जिन्होंने क्रांति का निर्माण किया था। 'गोर्की पार्क ऑव रेस्ट एन्ड कल्चर' के पास वाले मेट्रो स्टेशन की दीवालों पर शतरंज अथवा उछल-कूद जैसे सांस्कृतिक अथवा शान्तिमय कार्य करनेवाले लोगों को प्रदर्शित करनेवाली प्लास्टर की मूर्त्तियाँ थीं। हमलोग इसके बाहुल्य से प्रशंसा करने के लिये बाध्य हो उठे। इस भूमिवर्त्ती रेलवे में यात्रा करना किसी भी हालत में मनोरंजक था। गाड़ी में न कोई विज्ञापन था, न व्यावसायिक उद्देश्यों एवं स्वार्थों का कोई बेमेल मिश्रण, जो लन्दन और पेरिस की भूमिवर्त्ती रेलवे में बढ़ा हुआ है।

क्रेमलिन के वैभव को देखने के उपरान्त 'मेट्रो' का वैभव हमलोगों के लिये अधिक ग्राह्य हो गया। वे सब साकार महिमा हैं। जवाहिरातों से लेकर राजप्रासादों एवं गिरजाघरों तक—सर्वत्र सर्वोत्कृष्ट कलाकृतियाँ इतनी ही अधिक संख्या में वर्तमान हैं जैसे कि एक पुस्तकालय में पुस्तकें। कदाचित् हमलोगों में

से किसी व्यक्ति को अब फिर कभी इतने वैभव के बीच प्रातःकाल का समय व्यतीत करने का अवसर नहीं प्राप्त हो सकेगा।

सोवियत संघ में हमलोगों द्वारा देखे हुए समस्त प्राचीन स्मारकों—विशेषकर चर्चों—की भाँति इन निधियों की भलीभाँति देखभाल की जाती है और उन्हें प्रदर्शित किया जाता है। क्रेमलिन के गिरजाघरों की दीवालों पर धार्मिक मूर्त्तियों का स्वच्छीकरण, जिससे १४ वीं शताब्दी और उससे भी पूर्व के महान कलाकारों की कृतियाँ बाद की अत्यधिक पेंटिङ्ग एवं वार्निश के नीचे से प्रकट हो रही हैं, संसार में अपने ढंग के वृहत्तम कार्यों में से है।

हमलोगों के प्रदर्शकों एवं दुभाषियों को इन कार्यों के लिये उतना ही गर्व था जितना गर्व उन्हें नवीन रूस की सफलताओं के लिये था। प्रत्येक नवीन, आश्चर्यजनक वस्तु को प्रदर्शित करते समय हमलोगों को बतलाया जाता था कि "यह रूसी कलाकारों की ही कृति थी।" इस भावना को समझना सरल था कि अगर जार सम्राटों के समय में इतना उत्तम कार्य हो सका था तो सोवियत समाज अवश्य ही इससे और अच्छा कर दिखलायेगा। और चूँकि सर्वत्र ऐश्वर्य की झलक थी (१६ वीं शताब्दी के जार के महल में स्थित 'हॉल ऑव दि ऑर्डर ऑव सेन्ट जॉर्ज (सेन्ट जॉर्ज के मतावलम्बियों का भवन)' के फर्श में बीस से भी अधिक प्रकार की लकड़ियाँ थीं) नवीन रूस और भी अधिक ऐश्वर्य के साथ निर्माण कार्य सम्पन्न करेगा। ऐसी उनकी भावना थी।

स्वयं हमलोगों ने भी क्रान्ति के बाद की प्रस्तुत दृश्यकलाओं की अपेक्षा क्रान्ति के पहले की कलाकृतियों की बारीकियों को समझना सुगमतर समझा। निस्सन्देह इस देश में आनेवाले सोवियत यात्री भी हमलोगों की कला के सम्बन्ध में यही बात कहेंगे, यद्यपि उनके कथन के कारण भिन्न होंगे। हमलोगों ने सोवियत चित्रकला एवं मूर्त्तिकला को उदासी उत्पन्न करने वाला पाया। संभवतः शैली की दृष्टि से २० वर्ष पूर्व 'रॉयल एकेडेमी' में इसे प्रतिक्रियावादी माना जाता। परन्तु हमलोगों को जो कुछ भी दिखलाया गया उसपर शैली की अपेक्षा विषय की दृष्टि से हमारे द्वारा विचार करने की आशा की गई थी। विजय की परेड का निदर्शन करने वाले मध्यम कोटि के एक साधारण चित्र को भी स्तालिन पुरस्कार दे दिया जाता था। इसका ज्वलन्त उदाहरण सत्तरवें जन्म दिवस पर स्तालिन को (म्यूजियम के प्रदर्शक आदि "महान् स्तालिन" कहा करते) दिये गये उपहारों की प्रदर्शनी थी।

कलाओं के सोवियत लोगों द्वारा मूल्यांकन सम्बन्धी हमारे दूसरे अनुभव

अधिक उत्साहवर्द्धक थे। हमलोग "गोर्की पार्क" का उल्लेख पहले ही कर चुके हैं। वहाँ हमलोगों में से कुछ व्यक्ति संध्या के अंतिम क्षणों में 'ग्रीन थियेटर' के पास आ निकले जहाँ करीब २५,००० व्यक्ति 'शास्त्रीय-संगीत' का आनन्द ले रहे थे। श्रोताओं में अधिकांश तरुण थे। पार्क के अन्य भाग में एक महिला वेर्दी के जीवन एवं संगीत का संक्षेप में वर्णन कर रही थी। बाद में उसका संगीत होनेवाला था। इस बीच एक दूसरा व्यक्ति प्रश्नपत्र बाँट रहा था। ऐसा करने का अभिप्राय यही था कि लोग उनके ऊपर पार्क के कार्यों पर अपनी टिप्पणियाँ एवं सुझाव लिखकर दें। हमलोग "बैले" नृत्य देखने नहीं गये किन्तु 'बैले कन्सर्ट' (नृत्यमय संगीत) सुनने गये। यह एक दूसरे पार्क में एक 'समर थियेटर' में हो रहा था और इसमें अलग-अलग नृत्यों का आयोजन किया गया था। यहाँ के भी दर्शक तरुण एवं उदार व्यक्ति थे। वे लोग नृत्य एवं संगीत के उन स्थलों की हार्दिक प्रशंसा कर रहे थे जो उनको रुचती थीं। ये स्थल नटबाजी या मनोरमता के विशिष्ट अंशों से सम्बन्धित थे। वे लोग इटली के ऑपेरा दर्शक के समान लगे।

बहुत सी बातें ऐसी हैं जो केवल रुचि एवं प्रथा की विभिन्नतायें हो सकती हैं और इनके लिये निन्दनीय कारणों का ढूँढ़ना सरल है। उदाहरणार्थ, हमलोगों के पूर्व गये कुछ प्रतिनिधिमण्डलों ने सूचित किया है कि दुभाषिये उनलोगों के पास सदैव उपस्थित रहते थे—जलपान के समय भी। इससे यही निष्कर्ष निकला कि दुभाषिये इन लोगों को दृष्टि के बाहर नहीं निकलने देना चाहते थे जिसमें कि प्रतिनिधिमण्डल के समक्ष गलत बातें न कह दी जायँ, या प्रतिनिधिमण्डल उन वस्तुओं को न देख ले जो उसे नहीं दिखलाना है अथवा वे किसी और प्रकार के उपद्रव में न पड़ जायँ। इसमें कुछ सत्य हो सकता है, किन्तु हमलोगों का अपना अनुभव यही बतलाता है कि कुछ अंशों में इसका कारण रूसी आतिथ्य-सत्कार की परम्परा है। इस परम्परा से हमलोगों को तो सदा आनन्द ही मिला, क्योंकि इसके कारण हमलोगों को प्रचुर एवं स्वादिष्ट भोजन प्राप्त हुआ, भ्रमणों एवं वार्त्तालापों की व्यवस्था करने का प्रयत्न किया गया और हमलोगों की वैयक्तिक प्रवृत्तियों की ओर ध्यान दिया गया। जब हमलोगों ने दुभाषियों को यह सुझाव दिया कि वे लोग हमलोगों के पास प्रातःकाल में ११ बजे उपस्थित हों जिससे प्रतिनिधिमण्डल के सदस्यों को परस्पर विचार-विमर्श एवं उपासना के लिये समय मिल सके तब वे लोग आसानी से राजी हो गये। परन्तु उनलोगों ने खेद प्रकट किया कि हमलोग अपनी निश्चित अवधि (दो सप्ताह) के बहुमूल्य घण्टे नष्ट करने जा रहे हैं। जब हमलोग दिनभर के क्लान्तिजनक भ्रमणों एवं वार्त्तालापों के बाद १० बजे रात में पहुँचते तब वे

लोग प्रश्न करते—"अब आपलोग क्या करना पसन्द करेंगे?" इसकी आवश्यकता चाहे जिस लिये पड़ी हो किन्तु आतिथ्य-सत्कार की माँग तो यही थी कि हमलोगों की दिलचस्पी बनी रहे और हमलोगों को सदा प्रमुदित रक्खा जाय।

हमलोगों में से कुछ व्यक्तियों को यह धारणा हुई कि नगर-निवासियों के भी वस्त्र निम्नकोटि के हैं और उनमें कोई शैली नहीं है। सम्भव है कि इसका कारण भी रुचिवैषम्य ही हो। इसका ज्ञान इस तथ्य से होता है कि पुरुषों के वस्त्र महिलाओं से उत्तमकोटि के प्रतीत होते थे और पुरुषों के वस्त्रों में इतनी रुचि-भिन्नता के लिये स्थान नहीं है। तो भी मूल्यवान् वस्त्रधारिणी महिलायें भी दीख पड़ी थीं। बालक तो कभी-कभी चिथड़े पहने दीखते, किन्तु वे किसी भी तरह दुर्बल नहीं थे और गलियों में बैरो (ठेला गाड़ी) से आइसक्रीम, फल का रस एवं मिष्टान्न खरीदने में अपने रूबल व्यय कर रहे थे। जब हमलोग रूस में पहुँचे तब वहाँ कई वर्षों की अपेक्षा अधिक गर्मी पड़ रही थी। अतएव वस्त्र के विषय में जो जितना विधि-निरपेक्ष रहता था उसे उतनाही आराम होता। वहाँ पर "जोन परिवार की समानता" करने की कोई प्रवृत्ति नहीं दीख पड़ी और इसी कारण वहाँ के लोग वस्त्र की अपेक्षा भोजन को अधिक महत्त्व देते थे।

वस्त्रों की ही भाँति मास्को की दूकानें भी "उपयोगिता" के इसी सामान्य स्तर पर जान पड़ीं। वे सभी प्रकार की वस्तुओं से परिपूर्ण थीं और उनमें प्रायः ग्राहकों की भीड़ लगी रहती। कुछ 'विंडो डिस्प्ले' (गवाक्ष प्रदर्शन) सुन्दर थे किन्तु अधिकांश प्रायः अनाकर्षक थे। प्रधान मार्गों पर विज्ञापन के बोर्ड भी लगे थे जिनपर जीवन बीमा, आइसक्रीम, सुगंधित द्रव्य, मार्ग सुरक्षा, एवं 'जैम' (एक प्रकार की मीठी चटनी) के संबंध में विज्ञापन था। मोटर गाड़ियों एवं समाचार-पत्रों में भी विज्ञापनों का बाहुल्य था। फिर भी वहाँ पाश्चात्य संसार के समान विज्ञापन का विकास नहीं हुआ है।

कुछ अन्य धारणायें भी हमारी है जिनका उल्लेख होना चाहिये। उदाहरणार्थ, वहाँ स्त्री-पुरुषों को समानता पूर्ण है। फलतः जहाँ अनेक महिलायें न्यायाधीश, डॉक्टर और सोवियत की सदस्या थीं उसी प्रकार महिलाएँ समान वेतन पर खानों में पुरुषों के साथ-साथ सड़क मरम्मत करती थीं और 'जिस' कारखाने की ढलाई घर में क्रेन (भारी बोझ उठाने का यंत्र) और ट्रकें संचालित करती थीं। किन्तु सर्वाधिक महत्वपूर्ण धारणा तो हमलोगों की यही हुई कि इन समस्त विभेदों

के बावजूद हमलोग बहुत कुछ एक-दूसरे के सदृश हैं। हमलोग एक ही मजाकों पर हँसते और कृपापूर्ण व्यवहारों का समान रूप से आदर करते। हमलोगों को एक रूसी अथवा यूक्रेनवासी में अंगरेज कृषक, ट्रेड यूनियन के नेता और खान-इंजीनियर की समानता बार-बार परिलक्षित हुई।

उनलोगों का यह दावा हमलोगों को ज्ञात था कि सोवियत संघ में भिक्षुक, वेश्या अथवा पियक्कड़ नहीं हैं। निस्सन्देह लन्दन की 'पिकेडिली' की भाँति वहाँ की गलियों में वेश्याएँ नहीं थीं। हमलोगों ने उपासना के समय मठों के चारों ओर भिक्षुकों को एकत्र होते देखा था। दुभाषियों ने हमलोगों को बतलाया कि उनलोगों को भिक्षाटन की कोई आवश्यकता नहीं है, किन्तु वे इस अवसर का केवल सदुपयोग कर रहे हैं। यह सत्य प्रतीत हुआ। एक रविवार की रात्रि में हमलोगों ने कीव की गलियों में आनन्दमग्न दलों को भी देखा। हमलोगों की इस समान "मनुष्य !" ने हमें सोवियत संघ को अधिक बोधगम्य दिखलाया। परन्तु हमलोग सर्वत्र सार्वजनिक व्यवहार की उच्च कोटि से अत्यन्त प्रभावित हुए थे।

कार्य करना अधिकार ही नहीं वरन् एक असामान्य अधिकार है—कार्य के प्रति इस प्रकार की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन देना प्रशंसनीय जान पड़ता है। परन्तु आवास की दुर्व्यवस्था के कारण पारिवारिक जीवन अत्यधिक कष्टमय होता होगा और इससे माताओं को अपने बच्चों को दिन भर धातृगृहों में छोड़कर काम करने के लिये घर से बाहर जाने की अतिरिक्त प्रेरणा मिलती होगी। एक निकृष्ट गृह से एक उत्तम धातृगृह कहीं श्रेष्ठतर है। परन्तु इस पद्धति के फल-स्वरूप बालकों पर राज्य का नियंत्रण अधिक हो जाता है।

इसके साथ हमलोगों ने इस बात के सभी प्रमाण देखे कि बालकों एवं नवयुवकों की स्वाभाविक क्षमता एवं (उनके) कौशल के सहज विकास में सहायता पहुँचाई जाती है। प्रत्येक कार्यकर्त्ता को अपनी उन्नति करने के लिये प्रोत्साहन दिया जाता है, किन्तु साथ ही सामुदायिक प्रवृत्ति की रक्षा की जाती है। उदाहरणार्थ, हमलोगों को बतलाया गया कि बुरे कार्य के लिये किसी छात्र का निष्कासन समस्त वर्ग के लिये अपमानजनक समझा जाता है, क्योंकि उसकी रक्षा करना समस्त वर्ग का कर्त्तव्य था।

रूसके अनेक बुद्धिजीवी इस तथ्य से अवगत हैं कि यदि जनक्रान्ति नहीं हुई रहती तो वे अशिक्षित कृषक ही बने रहते। अतएव यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि वे साम्यवादी पद्धति के प्रबल समर्थक हैं और यदि उसमें कुछ दोष देख भी सकते हैं तो उधर से बिल्कुल दृष्टि फेर लेते हैं।

हमलोगों की राजनीतिक स्वतंत्रता की सारी धारणा उनलोगों को आश्चर्यकर प्रतीत हुई। एक सुयोग्य एवं निष्ठावान् (इसाई) धर्माचार्य से हमलोगों की भेंट हुई थी। उन्हें हमलोग िकराजनीतिज्ञों की पारस्परिक आलोचना-प्रत्यालोचना की रीति देखकर अत्यन्त दुःख था। उनको इस बात पर आश्चर्य था कि हमलोगों के समाचारपत्र अपने प्रधान मंत्री के सम्बन्ध में इतने मैत्रीरहित ढंग से कैसे लिख पाते हैं। उन्होंने बतलाया कि वे लोग अपने नेता को जनता का पिता समझते हैं और अपने पिता की आलोचना करना उचित नहीं है (उनके ये कथन उन शब्दों की प्रतिध्वनि थे जो अब उनके देश के अतीत इतिहास की वस्तुएँ हैं)। यहाँ फिर उसी बात का उदाहरण प्रस्तुत था, जिसे हमलोग सर्वत्र देख रहे थे। और वह यह है कि हमलोग जिन स्वतंत्रताओं को आवश्यक समझते हैं उनके अभाव को महसूस करने के बदले रूसी लोग उनसे वंचित रहना ही पसन्द करते हैं। हमलोगों को प्रतीत हुआ कि श्री मारिसन द्वारा "प्रवदा" को लिखित-पत्र के निष्फल होने का यही कारण था। (यह पत्र हमलोगों के मास्को में रहते ही पहुँचा था।)

सिद्धान्त तो यही है कि "मूल बातों में एकता, बातों में स्वतंत्रता और समस्त बातों में उदारता" के दर्शन हों। हमलोगों के मेजबान न केवल राजनीति में ही इस सिद्धान्त के प्रथम बात की कमी से आश्चर्यित हुए (हमलोग इसमें पूर्ण एकता का होना आवश्यक समझते थे) परन्तु उनलोगों केलिये यह समझना दुष्कर प्रतीत होता था कि एक ही धार्मिक सम्प्रदाय के होते हुए भी हम सातों व्यक्तियों के व्यक्तिगत आचरण में इतनी भिन्नतायें क्यों हैं? हमलोगों में से केवल एक ही व्यक्ति शाकाहारी, और एक ही धूम्रपान करनेवाला था तथा ऐसी ही और भी बातें थीं। यदि विचार-विमर्श के समय उपस्थित की गई युक्तियों की दृष्टि से विचार किया जाय तो प्रतीत होता था कि उनलोगों ने हमलोगों का ईसाईयों में 'फन्डामेन्टलिस्ट' (तत्ववादी) मान लिया है। सोडॉम एवं गोमोरा के भाग्य तथा नोआ के समय के संसार का उद्धरण देकर यह सिद्ध करने की चेष्टा की जाती कि ईश्वर भी शान्तिवादी नहीं हैं।

हमलोगों ने बहुधा महसूस किया कि हमलोग अपने युग से किसी दूसरे युग में विचर रहे हैं। कुछ दृष्टियों से सोवियत संघ जिस ऐतिहासिक स्थिति से गुजर रहा है उससे हमलोग गुजर चुके हैं और ऐतिहासिक प्रक्रियाओं से इतनी सरलतापूर्वक निवृत्त नहीं हुआ जा सकता। अपने मापदण्डों से उनकी पद्धति का कोई विवेचन या विवेचन करने का प्रयत्न भी आवश्क रूप से उचित नहीं है। परन्तु सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि जिन वस्तुओं को हम स्वीकार नहीं कर सकते उनका अनुकरण हमें नहीं करना चाहिये।

●

एकादश अध्याय

भ्रमण के उपरान्त

'हीथरो' हवाई स्टेशन से सोवियत संघ के लिये प्रस्थान करने के समय हमलोगों में से शायद ही किसी ने सोचा होगा कि यह हमलोगों का प्रत्यागमन हमें कितने कामों में उलझा देगा। हमलोगों ने अनुमान किया था कि हमलोगों को अपनी कार्य कारिणी समिति अर्थात् 'मीटिंग फॉर सफरिंग्स ऑव दि सोसायटी ऑव फ्रेन्ड्स' (कार्यकारिणी का यह नाम अत्यन्त प्राचीन है। यह उस समय से चला आ रहा है जब समिति का मुख्य कार्य इन बातों पर विचार करना था—क्वेकर लोगों पर लगाये कैद की सजा, अर्थ दण्ड एवं अन्य प्रकार के दण्ड जो उन्हें अपने सिद्धान्त के प्रति दृढ़ रहने में राज्य सत्ता के नियमों का अनादर करने पर मिले थे।) को रिपोर्ट देनी होगी। हमलोग जानते थे कि हमलोगों को सम्भवतः क्वेकर लोगों की सभाओं में जाना पड़ेगा और उनलोगों को अपने अनुभवों एवं अपनी धारणाओं से अवगत कराना पड़ेगा। परन्तु हमलोगों को यह आशा नहीं थी कि जन साधारण की दिलचस्पी इस सम्बन्ध में वस्तुतः इतनी अधिक जाग्रत् हो उठेगी। निश्चयतः यह दिलचस्पी अपने देश के प्रेस की उदार प्रतिक्रिया और हमलोगों को रेडियो तथा 'टेलीविजन' पर बोलने के लिये मिलने वाले अवसरों के कारण हुई थी। हमलोगों ने निस्सन्देह प्रेस-कतरनों की ढेरियाँ एकत्र करने, और अपने अनुभवों की 'टेप रेकार्डिङ्ग' कराने (इस क्रिया में वक्ता की आवाज रेकार्ड कर ली जाती है और पीछे प्रसारित की जाती है)—जिसकी माँग संयुक्त राज्य अमेरिका के ३०० से भी अधिक रेडियो स्टेशनों द्वारा की गई थी, बहुत बड़ी संख्या में वितरण होने वाली पत्रिकाओं में लेख लिखने का अवसर प्राप्त करने, सभाओं में व्याख्यान देने तथा यूरोपीय देशों के अनेकों चर्च-नेताओं एवं राजनीति में दिलचस्पी रखने वाले व्यक्तियों से व्यक्तिगत रूप से वार्त्तालाप करने के लिये आमंत्रण प्राप्त करने की आशा नहीं की थी। हमलोगों ने ब्रिटिश द्वीप-समूह, संयुक्त-राज्य अमेरिका, फ्रांस, स्विटजरलैंड, जर्मनी, हालैंड और स्कैन्डेनेविया—सर्वत्र—जनसाधारण को सोवियत जनता के सम्बन्ध नवीन समाचार प्राप्त करने के लिये अत्यन्त उत्सुक पाया। वे लोग

यह जानना चाहते हैं कि सोवियत जनता अपने नेताओं द्वारा सताई हुई तथा गुलाम बनाई हुई तो नहीं है, शिशुओं का संरक्षण भलीभाँति होता है अथवा वे भूखों मरते है, नेतागण स्वयं ईमानदार व्यक्ति हैं अथवा दुष्ट और वहाँ की जनता शान्ति के पक्ष में हैं अथवा युद्ध के—इस जिज्ञासा की झलक ऐसे प्रश्नों से मिलती थी, यथा—

"क्या आपलोगों ने कभी किसीको मुस्कराते देखा ?"

"क्या आपलोगों से वार्त्तालाप करने के पूर्व लोग चारों ओर यह देख लेते थे कि कौन सुन रहा है ?"

"क्या यह सच है कि सभी रूसवासी नंगे पाँव रहते हैं ?" (यह एक सोलह वर्ष के अमरीकी युवक का प्रश्न था)।

"क्या बालक प्रसन्न एवं परिपुष्ट दीख पड़ते है और क्या माँ-बाप तथा उनके बच्चों के बीच का सम्बन्ध उत्तम प्रतीत होता है ?"

"क्या जिन सोवियत राजनीतिज्ञों से आपलोग मिले, वे ईमानदार प्रतीत हुए और यदि हाँ तो उनलोगों ने सोवियत सत्ता के कथनों एवं सोवियत सत्ता के कार्यो के परस्पर विरोध को कैसे स्पष्ट किया ?"

"क्या सोवियत राजनीतिज्ञ सचमुच विश्वास करते है कि साम्यवादी और पूंजीवादी पद्धतियों साथ-साथ जीवित रह सकती हैं ?"

"क्या प्रतिनिधिमण्डल ने अधिकारियों से, मान लीजिये श्री मलिक से, वार्त्तालाप करते समय यह अनुभव किया कि उनलोगों का भी "शान्ति" से वही अभिप्राय है जो यहाँ अथवा निस्सन्देह रूस के साधारण लोगों का है ?"

इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तर पुस्तक के प्रारंभिक अध्यायों में कम-से-कम आंशिक रूप में दिये जा चुके हैं।

हमलोगों की सभाओं में बहुधा ऐसे व्यक्ति उपस्थित हुए हैं जो पहले से ही सोवियत पद्धति के पक्षपाती अथवा विरोधी थे और उनके प्रश्नों से उनके विचारों की दिशा ज्ञात होती है।

"क्या आपलोगों ने 'स्लेव लेबर कैंप' (ऐसे कारागार जिनमें अधिकांशतः सत्ता विरोधी राजनीतिक बंदी कठोर परिश्रम के लिये भेजे जाते हैं) को देखने

का अनुरोध किया था ? यदि नहीं तो क्यों नहीं ?"

"क्या आपलोगों ने जेल में बन्दी किसी पुराने रूसी नेता को देखने की अनुमति माँगी थी और क्या इसे अस्वीकार कर दिया गया था ?"

"आपलोग कैसे जानते हैं कि सोवियत संघ में राजनीतिक बन्दी हैं अथवा वहाँ राजनीतिक बन्दी शिविर हैं ? क्या आपलोगों ने इनमें से किसीको देखा ?"

"क्या आपलोगों ने "सोवियत पत्नियों" (द्वितीय महायुद्ध के समय पश्चिमीय देशों के अनेक फौजी लोगों ने सोवियत स्त्रियों से विवाह कर लिया था। इन्हें अपने पतियों के साथ रूस के बाहर जाने की स्वीकृति नहीं मिली) की कभी भी चर्चा की थी और यदि की थी तो क्या उत्तर मिला था ?"

"क्या आपलोग कोलिमा की सोने की खानों को देखने गये थे ?"

"आपलोग यह कैसे जानते हैं कि बैपतिस्ट चर्च को आपलोगों को धोखा देने के लिये नहीं भरा गया था ?"

इन प्रश्नों में से कुछ तो ऐसे हैं जिनसे स्पष्टतः सोसायटी ऑव फ्रेन्ड्स द्वारा सोवियत संघ में प्रतिनिधिमण्डल भेजने के उद्देश्यों के संबंध में गलत-फहमी का पता चलता है। हमलोग न तो वहाँ परीक्षकों के रूप में गये थे और न न्यायाधीशों अथवा धर्मयोद्धाओं के रूप में ही। न हमलोगों ने सोवियत संघ में अपने प्रभाव अथवा अपने महत्त्व का बहुत बढ़ाकर अनुमान ही लगाया था। वास्तव में हमलोगों ने कभी-कभी यह देखा कि हमलोग जिन लोगों से बातचीत कर रहे हैं वे हमलोगों के संबंध में अत्यल्प अथवा कुछ नहीं जानते हैं। क्वेकर संप्रदाय के प्रारंभिक सदस्यों की सचाई, विलियम पेन, रॉबर्ट बार्कले, एलिजाबेथ फ्राइ जैसे विख्यात क्वेकर लोगों की सेवाओं के कारण इंगलैंड में करीब-करीब सभी लोग क्वेकर सम्प्रदाय से परिचित हो गये हैं यद्यपि यह सम्भव हो सकता है कि इंगलैंडवासी क्वेकर लोगों के संबंध में केवल यही सोचते हों कि वे लोग विचित्र व्यक्ति हैं जो कभी पहले 'पोक बौनेट' (एक प्रकार की टोपी) पहनते थे और "दी" (तुझे) और 'दाउ' (तू) का प्रयोग करते थे किन्तु आजकल ऐसा करते नहीं प्रतीत होते। सोवियत संघ में हमलोग इस प्रकार की बात मानकर नहीं चल सकते थे। हमलोग एक "प्रतिनिधिमण्डल" मात्र थे। हमलोगों का प्रधान उद्देश्य अन्तर्ज्ञान को उन्नत, सद्भावना में वृद्धि एवं संशय का निराकरण करना था। यदि हमलोगों

ने अपना कार्य 'फोर्सड् लेबर कैंप' (ऐसे बन्दी शिविर जिनमें सत्ता विरोधी राजनीतिक बंदी कठोर परिश्रम के लिये भेजे जाते हैं) एवं विशिष्ट राजनीतिक कैदियों अथवा अपने अँगरेज पतियों से अलग की गई "सोवियत पत्नियों" को देखने की माँग से प्रारंभ होता तो हमलोग कदाचित् उपर्युक्त उद्देश्य की पूर्त्ति नहीं कर पाते।

हमलोगों ने इन प्रश्नों को बिल्कुल टाल भी नहीं दिया क्योंकि यह बिल्कुल कृत्रिम रवैया होता। कदाचित् समस्या तक पहुँचने के लिये हमलोगों के पास कोई जानी हुई 'टेकनीक' (कला) नहीं थी। लेकिन जो वास्तव में हुआ वह यह था—हमलोगों ने अपने वार्त्तालाप एवं रवैयों द्वारा सर्वप्रथम यह दिखलाने की चेष्टा की कि यद्यपि हमलोग उनलोगों की आलोचना भले करें तथापि हमलोग उनलोगों के मित्र हैं, हमलोग उनलोगों की उन्नति चाहते हैं और उनलोगों के दृष्टिकोण को समझने के इच्छुक हैं। बाद में, हमलोगों को जब-जब अवसर मिला तब-तब हमलोगों ने विचार-विमर्श के बीच इन विवाद-ग्रस्त प्रश्नों को उपस्थित किया किन्तु कलह के रूप में नहीं। जैगोर्स्क के मठ से मास्को लौटते समय मार्ग में हमलोगों ने सशस्त्र सैनिकों के पहरे में कुछ व्यक्तियों को सड़क पर कार्य करते देखा और अपने साथ के सोवियत साथियों की ओर जिज्ञासापूर्ण दृष्टि डालने पर हमलोगों को बतलाया गया कि वे लोग अपराधी हैं। इस घटना से हमलोगों को राजनीतिक कैदियों के सम्बन्ध में विचार-विमर्श करने का अच्छा मौका मिल गया जिससे यह स्पष्ट हो गया कि जिन सोवियत निवासियों से हमलोग वार्त्तालाप कर रहे थे वे लोग वर्त्तमान शासक दल का विरोध करना अपराध (द्वितीय परिशिष्ट देखिये) समझते हैं और ऐसे अपराधियों को रोकने, दण्ड देने अथवा उनके "पुनः शिक्षण" को अनुचित नहीं मानते। यदि हमलोगों की ओर से कोई सुझाव दिया जाता कि राजनीतिक बन्दी शिविरों में अवस्थायें विशेष रूप से शोचनीय हैं तो प्रत्यक्षतः इसको राज्य शासन का तिरस्कार समझ कर बुरा माना जाता। जिसको रूसी लोग उपनिवेशों की जनता का "उत्पीड़न" और उपनिवेशों के प्राकृतिक साधनों का पश्चिमीय देशों द्वारा चोरी कहते हैं, उसको दृष्टि में रखते हुए हमलोगों का यह सुझाव कि रूस के राजनीतिक बन्दियों के शिविरों की अवस्थायें शोचनीय हैं उनलोगों की दृष्टि में पाखण्ड नहीं तो और क्या था! वास्तव में हमलोगों ने जैसा कहा वैसा सुना भी। जो भी हो, इतने समय में हमलोगों ने उनलोगों से इतनी मित्रता स्थापित कर ली थी जिससे यात्रा की समाप्ति पर वे लोग अत्यन्त सहृदयतापूर्वक हाथ मिला सके यह दिखलाने के लिये कि वादविवाद से हमलोगों के बीच किसी प्रकार की दुर्भावना नहीं

उत्पन्न हुई है। इससे हमलोगों को कोई प्रत्यक्ष लाभ तो नहीं हुआ। हाँ, उनलोगों के दृष्टिकोण को समझने में सहायता मिली, यद्यपि हमलोगों ने उसे स्वीकार नहीं किया। अगर हमलोगों ने किसी 'फोर्सड् लेबर कैंप' को देखने के लिये अनुरोध किया होता और इसके लिये हमलोगों को स्वीकृति भी मिल जाती, तो इससे वस्तुतः उनलोगों की अवस्था में सुधार करने अथवा इस देश में अन्तर्ज्ञान की वृद्धि करने में सहायता नहीं पहुँचती। कुछ ही व्यक्ति यह विश्वास करने के लिये तैयार होते कि हमलोगों को विदेशों से आनेवाले सहज में विश्वास कर लेने वाले प्रतिनिधिमण्डलों की सुविधा के लिये संस्थापित "आदर्श बन्दी शिविर" नहीं दिखलाया गया था। मार्गरेट बैक हाउस ने तो 'पीस कमिटी' (शान्ति समिति) के संग होनेवाले अन्तिम सम्मेलन में एक सुझाव देने की चेष्टा की जिसको अगर व्यवहार में लाया जाता तो एक राजनैतिक कैदी के बारे में कभी-कभी जो चुप्पी लग जाती है, वह नहीं लगती, टूट जाती। उनका सुझाव यह था कि अगर कैदियों को साधारण-पत्र लिखने की स्वीकृति नहीं है तो कम-से-कम उन्हें अपने सम्बन्धियों के पास मुद्रित पोस्टकार्डों को भेजने की स्वीकृति होनी चाहिये। ये पोस्टकार्ड 'प्रिजनर-ऑव-वार-टाईप' (युद्ध बन्दियों के पोस्टकार्डों के समान) होते और उनपर छपे वाक्यों को काट दिया जा सकता। श्री तिखोनोव इस सुझाव को "उपयुक्त स्थान" में पहुँचाने के लिये सहमत हो गये। परन्तु हमलोगों को यह ज्ञात नहीं है कि ऐसा किया गया कि नहीं।

"सोवियत पत्नियों" के सम्बन्ध में सोवियत सरकार के निश्चय का इस देश (ग्रेट ब्रिटेन) में क्या प्रभाव पड़ा था—इसका उल्लेख करने का अवसर भी मिला। "न्यूज" के सम्पादक मण्डल के संग वार्त्तालाप के बीच हमलोगों ने यह स्पष्ट कर दिया कि कुछ व्यक्तियों के प्रति किये गये केवल इस एक अविहित अन्याय के कारण कितना रोष हुआ है तथा कितनी करुणा एवं घृणा उत्पन्न हुई है। पुनः हमलोगों ने अनुभव किया कि आज की स्थिति में (अतीत में) जो कुछ किया जा चुका है उसके पक्ष अथवा विपक्ष में दी गई दलीलों पर फिर से विचार करने से लाभ की कोई सम्भावना नहीं है। परन्तु यह आवश्यक था कि वे लोग इस प्रकार के प्रश्न के प्रति पश्चिमीय देशों के लाखों पतियों और पत्नियों के सहज मनोभावों को समझ लें।

कुछ प्रश्न ऐसे थे जो हमलोगों से बराबर पूछे जाते थे, यदि हमलोग अपने भाषणों में उनके सम्बन्ध में पहले ही नहीं कह देते थे। इन प्रश्नों से यह

ज्ञात होता है कि पश्चिमीय देशों में ऐसे कितने व्यक्ति हैं जो रूसवासियों द्वारा रूस में गये भ्रमणार्थियों की आँखों पर पट्टी बाँधे जाने का संदेह करते हैं।

"क्या आपलोग लेशमात्र भी संशय नहीं रखते हुए कह सकते हैं कि आपलोगों को जान-बूझकर धोखा-धडी का शिकार नहीं बनाया गया ?"

"क्या आपलोगों का दिनभर का प्रोग्राम निश्चित रहता था ?"

"क्या ऐसी कोई वस्तु थी जिसे देखने अथवा जहाँ जाने के लिये आपलोगों ने इच्छा प्रगट की लेकिन जिसे इकनार कर दिया गया।

"क्या आपलोगों को स्वच्छन्द एवं बिना किसी के साथ रहते हुए विचरण की स्वतंत्रता थी ?"

"क्या आपलोगों में सभी अथवा कोई व्यक्ति रशियन (रूसी भाषा) बोलते थे ?"

"आपलोग यह कैसे जानते हैं कि आपलोगों से जो बातें कही जातीं अथवा वहाँ की अवस्थाओं के सम्बन्ध में सामान्यतः जो कुछ बतलाया जाता उसे आपलोगों के दुभाषिये सच-सच कहते थे ?"

"चुंगी अफसरों ने आपलोगों के साथ कैसा बर्ताव किया ? क्या आपलोगों में से किसी व्यक्ति की जाँच-पड़ताल भी की गई ?"

अन्य प्रश्न जरूरी तथ्यों के सम्बन्ध में थे। वस्तुतः कभी-कभी ऐसा हुआ है कि राजनीतिक प्रश्नों के लम्बे क्रम के उपरान्त कोई गृहिणी व्यक्तिगत रूप से आकर अत्यन्त विनम्र स्वर में कहती, "यद्यपि मैं जानती हूँ कि यह अन्य प्रश्नों की भाँति महत्वपूर्ण नहीं है तथापि मैं इससे अवगत होना चाहती हूँ.........

"मास्को की दूकानें कैसी हैं ? क्या वे सभी वृहत् 'स्टोर्स' (भंडार) हैं अथवा वहाँ छोटी दूकानें भी हैं ? क्या वहाँ क्रय योग्य वस्तुओं की अधिकता है और क्या बहुत से लोग उन्हें खरीदते रहते हैं ? क्या वहाँ 'सेल्स' (बड़े पैमाने पर स्टॉक खतम करने के लिये बिक्री, जिसमें कीमतें अकसर घटा दी जाती हैं) होते हैं ? क्या वहाँ भोज्य-सामग्री का प्राचुर्य है अथवा कुछ वस्तुओं का अभाव है ? लोग कैसे वस्त्र पहनते हैं ? क्या आपलोगों ने साधारण लोगों से वार्त्तालाप किया ? उनलोगों के घर कैसे हैं ?"

इन तथ्य वाले प्रश्नों में अधिकांश सामाजिक एवं आर्थिक पद्धतियों से सम्बन्धित थे—

"क्या मास्को की गलियों में सवारियों का आधिक्य है? किस श्रेणी के लोग मोटर रखते हैं?"

"क्या रूसी नगरों में विज्ञापन खूब होता है?"

"नये 'एपार्टमेन्ट ब्लॉक' (गृहों के ब्लॉक) में दो, तीन, अथवा चार कमरों वाले फ्लैटों में कितने लोग संयुक्त रूप से रहते हैं?"

"क्या फ्लैटों और मोटर-गाड़ियों आदि के वितरण अथवा विश्वविद्यालय में प्रविष्ट होने में साम्यवादी दल के सदस्यों के साथ पक्षपातपूर्ण व्यवहार होता है?"

"सोवियत सरकार अन्धों, बूढ़ों और युद्ध के अपाहिजों के साथ कैसा बर्त्ताव करती है?"

"वहाँ के स्कूल कैसे हैं? रूस की शिक्षण-पद्धति कैसी है? विश्वविद्यालय में भर्ती होने की योग्यता क्या है? क्या यूनिवर्सिटी की शिक्षा 'फ्री' (निःशुल्क) है?"

"न्याय-व्यवस्था कैसी है?"

"क्या वहाँ सबको मतदान का अधिकार है? निर्वाचन का प्रबन्ध कैसे किया जाता है?"

"सामूहिक फार्मों का प्रबन्ध कैसे होता है?"

"कर कैसे लगाया जाता है? यह अधिकांशतः प्रत्यक्ष है अथवा अप्रत्यक्ष?"

"क्या सोवियत संघ में 'प्राइवेट इन्टरप्राइज' (व्यक्तिगत रूप से उद्योग-धंधों या व्यवसायों का चलाना) विद्यमान है?"

"क्या सोवियत स्त्रियाँ काम करने के लिये बाहर जाने को बाध्य हैं?"

"क्या वहाँ जीवन-यापन करने के ढंग एवं आय में बहुत अन्तर है?"

इनमें से कुछ प्रश्नों के उत्तर तो हमलोग सरलतापूर्वक दे सके। अन्यान्य और विशेषकर (साम्यवादी दल के सदस्यों के प्रति) पक्षपात से सम्बन्धित प्रश्नों का उत्तर हमलोगों ने सुनी हुई बातों के आधार पर दिया और भी दूसरे प्रश्नों के उत्तर अधिक उपयुक्त रूप से 'रेफरेन्स बुक्स' (निर्देश-पुस्तक) में दिये हुए हैं (द्वितीय परिशिष्ट देखिये)। इनसे प्राप्त सूचना की पुष्टि हमलोग केवल अपने अनुभवों और जाँचों के आधारपर ही कर सके। कम-से-कम, इसे हमलोग जीवन दे सके।

यही बात सोवियत संघ की ट्रेड यूनियनों, पेंशन की योजनाओं, अन्धों एवं युद्ध के अपाहिजों की देख-भाल एवं बाल-अपराधियों के प्रति बर्त्ताव से सम्बन्धित प्रश्नों के लिये भी लागू थी।

परन्तु एक प्रश्न ऐसा था जिसका तात्कालिक उत्तर वहीं पर देना वस्तुतः कठिन था—ऐसा उत्तर जो न इधर और न उधर ही गलत धारणा दे सके। यहाँ पर इस बात पर जोर देना कदाचित् उचित है कि यद्यपि कुछ दिनों के बाद हमलोग कुछ खास प्रश्नों के अभ्यस्त हो गये थे तथापि हमलोगों के पास पूर्व निर्धारित उत्तर नहीं थे और हमलोगों में से प्रत्येक व्यक्ति ने उनका उत्तर व्यक्तिगत ढंग से दिया। वस्तुतः जिन लोगों ने हमलोगों में से अनेक व्यक्तियों को भिन्न-भिन्न सभाओं में व्याखान देते सुना था उनलोगों ने बतलाया कि यद्यपि हमलोगों के भाषण परस्पर-विरोधी नहीं थे तथापि उनके दिये जाने के ढंग में बहुत अन्तर था। यह सबसे कठिन प्रश्न जिस रूप में पॉल कैडबरी से पूछा गया था उसे ज्यों-का-त्यों उद्धृत किया जाता है।

"आपलोगों ने पुनःशस्त्रीकरण के कौन-कौन से चिह्न देखे? क्या आपलोगों ने गलियों में सैनिकों को देखा? क्या रूस में सैनिकों की भर्ती तेजी पर है?"

इस प्रश्न के प्रथमांश का संक्षिप्त उत्तर "कोई नहीं" होता, परन्तु ऐसा उत्तर निस्सन्देह भ्रान्ति-जनक होता।

पॉल का उत्तर था—

"इन प्रश्नों को यदि विपरीत रूप से उठाया जाय तो धारणा के अनुसार रूस में तो सदैव सैनिकों की अनिवार्य भर्त्ती होती आई है . . . . . और एक वृहत् देश में उसका अर्थ निश्चयतः यही होता है कि वहाँ एक अत्यन्त वृहत् तैयार सेना है। हमलोगों ने छुट्टी पर गये सैनिकों के सिवा गलियों में कहीं भी

सैनिकों को नहीं देखा। इन सैनिकों को मास्को और कीव में भी हमलोगों ने उतनी ही संख्या में देखा जैसा कि यहाँ (ग्रेट ब्रिटेन)। हमलोगों ने किसी भी प्रकार का सैन्य-प्रदर्शन नहीं देखा।

...... मैं असत्य नहीं बोल सकता। मैंने मार्च करते हुए सैनिकों के एक दल को अवश्य देखा था। जब हमलोग मास्को में एक सन्ध्याकालीन सम्मेलन में भाग लेने जा रहे थे (ऐसे हुए बहुतेरों सम्मेलनों में से एक) तब हमलोगों ने अत्यन्त निपुण सैनिकों के एक दल को देखा। मैंने सोचा कि इस बार हमलोगों ने रूसी सेना को देखा है, किन्तु हमलोगों के मित्र दुभाषियों ने बतलाया—'अहा! जो आपने देखा वह मनोरंजक है। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपने उसे देख लिया। वे लोग क्रेमलिन में चौकी बदलने जा रहे हैं और वे लोग ऐसा प्रत्येक रात्रि में करते हैं।' मुझे याद आया कि केवल एक सप्ताह पूर्व ही मैंने उनलोगों को (इसी तरह के सैनिकों को) 'बकिंघम पैलेस' के पास चौकी बदलते देखा था।

"हमलोगों को वहाँ एक बृहत्तर सैन्य-शक्ति का आभास नहीं हुआ। यदि पुनः शस्त्रीकरण की आवश्यकता पड़ी तो इसके लिये भी उनके पास महान् साधन हैं। वे गृह-पुनर्निर्माण कार्यक्रम की महान् संभावित शक्ति को पुनः शस्त्रीकरण में परिवर्तित कर लेंगे। मेरे नगर की जनसंख्या १० लाख से भी ऊपर है और मैं स्वयं कई वर्षों तक अपने नगर की आवास समिति का सभापति रह चुका हूँ। अतएव आवासकार्यक्रमों के सम्बन्ध में मुझे कुछ ज्ञान है। मेरी अभिलाषा यह है कि गन्दगी निवारण एवं पुनर्वास योजना जैसी कोई वस्तु (रूस की तरह ही) इंगलैंड में भी होती जैसा हमलोग रूस में सर्वत्र देख सके। मास्को में अनेकों गगनस्पर्शिनी अट्टालिकाओं का निर्माण हो रहा है और उनलोगों के पास बृहत् कई मंजिलों वाली गृहावली के निर्माण की भी अनेकों योजनायें हैं। कीव में भी यही बात है। युद्धकाल में वहाँ के बड़े-बड़े भवन ही नष्ट कर दिये गये थे। अतएव वहाँ पर पुनर्निर्माण का एक अत्यन्त बृहत् कार्य-क्रम भी चल रहा है। मैंने 'इंसटिच्यूट ऑव टाउन प्लैनिंग' (नगर-निर्माण योजना संबंधी संस्था) में सोवियत संघ के करीब २० बृहत्तम नगरों के चित्र देखे। ये इस बात के विश्वसनीय प्रमाण थे कि रूस में सर्वत्र भवन योजनायें कार्यान्वित की जा रही हैं। शान्ति के लिये यह एक गैर फौजी दाँव था जिसे फौजी कार्यों में शीघ्र ही परिवर्तित भी किया जा सकता था। मुझे तो प्रतीत होता है कि यदि पुनःशस्त्रीकरण की यह दौड़ जारी रही तो इसे युद्ध के शस्त्रों के उत्पादन में लगा दिया जायगा।"

अधिकांश राजनीतिक प्रश्नों का तटस्थ उत्तर देना कठिन था क्योंकि उसके लिये हमलोगों में निर्णय शक्ति की, इन प्रश्नों के पीछे छिपे उद्देश्यों तथा आगे आने वाले प्रश्नों का अंदाज लगाने की क्षमता की आवश्यकता थी। कुछ (राजनीतिक प्रश्न) औरों को अपेक्षा सरल थे।

"क्या आपलोगों के विचार से सोवियत संघ युद्धाभिलाषी है?"

"क्या आपलोग श्री मलिक द्वारा अपने प्रश्नों के दिये गये उत्तरों से सन्तुष्ट हैं? यदि नहीं, तो क्यों नहीं और क्या आपलोगों ने उनसे ऐसा कहा?"

"क्या रूसवासी कोरिया अथवा चीन में रूस के प्रत्यक्ष प्रभाव का वर्त्तमान रहना स्वीकार करते हैं?"

"क्या रूसवासी यह सोचते हैं कि पश्चिमीय नीति का नियंत्रण संयुक्त-राज्य अमेरिका कर रहा है? यूनाइटेड नेशन्स (संयुक्त राष्ट्र संघ) के सबंध में उनका क्या विचार है?"

"क्या हमलोगों की कठिनाइयों के मूल में औद्योगिक एवं आर्थिक प्रतिद्वन्द्विता का भय है?"

रूस के प्रभावक्षेत्र वाले देशों की अवस्थाओं और सोवियत संघ तथा इन देशों के बीच के सम्बन्धों से सम्बद्ध प्रश्नों का अपने अनुभवों द्वारा उत्तर देना प्रायः असंभव था। इस प्रसंग में हमलोग केवल प्रॉग की एक रात्रि के सबंध में अपनी धारणा का उल्लेख कर सकते थे। (यह धारणा हम सभी लोगों की ही थी लेकिन संभवतः वह उड़ती पड़ती सी थी) द्वितीय अध्याय में इसका वर्णन किया जा चुका है। हमलोगों से कहा गया था कि सोवियत संघ के लिये विजा (प्रवेशादेश) पाने के आध घंटे के बाद हमलोगों को चेकोस्लोवाकिया का 'ट्रैन्जिट विजा' (गमनादेश) प्राप्त हो जायगा। ऐसा हुआ भी। जब हमलोगों ने चेकोस्लोवाकिया और पूर्वी जर्मनी से प्राप्त रिपोर्ट (कि इन देशों में असंतोष और अप्रसन्नता है) तथा सोवियत संघ के संबंध प्राप्त रिपोर्ट (कि वहाँ संतोष और प्रसन्नता है) की विभिन्नता के संबंध में सोवियत संघ में टिप्पणियाँ कीं तो उत्तर मिला कि सोवियत जनता भी अपनी नवीन सत्ता की प्राथमिक अवस्थाओं में दुःखी थी। यह इसलिये कि उनके बीच प्राचीन तथा नवीन विचारों का संघर्ष था और स्वार्थपूर्ण विचार पद्धति का त्याग करना उनके लिये कठिन था। परन्तु यह बतलाया गया कि यह एक अवस्था है जिससे होकर प्रत्येक देश को अवश्य

गुजरना पड़ेगा और इसी तरह इसका परित्याग करना पड़ेगा । यह कहने की आवश्यकता नहीं हैं कि इस उत्तर से हमलोगों को संतोष नहीं हुआ, यद्यपि यह सत्य है कि प्रत्येक क्रान्ति की 'प्रसव पीड़ा'' होती है । लेकिन चेकोस्लोवाकिया और पूर्वी जर्मनी में होने वाले परिवर्त्तन क्या वास्तविक क्रान्तियाँ हैं ?

अन्य प्रश्नों से रूसवासियों की अपनी सरकार के, हमलोगों के अथवा विदेशी हस्तक्षेप के प्रति उत्पन्न प्रतिक्रिया के संबंध में दिलचस्पी प्रकट होती है ।

"क्या किसीने कभी भी आपलोगों से अपनी सरकार की आलोचना की थी ?"

"क्या दुभाषियों के सिवा और किसी ने भी स्वयं आकर आपलोगों से अंगरेजी में बातचीत की थी ?"

हमलोगों में से कुछ व्यक्तियों को एक अत्यन्त सुशीला १५ वर्षीया बालिका की सजीव स्मृति थी । उसने बैपतिस्ट चर्च की उपासना के उपरान्त हमलोगों को भोजन कराने में सहायता की थी । बड़ी होने पर उसकी अभिलाषा एक दुभाषिया बनने की थी । अतः, वह हमलोगों से वार्त्तालाप कर अपने अंगरेजी-ज्ञान की परीक्षा करने और अपनी उच्चारण-शुद्धि को जानने के लिये अत्यन्त उत्सुक थी । हमलोगों ने अनेकों युवकों और वृद्धों से अंगरेजी, फ्रेंच अथवा जर्मन में भी वार्तालाप किया था ।

'क्या रूसी प्रेस ने आपलोगों के भ्रमण के सम्बन्ध में बहुत चर्चा की ? यदि हाँ, तो क्या चर्चा की और नहीं, तो क्यों नहीं की ?"

"क्या रूसवासी विदेशों के ब्रॉडकास्टों को सुनते हैं ? उनके सम्बन्ध में उनके क्या विचार हैं ?"

इस प्रकार के एक प्रश्न का कि "वॉयस ऑव अमेरिका" (अमरीकी ब्रॉडकास्ट) के सम्बन्ध में आपलोगों के क्या विचार हैं", पॉलकैडबरी ने संयुक्त राज्य अमेरिका में निम्नलिखित उत्तर दिया—

"यह एक अत्यन्त कठिन प्रश्न है । मैंने 'वॉयस ऑव अमेरिका' को कभी नहीं सुना है और मैं यह भी ठीक से नहीं जानता कि यह क्या रुख अपनाता है । परन्तु इस सम्बन्ध में मेरा निश्चित मत यही है कि उनलोगों पर, जो यह भी नहीं समझते कि यह सब किस संबंध में है, इसका कोई विशेष प्रभाव

पड़ेगा। इंगलैंड के परराष्ट्र सचिव श्री हर्बर्ट मौरिसन से मेरा परिचय है। हमलोगों के रूस प्रस्थान करने के ठीक पूर्व 'प्रवदा' ने उनसे प्रकाशनार्थ एक पत्र लिखने के लिये अनुरोध किया था। उन्होंने स्वतंत्रता एवं उसी के सदृश अन्य बातों के सम्बन्ध में एक पत्र लिखा भी जो 'प्रवदा' में प्रकाशित भी हुआ। रूस से वापस आने के बाद जब मैंने उस पत्र को पढ़ा, तब मुझे मालूम हो गया उनलोगों ने उसे क्यों प्रकाशित किया था; इसलिये प्रकाशित किया था कि वहाँ की जनता यह भी नहीं समझ सकती है कि यह सब किस विषय के संबंध में है। रूसवासी सोचते है कि उन्हे स्वतंत्रता प्राप्त है--मुझे इस बात पर अवश्य जोर देना चाहिये। यदि आपको अन्य प्रकार की स्वतंत्रता का ज्ञान नहीं हो तो आप इसके सच्चे अर्थ को जान ही नहीं सकते। उनलोगों की स्वतंत्रता की भावना यही है कि वे लोग या तो 'प्रवदा' को या 'इजवेस्तिया' को खरीद सकते थे या नहीं तो दोनों में से किसी को भी खरीदने की उनको आवश्यकता नहीं है। यही रूस वासियों के लिये पूर्ण स्वतंत्रता है! उन्हें यह बात ध्यान में ही नहीं आती कि बीस समाचार-पत्रों में से किसी एक को खरीद सकना और भी बड़ी स्वतंत्रता है—ऐसे समाचारपत्र जो एक दूसरे के लिये कटु से कटु बात कहने के लिये अथवा कुछ भी कहने के लिये पूर्णरूप से स्वतंत्र हैं। अतएव जब आपलोग 'वॉयस ऑव अमेरिका' के संबंध में प्रश्न करते हैं तो मेरे विचार से एक ही वाणी जो अमेरिका से रूसी लोग सुन सकते हैं वह है अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अमेरिका द्वारा किये जानेवाला वास्तविक उदारतापूर्ण कार्य है। परन्तु एक ब्रिटेनवासी के रूप में मैं यही कहना चाहूँगा कि मेरी दृष्टि से अमेरिका की वर्तमान अवस्था में आपलोग अभी उस प्रकार की चीज कहने अथवा करने की स्थिति में नहीं हैं। मुझे तो प्रतीत होता है कि हमलोगों को तनाव की इस भावना का अन्त अवश्य करना पड़ेगा और तभी अमेरिका की सच्ची वाणी सुन पड़ेगी।"

"कभी-कभी हमलोगों से पूछा गया था कि वर्तमान स्थिति में सुधार करने के लिये व्यक्तियों द्वारा क्या किया जा सकता है? इसमें कोई सन्देह नहीं है कि संसार में तनातनो से संकटपूर्ण स्थिति उत्पन्न हो गई है और इस संकट को पार करने में हमलोगों को वर्षों लग जायेंगे। परन्तु प्रत्येक व्यक्ति इस संकट को कम करने में कुछ न-कुछ सहायता अवश्य कर सकता है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि भय के स्थान पर अन्तर्ज्ञान और घृणा के स्थान पर धैर्य एवं गुण-ग्राहकता से काम लेने का प्रयत्न किया जाय।"

आवागमन एवं मेल-मिलाप की कठिनाइयाँ और उनमें सुधार की संभावनायें (जो कदाचित् हमलोगों की यात्रा के परिणाम स्वरूप भी हो सकती हैं)—अनेक प्रश्नों में इनकी झलक मिली है—

"क्या रूसवासी इंगलैंड अथवा अन्यान्य देशों में जाने की कभी कोई इच्छा प्रकट करते हैं?"

"रूस और पश्चिमीय देशों के बीच छात्रों के आदान-प्रदान के मार्ग में कौन-कौन सी बाधायें हैं?"

"क्या आपलोगों ने अंगरेज परिवारों के साथ रहने के लिये छात्रों के आदान-प्रदान का सुझाव दिया था?"

"रूस की सरकार अपने देश में 'टूरिस्ट' (भ्रमणार्थी) लोगों को आने की स्वीकृति क्यों नहीं देती?"

"सोवियत संघ में जिन व्यक्तियों से आपलोग मिले क्या उनमें से किसीके संग आपलोगों का पत्राचार चल रहा है?"

अन्तिम प्रश्न का उत्तर यह है कि 'न्यूज' के सम्पादक श्री मोरोजोव से कुछ पत्राचार होता रहा है। कैथलीन लोन्सडेल ने भी विज्ञान एकेडेमी द्वारा विज्ञान-सम्बन्धी कुछ व्यक्तिगत पत्राचार किया है किन्तु व्यक्तिगत पत्राचार की आशा अभी वास्तविक नहीं हो पाई है। मास्को में जिन बैपतिस्ट नेताओं से भेंट हुई थी उनलोगों के संग भी कुछ-कुछ सामूहिक पत्राचार होता रहा है।

सोवियत पद्धति के प्रति रूसी बुद्धिजीवियों का जो दृष्टिकोण है वह (पश्चिमीय) विश्वविद्यालयों के क्षेत्र के लोगों के लिये निस्सन्देह दिलचस्पी की बात थी।

"क्या रूस के वैज्ञानिक वर्त्तमान शासक दल से सन्तुष्ट हैं? क्या आप लोगों को यह प्रतीत हुआ कि वे लोग आपलोगों से स्वतंत्रतापूर्वक वार्त्तालाप कर रहे हैं? क्या वहाँ अनुसन्धान-कार्य में राज्य हस्तक्षेप करता है? क्या रूसी वैज्ञानिकों मे द्वन्द्वात्मा भौतिकवाद के अवैज्ञानिक रूप का अनुभव करने अथवा उसे स्वीकार करने का कोई लक्षण दिखलाई पड़ता है?"

ये प्रश्न कैथलीन लौन्सडेल से पूछे गये थे क्योंकि उन्होंने ही विज्ञान संबंधी

बातों पर रूस में सम्पर्क कायम किया था । लेकिन इनका उत्तर देना प्रायः असंभव है । उनके इस सम्पर्क का क्षेत्र संकुचित था और वार्त्तालाप वैज्ञानिक विषयों, पत्राचार की कठिनाइयों (नवम अध्याय में उल्लिखित) एवं उनलोगों द्वारा जिज्ञासा प्रगट किये जाने पर क्वेकर लोगों द्वारा शांति के लिये किये गये प्रयत्न संबंधी बातों के बतलाने तक ही सीमित रहा। उन्होंने स्वभावतः ऐसे प्रश्नों को नहीं पूछा जिनके उत्तर दो प्रकार से दिये जा सकते थे। एक प्रकार के उत्तर तो मार्क्सवादी दर्शन के प्रतिरूप मात्र होते और दूसरे प्रकार के उत्तरों से राजद्रोह की ध्वनि निकलती। जिस एक अनुसंधानशाला को वे देखने गई उसमें उसी प्रकार का सारभूत अनुसंधान कार्य हो रहा था जैसा कि संसार के किसी भाग के एक विश्वविद्यालय में होता रहता है। वहाँ राज्य के हस्तक्षेप का (जहाँ तक अनुभव हो सका) कोई चिह्न नहीं मिला और न यह देखने में मिला कि राज्य केवल औद्योगिक दृष्टि-कोण से उपयोगी अनुसंधान कार्य के लिये ही आग्रह करता है ।

वैदेशिक नीति पर मार्क्सवाद-लेनिनवाद के व्यावहारिक प्रभाव का प्रश्न स्पष्टतः अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है । यथा—"क्या सोवियत सरकार विश्वास करती है कि पूँजीवादी अर्थव्यवस्था का अनिवार्य परिणाम अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध है और यदि यह सत्य है तो क्या यह 'पीस कैम्पेन (शांति आंदोलन)' विडंबना मात्र नहीं है ?" इसका उत्तर यह है कि यद्यपि मार्क्सवादी दर्शन उन्हें यह शिक्षा दे सकता है कि पूँजीवादी संसार में अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध मृत्यु की भाँति ही अनिवार्य है तथापि इसीलिये जितना दिन हो सके उस युद्ध को रोकने की उनलोगों की अभिलाषा असंगत नहीं है। उदाहरण के लिये हमलोग यह जानते हैं कि वृद्धावस्था के कारण एक दिन मरना ही है तथापि इसीलिये हमलोग आत्म-हत्या नहीं कर लेते। (ऐसा दृष्टिकोण) विश्वसाम्यवाद की स्थापना के उद्देश्य की सिद्धि के लिये किसी देश के स्थानीय संकट से लाभ उठाने की उनकी अभिलाषा के भी प्रतिकूल नहीं है यदि यह कार्य बिना विश्वयुद्ध छेड़े ही किया जा सकता हो ।

हमलोगों के सदैव तटस्थ रहने तथा विरोधी दृष्टिकोणों में मेल-मिलाप कराने की चेष्टा की परीक्षा संभवतः एक प्रश्नकर्ता द्वारा हुई (जो क्वेकर लोगों के सादा जीवन बिताने की बात जानता था) जिसने पूछा, "क्या आपलोगों ने विला-सिता की सामग्रियों से परिपूर्ण मास्को के होटल में बेचैनी का अनुभव नहीं किया और क्या आपलोगों ने ऐसा उनसे कहा नहीं ?"

यह सच है कि जिस होटल में हमलोग ठहरे हुए थे वह विलासितापूर्ण था लेकिन हमलोगों ने साधारण आवास-स्थान के लिये ही अनुरोध किया था। फिर भी निस्सन्देह हमलोगों को (बीती हुई) बीसवीं सदी के आरंभ की ओर लौटने की अभिलाषा नहीं थी। उन अतीत के दिनों में हमलोगों के दल के एक व्यक्ति (जो रूस में थे) ने निर्विघ्न निद्रा के उपभोग के लिये अपने पलंग के पौवों को पैराफिन के एक टिन में रक्खा था लेकिन उन्हें हँसी में बतलाया गया था कि "वे" (खटमल) छत से उनपर टपक पड़ेंगे। वास्तव में इंगलैंड में हमलोगों के शुभचिन्तकों ने हमें अपने साथ पर्याप्त कीटनाशक ओषधियाँ ले लेने के लिये सचेत किया था। हमलोगों में से कुछ व्यक्तियों ने ऐसा किया भी! परन्तु यह जानकर हमलोगों को अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि यह बिल्कुल अनावश्यक था। हमारे दुभाषियों को हमलोगों की इस धारणा से इतना (क्षोभयुक्त) धक्का लगा कि हमलोगों ने यह भी कल्पना की कि वे लोग संभवतः कहीं एक-एक खटमल ढूँढ़ निकालने के लिये सौ-सौ रूबल देने की हमको चुनौती न दे डालें। हमलोग इस पुरस्कार के लिये कभी दावा नहीं कर सके। कमरे पूर्ण स्वच्छ थे। हमलोगों के व्यक्तिगत स्नानागारों में प्रतिदिन स्वच्छ तौलिया रख दी जाती थी और गर्म जल सदा ही उपलब्ध था। इस आतिथ्य-सत्कार की अथवा जिस समय हम भोजन के कमरे में पहुँचते उसी समय पहुँचा दिये जानेवाले प्रचुर व्यंजनों की निंदा अत्यन्त अकृतज्ञता होती यद्यपि कि हमलोगों में से कुछ व्यक्तियों ने और सादा भोजन ही पसन्द किया होता। होटल का भोजन अति उत्तम था और जब हमलोगों के दल के शाकाहारी सदस्य ने क्षमा-प्रार्थना के साथ मांस और मछली दोनों खाने से अस्वीकार कर दिया तब खानसामे का तीव्र नैराश्य दर्शनीय था। फिर भी अस्वीकृत वस्तुओं के बदले में वह शीघ्र ही अंडे अथवा चावल का एक विशेष रूप से प्रस्तुत भोजन लेकर उत्साह के साथ उपस्थित हुआ।

मास्को स्थित ब्रिटिश दूतावास में सर डेविड और श्रीमती केली का आतिथ्य-सत्कार ही एक ऐसा था जो सोवियत आतिथ्य सत्कार की समानता कर सका जहाँ हमलोगों ने चाँदी की थाल में भोजन किया। साधारण, हल्का भोजन देखकर हमलोगों ने कृतज्ञता का अनुभव किया। हमलोगों में से कुछ व्यक्तियों ने जेल, जेल-शिविरों अथवा अन्य कष्टमय परिस्थितियों के गत अनुभवों से यहाँ के अनुभवों की तुलना करने पर अनुभव किया कि कदाचित् हमलोग देवदूत पॉल के साथ-साथ कह सकते हैं, "जिस अवस्था में भी होऊँ उसमें ही सन्तुष्ट रहना मैंने सीखा है। मैं सम्पन्नता एवं विपन्नता दोनों को जानता हूँ।"

रूस की परिवर्त्तित होती हुई सामाजिक अवस्थाओं के सम्बन्ध में अनेकों प्रश्न पूछे जाते रहे हैं। इन प्रश्नों से (विशेषतः संयुक्त राज्य अमेरिका में) इस आम धारणा की उपस्थिति का पता चलता है कि एक "नवीन धनी वर्ग" के अस्तित्व का अर्थ है एक अत्यन्त अवनत एवं दरिद्र श्रमजीवी जनसंख्या का अवश्य वर्त्तमान रहना और इस कारण वहाँ विपरीत क्रान्ति के बीज भी अवश्य वर्त्तमान होंगे। न्यूयार्क में (केवल) क्वेकर लोगों की एक सभा में एक क्वेकर महिला ने प्रश्न किया था— "क्या हमलोग सद्भावना-कार्य के रूप में रूस की "दरिद्र" जनता के लिये कुछ द्रव्य एकत्रित करके उसे विमान द्वारा रूस में गिरा नहीं सकते ?" यह सत्य है कि वहाँ विभिन्न लोगों की आय में बहुत अन्तर है। किन्तु जहाँ, तक हम निश्चय कर सके, यह सत्य नहीं है कि वहाँ की जनता अवनत अथवा असन्तुष्ट दीख पड़ती है।

इस सम्बन्ध में १८वीं नवम्बर, १६५१ के 'सन्डे टाइम्स' में सर डेविड केली द्वारा दिये गये वक्तव्य का उल्लेख करना होगा। उन्होंने कहा था— "हमलोगों को एक बात पर भरोसा निश्चयत: नहीं रखना चाहिये : यह इच्छित विचार कि रूसी जनता अपने शासकों के विरुद्ध असंतोष से उबल रही है। वहाँ पर वैयक्तिक स्वतंत्रता का पूर्ण रूप से छीन लिया जाना यहाँ की भाँति नहीं खटकता। और न कुछ लोगों के असामान्य अधिकार का विकास ही उनको खटकता है क्योंकि ये दोनों बातें रूसी परम्परा में हैं और बाह्य संसार से इनकी तुलना करने के लिये कोई मापदण्ड नहीं है।"

कभी-कभी (इन प्रश्नों से) यह अनुभव किया जाता है कि हमलोगों के समाचार पत्रों में सोवियत संघ के सम्बन्ध में सच्ची रिपोर्टें नहीं प्रकाशित होतीं अतः यह आवश्यक है कि उन कठिनाइयों का वर्णन किया जाय जिनके बीच रहकर विदेशी समाचारपत्रों के कर्मचारियों को सोवियत संघ में कार्य करना पड़ता है; साथ ही उन कठिनाइयों का भी वर्णन किया जाय जो विनिमय की अत्यन्त प्रतिकूल दर तथा अन्य अवरोधों के कारण उन समाचार पत्रों के समक्ष उपस्थित होती हैं जो मास्को में अपने संवाददाता रखना पसन्द करते किन्तु अत्यधिक व्यय अथवा स्वीकृति नहीं मिलने के कारण ऐसा नहीं कर पाते। दूसरी ओर जब हमलोगों ने ब्रिटेन की सामाजिक अवस्थाओं के संबंध में रूस-वासियों की अनभिज्ञता की चर्चा की है और इसका कारण कुछ अंशों में उनके डिकेन्स एवं एच० जी० वेल्स के साहित्य का अध्ययन करना बतलाया है तो कभी-कभी यह अत्यन्त कठिन प्रश्न हमसे किया गया है "सोवियत पाठकों को ब्रिटेन की वर्त्तमान सामाजिक अवस्थाओं का संतोषजनक ज्ञान प्राप्त करने के लिये

अंगरेजी की कौन-कौन सी पुस्तकों को पढ़ने की सलाह आपलोगों ने दी अथवा दे सकते थे ?"

आधुनिक रूस के लेखकों के सम्बन्ध में प्रश्न किये जाने पर दुर्भाग्यवश हमलोगों के दल में से अधिकांश व्यक्तियों का तद्विषयक ज्ञान अपूर्ण प्रमाणित हुआ है। सामयिक रूसी कला के सम्बन्ध में अपनी सम्मति देने पर हमलोगों में से कुछ व्यक्ति घबड़ा भी चुके हैं। प्रायः हमलोगों ने सामयिक रूसी कला को पसन्द नहीं किया। फिर भी हमलोग 'म्यूजियमों' (संग्रहालयों) और 'पिक्चर गैलरियों' (चित्रालय) की विभूतियों के प्रदर्शन एवं सोवियत चर्चों के चित्रकारियों, शीशे पर बने रंगीन धार्मिक चित्रों एवं सजावटों को पूर्वावस्था में लाने के प्रयत्नों में प्रकटित कलात्मकता का प्रमाण दे सकते थे। हमलोग मास्को के समीप स्थित पलेख ग्राम के कलाकारों एवं शिल्पकारों के कार्य देखकर भी अत्यन्त प्रभावित हुए। तृतीय एवं दशम अध्याय में वर्णित मास्को 'मेट्रो' के स्टेशन राज्य द्वारा संरक्षण दी गई आधुनिक कला तथा स्थापत्य कला के प्रभावोत्पादक उदाहरण पेश करते हैं। हमलोगों ने (उत्तर में) इनका उल्लेख किया। यह स्वाभाविक था कि हमलोगों से इन विषयों पर प्रश्न पूछे जाते :—चर्च और राज्य का सम्बन्ध, साम्यवाद एवं ईसाई धर्म, 'शान्तिवाद' एवं सोवियत संघ में सैनिक-सेवा के प्रति अंतरात्मा की आवाज के कारण विरोध।

"क्या यह सत्य नहीं है कि साम्यवादी दल का कोई सदस्य ईसाई धर्म के लिये कार्य नहीं कर सकता ? यदि किसी सदस्य को चर्च में पाया जाय, तो क्या उसे पार्टी से निष्कासित कर दिया जायगा ?"

लेनिन ने 'दि एटीच्यूड ऑव दि वर्कर्स पार्टी टूवार्ड्स रिलीजन' (धर्म के प्रति श्रमिक दल का दृष्टिकोण) शीर्षक अपने एक प्रारंभिक निबन्ध में इस प्रश्न का उत्तर अत्यन्त स्पष्टतापूर्वक दिया था जो 'लेनिन ऑन रिलीजन' (धर्म और लेनिन) के नाम से १९४७ में पुनः प्रकाशित हुआ है।

"सामाजिक जनतंत्र के समग्र दर्शन का आधार वैज्ञानिक समाजवाद अर्थात् मार्क्सवाद है। मार्क्सवाद का दार्शनिक आधार . . . . द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद है . . . . जो पूर्णतया नास्तिकतावादी एवं निश्चयतः समस्त धर्मों का शत्रु है।"

वे आगे लिखते हैं :—

"यदि कोई पुजारी हमलोगों के साथ हमारे काम में सहयोग करे—यदि वह ईमानदारी से पार्टी का कार्य करता है और पार्टी के कार्य-क्रम का विरोध नहीं करता है तो हमलोग उसे सामाजिक जनतंत्र की श्रेणी में शामिल कर ले सकते हैं .... एक राजनीतीक दल यह जानने के लिये अपने सदस्यों की जाँच नहीं कर सकता कि उनलोगों के (व्यक्तिगत) दर्शन और पार्टी के कार्यक्रम में कोई विरोध है कि नहीं। ऐसी अवस्था पश्चिमीय यूरोप में निस्सन्देह एक दुर्लभ अपवाद होगी; रूस में तो इसकी कोई संभावना ही नहीं......हमलोगों को ईश्वर में अभी भी विश्वास रखने वाले श्रमिकों को सामाजिक-जनतांत्रिक पार्टी में केवल भर्त्ती ही नहीं करना होगा वरन् उनकी भर्त्ती के प्रयत्नों को पुनः द्विगुणित करना होगा। हमलोग इन श्रमिकों के धार्मिक विश्वासों को थोड़ा भी आघात पहुँचाने के पूर्णतया विरोधी हैं.........। यद्यपि सर्वहारा लोगों की पार्टी की यह माँग है कि सरकार धर्म को वैयक्तिक बात घोषित कर दे तथापि पार्टी क्षण भर के लिये भी जनता के धार्मिक अन्ध-विश्वास आदि-जो जनता के लिये अफीम सदृश हैं—के विरुद्ध लड़ाई को वैयक्तिक बात नहीं मानती।"

"क्या चर्च के नेता आरोपित प्रतिबन्धों के प्रति असन्तोष का कोई चिह्न नहीं प्रकट करते?"

नहीं; कठिनाइयों एवं सताये जाने की एक लम्बी अवधि के पश्चात् उनलोगों को उपासना के लिये वर्त्तमान ऊँचे दर्जे की जो स्वतंत्रता प्राप्त हुई है वह पहले की अपेक्षा कहीं अधिक है और जिनसे हम मिले उनमें इस बात से संतोष की प्रत्येक झलक दीख पड़ी। 'सन्डे स्कूल' (चर्चों की सहायता से जो स्कूल केवल रविवार को चलाये जाते हैं) की कमी के सम्बन्ध में प्रश्न किये जाने पर ज्ञात हुआ कि बालकों को घर पर ही धार्मिक शिक्षा दी जा सकती है। परन्तु हमलोगों को सन्देह था कि जो बालक प्रतिदिन १२ घण्टे दिवा,धातृगृहों में व्यतीत करते हैं उनको घर पर भी कुछ सीखने के लिये पर्याप्त समय मिल सकता है। 'ऑर्थोडाक्स चर्च' को अपने बहुत से प्राचीन भवनों (गिरजाघरों) को सुरक्षित अवस्था में रखने के लिये राज्य से सहायता दी जाती है। यह सहायता "पुरातन स्मारकों" की रक्षा के रूप

में मिलती है यद्यपि कि वे अभी भी उपासना के ही स्थान हैं। जैगोर्स्क के मठ के सम्बन्ध में यह बात थी।

"क्या सोवियत संघ में शान्तिवादी हैं और उनके साथ कैसा बर्त्ताव किया जाता है?"

बैपतिस्ट लोगों ने हमलोगों को बतलाया कि रूस में मोलोकानी नामक एक शान्तिवादी दल था, जो बाद में बैपतिस्ट संघ में सम्मिलित हो गया (उपस्थित व्यक्तियों में एक दो उस दल के थे)। १६२६ ई० के बाद इस दल ने सोवियत संघ की अनिवार्य सैनिक शिक्षा की भरती के नियमों को मान लिया था। हमलोगों को ज्ञात हुआ कि अनिवार्य सैनिक सेवा के प्रति अंतरात्मा की आवाज के कारण विरोध अगर नियम के रूप में नहीं तो एक तथ्य के रूप में रूस में अवश्य वर्त्तमान है लेकिन बहुत थोड़े व्यक्ति इससे लाभ उठाते हैं (इससे श्री कोरनीचक के यूक्रेन सम्बन्धी कथन की पुष्टि हुई)। ज्ञात हुआ कि शान्तिकाल में सैनिक प्रशिक्षण से बहुत लोगों को मुक्ति दे दी गई थी। शिक्षकों, 'स्टैखनोवाइटों', विश्वविद्यालय के छात्रों एवं अन्य प्रमुख व्यक्तियों को सैनिक शिक्षा के लिये नहीं भेजा गया था। यह तरुणों से भरपूर आबादी द्वारा जनशक्ति की यथेष्ट पूर्त्ति का स्वाभाविक परिणाम था (द्वितीय परिशिष्ट देखिये)।

"क्या आपलोगों का विचार यह है कि बालकों में धर्मविरोधी प्रचार द्वारा सैद्धान्तिक शिक्षण के फलस्वरूप सोवियत संघ से (एक दिन) धर्म विलुप्त हो जायगा?"

नहीं। हमलोगों का ऐसा विचार करना ईश्वरीय सत्ता को अस्वीकार करना होगा। जिस प्रकार लेनिन को यह विश्वास था कि मानव जाति की सामाजिक अवस्थाओं में सुधार होने पर धर्म अनिवार्य रूप से लुप्त हो जायगा उसी प्रकार हमलोगों को कम-से-कम इतना विश्वास रखना चाहिये कि 'ईश्वर की सत्ता' सर्वत्र आबाल-वृद्ध-वनिता के हृदय में कार्य कर रही है। कुछ धार्मिक मत, सिद्धान्त अथवा आचार भले नष्ट हो जायँ किन्तु स्वयं धर्म कदापि लुप्त नहीं हो सकता।

कुछ प्रश्न कैथोलिक एवं यहूदी चर्चों की स्थिति से, सम्बन्धित थे। इस प्रसंग में हमलोग अपने प्रश्नकर्त्ताओं को 'नेशनल यूनियन ऑव स्टूडेन्ट्स'

(राष्ट्रीय छात्र संघ) अथवा ब्रिटिश ट्रेड यूनियन प्रतिनिधि मण्डल की रिपोर्टों को देखने की सलाह दे सके । बैपतिस्टों एवं ऑर्थोडॉक्स नेताओं के संग होने वाली सभाओं एवं उनलोगों के चर्चों के हमारे द्वारा देखे जाने का वर्णन गत-अध्यायों में हो चुका है । हमलोग पुस्तक की दूकानों में बाइबिलों एवं धार्मिक पत्रिकाओं के विक्रय-सम्बन्धी प्रश्नों का उत्तर भी नहीं दे सके । निस्सन्देह हमलोगों ने चर्चों में बाइबिल देखी थीं, किन्तु उसे खरीदने का प्रयास नहीं किया था।*

अन्त में हमलोगों से अपने कार्य को जारी रखने की संभावनाओं के सम्बन्ध में भी अनेकों प्रश्न ठीक ही पूछे गये। कुछ व्यक्तियों ने, जिनके मनोभावों को साफ-साफ देखा जा सकता था, प्रश्न किया—

"क्या क्वेकर लोग संयुक्त राज्य अमेरिका में एक प्रतिनिधि मण्डल भेजने की बात कर रहे हैं ?" इनलोगों को अमरीकी एवं ब्रिटिश क्वेकर लोगों द्वारा अपने-अपने देशों में निरन्तर किये जाने वाले कार्यों के सम्बन्ध में बतलाया गया।

अन्य लोगों ने पूछा कि क्या क्वेकर लोग सोवियत संघ में मास्को अथवा अन्य स्थान पर कोई स्थायी केन्द्र स्थापित कर सकते हैं कि नहीं। हमलोगों ने बतलाया कि एक ऐसे देश में जहाँ उपासना के सिवा किसी अन्य अभिप्राय से धार्मिक समुदायों अथवा दलों के संघटन करने की मनाही है, एक चिन्तित क्वेकर अथवा क्वेकर दल के कार्यों को अधिक दिन तक सहन नहीं किया जा सकता ।

अपने भ्रमण के प्रति सर्वसाधारण की प्रतिक्रियाओं पर विचार करने पर हमलोग केवल विनम्रता का अनुभव कर सकते हैं। पर यहाँ इतना अधिक विश्वास किया गया था और हमसे इतनी अधिक आशा की गई थी। प्रायः हमलोगों ने इस चिन्ता का अनुभव किया है कि हमलोगों से अपने इस अल्पकालीन भ्रमण द्वारा अत्यधिक निष्कर्ष निकालने की माँग की जाती

---

*इस विषय की और सावधानी पूर्वक जाँच-पड़ताल उन क्वेकर लोगों द्वारा हुई, जो अप्रैल १९५२ ई० में मास्को आर्थिक सम्मेलन में गये थे। उनलोगों ने पुस्तकों की दूकानों में बाइबिल की बिक्री नहीं देखी। उनलोगों ने देखा कि मास्को का एक कैथोलिक चर्च खुला हुआ था और वहाँ नियमित रूप से उपासना होती थी। परन्तु बालकों को धार्मिक शिक्षा देने के सम्बन्ध में यहाँ भी वैसी ही रुकावटें थीं। पादरियों के लिये एक कैथोलिक ट्रेनिङ्ग कॉलेज (प्रशिक्षण विद्यालय) भी था।

रही है। फिर भी यह एक ऐसा अवसर था जो कुछ ही व्यक्तियों को जीवन काल में प्राप्त होता है। सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रश्न कदाचित् यह था कि स्वयं सोवियत संघ में हमलोगों के भ्रमण का क्या प्रभाव पड़ा है? इसका उत्तर हमलोग यही देंगे कि हमलोग नहीं जानते। हमलोगों ने कुछ बीज बोये हैं। उनमें कुछ पथरीली जमीन पर गिरे होंगे। हमारे बोये बीज निश्चयतः अधिक दूर तक नहीं पहुँचे होंगे क्योंकि प्रेस ने हमलोगों की विशेष सहायता नहीं की इसलिये कि हमलोगों के कथन उनके प्रकाशन के लिये अनुपयुक्त समझे जाते थे। संभव है कि ये बोये गये बीज नष्ट हुए प्रतीत हों। परन्तु हमलोगों का विश्वास है कि प्रार्थना के साथ बोये गये ये बीज नष्ट होने वाले नहीं हैं क्योंकि स्वयं हमलोग अनेक लोगों की प्रार्थनाओं से निरन्तर प्रेरणा पा रहे थे।

हमलोग अपनी सोयसाटी के लिये और पश्चिमीय यूरोप के अनेक व्यक्तियों के लिये प्रोत्साहन एवं ईश्वर में नव-विश्वास का सन्देश लाने में समर्थ हुए हैं। हमलोगों ने जिनलोगों से (रूस में) बातचीत की है उनमें अन्तर्ज्ञान की अभिलाषा देखी है, और उनलोगों के अन्दर इस कृतज्ञता के भाव का अनुभव किया है कि पूर्व एवं पश्चिम के बीच की खाई को पाटने के लिये कम-से-कम एक छोटा प्रयास भी किया तो गया। ऐसे प्रयास और होने चाहिये "कारण ईश्वर ने हमलोगों को भय की नहीं वरन शक्ति, प्रेम एवं स्वस्थ मन की भावना प्रदान की है।"

●

द्वादश अध्याय

शान्ति-आन्दोलन की वास्तविकता

रूस से वापस आने के बाद हमलोगों से पश्चिमीय देशों के साथ शान्तिमय समझौते की समस्या एवं संभावना पर सोवियत सरकार एवं सोवियत जनता के मनोभाव और साम्यवादी शान्ति-आन्दोलन के सम्बन्ध में निरन्तर प्रश्न पूछे जाते रहे हैं। ('विश्व शान्ति परिषद्' और 'सोवियत शान्ति समितियों' के साथ कर लोगों के साथ हुई सभाओं का वर्णन करनेवाले अध्यायों में इस आंदोलन के अन्तर्राष्ट्रीय पहलुओं का उल्लेख किया जा चुका है।) इस प्रश्न के कुछ उत्तर देने का प्रयास हितकर होगा क्योंकि इससे सोवियत संघ की आन्तरिक अवस्था का लगाव है और इस क्षेत्र में सोवियत सरकार की नीति एवं कार्य के प्रति वाह्य संसार के दृष्टिकोण पर प्रकाश पड़ता है; क्योंकि ऐसा करना अनुमान लगाना एवं विवादग्रस्त बातों की ओर अग्रसर होना है।

हमलोगों ने सोवियत संघ में अपने भ्रमण की अवधि के बीच समस्त वस्तुओं के साथ "शान्ति" शब्द जुटा देखा। यही शब्द प्रायः कारखानों, खेतों और सार्वजनिक भवनों की दीवालों पर लगे पोस्टरों में विद्यमान था। हमलोग जिस कारागृह को देखने गये उसमें भी यही शब्द दीख पड़ा इसीका चेक भाषा में लिखित रूप प्रॉग में भी प्रायः सर्वत्र दृष्टिगत हुआ। (रूस में) विशाल निर्माण के कार्यों को दिखलाकर सोवियत जनता की शान्ति की अभिलाषा का प्रमाण दिया जाता था। हमलोगों (एवं अन्य प्रतिनिधि-मण्डलों) से प्रश्न किया जाता कि यदि हमलोग यह सोचते कि युद्ध आनेवाला है और एक परमाणुबम इसे ध्वस्त कर ही देगा तो क्या हमलोग मास्को में एक नवीन विश्वविद्यालय का निर्माण करने में लगे रहते ? हमलोगों ने इन शब्दों की वास्तविकता में सन्देह करने का कोई कारण नहीं देखा। इसके विपरीत हमलोगों ने इस बात का पर्याप्त प्रमाण देखा (जैसा कि इस पुस्तक में अन्यत्र

लिखा जा चुका है) कि सरकार के शान्ति आन्दोलन के पीछे जो भी उद्देश्य हो किन्तु सामान्य लोगों की शान्ति की अभिलाषा पूर्णतया वास्तविक है ।

सोवियत संघ के सभी प्रसिद्ध चर्च नेता 'सोवियत शान्ति समिति' के सदस्य और शान्ति आन्दोलन के समर्थक हैं । विद्वानों, लेखकों एवं कलाकारों के सम्बन्ध में भी यही बात है । यद्यपि वे लोग जिन तर्कों का प्रयोग करते हैं वे निश्चयतः स्थिर-तर्क हैं तथापि हमलोगों को उनलोगों की सचाई का विश्वास करना असंभव प्रतीत हुआ । लेकिन हमलोगों को उनकी यह अव्यक्त मान्यता समझ में नहीं आई कि घृणा एवं निंदा का प्रचार शान्ति का आधार कैसे हो सकता है ? 'प्रवदा' एवं 'इजवेस्तिया' में प्रतिदिन ऐसे निबन्ध प्रकाशित होते थे जो पश्चिमीय राजनीतिज्ञों के किसी भी कार्य में अत्यधिक निंद्य भावनाओं का आरोपण करते और यथासाध्य ब्रिटिश साम्राज्य तथा संयुक्त राज्य अमेरिका में कहीं भी होनेवाले शोषण की सूचना देते । हमलोगों को इसका निरन्तर भान होता रहा कि हमलोगों की बातें उनलोगों को उतनी ही अविश्वसनीय प्रतीत होती थीं जितनी उनलोगों की हमलोगों को । वे लोग प्रश्न करते कि यदि हम पाश्चात्यवासी शान्ति चाहते हैं तो हमलोगों की पत्रिकाओं में कम-से-कम अमरीकी पत्रिकाओं में मास्को को परमाणुबम द्वारा ध्वस्त करने की योजना बतलाने वाले निबन्ध क्यों प्रकाशित होते हैं ? यदि हमलोग सोवियत संघ और पश्चिमीय देशों के बीच अधिक मेल-मिलाप चाहते हैं तो हमलोगों की सरकार ने शेफील्ड जाने के लिये 'विजा' (प्रवेशपत्र) देने से क्यों इन्कार कर दिया ? इनमें से कुछ प्रश्नों का उत्तर देना अन्य प्रश्नों की अपेक्षा सरल था ।

'पीपुल्स डेमोक्रेसीज' (रूस तथा उसके अनुयायी देश) के बाहर अनेक व्यक्ति शान्ति आन्दोलन को विश्वभर की वामपक्षीय प्रगतिशील शक्तियों के सहयोग का आधार प्राप्त करने और साम्यवादी दल द्वारा अपने लिये एक लोकप्रिय मोर्चा निर्माण करने का प्रयत्न बतलाकर उसकी निंदा करते हैं । कुछ लोग और आगे भी बढ़ते हैं और स्टॉकहोम अपील की गणना इस शताब्दी के सर्वाधिक चतुराई से भरे राजनीतिक लेख-पत्रों में करते हैं तथा शान्ति-आन्दोलन को एक ऐसे अल्पकालीन शान्तिवाद को प्रोत्साहित करने का विनाशात्मक प्रयास बतलाते हैं जो स्वतन्त्रता की रक्षा के निमित्त (पश्चिमीय)राष्ट्रों के युद्ध करने की इच्छा का ही मूलोच्छेदन कर देगा ।

सत्य क्या है ? यह सोवियत संघ के इतने अल्पकालीन भ्रमण द्वारा बतलाना कठिन है। शान्ति-आन्दोलन के अधिकांश अनुयायियों में से अनेकों व्यक्तियों को इस बात से शक्ति मिलती है कि स्टॉकहोम अपील अथवा पंच-राष्ट्रीय सन्धि की अपील पर हस्ताक्षर करनेवाले करोड़ों व्यक्तियों में एक वह भी है। इससे एक ओर तो उसकी सुरक्षा पाने की भावना की संतुष्टि होती है और दूसरी ओर युद्ध के प्रति उसकी घृणा की भावना को बल मिलता है। ऐसे व्यक्ति (जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है) सोवियत संघ में सर्वत्र— संग्रहालयों, होटलों, कारखानों एवं सार्वजनिक शौचालयों में भी शान्ति के नारों को देखते हैं। नारा प्रायः "स्तालिन के साथ शान्ति" होता है। रूस में शान्तिमय निर्माण-कार्य के महत्व एवं शान्तिमय ढंग से साथ-साथ रहने की सम्भावनाओं पर सदैव जोर दिया जाता है (अथवा कम से-कम हमलोग जब तक सोवियत संघ में थे तब तक दिया जाता था)। जिस प्रकार १६३३ के बाद नाजी जर्मनी में युद्ध के गुणों की प्रशंसा प्रायः बढ़ा-चढ़ाकर की जाती थी। उसी प्रकार वहाँ भी शान्ति के गुणों की प्रशंसा बढ़ा-चढ़ाकर की जाती है। यह भेद-प्रदर्शन महत्त्व एवं प्रोत्साहन से रहित नहीं है। इसका अभिप्राय निस्सन्देह रूसवासियों के मस्तिष्क में शान्ति की आवश्यकता और युद्ध के प्रति घृणा को अंकित कर देना है।

पश्चिमीय देशों के विरुद्ध प्रायः प्रबल एवं कटुतापूर्ण प्रचार (जो अभी भी जारी है) को सामने रखते हुए, इन सब बातों का क्या अर्थ होता है ? यथार्थ मूल्यांकन से तो यह मानना ही पड़ेगा कि रूस में शान्ति-आन्दोलन को जारी रखने के लिये पर्याप्त अन्तर्देशीय कारण विद्यमान हैं। सर्वप्रथम इससे सोवियत सरकार और साम्यवादी दल को पश्चिमीय राष्ट्रों को नीचा सिद्ध करने का मौका मिलता है। इन राष्ट्रों का और विशेषकर पश्चिमीय जर्मनी का पुनः-शस्त्रीकरण पूर्णतया आक्रमणात्मक एवं अनुचित बतलाया जाता है। द्वितीयतः इससे वृहत्तर उत्पादन को प्रोत्साहन मिलता है क्योंकि वृहत्तर उत्पादन को शान्ति-रक्षा जैसी वृहत्तर मानवीय आवश्यकता की पूर्ति करने का गौरव प्रदान किया जा सकता है। संभव है कि यही इसका मुख्य प्रयोजन हो। यदि इसकी प्रतिकूल दृष्टि से देखा जाय तो ज्ञात होगा कि सोवियत संघ को आर्थिक दृष्टि से दृढ़ बनाने के निमित्त अधिकाधिक वैयक्तिक प्रयत्न को प्रोत्साहित करने के लिये पश्चिमीय देशों की कथित आक्रमणात्मक मनोवृत्तियों का उपयोग किया जा सकता है। तृतीयतः इससे सरकार एवं शासकदल के प्रति श्रद्धा को बल मिलता है और उनलोगों को सर्वोत्कृष्ट मानवीय हितों के विजेताओं के रूप में उपस्थित किया जाता है।

अनेकों सामान्य व्यक्ति और कुछ बुद्धिजीवी भी इस बात से पूर्ण आश्वस्त हैं कि शान्ति आंदोलन किसी-न-किसी प्रकार उत्कृष्ट एवं सृजनात्मक जीवन का रास्ता है और इस आन्दोलन की सदस्यता शान्ति-रक्षा का सर्वोत्कृष्ट साधन है।

जिनलोगों को शान्ति-आन्दोलन का प्रबल समर्थक बनाया गया है उनलोगों की युद्ध आरंभ होने की अवस्था में कैसी प्रतिक्रिया होगी ? शान्तिवादियों के समान तो नहीं ही होगी। संभवतः वे लोग अधिक प्रबल रूप से उनलोगों के विरुद्ध युद्ध करेंगे जिनलोगों को वे लोग आक्रामक समझेंगे और जिन्हें शान्ति भंग करने और सोवियत संघ एवं 'पीपुल्स डेमोक्रेसिज' वाले अन्य देशों में शान्तिमय पुनर्निर्माण के दुर्द्धर्ष प्रयत्न को एक बार पुनः रोकने के लिये उत्तरदायी ठहरायेंगे।

हमलोगों का विश्वास है कि इतना होते हुए भी इस शान्ति आन्दोलन के पीछे शान्ति की सच्ची आकांक्षा एवं सच्ची संभावना विद्यमान है जिसकी उपेक्षा करना न तो उचित है और न बुद्धिमानी। प्रश्न यह नहीं है कि रूसवासी कम-से-कम अन्य देशों की जनता के समान ही शान्ति चाहते हैं अथवा नहीं, क्योंकि वहाँ के लोग तो कदाचित इसे और निश्चित रूप से चाहते हैं। कारण, वे अभी भी युद्ध द्वारा लाये विनाश को प्रत्यक्ष देख रहे हैं और यह जानते हैं कि उनके सामने अभी भी पुनर्निर्माण एवं आधुनिकीकरण का बहुत-सा कार्य पड़ा हुआ है।

क्रेमलिन के निवासी (रूसी शासक) विश्वव्यापी युद्ध नहीं चाहते—इस बात के प्रमाण विद्यमान हैं। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि वे लोग अपने उन उद्देश्यों एवं कार्यों को त्यागना अथवा उनमें परिवर्त्तन करना चाहते हैं जिनका निरन्तर अनुसरण करने पर पश्चिमीय देशों के साथ युद्ध यदि अनिवार्य नहीं तो संभव अवश्य हो सकता है। वे लोग निस्सन्देह अपने नगरों पर अणु-बम बरसाये जाने की आशंका से भयभीत हैं। उनलोगों को अपने शान्तिमय निर्माण-कार्यों के अर्थात् जल-विद्युत्, सिंचाई-आदि जैसी तथाकथित "महान् योजनाओं" के नष्ट किये जाने की आशंका है। उनलोगों को यह भी आशंका होती है कि यदि पश्चिमीय देशों में पुनःशस्त्रीकरण इसी गति से और इसी परिमाण से चलता रहा तो रूसवासी भी शस्त्रीकरण की इस दौड़ में भाग लेने और पूर्वापेक्षा अधिक तीव्रता पूर्वक भाग लेने के लिये बाध्य हो जायेंगे (संभवतः यही उनके द्वारा देश में तथा देश के बाहर शान्ति आंदोलन का

तात्कालिक कारण है)। उनलोगों की आशंका यह भी है कि यदि अन्तर्राष्ट्रीय तनाव में कमी नहीं हुई, तो उनलोगों को बाध्य होकर अपने मुख्य साधनों को शान्तिमय निर्माण-कार्य से हटाकर युद्ध की तैयारी में लगाना पड़ेगा और रूस की जनता से नवीन (आर्थिक) त्याग के लिये अनुरोध करना पड़ेगा, परन्तु वर्त्तमान जीवन स्तरों को देखते हुए इसकी माँग करना राजनीतिक दृष्टि से ठीक नहीं होगा।

यदि परस्पर विरोधी नहीं तो भिन्न कार्यों से यही प्रकट होता है कि आज रूस की नीति भी पश्चिमीय देशों की नीति के समान ही द्वन्द्वयुक्त है। सोवियत पर-राष्ट्रनीति के अन्तर्गत जो आन्तरिक तनाव विद्यमान है उसका निश्चित रूप से अन्त करना अभी शेष ही है। इसका अन्त होना सोवियत नेताओं के आपसी निपटारे पर (ही) नहीं अपितु सोवियत संघ के प्रति बाह्य संसार के दृष्टिकोण पर भी निर्भर होगा। नैतिक कर्त्तव्य, राजनीतिक बुद्धिमत्ता और सामान्य ज्ञान समान रूप से हम पश्चिमीय लोगों को इस बात के लिये बाध्य करते हैं कि हमलोग उनके शान्ति-प्रस्तावों को केवल ऊपर-ऊपर ही नहीं देखें, वरन् वास्तविक शान्ति के लिये उनका पूर्णोपयोग करने के निश्चय के साथ उनपर तटस्थतापूर्वक विचार करें।

इस समय हमलोगों की कूटनीति के प्रत्येक क्षेत्र में प्रायः सर्वत्र स्वार्थ एवं भय का प्राधान्य है। उदाहरणार्थ हमलोग पूर्वी जर्मनी के पुनःशस्त्रीकरण से आशंकित हैं, रूसवासी पश्चिमीय जर्मनी के पुनःशस्त्रीकरण से आशंकित हैं और स्वयं जर्मनीवासी स्वभावतः पुनः एक होने और वैदेशिक हस्तक्षेप से मुक्त होने के अभिलाषी हैं। ऐसे ही गतिरोध अन्यत्र भी विद्यमान हैं। फिर भी, हम सभी भाई-भाई हैं और एक की भलाई में ही दूसरे की भलाई है—यह पारस्परिक हित-कामना ही सच्ची कूटनीति का उद्देश्य होना चाहिये।

इस महत्त्वपूर्ण विषय पर हमलोगों के अपने निष्कर्ष संक्षेपतः निम्नलिखित हैं—यह स्पष्ट है कि रूसवासी इस बात से बुरी तरह भयभीत हैं कि पश्चिमीय देशों की सरकारें उनलोगों के देश पर आक्रमण करके उसे ध्वस्त कर देना चाहती हैं। यद्यपि वे लोग यह नहीं मानते कि पश्चिमीय देशों की जनता युद्ध चाहती है तथापि वे लोग यह मानते हैं कि वहाँ की सरकार एवं व्यावसायिक क्षेत्रों के कुछ प्रमुखसम्पन्न एवं स्वार्थी व्यक्ति अवश्य युद्ध चाहते हैं। सोवियत प्रेस एवं उनके नेतागण उनलोगों को यह विश्वास करने के लिये प्रोत्साहित करते हैं।

हमलोग अभी भी यह अनुभव करते हैं कि 'पाटर्नस ऑव दि पीस मूवमेन्ट' (शान्ति हितैषी आन्दोलन) राजनीतिक है। इसने निस्सन्देह रूसवासियों की कल्पना-शक्ति पर अधिकार कर लिया है। वे लोग शान्ति चाहते हैं और अपनी सरकार की शान्तिपूर्ण अभिलाषाओं में विश्वास करते हैं। परन्तु हमलोगों का विश्वास है कि यह आन्दोलन यथार्थ मैत्री भाव की वृद्धि करने की अपेक्षा सोवियत संघ की (अंतर्राष्ट्रीय मामलों में) सौदा करने की शक्ति में वृद्धि करने के लिये चलाया गया है। यदि इस आन्दोलन का उद्देश्य कष्टों को दूर करना अथवा विश्वव्यापी घृणा,भय एवं सन्देह का मूलोच्छेद करना हो तो इसमें आमूल परिवर्तन करने की आवश्यकता होगी। परन्तु इस आन्दोलन की केवल निन्दा करना, केवल इसका उपहास करना और इसके उत्तर में पुनःशस्त्रीकरण को तीव्रता प्रदान करना न तो उत्तम मनोवैज्ञानिक बात होगी, न कुशल राजनीतिज्ञता।

मास्को से आने के बाद हमलोगों ने सोसाइटी ऑव फ्रेन्ड्स की कार्यकारिणी को दिये गये एक रिपोर्ट में कहा था—"अन्य सरकरों की भाँति सोवियत सरकार भी पूर्व एवं पश्चिम के बीच शान्तिमय समझौतो की आवश्यकताओ की पूर्त्ति करने में व्यावहारिक सहयोग करने के लिये कटिबद्ध है कि नहीं—यह देखना अभी शेष है। परन्तु वह समय भी आ रहा है जब पश्चिमीय (देशों के) पुनःशस्त्रीकरण के उद्घोषित उद्देश्य की—अर्थात् सफल समझौतों की संभावना की उत्पत्ति की—वास्तविकता की जाँच होगी। खैर, जो भी हो, हमलोग अपने अनुभवों के आधार पर कह सकते हैं कि इस समय सोवियत संघ में पश्चिमीय देशों के प्रति अधिक मैत्रीपूर्ण भावना विद्यमान है और सोवियत जनता को शान्ति एवं बृहत् राष्ट्रों के बीच शान्तिमय अन्तर्ज्ञान की आवश्यकता निरन्तर बतलाई जा रही है। इन लक्षणों को समझने और उनपर विचार करने की चेष्टा नहीं करना, बिना विचार किये अथवा अपूर्ण होने पर (उनका) वास्तविक विकल्प उपस्थित किये बिना ही सोवियत संघ के समस्त प्रस्तावों को ठुकरा देना निस्सन्देह समस्त विश्व की जनता की विश्वशान्ति की प्रबलतम आवश्यकता एवं प्रबलतम आशा के साथ विश्वासघात करना है।"

●

उपसंहार

हमलोग पहले ही कह चुके हैं कि हमलोगों की रूस-यात्रा के तीन उद्देश्य थे। सर्वप्रथम हमलोग क्वेकर समाज का सद्भावना-सन्देश सोवियत जनता तक पहुँचाना चाहते थे; द्वितीयतः हमलोग सोवियत संघ में धर्म की स्थिति के विषय में कुछ ज्ञान प्राप्त करना चाहते थे और तृतीयतः हमलोग शान्ति एवं अन्तर्दर्शन की वृद्धि की उपयुक्त विधियों के सम्बन्ध में सभी प्रकार के (रूसवासी) प्रभावशाली व्यक्तियों से विचार-विमर्श करना चाहते थे। यह भी अनिवार्य था कि हमलोग वहाँ के जीवन-यापन के सम्बन्ध में कुछ ज्ञान प्राप्त करते और उसकी रिपोर्ट लाते। यद्यपि यात्रा के इस पहलू में जनसाधारण की दिलचस्पी अधिक रही है तथापि यह हमलोगों के मुख्य उद्देश्यों में नहीं था।

क्वेकर लोगों का विश्वास है कि प्रत्येक मनुष्य में ईश्वर का निवास है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि हमलोगों की दृष्टि में सभी मनुष्य देवता हैं। हाँ, इसका अर्थ यह अवश्य है कि प्रत्येक मनुष्य अच्छा होने या अच्छा करने और दूसरों की अच्छाई पहचानने में समर्थ है। साथ ही इसका अर्थ यह भी है कि अत्यन्त गहराई में जाने पर हमलोग सदैव केवल सत्य, प्रेम, औदार्य और करुणा ही पायेंगे; कोई भी मनुष्य केवल मिथ्याचारी, निष्ठुर और स्वार्थी नहीं होता। इसके सिवा हमलोग ईश्वरीय शक्ति में विश्वास करते हैं; हमलोग यह विश्वास करते हैं कि सत्य, भ्रम पर विजय प्राप्त कर सकता है, प्रेम घृणा की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली है, उदारता लोभ से ऊपर उठ सकती है और बुराई पर अच्छाई की विजय निश्चित है।

यही ईसाई धर्म का सार है; किन्तु धर्म के विरोधी इस तत्त्व को धर्म नहीं समझते। वे धर्म का अर्थ केवल अन्ध-विश्वास अथवा स्वर्ग-वैभव की कल्पना ही समझते हैं। मार्क्स ने कहा था कि "धर्म जनता के लिये अफीम है" और

यही मान्यता धर्म के प्रति समग्र मार्क्सवादी दृष्टिकोण की आधारशिला है। लेनिन को तो पूर्ण विश्वास था कि सामाजिक शोषण के अन्त के साथ ही धर्म भी लुप्त हो जायगा। इसलिये उन्होंने कहा था कि नास्तिकता के प्रचार को वर्ग-संघर्ष अर्थात् धर्म के सामाजिक मूलों के विनाश—की वृद्धि के अधीन कर दिया जाय। उन्होंने अपने पत्रों में इसपर पूर्ण प्रकाश डाला है ('लेनिन ऑन रेलिजन' लौरेन्स और विशर्ट, १९४७)। यह अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि धार्मिक अन्धविश्वास ने सामाजिक शोषण में योगदान किया है। एक पुराने क्र्वेकर जौन वुलमैन ने १७७२ ई० में लिखा था —

"मैं तब सोल्लास उन खानों में ले जाया गया जहाँ पर दरिद्र, शोषित लोग अपने ईसाई स्वामियों के लिये रत्न-राशि खोद रहे थे। उनलोगों के मुख से यीशु मसीह की निन्दा सुनकर मुझे बड़ा दुःख हुआ क्योंकि उनका नाम मेरे लिये बहुमूल्य था। ज्ञात हुआ कि इन 'हीदेन' (नास्तिक) लोगों को जब यह बतलाया गया कि उनका शोषण करनेवाले यीशुमसीह के अनुयायी हैं तब उनलोगों ने आपस में कहा कि यदि यीशुमसीह के निर्देश से ही ये लोग हमलोगों का इस तरह शोषण करते हैं तब यीशु स्वयं निष्ठुर एवं अत्याचारी होंगे......।"

अपने को ईसाई कहने वाले लोग यीशु के इस कथन को भूल गये हैं कि धर्मात्मा होने के लिये भूखे को भोजन, प्यासे को पानी, नवागन्तुकों को आश्रय और नंगे को वस्त्र देना तथा रुग्ण एवं बन्दी लोगों को देखने जाना आवश्यक है। वे लोग जेम्स पत्र के इन शब्दों को भूल गये हैं कि—"यदि किसी भाई या बहन को नग्न अथवा बुभुक्षित देखकर तुमलोगों में से कोई उसे 'शान्ति पूर्वक विदा होने और ताप एवं भोजन प्राप्त करने के लिये आश्वासन दे किन्तु उसकी उन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये वह कुछ न करे तो ऐसे आश्वासन से क्या लाभ है ! . दिव्य ज्ञान सर्वप्रथम विशुद्ध, तब शान्ति योग्य, विनम्र एवं उत्तम फलों से युक्त और पाखण्ड एवं पक्षपात रहित होता है। यदि किसी ऐसे नास्तिक समाज की स्थापना हो जिसमें सामाजिक शोषण का अन्त हो गया हो और जो नवीन प्रकार के शोषणों से भी सर्वथा मुक्त हो तो यह कहा जा सकता है कि वह सैद्धान्तिक रूप से ईसाई धर्म स्वीकार नहीं करने पर भी उसे किसी-न-किसी प्रकार से आचरण में ला रहा है। इसके विपरीत बहुधा यह देखा गया है कि चर्च और राज्य बहुधा ईसाई धर्म को मानते हुए भी उसे आचरण में नहीं लाते हैं।

"अपने पड़ोसी से आत्मवत् प्रेम कर" तो यीशु का द्वितीय आदेश था और उन्होंने केवल इसीको प्रशंसा नहीं की थी वरन् इसके भी पहले तो उन्होंने कहा था—"तू अपने प्रभु से अपने समस्त हृदय, प्राण, मन एवं शक्ति के साथ प्रेम कर।" सामाजिक न्याय के लिये बलवती भावना प्राप्त नहीं है। भोजन, वस्त्र, गृह और शिक्षा पर्याप्त नहीं हैं, यद्यपि कि इसी बहाने दूसरों को इनसे वंचित रखना उचित नहीं है। जीवन का अर्थ केवल खाना-पीना, प्रजनन एवं मृत्यु नहीं है, न इसका अर्थ केवल हास्य, रुदन, ज्ञानार्जन एवं प्रेम करना ही है। मानव-जीवन भौतिक वस्तुओं के प्राचुर्य में अन्तर्निहित नहीं है।" यह अभिलाषा करना कि इस पृथ्वी की उत्तम वस्तुओं में संसार के समस्त नरनारियों का भाग हो और एतदर्थ प्रयास करना यीशु-सदृश जीवन बिताने के दूसरे परिणाम हैं। जब तक हमलोग ऐसा नहीं करते तब तक हमलोगों का वास्तविक धर्म-बोध प्रारंभ ही नहीं होता। परन्तु यदि वस्तुतः ईश्वर है तो जो लोग जीवन के केवल भौतिक पक्ष पर ही (भले ही "भौतिक" का श्रेष्ठतम अर्थ क्यों न ग्रहण किया जाय) ध्यान केन्द्रित रखते हैं और ईश्वर के विषय में कुछ नहीं सोचते वे लोग सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण वस्तु का ही परित्याग कर देते हैं। न्यूमैन का कथन है—"जहाँ आपने ईश्वर को स्वीकार किया कि आपने अपने समस्त ज्ञात विषयों में एक सर्वग्राह्य, सर्वव्यापी और प्रत्येक धारणा योग्य तथ्य को आत्मसात् करनेवाले एक नवीन तथ्य का निर्माण कर लिया।" यदि आप यीशुमसीह के ईश्वर की कल्पना करें तो आप सभी मनुष्यों को, भले ही वे कितना भी पतित, अवनत एवं खिन्न क्यों न हों महत्त्वपूर्ण मानने के लिये बाध्य हो जायेंगे। तब आप "अधिकतम व्यक्तियों के अधिकतम सुख के लिये" मनुष्यों को न्योछावर नहीं कर सकेंगे।" आप तब स्वयं उस शक्ति को धारण नहीं कर ले सकते जो मनुष्यों को उपादानों के सदृश, यंत्र के दन्त सदृश अथवा अनासक्त एवं तटस्थ प्रयोग का विषय समझती है।

हमलोगों को अपने आपको ईसाई कहने में खतरा यह है कि हमलोग किसी कार्य के लिये दूसरों को दोष दे सकते हैं किन्तु यह अनुभव नहीं करते कि हमलोग स्वयं उसी काम को कर रहे हैं। हमलोग ईश्वर पर अर्थात् प्रेम, सत्य, सज्जनता एवं उदारता की शक्ति पर भरोसा नहीं रखते। हमलोग मुख से इनकी प्रशंसा करते हैं किन्तु "जब तक समस्त विश्व ईसाई नहीं हो जाता तब तक के लिये" उन्हें काम में लाने का प्रयत्न ही नहीं करते और इस बीच हमलोग शस्त्रीकरण, अणुबम की ढेरी, सैनिक अड्डे, रंगरूटों की भर्ती, आर्थिक दबाव एवं सैनिक सन्धियों का आश्रय ग्रहण करते हैं।

इस यात्रा के फलस्वरूप हमलोगों को जितने महत्वपूर्ण विचार प्राप्त हुए उनमें एक यह भी था कि हमलोगों को साम्यवाद का सामना निषेधात्मक दोषारोपण के द्वारा नहीं वरन् ईसाई धर्म की मान्यता को सत्य कर दिखलाने के यथार्थ निश्चय द्वारा करना चाहिये। जॉन एस० होयलैंड ने प्रियजनों के लिये प्रार्थना करने के अभिप्राय से प्रार्थना की। कुछ पंक्तियों की रचना की हैं जो निम्नलिखित हैं—

"हमलोग उनलोगों की कुशलता के लिये,
उनलोगों के अक्षय सुख के लिये,
उनलोगों की आत्माओं पर तेरी कृपा के लिये,

उनलोगों के जीवन में तेरी शक्ति के आविर्भूत एवं विकसित होने के लिये, तेरी प्रार्थना करते हैं जिससे वे लोग तेरे सेवक एवं साधन बन सकें।"

यदि हमलोग केवल अपने प्रियजनों के लिये ही नहीं वरन् उन सभी लोगों के लिये, जिनसे हमलोग अनभिज्ञ हैं, जिन्होंने हमलोगों के धार्मिक विश्वास को ठुकरा दिया है और जो हमलोगों के उपास्यदेव को नहीं मानते—यह प्रार्थना करते रहने की सदैव प्रेरणा पाते तो हमलोग उनके (ईश्वर के) और अधिक सदृश होते।

क्वेकर होने के कारण ही हमलोग यह दावा नहीं कर सकते कि हमलोग स्वयं आदर्शों तक पहुँच चुके हैं, किन्तु हमलोगों का विश्वास है कि केवल इसी भावना से वास्तविक उद्धार एवं मैत्री का कार्य किया जा सकता है। आज के विश्व में घृणा एवं अनीति प्रबल हैं किन्तु उनका सामना बल-प्रयोग, सन्देह अथवा प्रतिहिंसा जैसी अन्य दुर्वृत्तियों से नहीं किया जा सकता, न इनके द्वारा उनपर विजय ही प्राप्त की जा सकती है। लोग जिस जिह्वा से शान्ति का नाम लेते हैं उससे घृणा निकलती है और मैत्री के लिये जो हाथ बढ़ाते हैं उससे हिंसा की गन्ध आती है। युद्ध के अन्त करने का मार्ग वह नहीं है। दुर्वृत्ति एवं घृणा पर केवल सद्वृत्ति एवं प्रेम द्वारा ही विजय प्राप्त की जा सकती है। यह वह प्रेम हो जो अपनी कुमार्गगामी सन्तान के प्रति माँ-बाप को होता है, यह वह प्रेम हो जो कभी उपेक्षा नहीं कर सके, यह वह प्रेम हो जो ईश्वर अपनी समस्त सन्तान के प्रति रखते हैं और यह वह प्रेम हो जिसमें सदैव त्याग रहता है क्योंकि वह मोक्षकारक होता है।

हमलोग शोषितों को मुक्त करना चाहते हैं किन्तु गांधी जी यथार्थतः शोषकों की मुक्ति पर और अधिक जोर देते थे। उनका कथन था कि शोषकों को

तो मुक्ति की दुगुनी आवश्यकता है और यह उचित है भी क्योंकि शोषकों की मुक्ति से ही शोषण का अन्त होगा। जिन विधियों के प्रयोग से अन्धाधुन्ध कष्ट-सहन की संभावना है, जिनसे निरर्थक विनाश की वृद्धि होती है, जो विश्व की शक्तियों को दारिद्र्य एवं रुग्णता का अन्त करने में नहीं लगने देतीं उनका प्रयोग कर अथवा उनका प्रयोग करने के लिये तैयार होकर हमलोग शोषण की वृद्धि करने वाले मनोभावों को केवल प्रोत्साहित और परिपुष्ट ही नहीं करते वरन् थोड़े से लोगों के लिये करोड़ों व्यक्तियों को दुःखपूर्वक जीने और मरने के लिये छोड़ देते हैं। हमलोग इन सब बातों को भूल जाते हैं क्योंकि हमलोग इन्हें स्मरण रखने का साहस नहीं रखते। हमलोगों के द्विविधाग्रस्त होने का एक मात्र कारण यही है कि हमलोग ईश्वरीय विधियों का प्रयोग नहीं कर रहे हैं, उनके साथ सहयोग नहीं कर रहे हैं और इस ढंग से कार्य कर रहे हैं मानो ईश्वर है ही नहीं।

ईश्वरीय विधियाँ हिंसा-रहित हैं और वे अन्याय एवं शोषण को एक ही रात्रि में समाप्त नहीं कर सकतीं। वे पलमात्र में समस्त युद्धाभिलाषियों को शान्ति-निर्माता अथवा समस्त पाखण्डियों को पश्चात्तापी नहीं बना सकतीं। इनके प्रयोग के लिये उस कष्ट-सहन की आवश्यकता है जिसे यीशु ने "मेरे प्रभु! मेरे प्रभु!! तुम मुझे क्यों भूल गये हो!" की पुकार कर स्वयं सहा था और उस पुकार को सुनकर जिसे (उनके) परम पिता ने स्वयं सहन किया था। आज यही पुकार सहस्रों नर-नारियों द्वारा बारंबार दुहराई जा रही है। जब हम निर्मल हाथों और पवित्र हृदयों द्वारा शोषक एवं शोषित दोनों के लिये समान स्नेह से युक्त होकर इस भूतल पर ईश्वरीय राज्य की स्थापना के लिये प्रयत्न करना प्रारंभ करेंगे तभी युद्ध एवं शोषण, दुःख एवं अन्याय का अन्त संभव होगा। और यही वह सन्देश है जिसकी पूरब पश्चिम दोनों देशों के लोगों को समान आवश्यकता है।

●

परिशिष्ट १.

सोवियत संघ के परराष्ट्र मंत्री श्री जेकब मलिक के साथ, परराष्ट्र कार्यालय, मास्को में २६ जुलाई, १९५१ को हुए वार्त्तालाप की रिपोर्ट—

श्री मलिक के संग वार्त्तालाप के कुछ दिन पूर्व हमलोगों के दल की ओर से मास्को स्थित परराष्ट्र कार्यालय में श्री ग्रोमिको के नाम एक बन्द पत्र में निम्नलिखित वक्तव्य भेज दिया गया था। वार्त्तालाप के प्रारंभ में ही श्री जेरल्ड बेली ने श्री मलिक को यह स्मरण कराया कि ग्रेट ब्रिटेन के क्वेकर समाज ने हमलोगों के दल को अपना प्रतिनिधि बनाकर सोवियत संघ में भेजा है। उन्होंने बतलाया "यह समाज ३०० वर्षों से अपने विश्वास एवं कार्य द्वारा शान्ति पर; राष्ट्रों, समुदायों और व्यक्तियों के बीच मैत्री भाव पर और दुनिया के सभी लोगों की एकता पर सर्वाधिक जोर देता रहा है।" संयुक्त राष्ट्र संघ में एवं अन्यत्र ब्रिटिश तथा अमरीकी क्वेकर लोगों द्वारा पूर्व-पश्चिम के अन्तर्ज्ञान के लिये किये गये कार्यों का उल्लेख करने के बाद जेरल्ड बेली ने वक्तव्य प्रारंभ किया—"हमलोगों को राजनीतिज्ञों का स्थान तथा उत्तरदायित्व ग्रहण करने की कोई अभिलाषा नहीं है और न हमलोग वैसा करने की योग्यता का दावा ही करते हैं। मूलतः एक धार्मिक सम्प्रदाय के रूप में वह हमलोगों के लिये अशोभनीय होगा। परन्तु हमलोग अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति एवं युद्ध की ओर प्रवृत्ति से विशेष चिन्तित हैं। हमलोग सोवियत संघ और पश्चिमीय देशों के बीच अधिक सहिष्णुता की भावना एवं अधिकाधिक सहयोग की संभावनाओं को यथाशक्ति प्रोत्साहन देने के लिये अत्यन्त उत्सुक हैं।

"यदि अनुमति हो तो हमलोग आपसे और सोवियत सरकार से एक अपील करना चाहते हैं। कोरिया युद्ध के शीघ्र अन्त की आशा से हमलोग अत्यन्त प्रोत्साहित हुए हैं और हमलोग आपके समक्ष—आपने जो इस संबंध में पहला कदम उठाया है उसकी सच्ची प्रशंसा करना चाहते हैं। किन्तु हमलोग इस बात के लिये उत्सुक हैं कि शान्तिमय समझौते को यहीं तक सीमित नहीं रक्खा जाय

बल्कि उससे पूर्व और पश्चिम के बीच के मनोमालिन्य के अन्य स्थलों पर भी काम लिया जाय। हमलोग विशेष रूप से इस बात के लिये उत्सुक हैं कि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के तनाव को दूर करने और शान्तिमय समझौतों के लिये भिन्न देशों की सरकारों के बीच आवश्यक विश्वास की स्थापना के लिये कुछ ठोस कदम उठाये जायँ। हमलोग रूस में अभी हैं अतएव स्वभावतः हमलोगों ने इस बात पर विशेष रूप से विचार किया है कि सोवियत संघ स्वयं इस दिशा में क्या कदम उठा सकता है। परन्तु हमलोग यह पूर्णतया समझते हैं कि शान्ति के लिये एक साथ कार्य करने की आवश्यकता होती है और इन प्रारंभिक प्रयत्नों को भी पश्चिमीय देशों की सरकारों एवं जनता के सहयोग की आवश्यकता होगी।"

भेजे गये लेख-पत्रों की सातों युक्तियों का संक्षेप में सारांश कहने के बाद जेरल्ड बेली ने कहा—"हमलोगों का विश्वास है कि इस व्यापकता, इस भावना और इस कल्पनाशीलता से युक्त शान्ति कार्य-क्रम के द्वारा विश्व को आह्वान करने के लिये सोवियत संघ के पास बहुत अवसर हैं एवं उसके ऊपर बहुत उत्तरदायित्व भी है। हमलोगों को विश्वास है कि यदि सोवियत संघ इस प्रकार का कदम उठाये तो आपलोगों को भिन्न देशों की बहुसंख्यक जनता की सहानुभूति प्राप्त होगी और अगर सब नहीं तो अधिकांश सरकारों का अनुकूल सहयोग प्राप्त होगा।"

हमलोगों ने जो वक्तव्य भेजा था वह इस प्रकार है—

"हमलोग विभिन्न राष्ट्रों के बीच यथार्थ एवं स्थायी शान्ति की वृद्धि में यथा-शक्ति सहायता करने की प्रबल अभिलाषा से सोवियत सघ में आये हुए हैं। हम सोवियत संघ की सरकार से जैसा कि अन्य अवसरों पर हमलोग अपनी एवं अन्य सरकारों से कर चुके हैं—उन रचनात्मक कार्यों को करने के लिये अनुरोध करने आये हैं जो अन्तर्राष्ट्रीय तनावों को कम कर देंगे, लोगों को सर्वत्र व्याकुल करनेवाले भीषण युद्ध के भय को नष्ट कर देंगे और लोगों की सुख वृद्धि के लिये सभी देशों के बीच सफल सहयोग का मार्ग खोल देंगे।

हमलोग सोवियत संघ की सरकार से यह विनम्र निवेदन करेंगे कि वह विश्व को नवीन आशा प्रदान करनेवाले कोरिया युद्ध का शान्तिमय अंत करने के अपने प्रयत्नों के बाद सच्ची शान्ति को व्यापक एवं सुदृढ़ करने के लिये समस्त सरकारों और विशेषकर वृहत् राष्ट्रों की सरकारों के समक्ष एक ऐसा प्रस्ताव

उपस्थित करे जो पारस्परिक सहयोग पर आधारित हो। हमलोग सोवियत संघ की सरकार के समक्ष उन युक्तियों को विचारार्थ उपस्थित करते हैं जिनपर इस प्रकार का प्रारंभिक प्रयत्न आधारित किया जा सकेगा—

(१) पश्चिमीय देशों के प्रति शत्रुता पूर्ण प्रचार बन्द करने और पश्चिमीय सरकारों के शान्तिपूर्ण उद्देश्यों को प्रकट करनेवाले उत्तरदायी वक्तव्यों को रूस में प्रकाशन की आज्ञा प्रदान करने की सम्मति, बशर्ते कि पश्चिमीय सरकारें भी ऐसा ही करें।

(२) अराजनीतिक आधार पर तथा सोवियत संघ के व्यावसायिक दलों एवं व्यक्तियों और पश्चिमीय देशों के बीच आवागमन और पत्राचार के द्वारा, परिमित मेल-मिलाप को प्रारंभ करने की सम्मति, बशर्ते कि पश्चिमीय सरकारें भी ऐसा ही करें।

(३) इस बात के लिये आश्वासन देने की सम्मति कि असाम्यवादी देशों के आन्तरिक मामलों में कार्य द्वारा या विचारों द्वारा प्रत्यक्ष रूप से अथवा अप्रत्यक्ष रूप से रूस हस्तक्षेप नहीं करेगा बशर्ते कि पश्चिमीय देशों द्वारा भी आश्वासन दिया जाय कि साम्यवादी देशों में वे भी क्रान्ति-विरोधी कोई कार्य नहीं करेंगे।

(४) मौलिक, व्यापक एवं अन्तर्राष्ट्रीय नियंत्रण के अधीन निःशस्त्रीकरण में भाग लेने और इस प्रकार की स्वीकृति करानेवाली समस्त विधियों पर सहानुभूति पूर्वक विचार करने की सम्मति भले ही यह उस सोवियत धारणा के अनुरूप हो चाहे नहीं जिसके अनुसार रूस दूसरे देशों से समान अनुपात में शस्त्रों के घटाने की माँग करता रहा है।

(५) समस्त देशों के जीवन के स्तरों को उन्नत करने के लिये पारस्परिक आर्थिक सहायता के निमित्त एक विश्वव्यापी योजना में सहयोग देने की सम्मति, बशर्ते कि यह योजना संयुक्त राष्ट्रसंघ के अन्तर्गत एवं उसके नियंत्रण में हो और इसका उपयोग शान्तिमय सामाजिक क्रान्ति को रोकने के लिये नहीं बल्कि उसमें वृद्धि करने के लिये हो जो आर्थिक एवं राजनीतिक दृष्टि से पिछड़े हुए देशों में हो रही है।

(६) इस समय संयुक्त राष्ट्रसंघ की सदस्यता से वंचित देशों को संघ का सदस्य बनने की सुविधा प्रदान करने और विभिन्न राष्ट्रों के बीच शान्तिमय

सहयोग के साधन के रूप में संयुक्त राष्ट्र के संघटन एवं कार्य में सुधार करने के लिये अभीष्ट विचार-विमर्शों में सम्मिलित होने की सम्मति।

(७) बड़े राष्ट्रों के बीच होनेवाले वार्त्तालापों में (जो इन देशों के प्रधानतम अधिकारियों के बीच होंगे) भाग लेने की सम्मति। ये वार्त्तालाप उपर्युक्त प्रस्तावों में अन्तर्निहित मुख्य सिद्धान्तों के सम्बन्ध में सहमति प्राप्त करने के लिये होंगे और बड़ी-बड़ी समस्याओं पर विस्तृत रूप में विचार करनेवाली वार्त्ताओं की भूमिका के रूप होंगे।

हमलोगों को विश्वास है कि यदि सोवियत संघ इन भावनाओं से युक्त और इन उद्देश्यों से अभिप्रेरित होकर शान्तिमय प्रयत्न की ओर अग्रसर होने के लिये तत्पर हो तो उसे समस्त देशों की बहुसंख्यक जनता की सहानुभूति प्राप्त होगी और अगर सब नहीं तो उनकी अधिकांश सरकारों से अनुकूल सहयोग भी प्राप्त होगा।

तदुपरान्त श्री मलिक ने हमलोगों की सातों युक्तियों के उत्तर में कुछ संशोधन एवं परिवर्द्धन के साथ एक वक्तव्य पढ़ा, जो स्पष्टतया सोवियत परराष्ट्र कार्यालय में तैयार किया गया था। इसका प्रत्येक खण्ड परराष्ट्र कार्यालय के दुभाषिये श्री पोलियकोफ द्वारा अनूदित किया गया। हमलोगों को इसकी प्रतिलिपि नहीं मिली थी, किन्तु हमलोगों के दल के अनेक सदस्यों ने इस पूरे उत्तर को नोट कर लिया था और श्री मलिक का आदेश पाने पर हमलोगों ने उसे उन कई सदस्यों के नोटों से जाँचकर बाद में प्रकाशित भी किया। इस वक्तव्य को नीचे दिया जाता है:—

श्री मलिक ने कहा—

"मैंने श्री बेली के वक्तव्य को ध्यानपूर्वक सुना है। मेरे विचार से इस वक्तव्य से ग्रेट-ब्रिटेन की जनता की, शान्ति के हित की रक्षा करने और उसे दृढ़ बनाने की तथा देशों एवं राष्ट्रों के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों में वृद्धि करने की अभिलाषा प्रकट होती है।

"शान्ति को सुरक्षित करने और राष्ट्रों के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों की वृद्धि करने से सम्बन्धित प्रश्नों के सम्बन्ध में सोवियत संघ की स्थिति अच्छी तरह से समझने के लिये मैं सोवियत संघ एवं सोवियत सरकार द्वारा शान्ति एवं सोवियत संघ और अन्यान्य देशों के बीच (जिनमें पश्चिमीय देश भी सम्मिलित हैं) मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों के निमित्त प्रयत्न करने के लिये अपनाये गये कार्यक्रम की मुख्य-मुख्य बातें बतलाना पसन्द करूँगा।

"मैं यह बतलाना चाहूँगा कि राष्ट्रों का तथाकथित पूर्व और पश्चिम में किया जानेवाला विभाजन सापेक्ष है और हमलोग इस विषय पर विस्तार पूर्वक विचार-विमर्श नहीं कर सकते क्योंकि कुछ देश तो भौगोलिक दृष्टि से पूर्व और पश्चिम दोनों ही हैं।

"शान्ति की सुस्थिरता एवं अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा से सम्बन्धित, सोवियत सरकार के कार्यक्रम के अन्तर्गत निम्नलिखित बातें हैं—

(१) महान राष्ट्रों के बीच सहयोग जिसकी अभिव्यक्ति उनके बीच एक 'शान्ति पैक्ट' स्थापित करने के प्रस्ताव द्वारा होती है।

(२) शस्त्रों को घटाना बिना किसी शर्त के लगाये ही परमाणु शस्त्रों का निषेध तथा इस निषेध पर अन्तर्राष्ट्रीय नियंत्रण की स्थापना।

(३) जर्मनी के सम्बन्ध में पोट्सडाम के निर्णयों का पूर्ण एवं दृढ़तापूर्वक परिपालन।

(४) जर्मनी एवं जापान के संग शान्तिमय समझौते निश्चय करने।

(५) समस्त देशों के बीच व्यापारिक एवं आर्थिक सम्बन्धों की वृद्धि।

"ऐसे एक पंच राष्ट्रीय संधि के परिणामस्वरूप संयुक्त राष्ट्र निस्सन्देह अपने मौलिक उद्देश्य के लिये अर्थात् छोटे-बड़े राष्ट्रों के सिद्धान्त पर आधारित अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के संघटन एवं उसकी वृद्धि के लिये प्रयत्नशील हो सकेगा। इन सन्धि के परिणाम स्वरूप एक साथ ही और सब तरह के क्रमिक एवं नियंत्रित निःशस्त्रीकरण की संभावना में अवश्य वृद्धि हो सकेगी, जिससे शस्त्रों के लिये दौड़ का ही अन्त नहीं होगा अपितु परमाणु शस्त्र एवं विनाश के अन्य शस्त्रों का भी पूर्ण निषेध हो जायगा। इस सन्धि से विभिन्न देशों के बीच स्वाभाविक आर्थिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्धों की स्थापना एवं उनमें वृद्धि भी निश्चित हो जायगी।

"मैं इन सभी युक्तियों का सविस्तर वर्णनकर उन प्रश्नों के सम्बन्ध में सोवियत संघ की स्थिति स्पष्ट करने की पूरी चेष्टा करूँगा जिन्हें श्री बेली ने अपने वक्तव्य के अन्तर्गत उपस्थित किया है और जिनमें आपलोगों के प्रतिनिधिमण्डल के अन्य सदस्यों की भी सहमति है।

"*प्रथम प्रश्न के सम्बन्ध में*, जिसमें शत्रुतापूर्ण प्रचार का उल्लेख किया गया है, मैं निम्नस्थ स्पष्टीकरण करना चाहूँगा। सोवियत संघ सदैव शान्ति, एवं सहयोग-भाव प्रेरित सभी देशों के साथ सहयोग की नीति के पक्ष में रहा है और रहता है। सोवियत संघ किसीको धमकी नहीं देता। इसके पास लुटेरों और आक्रमणकारियों की न कोई योजना है और न हो सकती है। शान्ति और सहयोग की नीति शत्रुतापूर्ण प्रचार के लिये स्थान नहीं छोड़ती। यह दूसरे देशों के प्रति शत्रुतापूर्ण प्रचार नहीं करता। परन्तु इसके सर्वथा विपरीत सोवियत संघ निश्चित रूप से इस बात पर जोर देता है कि संयुक्त राष्ट्रसंघ युद्ध-प्रचार एवं मिथ्यापूर्ण समाचार के प्रसारण पर रोक लगाने के लिये उचित कार्रवाई करे। मिथ्या एवं शत्रुतापूर्ण समाचार और युद्ध-प्रचार से मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों के लिये खतरा उत्पन्न होता है और शान्ति एवं अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की सुदृढ़ता में बाधा पहुँचती है! युद्ध-प्रचार से विभिन्न देशों के बीच पारस्परिक सम्बन्धों में क्षोभ एवं कटुता उत्पन्न होती है। अतः, शान्ति की सुस्थिरता के लिये और मानवता को नवीन कष्टों से छुटकारा दिलाने के लिये कोई भी सच्चा प्रयत्नशील व्यक्ति इस प्रश्न की उपेक्षा नहीं कर सकता।

"यह भलीभाँति विदित है कि १६४७ में संयुक्त राष्ट्र के द्वितीय अधिवेशन में सोवियत संघ ने युद्ध-प्रचार के निषेध के लिये एक प्रस्ताव उपस्थित किया था। सोवियत प्रतिनिधिमण्डल ने इसे स्वीकृत करने के लिये अधिवेशन में जोर दिया और इसके पक्ष में अपना मत दिया। सोवियत संघ की स्थिति सदैव यही रहती है। कोई भी व्यक्ति किसी ऐसे सोवियत राजनीतिज्ञ, सैन्याधिकारी अथवा लोकनेता का नाम नहीं बता सकता जो संयुक्तराज्य अमेरिका, इंग्लैंड अथवा किसी अन्य देश के विरुद्ध आक्रमण के लिये आह्वान करता हो। युद्ध प्रचार का प्रयत्न करने वालों को दण्ड देने के लिये सोवियत संघ में एक विशेष कानून बनाया गया है। संयुक्त राष्ट्र के पाँचवें अधिवेशन में नवीन युद्ध के आतंक को दूर करने की घोषणा वाले प्रस्ताव को उपस्थित करते समय सोवियत संघ की ओर से यह प्रस्ताव किया गया कि अधिवेशन अनेक देशों में एक नवीन युद्ध के प्रचार की निन्दा करे तथा सोवियत संघ ने सभी देशों से इस प्रकार के प्रचार के निषेध की और इस निषेध को भंग करने वाले समस्त व्यक्तियों को दंड देने की माँग की। आक्रमण की भावना रखने वाले "संयुक्त राष्ट्र संघ में संयुक्त राज्य अमेरिका के नेतृत्व में दल द्वारा यह प्रस्ताव अस्वीकृत कर दिया गया। सोवियत प्रतिनिधि ने भी अपने वक्तव्य के बीच संयुक्त राष्ट्र संघ में इसकी चर्चा की थी कि सैकड़ों अमरीकी पत्रिकायें (संयुक्त राष्ट्र संघ की इच्छा के प्रतिकूल) सोवियत संघ के सम्बन्ध में भाँति-भाँति की कपोल-कल्पित कथाओं

एवं आरोपों का सृजन और मनगढ़न्त बातों का प्रकाशन कर उसके विरुद्ध शत्रुतापूर्ण प्रचार करती है। संयुक्तराज्य अमेरिका एवं ग्रेटब्रिटेन के प्रमुख राजनीतिज्ञों द्वारा भी इसी मनोवृत्ति के परिचायक वक्तव्य दिये जाते हैं। ये राजनीतिज्ञ सोवियत संघ की शान्तिपूर्ण नीति को आक्रामक और ग्रेट-ब्रिटेन तथा संयुक्तराज्य अमेरिका की आक्रामक नीति को शान्तिपूर्ण बतलाने की चेष्टा करते हैं। सोवियत संघ के सम्बन्ध में मिथ्यापूर्ण प्रचार द्वारा ब्रिटेन और संयुक्त राज्य के राजनीतिज्ञ अपने देशों में अधिकाधिक शस्त्रों के इकट्ठे किये जाने को उचित सिद्ध करने और अपने देशवासियों को नवीन युद्ध में घसीटने का प्रयत्न करते हैं।

"इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि शान्ति को सबल करने वाले सच्चे भावों से युक्त वक्तव्यों के प्रकाशन का सोवियत संघ में सदैव हार्दिक स्वागत किया जायगा। परन्तु संयुक्त राज्य के सम्बन्ध में एक विपरीत उदाहरण दूँगा। सोवियत प्रतिनिधि ने एक बार संयुक्त राष्ट्र संघ में दोनों पद्धतियों के शान्तिमय ढंग से साथ-साथ रहने की आवश्यकता पर एक वक्तव्य दिया था। उसने इस प्रसग में अमरीकी पत्रकार को स्तालिन द्वारा दिये गये उत्तर का उल्लेख किया था जिसमें इस बात को बतलाया था कि सोवियत जनता एवं सोवियत सरकार दोनों की कामना यही है कि अमरीका और रूस के बीच सैनिक संघर्ष का अवसर ही नहीं उपस्थित होने पाये परन्तु संयुक्त राज्य की सरकार ने सूचना एवं प्रचार के समस्त साधनों के द्वारा इस वक्तव्य के किसी अंश को भी रेडियो पर न्यूज रील में अथवा टेलीविजन पर दिखलाये जाने में रोक लगा दिया था।

"*द्वितीय प्रश्न* (सोवियत संघ एवं पश्चिमीय देशों के बीच अधिक मुक्त मेल-मिलाप की आवश्यकता) के सम्बन्ध में अर्थात् प्रतिनिधिमण्डलों एवं व्यक्तियों के बीच सम्पर्क के सम्बन्ध में यह भलीभाँति विदित है कि रूस में प्रतिनिधिमण्डलों एवं सार्वजनिक संस्थाओं के सदस्यों के आवागमन पर और ऐसी संस्थाओं एवं दूसरे देशों के व्यक्तियों के द्वारा पत्र व्यवहार पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है। यहाँ आने पर मुझे संयुक्त राज्य अमेरिका और ग्रेट ब्रिटेन से भेजे गये आठ पत्र मिले। (विषय निरपेक्ष ढंग से) गत सितम्बर में मैंने शान्ति आंदोलन की मेरीलैंड समिति के इसी प्रकार के प्रश्न (अर्थात् क्या सोवियत संघ स्थायी शान्ति की रक्षा के लिये अनिवार्य पारस्परिक अन्तर्ज्ञान की दृष्टि से, सोवियत जनता एवं अमेरिका वासियों के बीच विचारों एवं सूचनाओं के मुक्त विनिमय के पक्ष में है!) का निश्चयतः स्वीकारात्मक

उत्तर दिया था। आपलोगों के प्रतिनिधिमण्डल के रूस आगमन से ही इस बात की पुष्टि होती है कि सोवियत संघ में इस प्रकार के आवागमन पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है। सोवियत संघ एवं अन्यान्य देशों के भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के बीच पत्र-व्यवहार होने के प्रमाण सोवियत प्रेस एवं अन्य प्रकाशनों में मौजूद हैं। आपलोगों का प्रतिनिधिमण्डल इससे अवगत ही होगा कि अनेकों ट्रेड यूनियन संस्थाओं के प्रतिनिधिमण्डल गत वर्ष एवं इस वर्ष भी सोवियत संघ में आ चुके हैं। साथ ही सोवियत संघ की सार्वजनिक संस्थाओं एवं ट्रेड यूनियनों ने भी अपने-अपने प्रतिनिधि मण्डलों को ग्रेट ब्रिटेन में भेजा है। निम्नांकित आँकड़ों का उल्लेख पर्याप्त होगा—

१६५० ई० के बीच सोवियत संघ में ३२ देशों के १६२ प्रतिनिधि मण्डलों का आगमन हुआ था जिनमें भाग लेने वाले व्यक्तियों की कुल संख्या २१३४ थी। इनमें ६ प्रतिनिधिमण्डल तो ग्रेट ब्रिटेन से आये थे और इनके सदस्यों की संख्या ७४ थी। प्रतिनिधिमण्डल ब्रिटिश सार्वजनिक एवं ट्रेड यूनियन संस्थाओं द्वारा—उदाहरणार्थ राष्ट्रीय छात्रसंघ, ढलाई के कारखाने के मजदूरों, विद्युत् व्यापार संघ, सांस्कृतिक सम्बन्ध संस्थापक समाज एवं महिलाओं की संस्थाओं आदि द्वारा भेजे गये थे। सोवियत संघ सार्वजनिक ट्रेड यूनियन संस्था ने १६५० ई० के बीच २२ भिन्न-भिन्न देशों में अपने प्रतिनिधि मण्डल भेजे थे। सोवियत संघ से कुल १६३ प्रतिनिधिमण्डलों को भेजा गया था जिनमें १८६३ व्यक्तियों ने भाग लिया था। ग्रेट ब्रिटेन में ६ प्रतिनिधि मण्डल भेजे गये थे जिनमें भाग लेने वाले व्यक्तियों की संख्या २८ थी। १६५१ ई० के प्रथम ६ महीनों में १११ प्रतिनिधिमण्डल सोवियत संघ से अन्य देशों में भेजे गये थे। इनमें १२८८ व्यक्तियों ने भाग लिया था। इनमें से ६ प्रतिनिधिमण्डल ग्रेट ब्रिटेन में भेजे गये थे, जिनमें महिलाओं, युवकों एवं संस्थाओं के प्रतिनिधि थे। इसी अवधि के बीच (अर्थात् जनवरी से जून १६५१ ई० तक) सोवियत संघ में २८ देशों के ११० प्रतिनिधिमण्डलों का आगमन हुआ जिनमें आये हुए व्यक्तियों की संख्या १३६६ थी। उनमें ५ तो ब्रिटिश प्रतिनिधिमण्डल ही थे जिनके सदस्यों की संख्या ५४ थी। इन प्रतिनिधि मण्डलों ने ग्रेट ब्रिटेन के मजदूरों विद्यार्थियों, शिक्षकों, ट्रेड यूनियनवादियों एवं सार्वजनिक संस्थायों के प्रतिनिधियों का प्रतिनिधित्व किया। अतः इससे क्या पता चलता है? इन तथ्यों से यह प्रकट होता है कि सोवियत संघ में इस प्रकार का कोई प्रतिबन्ध नहीं है, साथ ही साथ हमलोग यह तथ्य स्मरण कर सकते हैं कि १६४८

में जब पश्चिमीय देशों में शोस्टैकोविच को कन्सर्ट (संगीत समारोह) देने की अनुमति नहीं दी गई तब इसका रूस में प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। ग्रेट ब्रिटेन में होने वाले 'शान्ति हितैषियों' की सभा में सम्मिलित होने के लिये सोवियत साहित्य, संस्कृति और विज्ञान के प्रमुख प्रतिनिधियों को 'विजा' (प्रवेशादेश) देना अस्वीकार कर दिया गया था। ये सभी तथ्य भलीभाँति जाने हुए हैं।

"अब अन्यान्य देशों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करने से सम्बन्धित बाद के प्रश्न के सम्बन्ध में यह विदित है कि शान्ति एवं शान्तिमय सहयोग का सतत पक्षपाती सोवियत संघ विभिन्न देशों की सार्वभौमिकता के सिद्धान्त का दृढ़तापूर्वक अनुसरण करता है। संयुक्त राष्ट्रसंघ में विभिन्न देशों के आंतरिक मामलों के सम्बन्ध में प्रश्न उठने पर सोवियत संघ की नीति भी ऐसी ही रही है। संयुक्त राष्ट्र के चार्टर (घोषणा पत्र) में दिये गये (दूसरे देशों के आंतरिक मामलों में) हस्तक्षेप न करने के नियम का सोवियत संघ दृढ़तापूर्वक पालन करता है। संयुक्त राष्ट्र संघ के पंचम अधिवेशन में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की वृद्धि के संबंध में सोवियत संघ ने एक प्रस्ताव उपस्थित किया कि यह वृद्धि बिना किसी भेदभाव के और समानता के आधार पर होनी चाहिये। सोवियत संघ के इस प्रस्ताव को संयुक्त राज्य और ग्रेट ब्रिटेन के प्रतिनिधिमण्डलों ने अस्वीकृत कर दिया।

"श्री बेली ने तदुपरान्त जिस प्रश्न की चर्चा की वह *अर्थात् निःशस्त्रीकरण का प्रश्न* अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। आपलोग निश्चयतः इससे अवगत होंगे कि सोवियत संघ ने शस्त्रास्त्रों की संख्या घटाये जाने एवं परमाणु शस्त्रों के शीघ्र निषेध के लिये तत्त्क्षण कार्रवाई करने के निमित्त अनेकों बार प्रस्ताव उपस्थित किया है। १९५०-५१ ई० में सोवियत संघ ने शस्त्रीकरण में एक तिहाई कमी करने का प्रस्ताव कर यह सुझाव दिया था कि संयुक्त राष्ट्र संघ की साधारण सभा के किसी अगले अधिवेशन में सशस्त्र सेनाओं में और कमी करने पर विचार किया जाय। शस्त्रास्त्रों एवं सशस्त्र सेनाओं में कमी करने के सम्बन्ध में सोवियत संघ की यही नीति है। इस प्रसंग में सोवियत प्रतिनिधि का वह उत्तर स्मरणीय है जिसे, उसने संयुक्त राष्ट्र संघ में मेरीलैंड समिति द्वारा पूछे गये एक प्रश्न के सम्बन्ध में दिया था तथा जिसका उल्लेख मैं कर चुका हूँ। प्रश्न यह था कि यदि संयुक्त राष्ट्र संघ के संघटन के अन्तर्गत दृढ़ नियंत्रण एवं निरीक्षण की व्यवस्था हो जाय तो सोवियत संघ व्यापक निःशस्त्रीकरण एवं परमाणु

शस्त्र के निषेध के पक्ष में रहेगा अथवा नहीं। सोवियत प्रतिनिधि ने स्वीकारात्मक उत्तर दिया कि सोवियत संघ पूर्णतया उसके पक्ष में रहेगा। यहाँ पर यह बतलाना उचित है कि संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रतिनिधि ने इस प्रश्न का सीधा उत्तर देने से बचने की चेष्टा की। यह संयुक्त राज्य अमेरिका का ढंग ही है। संयुक्त राज्य अमेरिका के ५ वर्षों के इतिहास से यही प्रकट होता है कि ग्रेट ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका के शासक राजनीतिज्ञों के प्रयत्नों के फलस्वरूप सोवियत संघ का निःशस्त्रीकरण सम्बन्धी प्रस्ताव बराबर अस्वीकृत कर दिया गया है।

"*विभिन्न देशों के बीच व्यापारिक एवं आर्थिक सम्बन्धों में वृद्धि करने का प्रश्न भी अत्यधिक* महत्वपूर्ण है। समस्त देशों के बीच आर्थिक एवं व्यापारिक सम्बन्धों की वृद्धि भी सोवियत संघ के शांति-कार्यक्रम को दृढ़ करने का अविच्छिन्न अंग है। सोवियत संघ ने इस सिद्धान्त पर आधारित (अपने) प्रस्तावों को संयुक्त राष्ट्र संघ में अनेकों बार उपस्थित किया है। जब (संयुक्त राष्ट्र का) पंचम अधिवेशन संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा शान्ति प्राप्त करने के २० वर्षीय कार्यक्रम की उन्नति पर विचार कर रहा था तब सोवियत संघ ने अन्य प्रस्तावों के साथ-साथ यह भी प्रस्ताव किया कि आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए देशों को टेकनिकल (औद्योगिक) सहायता देने की व्यवस्था की जाय और इस सहायता का उद्देश्य उन देशों की आर्थिक स्वतन्त्रता को दृढ़ करना एवं उनके आन्तरिक साधन, राष्ट्रीय उद्योग तथा कृषि के विकास में सहायता पहुँचाना हो। इनके सिवा इस सहायता के पीछे सहायक देश किसी प्रकार की राजनीतिक, आर्थिक अथवा सैनिक विशेषाधिकार की (प्राप्ति की) शर्त्त नहीं लगायें। सोवियत सरकार ने बिना किसी भेद भाव के समानता के आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की वृद्धि, समस्त देशों की सार्वभौमिकता के प्रति सम्मान एवं उनके आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करने के लिये प्रस्ताव किया। इस प्रस्ताव को संयुक्त राज्य एवं ग्रेटब्रिटेन के प्रतिनिधिमण्डलों ने अस्वीकार कर दिया।

"*अब संयुक्त राष्ट्र संघ में नवीन सदस्यों के प्रवेश एवं इसके संघटन में सुधार करने के प्रश्न के सम्बन्ध में*। नवीन सदस्यों के प्रवेश में और विशेषकर उन देशों के प्रवेश के सम्बन्ध में जो पहले से ही आवेदन कर चुके हैं, सोवियत संघ की

स्थिति संयुक्त राष्ट्र संघ को विभिन्न शाखाओं में सोवियत प्रतिनिधियों के अनेकों घोषणाओं एवं वक्तव्यों द्वारा अत्यन्त स्पष्ट की जा चुकी है। गत अधिवेशनों की ही भाँति सभा के पंचम अधिवेशन में भी सोवियत संघ ने अपना प्रस्ताव उपस्थित किया की सभा, सुरक्षा परिषद् से उन १३ राज्यों के आवेदन-पत्रों पर पुनर्विचार करने का अनुरोध करे जो पहले से ही आवेदन कर चुके हैं। उन राज्यों के नाम अलबेनिया, मंगोलिया का गणराज्य, बल्गेरिया, रुमानिया, हंगरी, फिनलैंड, इटली, आयर, पुर्त्तगाल, ट्रान्सजॉर्डन, ऑस्ट्रिया, लंका और नेपाल हैं।

"सोवियत संघ संयुक्त राष्ट्र संघ में इन समस्त देशों के प्रवेश के पक्ष में है किन्तु वह संयुक्त राज्य अमेरिका एवं ग्रेट-ब्रिटेन द्वारा अपनाई गई तथाकथित पक्षपात की नीति का विरोधी है। इस नीति का सार बिना किसी आधार के कुछ देशों को संयुक्त राष्ट्र संघ में सम्मिलित करना और कुछ देशों को नहीं करना है। संयुक्त राष्ट्र संघ के संघटन एवं कार्य में सुधार करने के लिये अभीष्ट परामर्श के सम्बन्ध में यह भलीभाँति विदित है कि संयुक्त राष्ट्र संघ के निर्माण में सोवियत संघ ने सर्वाधिक सक्रिय भाग लिया था। सोवियत संघ इस धारणा के साथ अग्रसर हुआ था कि इस अन्तर्राष्ट्रीय संस्था की शक्ति पंचमहाराष्ट्रों की सहकारिता एवं उनमें से किसीके भी पृथक्त्व की असंभवनीयता के सिद्धान्त में अन्तर्निहित है। इसका अभिप्राय यही है कि इस संस्था का कार्य केवल उसी अवस्था में सफल हो सकता है जब पंच महाराष्ट्र इस उद्देश्य के साथ काम करें। इस सिद्धान्त के अनुसार सोवियत संघ ने संयुक्तराष्ट्र संघ के सारे ही कार्यों एवं संघ के विचाराधीन समस्त महत्वपूर्ण प्रश्नों के सूक्ष्म विवेचन में सदैव सक्रिय रूप से भाग लिया है और संयुक्त राष्ट्र संघ के कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिये उपयुक्त प्रस्तावों को उपस्थित किया है। संयुक्त राष्ट्र संघ के संघटन के बाद सोवियत संघ ने सदैव इस संस्था को सुदृढ़ करने के निमित्त अभीष्ट कदम उठाया है और अन्य देशों द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर को भंग करने एवं जिस सुरक्षा परिषद् पर शान्ति एवं सुरक्षा का मुख्य उत्तरदायित्व है उसको धोखा देने की समस्त चेष्टाओं का सदैव विरोध किया है।

"सोवियत संघ ने संयुक्त राष्ट्र संघ के संघटनोपरान्त उसको सुदृढ़ करने के निमित्त सदा कदम उठाया है—इस तथ्य का युक्तिपूर्ण प्रमाण उन मुख्य प्रस्तावों द्वारा प्राप्त होता है जिन्हें सोवियत सरकार ने साधारण सभा के अनेकों

अधिवेशनों में उपस्थित किया है। सर्वप्रथम अधिवेशन में हमलोगों ने शस्त्रों में व्यापक कमी करने एवं परमाणु शस्त्र के उन्मूलनार्थ प्रस्ताव उपस्थित किये। द्वितीय अधिवेशन में हमलोगों ने नवीन युद्ध प्रचार के निषेध के लिये प्रस्ताव किया। तृतीय अधिवेशन में हमलोगों ने परमाणु शस्त्र के निषेध एवं सशस्त्र सैन्यों में एक तिहाई कमी करने के लिये एक अन्य प्रस्ताव किया। चतुर्थ अधिवेशन में हमलोगों ने नवीन युद्ध प्रचार की निन्दा करने के लिये एक प्रस्ताव को नये रूप में उपस्थित किया और पंच महाराष्ट्रों के बीच एक शान्ति-सन्धि स्थापित करने के लिये एक प्रस्ताव उपस्थित किया। पंचम अधिवेशन में सोवियत प्रतिनिधिमण्डल ने नवीन युद्ध के आतंक के निराकरण एवं विभिन्न राष्ट्रों के बीच शान्ति को सुदृढ़ करने के लिये प्रस्ताव किया। "प्रवदा" के लिये की गई एक वार्त्ता में श्री स्तालिन ने एक बार पुनः इस तथ्य पर जोर दिया है कि संयुक्त राष्ट्र संघ का निर्माण शान्ति की रक्षा के सिद्धान्त के रूप में हुआ था। सोवियत संघ संयुक्त राष्ट्र संघ के निर्माण में सर्वाधिक सक्रिय रूप से भाग लेते हुए और उसको सुदृढ़ करने का प्रयत्न करते हुए इस धारणा के साथ अग्रसर हुआ और होता है कि यह शान्ति की रक्षा के लिये एक विश्वसनीय संस्था बने और अपने चार्टर के कर्त्तव्यों के पालन द्वारा युद्ध की विभीषिका से आगामी पीढ़ियों की रक्षा करे। परन्तु यह स्पष्ट है और अच्छी तरह विदित है कि ग्रेट-ब्रिटेन एवं फ्रांस द्वारा समर्थित तथा आक्रमण करने की इच्छा रखने वाले सैनिक दल से मिले हुए संयुक्त राज्य अमेरिका के सरकारी क्षेत्रों के कारण एक ओर तो संयुक्त राष्ट्र संघ अधिकाधिक युद्ध का साधन होता जा रहा है और दूसरी ओर वह समान अधिकार सम्पन्न राष्ट्रों की विश्वव्यापिनी संस्था के रूप में अपना अस्तित्व भी खोता जा रहा है। इन राज्यों की सरकारों ने और विशेषकर संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार ने पंच महाराष्ट्रों की सहकारिता और उनमें से किसी एक के भी पृथकत्व की असंभवनीयता के सिद्धान्त का उल्लंघन किया है। ये राष्ट्र क्रमशः सोवियत संघ एवं चीन दोनों महान् राष्ट्रों को पृथक् कर देने की नीति का अनुसरण करते हैं।

"अब विश्व-शान्ति के लिये सोवियत संघ द्वारा प्रयास प्रारंभ किये जाने के सम्बन्ध में। सोवियत संघ ने संयुक्तराष्ट्र संघ एवं वैदेशिक मंत्रियों की परिषद् दोनों के द्वारा ही समस्त महत्वपूर्ण विषयों पर समझौता करने के लिये अनेकों बार प्रयास किया है। समझौते के निमित्त अधिकाधिक व्यवसायी-सदृश वार्त्तालापों में सम्मिलित होने के लिये सोवियत संघ की तत्परता का उदाहरण सोवियत संघ द्वारा वैदेशिक मंत्रियों की परिषद् की बैठक बुलाने

से तथा इस सम्बन्ध में हुए पेरिस कॉनफ्रेन्स में सोवियत प्रतिनिधियों द्वारा सक्रिय भाग लेने से मिलता है। यह विदित है कि इस प्रारंभिक सम्मेलन में संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रतिनिधि के प्रयत्नों के फलस्वरूप इस विषय पर सहमति की चेष्टा विफल हुई। ग्रेट ब्रिटेन और फ्रांस के प्रतिनिधियों ने भी अमेरिका के प्रतिनिधि का ही सक्रिय समर्थन किया था। इस प्रकार की स्थिति का अर्थ वर्त्तमान अन्तर्राष्ट्रीय अवस्था को कायम रखने के प्रयत्न के सिवा और क्या हो सकता है? तथ्य की बातें तो ऐसी ही हैं।"

परिशिष्ट २

सोवियत पृष्ठ भूमि

अनेक व्यक्ति यह नहीं महसूस करते कि यदि वे लोग किसी उत्तम अभिनव निर्देशिका को देखने का कष्ट करें तो उन्हें रूस एवं रूसवासियों के सम्बन्ध में अधिकांश सत्य का ज्ञान प्राप्त हो जायगा। (निस्सन्देह समस्त सत्य नहीं। कोई भी निर्देशिका रूसवासियों के जीवन का वास्तविक चित्र नहीं उपस्थित कर सकती, भले ही उसके तथ्य कितने भी सही क्यों न हों।) ग्यारहवें अध्याय में हमलोगों ने कुछ ऐसे प्रश्नों का विवरण उपस्थित किया है जो लौटने के बाद हमलोगों से सार्वजनिक सभाओं में एवं वैयक्तिक रूप से भी बार-बार पूछे गये हैं। इनमें अनेक अर्थात् शिक्षण, सामूहिकीकरण, सामाजिक सेवाओं, ट्रेड यूनियनों और न्याय एवं निर्वाचन से सम्बन्धित प्रश्न तथ्यसम्बन्धी हैं। उनके उत्तर पहले ही उदाहरणार्थ, 'चेम्बर्स इनसाइक्लोपेडिया' (चेम्बर विश्वकोष) के १६५० ई० वाले संस्करण में दिये जा चुके हैं और उनके सम्बन्ध में और सूचना (१६४६ ई० से ग्लासगो विश्वविद्यालय के लिये ब्लैकवेल, ऑक्सफोर्ड द्वारा प्रकाशित) 'सोवियत स्टडीज' के निबन्धों एवं (बर्मिंघम विश्वविद्यालय के वाणिज्य एवं समाज-विज्ञान विभाग द्वारा प्रकाशित) 'बुलेटिन्स ऑन सोवियत इकॉनोमिक डेवलपमेन्ट' द्वारा प्राप्त की जा सकती है।

इनमें से कुछ सूचनाओं को तो स्वयं प्राप्त करने और कुछ की प्रमाणिकता की जाँच करने का अवसर हमलोगों को उन सम्मेलनों एवं विचार-विमर्श के बीच प्राप्त हुआ था जिनका वर्णन हमलोगों ने तीन से आठ अध्याय तक किया है। इसके साथ ही हमलोगों को आज की रूस की पद्धति के वास्तविक संचालकों के सम्बन्ध में भी कुछ ज्ञान प्राप्त हुआ। तो भी इस परिशिष्ट में हमलोग केवल पृष्ठभूमि सम्बन्धी सूचना प्रस्तुत करते हैं। हमलोगों को यह सूचना ग्रेट ब्रिटेन से प्रस्थान करने के पूर्व ही प्राप्त थी और वस्तुतः यह प्रत्येक व्यक्ति के लिये प्राप्य है।

सर्व प्रथम यह जानना आवश्यक है कि 'रूस' शब्द "सोवियत संघ" का पर्यायवाची नहीं है। १६१७ ई० की जनक्रान्ति के फलस्वरूप रूसी साम्राज्य के विघटन होने के पश्चात् १६२२ ई० में सर्वप्रथम 'यूनियन ऑव सोवियट सोशलिस्ट रिपब्लिक्स (सोवियत समाजवादी गणतंत्रों का संघ)' का संघटन हुआ। "साम्राज्य" शब्द ने अपना गौरव खो दिया था; हमलोगों ने स्वयं इसके स्थान पर 'कॉमनवेल्थ ऑव नेशन्स' (राष्ट्र मण्डल)' को प्रतिष्ठापित किया है। यू० एस० एस० आर० (सोवियत संघ) १६ गणतंत्रों का एक संघ-राज्य है और उन्हीं में से एक 'रशियन सोवियट फेडरेटिव सोशलिस्ट रिपब्लिक, आर० एस० एफ० एस० आर० (रूसी सोवियत संघात्मक समाजवादी गणतंत्र)' है। १६३६ ई० के स्तालिन द्वारा दिये गये संविधान के अनुसार सोवियत संघ की उच्चतम सोवियत में दो सदन हैं। इनमें प्रथम 'चेम्बर ऑव यूनियन (संघीय सदन)' है जिसके प्रतिनिधियों का चुनाव प्रति तीन लाख जन-संख्या पर एक प्रतिनिधि के हिसाब से होता है। इस कारण विभिन्न गणातन्त्रों के प्रतिनिधियों की संख्या एक नहीं है। द्वितीय सदन 'चेम्बर ऑव नैशनलिटिज (जातीय सदन)' कहलाती है। इसमें प्रत्येक गणतंत्र से २५ प्रतिनिधि और इन गणतंत्रों के उपविभागों से इससे कुछ कम प्रतिनिधि भेजे जाते हैं किन्तु कुल सदस्य-संख्या ५७४ ही होती है। ये सदन वर्ष में दो बार अल्पकाल के लिये एक साथ अथवा अलग-अलग अपनी बैठक करते हैं। प्रायः इनका कार्य अपनी 'प्रेसिडियम' और मंत्रि-परिषद् के रिपोर्टों को सुनना होता है। सरकार की वास्तविक सत्ता इन्हीं मंत्रियों के हाथ में रहती है। सोवियत संघ की 'प्रेसिडियम' में एक अध्यक्ष, १६ उपाध्यक्ष (प्रत्येक गणतंत्र से एक) और २४ सदस्य होते हैं। यह 'प्रेसिडियम' ही वास्तविक रूप में विधान के नियमों को बनाती है। तो भी मंत्रिपरिषद् उच्चतम कार्यपालिका है और अपने 'डिक्री' (निर्णयों) द्वारा विधान निर्माण कर सकती है।

इन १६ गणतंत्रों को स्वेच्छापूर्वक अलग होने का अधिकार है परन्तु इस अधिकार के उपयोग किये जाने की कोई भी संभावना नहीं है क्योंकि वहाँ अधिक एकीकरण की प्रवृत्ति ही विद्यमान है। इस प्रसंग में, संयुक्त राज्य अमेरिका से मैसेचूसेट्स राज्य भला कभी विलग हो—ऐसी ही कल्पना की जा सकती है। संविधान में पहली फरवरी १६४४ ई० के एक संशोधन के अनुसार प्रत्येक गणतंत्र को अपनी सेना रखने और विदेशों के साथ राजनीतिक सम्बन्ध स्थापित करने का अधिकार प्रदान कर दिया गया है। संविधान में कोई संशोधन

करने के लिये उच्चतम सोवियत के दोनों सदनों से प्रत्येक में कम-से-कम दो तिहाई बहुसंख्यक मत की आवश्यकता होती है।

१८ वर्ष की अवस्था प्राप्त कर लेने के बाद कोई भी नागरिक (पुरुष या नारी) जो पागल नहीं है अथवा न्यायालय ने जिसे नागरिक अधिकारों से वंचित नहीं कर दिया है, मत दे सकता है। मतदान गुप्त तो होता है किन्तु वहाँ केवल एक ही राजनीतिक दल मतदान के लिये है, वह है सरकारी दल। मत दान देना आवश्यक नहीं है। कोई, नागरिक उम्मीदवारों के पक्ष अथवा विपक्ष में मत दे सकता है अथवा मत नहीं भी दे सकता है। उम्मीदवारों को मनोनीत करने का अधिकार कुछ संघटनों एवं समितियों को ही प्राप्त है : वे हैं साम्यवादी दल के संघटन, ट्रेडयूनियन, सहकारी समितियाँ, युवक संघटन एवं सांस्कृतिक समितियाँ। सोवियत संघ का कोई भी नागरिक २३ वर्ष की अवस्था प्राप्त कर लेने पर उच्चतम सोवियत के लिये निर्वाचित होने योग्य समझा जाता है और "इसके लिये जाति या राष्ट्रीयता, लिंग, धर्म, शिक्षा, निवास, सामाजिक श्रेणी, साम्पत्तिक स्थिति अथवा पिछले कार्यों का बिचार नहीं किया जाता" (संविधान की १३५वीं धारा)। (तो भी) वस्तुतः केवल साम्यवादी दल द्वारा स्वीकृत उम्मीदवारों को ही (जो उसके सदस्य नहीं भी हो सकते) सफल होने के लिये आवश्यक ५० प्रतिशत मत प्राप्ति की संभावना रहती है।

साम्यवादी दल की वास्तविक सदस्यता-संख्या बृहत् नहीं है (२० करोड़ की जन-संख्या के बीच केवल ५० लाख सदस्य हैं)। जनवरी १६४० ई० की "प्रवदा" के अनुसार उस समय गणतंत्रों की सोवियतों के कुल स्थानों में ७२ प्रतिशत, नगर सोवियतों में ५१ प्रतिशत, तथा ग्राम सोवियतों में (जहाँ सक्रिय साम्यवादी निश्चयतः अल्प संख्या में हैं) २४ प्रतिशत स्थान दल के सदस्यों के अधिकार में थे। सरकार-विरोधी दिये गये वोटों की संख्यायें उपेक्षणीय हैं और यथार्थ मतदाताओं की संख्या अत्यन्त ऊँची है। उम्मीदवारों की तालिका में वैज्ञानिक, व्यायामार्थी, स्टैखनोवाइट और कलाकारों आदि का नाम प्रचुर मात्रा में रहता है और इसका अर्थ निस्सन्देह यही होता है कि नामज़द करने के समय ही अत्यधिक तर्कवितर्क एवं सतर्कता से काम लिया जाता है जिससे काफी लोकप्रिय तालिका तैयार हो सके।

फिर भी साम्यवादी दल और विशेषकर 'पोलिटब्यूरो' (तथा वैधानिक मशीनरी के समान अथवा उससे भी अधिक शक्तिशाली इसके विभिन्न संघटनों)

का प्रभाव अत्यन्त अधिक है। ('कैवेलियर' ऑव दि गोल्ड स्टार' नामक फिल्म में यह स्पष्ट कर दिया गया था कि स्थानीय संघटन कर्त्ता का स्थानीय सहकारी कृषि के कार्य में कितना बड़ा हाथ था)।

यद्यपि सैद्धान्तिक रूप से रूसो गणतंत्र भी शेष १५ गणतंत्रों की समान स्थिति का ही है तथापि वास्तव में यह सर्वाधिक विस्तृत एवं महत्वपूर्ण है। इसमें पूर्वी यूरोप से साइबेरिया होते हुए प्रशान्त महासागर तक और आर्कटिक क्षेत्र से काले समुद्र तक विस्तृत सोवियत संघ का तीन-चौथाई से भी अधिक भाग सम्मिलित है। इसमें सोवियत संघ की कुल जनसंख्या का लगभग दो-तिहाई भाग निवास करता है। जनसंख्या का औसत घनत्व प्रति वर्ग मील कम है और १७ के करीब है (जबकि यूक्रेन में प्रति वर्ग मील औसत जनसंख्या १८० और इंगलैंड में ७४३ है)। इस अल्पता का कारण है इसमें सुदूर उत्तर के विशाल एवं यत्रतत्र ही आबाद क्षेत्रों का सम्मिलित होना। मास्को रूसी गणतंत्र के मध्यभाग के केन्द्र में स्थित है। इस भूभाग का क्षेत्रफल इंगलैंड का ६ गुना और इसकी जनसंख्या इंगलैंड से अधिक है (४ करोड़ १० लाख)। सोवियत संघ का लगभग एक तिहाई औद्योगिक उत्पादन इसी भूभाग में होता है। सोवियत संघ का करीब दशमांश कोयला मास्को तुला-क्षेत्र से प्राप्त होता है। मास्को और एडिनबर्ग दोनों करीब करीब एक ही अक्षांश पर स्थित हैं परन्तु मास्को की जलवायु और अधिक अतिशीतोष्ण कोटि की है क्योंकि यह एक वृहत् भूभाग के मध्य में है और यहाँ हमलोगों (इंगलैंड) की गल्फस्ट्रीम के समकारी प्रभाव का अभाव है। (सर्वप्रथम) १२ वीं शताब्दी से मास्को का नाम सुनने में आता है। अपने भवनों एवं गिरजाघरों के साथ-साथ क्रेमलिन के चतुर्दिक मास्को विकसित हुआ है। नगर का ¾ भाग १८१२ ई० में नष्ट कर दिया गया था। (मास्को के विद्यालयों के छात्र अभी भी नेपोलियन का सेना द्वारा छोड़े गये तोप के गोलों को खोज-खोज कर '१८१२ ई० संग्रहालय' में लाते हैं। हमलोगों ने इस संग्रहालय को देखा था। ये युद्ध चिह्न रूस पर हुए प्राचीन आक्रमणों की सदैव याद दिलाते रहते हैं)। पुनर्निर्मित मास्को की जनसंख्या १८६१ ई० में ३,८०,०००, १९१२ ई० में १६,२०,०००, और अन्तिम जनगणना (१९३९ ई०) के समय ४० लाख से भी ऊपर थी। यहाँ की जनसंख्या योजनानुसार अधिकतम ५० लाख तक रह सकती है। जनसंख्या की इस द्रुतवृद्धि ने जलपूर्त्ति की वृद्धि करना आवश्यक कर दिया था। फलस्वरूप एक १८ फु० गहरी नहर निकाली गई जो अब मास्को नदी को वोल्गा नदी

से संयुक्त करती है। यह नहर १६३७ ई० में खोली गई और अब इसमें मार्च के अन्त से लेकर आधे नवम्बर तक सदैव बड़ी-बड़ी स्टीमर चलते रहते हैं। इस अवधि के बाद इस में बर्फ जम जाती है। मास्को के आकार में शीघ्र वृद्धि के कारण आवास संकट भी तीव्र हो उठा है और यह बात रूस में कभी-कभी जानेवाले व्यक्ति को भी बिल्कुल स्पष्ट दीखती होगी।

लेनिनग्राड सोवियत संघ का द्वितीय नगर है। यह मास्को से ४०० मील की दूरी पर पश्चिमोत्तर दिशा में अवस्थित है। यह उतना ही उत्तर है जितना शेटलैंड द्वीपसमूह और यद्यपि जनवरी महीने में यहाँ मास्को की अपेक्षा अधिक ठंढक नहीं पड़ती तथापि शीतकाल के वृहत् होने के कारण इसे बहुत हानियाँ सहनी पड़ती हैं। इसकी स्थापना १७०३ ई० में पीटर महान् द्वारा हुई थी और इसका नाम सेंट पीटर्स वर्ग रक्खा गया था। मास्को के बदले यही रूस की राजधानी भी बना था। १६१४ ई० से १६२४ ई० तक यह पेट्रोगार्ड के नाम से प्रसिद्ध रहा किन्तु १६१७ ई० के बाद राजधानी यहाँ से हटा ली गई और मास्को ही रूसी गणतंत्र (आर० एस० एफ० एस० आर०) एवं समस्त सोवियत संघ की राजधानी बना। १६२४ ई० में इसका नाम पुनः परिवर्तित कर लेनिनग्राड रक्खा गया। फिनलैंड की सीमा के अत्यन्त निकट होने के कारण इसकी अवस्थिति राजधानी के लिये अनुपयुक्त थी। डाइडरौट के कथनानुसार इसको राजधानी रखना अपने हृदय को अपनी अँगुलियों के अन्त में रखने के समान था। १६१७ ई० की जनक्रान्ति के बाद विदेशी राष्ट्रों के हस्तक्षेप की अवधि के बीच इसपर विशेष रूप से आक्रमण किया गया था। द्वितीय महायुद्ध के समय भी इसपर आक्रमण हुआ था और यद्यपि इसपर कभी भी जर्मनों का वास्तविक अधिकार नहीं स्थापित हो सका तथापि इस अत्यन्त मनोरम नगर को अत्यधिक क्षति पहुँची। उस समय इसके सभी पूर्त्ति-मार्गों को बन्द कर दिया गया था, उद्योग-धन्धे नष्टप्राय होगये थे और यहाँ के निवासियों को भूखों मरने को नौबत आगई थी। राजनीतिक परिवर्त्तनों के साथ-साथ इस नगर की जनसंख्या में भी अत्यधिक परिवर्त्तन होता आया है। १६१५ ई० में यहाँ की जनसंख्या २३,४७,००० थी, १६२० ई० में यह केवल ७,२२,००० और १६३६ ई० में यह ३० लाख से भी ऊपर हो गई। १६४० ई० में सोवियत संघ के अन्तर्गत 'करेल फिनिश एस० एस० आर० (करेल फिनिश सोवियत समाजवादी गणतंत्र)' के मिला लिये जाने के फल-स्वरूप अब लेनिनग्राड पर स्थलमार्ग से आक्रमण किये जाने की संभावना कम हो गई है। यह नगर सोवियत संघ का बाल्टिक समुद्र में सबसे बड़ा बन्दरगाह है और शीतकाल में इसको खुला रखने के लिये हिम-फोड़कों की

आवश्यकता होती हैं। मास्को से इसे सीधे संयुक्त करने वाले रेल-पथ को १८५१ ई० में बनाया गया था। यह रूस का सर्वप्रथम मुख्य रेल-पथ था। यह पथ अत्यन्त बीहड़ दलदली भूभाग से गुजरते हुए भी बिल्कुल सीधा है।

हमलोगों के दल ने सोवियत संघ के मास्को, लेनिनग्राड और कीव, नामक तीन नगरों को देखा। कीव 'यूक्रेनियन एस० एस० आर० (यूक्रेन सोवियत समाजवादी गणतंत्र)' की राजधानी है। यह मास्को के दक्षिण-पश्चिम में करीब ४५० मील की दूरी पर स्थित है। इसका भी अक्षांश करीब-करीब वही है जो 'कॉर्निश रिवीयिरा' का है। यह "रूसी नगरों का पिता" है और इसका इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। इसकी वर्त्तमान जनसंख्या ८,००,००० से भी अधिक है। यह नगर उस भूभाग के केन्द्र में स्थित है जो पहले "रूस की रोटी की टोकरी" (रूस का गेहूँ भंडार) कहलाता था। परन्तु अब यूक्रेन में दिनोदिन अधिक उद्योगीकरण हो रहा है और अन्नोत्पादक आवश्यक नवीन क्षेत्र सुदूर पूर्व की ओर भी विकसित होते जा रहे हैं।

बाह्य संसार के साथ सोवियत संघ के सम्बन्ध पर विचार करते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि इसका कुल क्षेत्रफल करीब ८०½ लाख वर्गमील अथवा भूमंडल का छठा भाग है। यह संयुक्त राज्य अमेरिका का तीन गुना और शेष यूरोप के चौगुने से भी अधिक है। मास्को एडिनबर्ग के करीब १५०० मील पूरब और प्रशान्त महासागर में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सोवियत बन्दरगाह 'व्लाडिवास्टक' से ७५०० मील पश्चिम है। अमेरिका महादेश के पश्चिमोत्तर भाग में स्थित अलास्का प्रदेश को सोवियत संघ से अलग करने वाला बेरिंग का मुहाना केवल ५० मील चौड़ा है। जलवायु का विस्तार निम्न प्रकार का है। उत्तर में तो आर्कटिक की सदैव हिमयुक्त रहनेवाली भूमि है। और दक्षिणी काकेशस, दक्षिणी क्रीमिया और मध्य एशिया के भागों में उष्ण कटिबन्धों की जलवायु है। यहाँ के निवासी भी भिन्न-भिन्न जाति के हैं और भिन्न-भिन्न भाषायें बोलते हैं। फिर भी, रूसी भाषा (रशियन) शिक्षित वर्ग के बीच व्यापक होती जा रही है। (सोवियत संघ के अन्दर जाति एवं जल-वायु की यह विभिन्नता कुछ अंशों तक विदेश-यात्रा के प्रति सोवियत जनता की उदासीनता का कारण स्पष्ट करती है)।

सोवियत सीमा का दो-तिहाई भाग समुद्र-तट पर है, परन्तु इसका अधिकांश भाग वर्ष भर वर्ष के कुछ भाग के लिये दुर्गम रहता है और

इस कारण सोवियत संघ वृहत् जलशक्ति के रूप में नहीं है। सुदूर पूर्व में जापान सागर में ठीक कोरिया के ऊपर ब्लाडिवास्टक बन्दरगाह है। इस कारण इस प्रायद्वीप की प्रत्येक घटना में सामरिक दृष्टि से सोवियत संघ की अत्यधिक दिलचस्पी रहती है। अपनी ५००० मील लम्बी स्थल-सीमा पर सोवियत संघ के अनेकों पड़ोसी (राष्ट्र) हैं। आर्कटिक क्षेत्र में नार्वे है, उसके नीचे काले सागर तक फिनलैंड फिर पोलैंड, चेकोस्लोवाकिया, हंगरी और रूमानिया हैं। एशिया में इसकी सीमा पर टर्की, पर्सिया, अफगानिस्तान, चीन, मंगोलिया, मंचूरिया और उत्तरी कोरिया हैं और यह पाकिस्तान से बहुत दूर नहीं है। आक्रमण से बचाव के लिये सोवियत संघ की अत्यधिक चिन्ता का कारण बहुधा यह लम्बी किन्तु भेद्य सीमा ही बतलाई जाती है। इसीका एक पहलू "अनुयायी राज्यों" को पश्चिमी एवं दक्षिण-पश्चिम में सीमा राज्यों के रूप में उपयोग करने की नीति भी है। फिर भी सोवियत संघ की वृहत् सैन्य-शक्ति का कारण इसकी जनसंख्या का विस्तार और उसमें नवयुवकों की अधिकता है।

१६३६ ई० की जनगणना से यह ज्ञात हुआ कि सोवियत जनसंख्या का अर्द्धांश २२ वर्ष अथवा उससे भी कम अवस्था का है। जनसंख्या के आँकड़ों के अध्ययन से जिन आश्चर्यजनक तथ्यों का ज्ञान होता है उनमें यह केवल एक ही है। युद्ध के परिणाम स्वरूप काफी युवकों एवं वृद्धों की बलि पड़ी होगी, फिर भी सोवियत संघ की जनसंख्या अत्यन्त तेजी से बढ़ रही है और निस्सन्देह बढ़ती जायगी भी। किसी भी जनसंख्या की वृद्धि की प्रवृत्ति पुनरुत्पत्ति दर द्वारा नापी जाती है। (इससे वर्त्तमान पीढ़ी की जननियों के स्थान पर दूसरी पीढ़ी में होने वाली जननियों की संख्या का पता चलता है)। १६३६ ई० में यह दर समस्त सोवियत संघ में १·५४ और रूसी गणतंत्र में १·७ थी। ग्रेट ब्रिटेन में यह ०·८६ है और यद्यपि ग्रेट ब्रिटेन की जनसंख्या का ह्रास नहीं हो रहा है तथापि शीघ्र ही ऐसा होना निश्चित है। इस बीच लोगों के दीर्घजीवन के कारण यह (आबादी) वृद्ध भी होती जा रही है। सभी पाश्चात्य राष्ट्रों के लिये यही बात है, भले ही ह्रास-दर इतनी अधिक न हो। सोवियत संघ की "युवक" जनसंख्या विस्तृत होती जा रही है विस्तार के लिये उसके पास पर्याप्त स्थान है। यहाँ जनसंख्या का घनत्व प्रति वर्ग मील २५ से भी न्यूनतर है जब कि संयुक्त राज्य अमेरिका में औसत घनत्व ४४ और ग्रेट ब्रिटेन में ५०० से भी अधिक है। सोवियत संघ की केवल ७ प्रतिशत भूमि ही कृषि के काम में है परन्तु 'इकोनोमिक बुलेटिन फॉर यूरोप' (यूरोप की आर्थिक पत्रिका-

खण्ड ३, अंक २, पृष्ठ २५) के अनुसार कृषियोग्य भूमि १० प्रतिशत तक बढ़ाई जा सकती है और तृणस्थलों एवं चरागाहों सहित समस्त संभव कृषि क्षेत्र कुल राष्ट्रीय भूमि के ३० प्रतिशत के लगभग है। पश्चिमीय यूरोप की तुलना में यहाँ अन्नोत्पत्ति कम होती है, परन्तु कुल अन्नोत्पत्ति वृहत् है और सभी बड़ी फसलों की उत्पत्ति बढ़ रही है। गत ४० वर्षों में युद्ध के प्रभाव एवं सामूहिकीकरण के समय मवेशियों के नाश के कारण सोवियत संघ के मवेशियों की संख्या बढ़ नहीं पाई है। यहाँ की गायें अधिकांश यूरोपीय देशों की गायों की अपेक्षा कम दूध देती हैं। अतः सोवियत संघ उन्नत कृषि विधियों के लिये अत्यधिक प्रयत्नशील है और इस दिशा में निरसन्देह उन्नति की संभावना भी है। जनक्रान्ति के बाद जनसंख्या के समाजिक गठन में अत्यन्त परिवर्त्तन हुआ है। १९३९ ई० में नगरवासियों (की संख्या) का प्रतिशत ३३ तक पहुँच गया था, जबकि १९१४ ई० में १२.८ ही था। प्रथम महायुद्ध के पूर्व जनसंख्या का ६५ प्रतिशत भाग स्वतंत्र कृषक एवं कारीगर वर्ग था और कार्यालयों एवं कारखानों में काम करने वाले केवल १६.७ प्रतिशत थे, किन्तु अब जनसंख्या का करीब अर्द्धांश अन्तिम सूची में है और शेष जनसंख्या का अधिकांश भाग (कुल का ४६.९ प्रतिशत) सामूहिक कृषि और हस्तकर्म सहकारी समितियों का सदस्य है।

सोवियत संघ में व्यक्तिगत कृषि का करीब-करीब पूरा स्थान सामूहिक कृषि ने ग्रहण कर लिया है तथा उसमें बहुत कम कुछ राज्य के कृषि फार्म ने लिया है। गत बीसियों में कुलक वर्ग (जमीन्दार वर्ग) के प्रतिरोध को कुचलने के फलस्वरूप वृहत् संख्या में कैद एवं निर्वासन प्रारंभ हुआ था और अन्यान्य देशों में इन स्वतंत्र भूमिपतियों के प्रति करुणा और रूसी शासक वर्ग के प्रति रोष उत्पन्न होने का वास्तविक कारण यही था।

सामूहिक कृषि फार्मों (·कोलखोजी) की संख्या १९३८ ई० में करीब २½ लाख थी और उनमें १८० लाख किसान परिवार थे। प्रत्येक परिवार के पास अपना आवास-गृह, भूमि का एक छोटा भाग (एक से पाँच एकड़ तक), कुछ यंत्र और मवेशी रहते हैं, किन्तु भूमि, कृषि-भवनों, पशुओं, मवेशियों, चारा, बीज एवं अन्यान्य सामग्री आदि पर समस्त समुदाय का अधिकार रहता है। यदि कोई व्यक्ति इससे अलग होता है तो उसे अपने प्रसाधनों (भूमि को छोड़कर) का मूल्य नगद चुका दिया जाता है और उसको भूमि पर अन्यत्र दावा करने का अधिकार होता है। व्यक्तिगत भूमि टुकड़ियों की उपज उस परिवार की अपनी होती है, किन्तु इनमें काम करने का समय समुदाय के कार्य-

काल के बाहर ही होती है। व्यक्तिगत रूप से रखे हुए मवेशियों से प्राप्त वस्तुएँ भी परिवार की ही होती हैं। परन्तु सामूहिक कृषि फार्म की उपज समस्त समुदाय की होती है। क्षेत्र के सदस्यों को "कार्य दिवसों" के अनुसार उपज के रूप में अथवा नगद पारिश्रमिक दिया जाता है परन्तु काम एवं कौशल के अनुसार इन कार्य-दिवसों की गणना इस प्रकार की जाती है कि एक उत्कृष्ट कार्यकर्त्ता का एक सामान्य दिन एक साधारण कार्यकर्त्ता के एक से अधिक "कार्य-दिवस" के बराबर हो सकता है। कोई भी कार्यकर्त्ता अपनी अतिरिक्त उपज को स्थानीय बाजार में बेच सकता है, भले ही यह उपज उसे पारिश्रमिक के रूप में प्राप्त हुई हो अथवा अपने व्यक्तिगत भूभाग से। इन बाजारों में मूल्य का निर्धारण माँग-पूर्त्ति के ऊपर ही निर्दिष्ट होता है। हमलोगों के दल के कुछ व्यक्तियों को कीव के समीप एक सामूहिक फार्म देखने और इसकी कार्यविधि का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ था और इसका वर्णन षष्ठ अध्याय में किया जा चुका है।

राज्य-फार्मों (सोवखोजी) की संख्या १६३८ ई० में ४००० थी और उसमें राज्य द्वारा नियुक्ति व्यवस्थापकों के अधीन १३,००,००० मजदूर काम करते थे। ये क्षेत्र प्रायः एक ही फसल में विशिष्टता प्राप्त करते हैं। राज्य की एक प्रतिनिधिसंस्था द्वारा, जो जैगोसर्नो कहलाती है, इन राज्य के फार्मों की कुल उपज और सामूहिक फार्मों की कुल शाकोत्पत्ति का अधिकांश (करीब ३० प्रतिशत) इकट्ठा किया जाता है। इसके अन्तर्गत उपज के रूप में कर चुकाना राज्य के यंत्र-ट्रैक्टर स्टेशनों (प्रत्येक लगभग ३० सामूहिक क्षेत्रों में काम करता है) को सेवाओं का मूल्य, राज्य-ऋण का पुनर्दान और उपभोक्ता सहकारी समितियों के हाथ फसलों का बेचना सम्मिलित हैं। कुल शाकोत्पत्ति का शेष ६२ प्रतिशत मोटे तौर पर दो भागों में बाँट दिया जाता है। यथा आधा बीज अथवा फार्मों में चारा के काम में लाया जाता है और आधा सामूहिक फार्म के सदस्यों को पारिश्रमिक के रूप में प्रदान कर दिया जाता है।

सरकारी अनुमान के अनुसार द्वितीय महायुद्ध में ६८,००० सामूहिक फार्मों और २,८६० यंत्र एवं ट्रैक्टर स्टेशनों को नष्ट कर दिया गया था और १३,७०० ट्रैक्टरों एवं लाखों घोड़ों और मवेशियों आदि को या तो नष्ट कर दिया गया अथवा अन्यत्र भेज दिया गया था। सोवियत कृषि अभी तक युद्ध की इन क्षतियों की पूर्त्ति करने में कदाचित् अक्षम रही है तो भी उसमें उन्नत

विधियों के प्रयोग के लिये अनुसन्धान एवं योजना का कार्य वृहत् मात्रा में हो रहा है। इसके लिये कृषि-विज्ञान एकेडेमी से सोवियत कृषि का सम्बन्ध स्थापित कर दिया गया है। जबतक मवेशियों की स्थिति में सुधार नहीं होता तबतक सोवियत संघ में वस्त्राभाव बना रहेगा, क्योंकि कुछ विदेशों से आयात होने पर भी वहाँ ऊन और चमड़े की कमी है। सोवियत संघ का मुख्य आयात मशीनरी है और मुख्य निर्यात अन्न एवं लकड़ी है। सापेक्षिक दृष्टि से इस व्यापार का अधिक प्रतिशत ग्रेट-ब्रिटेन के साथ होता है।

सोवियत संघ अधिकांश कच्चे माल के लिये करीब-करीब आत्मनिर्भर है और विस्तार के अनुसार इसकी जनसंख्या अत्यन्त कम है। इसी कारण ग्रेट-ब्रिटेन की अपेक्षा सोवियत संघ में वैदेशिक व्यापार की एवं विदेशों से यात्रियों के आने से जो लाभ पहुँचता है उसकी आवश्यकता कम है यद्यपि एक सन्तुलित अर्थव्यवसाय के लिये कुछ आयातों का होना आवश्यक होता है। ग्रेट-ब्रिटेन के लिये वैदेशिक विनिमय की दर, जो प्रति पौंड ११ रूबल है, के अहितकर होने का कारण संभवतः यही है अथवा अनेक कारणों में एक यह भी है।

यद्यपि सोवियत संघ में प्राकृतिक प्रसाधनों का प्राचुर्य है तथापि वे पूर्णतया विकसित नहीं हैं और इसका कारण कुछ अंशों तक दूरी, जलवायु और यातायात एवं पूँजी के अभाव की कठिनाइयाँ हैं। इन सभी समस्याओं पर संघ की सभी वैज्ञानिक अनुसंधान-शालायें अधिक ध्यान दे रही हैं और इन अनुसन्धान-शालाओं के कार्य का संयोजन एवं नियंत्रण सोवियत संघ की विज्ञान एकेडेमी एवं स्थानीय एकेडेमियों द्वारा किया जाता है। सोवियत संघ की विज्ञान एकेडेमी के कार्यों के अन्तर्गत हमलोगों की 'रॉयल सोसायटी' और 'डिपार्टमेन्ट ऑव साइंटिफिक एन्ड इंडस्ट्रियल रिसर्च (वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसन्धान विभाग)' के कार्य दोनों ही सम्मिलित हैं। यह केवल (मौलिक एवं व्यावहारिक अनुसन्धान कार्य में लगी हुई) अनुसन्धानशालाओं का ही नहीं बल्कि (प्राणी-विज्ञान सम्बन्धी, समुद्रीय आदि) अनुसन्धान केन्द्र, प्रयोगशालाओं, पुस्तकालयों एवं आयोगों आदि का भी नियंत्रण एवं व्यय-वहन करती है। एकेडेमी के अध्यक्ष की स्थिति एक मंत्री के समान है और उनकी घोषणाओं से सरकारी नीति की अभिव्यक्ति होती है। एकेडेमी का एक प्रधान कार्य वैज्ञानिक विषयों में सरकार को परामर्श देना भी है। १९४८ ई० सोवियत संघ में वैज्ञानिक कार्यकर्त्ताओं की संख्या १,००,००० थी जो क्रान्तिपूर्व की संख्या की करीब ५० गुनी है।

वैज्ञानिक कार्यकर्त्ताओं की इस प्रभावोत्पादक वृद्धि के समान ही शिक्षा-सम्बन्धी-सुविधाओं में भी व्यापक एवं आश्चर्यजनक उन्नति हुई है। क्रान्ति से पूर्व शिक्षा अनिवार्य नहीं थी और निरक्षरों की बहुत बड़ी संख्या थी। अब ७ से १४ वर्षों तक की प्रारंभिक शिक्षा निःशुल्क एवं अनिवार्य कर दी गई है। वहाँ १० वर्षीय विद्यालय (माध्यमिक विद्यालय) भी हैं जिनमें १८ वर्ष की अवस्था तक छात्र शिक्षा प्राप्त करते हैं और तत्पश्चात् विश्वविद्यालयों, या औद्योगिक अथवा व्यावसायिक संस्थाओं में प्रवेश करते हैं। माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों को अन्तिम तीन वर्षों में थोड़ा शुल्क (प्रति वर्ष ५० रूबल) देना पड़ता है और विश्वविद्यालयों के छात्रों को उससे कुछ अधिक। फिर भी अनेकों छात्रों को छात्रवृत्तियाँ मिलती हैं। पाठ्यपुस्तकें अत्यन्त सस्ती हैं और गरीब छात्रों को मुफ्त भोजन एवं वस्त्र प्रदान किया जाता है। सोवियत संघ के स्कूलों में इस समय ३ करोड़ से अधिक और विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में ५ लाख से अधिक विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं। इनके सिवा अनेकों प्रकार के विशेष विद्यालय और ३ से ७ वर्षों तक के बालकों के लिये किंडरगार्टेन हैं। सोवियत संघ भर में पाठ्यक्रम एक ही है। स्कूलों में स्थानीय भाषाओं का उपयोग होता है किन्तु आठ वर्ष से ऊपर होने पर रशियन (रूसी भाषा) की शिक्षा दी जाती है। विश्वविद्यालय में प्रवेश करने के लिये परीक्षा देनी पड़ती है। हाँ, युद्ध से लौटे छात्र एवं विद्यालयों के पदक प्राप्त छात्रों को परीक्षा देने की आवश्यकता नहीं होती। शिक्षा पर राज्य का व्यय (जिसमें पुस्तकालयों, युवक संघों, चलचित्रों और थियेटरों का भी व्यय सम्मिलित है और व्यापक अर्थ में अत्यधिक शिक्षा-प्रदायक हैं) राष्ट्रीय आय के आठ प्रतिशत से अधिक है। वहाँ पर वयस्क शिक्षा केन्द्र हैं और अनेकों प्रकार के सन्ध्याकालीन क्लास भी होते हैं जिनसे कार्यकर्ताओं को आत्मोन्नति करने और उत्तमतर एवं अधिक उत्तरदायित्वपूर्ण पदों के योग्य होने के लिये अवसर एवं प्रेरणायें प्राप्त होती हैं। शिक्षा-सम्बन्धी नीति परिवर्त्तनशील है और समय-समय पर उसमें परिवर्त्तन किये जाते रहे हैं। अब तक उसमें दो वृहत् परिवर्त्तन किये गये हैं। पहला, १९३४ ई० से वहाँ (शिल्प सम्बन्धी विषयों से भिन्न) सांस्कृतिक विषयों पर अधिक जोर दिया जा रहा है और दूसरा १९४३ ई० से वहाँ बालक-बालिकाओं के लिये अलग स्कूलों की पुनर्व्यवस्था की गई है।

अभी-अभी प्रेरणाओं की चर्चा की गई है। १९३० ई० में स्तालिन ने घोषणा की थी कि पूर्ण साम्यवादी समाज मार्क्सवादी नहीं है और अब वहाँ पारिश्रमिक की पद्धति प्रगतिशील कार्य-दर पर आधारित है और उसमें उत्पत्ति-योजनाओं की पूर्त्ति अथवा अतिपूर्त्ति के लिये नगद पुरस्कार की भी व्यवस्था

है। सोवियत संविधान (मौलिक नियम) की १२ वीं धारा में "*योग्यता* के अनुसार कार्य और *कार्य* के अनुसार (*आवश्यकता* के अनुसार नहीं) वेतन" के समाजवादी सिद्धान्त को उद्धृत किया गया है। इसी धारा में आश्चर्य की बात है कि थेसलोनियन्स के द्वितीय पत्र (तृतीय अध्याय, पदसंख्या १०) से यह उद्धरण भी दिया गया है कि "जो कार्य नहीं करेगा, उसे भोजन नहीं दिया जायेगा"। (टिप्पणी—यह मूल रशियन का अँगरेजी अनुवाद है और इसे ही हमलोगों को प्रदान किया गया था। यह जिज्ञासा होती है कि संविधान के निर्माता अपने उद्धरण के उद्गम से अवगत थे कि नहीं। संभवतः वे अवगत थे क्योंकि स्तालिन को धार्मिक प्रशिक्षण मिला था और हमलोगों ने अनेकों प्रमुख सोवियत नागरिकों को अपनी युक्ति के समर्थन के लिये बाइबिल का उद्धरण देने में समर्थ देखा।) आर्थिक पुरस्कारों के सिवा उपाधियों, पदकों और अत्यधिक सुयोग्य कार्यकर्त्ताओं के चित्रों के प्रदर्शन के रूप में "लोकख्याति" भी उत्पादन के लिये अत्यन्त उच्च प्रेरणा है। विभिन्न लोगों की आय में अन्तर अत्यन्त अधिक हैं और यह अन्तर केवल विभिन्न प्रकार के कार्यों के लिये ही नहीं, वरन् प्रत्येक कार्य-समूह के अन्तर्गत भी है। उद्योग-व्यवस्थापक, जनाधिकारी बुद्धिजीवी, सुशिल्पियों स्टैखनोवाइटों और 'हीरोज ऑव लेबर' (श्रम वीरों) की आय सर्वाधिक होती है और उन्हें आवास एवं पारिवारिक सहायता के लिये नौकर रखने के सम्बन्ध में विशेषाधिकार प्राप्त हैं। जब राशनिंग व्यवस्था थी तब उनलोगों को खुले बाजार में क्रय करने का अधिकार प्राप्त था। १९४७ ई० के एक निर्णय के अनुासर कार्य काल अधिक से अधिक प्रति दिन आठ घंटा निश्चित किया गया है लेकिन विशेष श्रेणी के कार्यकर्त्ताओं के लिये इससे कम घंटों की व्यवस्था की गई है।

सोवियत संविधान समस्त नागरिकों को "वृद्धावस्था और रुग्णता अथवा असमर्थता की अवस्था में भी राज्य द्वारा परिपालन का अधिकार" और स्त्रियों को "आर्थिक, सरकारी, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं अन्य सार्वजनिक कार्यों के क्षेत्रों में पुरुषों के समान अधिकार" प्रदान करता है। सोवियत संघ में अब वस्तुतः बेकारी नहीं है। ट्रेड यूनियनें तो हैं किन्तु उनकी संघटन-विधि इस देश (इंगलैंड) से नितान्त भिन्न है। उनका कार्य निश्चयतः श्रमिकों के हितों की रक्षा करना है, और इस उद्देश्य की पूर्त्ति के लिये वे कार्य करने की अवस्थाओं से सम्बन्धित विधानों के निर्माण में सक्रिय भाग लेती हैं और तब उस पद्धति को संचालित करने में सहायता करती हैं (तृतीय परिशिष्ट देखिये)। राज्य की अधिकांश सामाजिक सेवाओं का प्रशासन ट्रेड यूनियनों के हाथ में रहता है और उनकी

सदस्यता ऐच्छिक होती है। ट्रेड यूनियनों का शुल्क पारिश्रमिक का केवल एक प्रतिशत होता है। जो लोग यूनियन के सदस्य नहीं होते वे उपलब्ध लाभों का केवल अर्द्धांश ही प्राप्त कर सकते हैं। इसलिये इसकी सदस्यता लाभदायक है। सामूहिक कृषि कार्य के सदस्य बिल्कुल सरकारी योजना के अनुसार ही कार्य नहीं करते और अनेकों कृषि-फार्मों के पास अपनी योजनायें भी होती हैं।

ग्रेट-ब्रिटेन की भाँति यहाँ के राज्य औषधालयों में भी निःशुल्क चिकित्सा का प्रबन्ध है। सरकारी डॉक्टर इच्छा होने पर अवकाश काल में व्यक्तिगत प्रैक्टिस कर सकते हैं। चतुर्थ पंचवर्षीय योजना का लक्ष्य १६५० ई० तक ६,८५,००० हास्पिटल सीटों की व्यवस्था करना था। गर्भपात अवैध घोषित कर दिया गया है। माताओं को मातृत्व-सम्बन्धी आर्थिक लाभों और प्रसव के पूर्व और पश्चात् ६ सप्ताह तक विश्राम की स्वीकृति है। समस्त श्रमिकों को प्रति वर्ष दो सप्ताह की सवैतनिक छुट्टी का अधिकार है और वहाँ अनेकों विश्राम गृह तथा सेनेटोरिया हैं जहाँ पर मजदूर कम दर में ही रह सकते हैं। १६३८ ई० में ऐसे गृहों में भर्त्ती होनेवाले की वास्तविक संख्या कुल मजदूरों की संख्या के अष्टमांश के लगभग थी। अवकाश काल में ठहरने के लिये प्राइवेट होटल या डेरे अत्यन्त सीमित संख्या में हैं। नवम अध्याय को पढ़ते समय यह बात ध्यान में रखनी चाहिये। चूँकि देश बहुत वृहत् है और रेल एवं पथ का यातायात अपर्याप्त है; इसलिये मुख्य-मुख्य बन्दरगाहों से गणतंत्रों की राजधानियों को संयुक्त करने के लिये वायुमार्ग की निश्चित व्यवस्था है। वायुयानों का उपयोग दावानल का सामना, मरुस्थलों में बीज-वपन और टिड्डियों तथा इसी प्रकार के कीटाणुओं का नियंत्रण करने के लिये भी किया जाता है।

आयकर की दर केवल आय की मात्रा पर ही नहीं वरन् कार्य की कोटि पर भी निर्भर करती है। राज्य अथवा सहकारी उद्योगों द्वारा काम में लगाये गये मजदूरों को अपने प्रतिमास के पारिश्रमिक के प्रथम १५० रूबल पर कुछ नहीं देना पड़ता और १००० रूबल प्रतिमास से अधिक आय होने पर उन्हें पारिश्रमिक का अधिक से अधिक ७ प्रतिशत देना पड़ता है। स्वतंत्र कारीगरों को (जिनका अस्तित्व मालिक के रूप में संभव नहीं है) १० प्रतिशत अतिरिक्त कर भी देना पड़ता है। व्यवसायी लोग २०,००० रूबल की वार्षिक आय पर ८ प्रतिशत और ३,००,००० रूबल से अधिक वार्षिक आय होने पर कुल का ५० प्रतिशत तक कर देते हैं। इससे मजदूरी और वेतन के

विस्तार का भी पता चलता है। ब्याज के लिये धन को सार्वजनिक ऋणों में लगाया जा सकता है। यद्यपि सैद्धान्तिक रूप से ऋणों में धन लगाना ऐच्छिक है तथापि एक दृष्टि से यह व्यवहारतः अनिवार्य ही है क्योंकि किसी भी कारखाने के कर्मचारी सामूहिक रूप से इसमें दान करते हैं और यह दान उनके पारिश्रमिक से काट लिया जाता है। सोवियत नागरिकों की व्यक्तिगत सम्पति (उत्पादन की वस्तुओं को छोड़कर अन्य वस्तुओं के रूप में) पर कानून अथवा कार्य द्वारा किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं है। सोवियत नागरिक जितना चाहे उतना रख सकता है अथवा उत्तराधिकार में पा सकता है। १०,००० रूबल से कम की सम्पत्ति पर मृत्यु कर नहीं लगता और इस रकम से ऊपर की सम्पति पर १० प्रतिशत कर देना पड़ता है। अधिकांश कर अप्रत्यक्ष कर ही हैं और चीनी (इसकी खुदरा बिक्री की दर पर ८४-८६ प्रतिशत कर बैठा दिया जाता है), साबुन (इसका ६२ प्रतिशत), और जूतों (इसका ७० से ८० प्रतिशत) जैसी उपभोग की वस्तुओं के अधिक मूल्य का कारण यही है। वस्तुतः इस प्रकार के विक्रय-कर द्वारा उन वस्तुओं की बिक्री को नियंत्रित किया जा सकता है जो सीमित मात्रा में ही उपलब्ध हैं। कारखानों को विभिन्न दरों में लाभ कर चुकाना पड़ता है और यह दर उनकी विस्तार-योजना पर निर्भर होती है। इस प्रकार की राजकीय अर्थ-व्यवस्था निस्सन्देह उत्पादन के साधनों पर राज्य के स्वामित्व एवं राज्य द्वारा संचालित योजना का परिणाम है। चार वर्षीय अथवा पंचवर्षीय योजनाओं की सतत कार्यान्विति सोवियत अर्थ व्यवस्था का अविच्छिन्न अंग और अधिकांश सोवियत नागरिकों की व्यापक अभिरुचि एवं सहयोग का विषय है।

और जो सहयोग नहीं देते उनका क्या होता है? सोवियत संघ में अनेकों न्यायालय हैं और अभियोग की गंभीरता के अनुसार किसी एक न्यायालय में सोवियत नियम के भंग करने वाले व्यक्ति पर विचार किया जाता है। सोवियत संघ में उच्चतम स्तर पर 'सुप्रीम कोर्ट' सर्वोच्चम न्यायालय है और निम्नतम स्तर पर जन-न्यायालय हैं जो प्रत्येक मण्डल में एक अथवा एक से अधिक हैं। जन-न्यायालय के न्यायाधीश मण्डल के नागरिकों द्वारा तीन वर्ष के लिये निर्वाचित किये जाते हैं और उनलोगों को अपने निर्वाचकों के पास अपने कार्य के सम्बन्ध में सूचनायें देनी पड़ती हैं जिससे उनपर सार्वजनिक आलोचना हो सके तथा न्यायालयों के कार्य का सामान्य ज्ञान जन-साधारण के लिये संभव हो सके। फौजदारी अभियोगों पर विचार करते समय (हत्या जैसे भीषण अभियोग रहने पर भी) दण्ड देने में अपराधी के सुधार के दृष्टिकोण को अधिक महत्व प्रदान किया जाता है और अधिक-से-अधिक

दण्डाज्ञा १० वर्षों की जेल होती है। वहाँ पर जूरी-प्रथा नहीं है किन्तु उच्चतर न्यायालय में अपील करने का अधिकार है। छोटे-छोटे अपराधों के लिये (उदाहरणार्थ काम करने जाने में सदैव देर करने के अपराध में) काम करने के स्थान पर 'बलात्-श्रम' द्वारा दण्ड देने की व्यवस्था है अर्थात् दण्ड के रूप में पारिश्रमिक का २५ प्रतिशत अनिवार्य रूप से काट लिया जाता है इसलिये 'फोर्सड् लेबर' (बलात् श्रम) अथवा 'करेक्टिव लेबर' (शोधक श्रम) का अर्थ अनिवार्यतः किसी दण्ड स्थल पर कैद होना नहीं होता। हाँ, ऐसा भी हो सकता है। दुश्चरित्र अफसरों द्वारा लूट-खसोट तथा आग लगाकर घर जलाने एवं गबन जैसे अपराधों को सामाजिक व्यवस्था के लिये खतरनाक और प्रतिगामी (क्रान्ति विरोधी) समझा जाता है। ये अपराध राजद्रोह के समकक्ष समझे जाते हैं। राजद्रोह और उससे संबंधित अपराधों का निर्णय सैनिक न्यायालयों में किया जाता है। यदि कोई सैनिक सेना से पलायन करता है तो केवल उसे नहीं वरन् उसके समस्त परिवार को दोषी समझा जाता है और दंड दिया जाता है। यह व्यवस्था 'ओल्ड टेस्टामेंट' की नैतिकता का कुछ-कुछ स्मरण कराती है। राजनीतिक पुलिस को न्यायालय की देख-रेख में (जो अत्यन्त विधि-सापेक्ष हो सकती है) सोवियत संघ के विशिष्ट भागों में "सोवियत विरोधी दलों एवं कार्यों" को समाप्त करने अथवा उन्हें अन्य स्थानों में निर्वासित करने का अधिकार प्राप्त है। पुलिस के इस तरह के कार्य का विधिसापेक्ष दिखलाना कानून की दृष्टि से आवश्यक है। १६३८ ई० के बाद से राजनीतिक पुलिस को न्यायालय सदृश ऐसे विशेष अधिकार नहीं मिले हैं जो सामान्य न्यायालयों के अधिकारों के बाहर हों। यदि न्यायालय किसी व्यक्ति को निर्दोष घोषित कर दें तो यह दल उनके निर्णय के प्रतिकूल नहीं कार्य कर सकता (आर० स्लेसिंगर "सोवियत लीगल थीउरीः इट्स सोशल बैकग्राउन्ड ऐन्ड डेवलपमेन्ट (१६४५)" (सोवियत वैधानिक सिद्धान्त : इसकी सामाजिक पृष्ठभूमि एवं इसका विकास, १६४५) "चेंजिंग ऐटिच्यूड्स इन सोवियत रसादि फैमिली (१६४८)" (सोवियत संघ की परिवर्तित मनोस्थिति : परिवार, १६४८ ई०) और चेम्बर्स इन साइक्लोपीडिया (विश्वकोष), १६५० ई० में "सोवियत अधिनियमन" पर लिखित निबन्धों को देखें)। सामान्य जीवन के क्षेत्र में पश्चिमीय देशों की पुलिस की भाँति सोवियत पुलिस से भी यही आशा की जाती है वह नियम एवं व्यवस्था के प्रतिनिधि के रूप में अल्पतम बल-प्रयोग के साथ कार्य करेगी।

सोवियत संघ में सभी बच्चों के लिये विशेष भत्ता दिया जाता है और

बच्चों की संख्या ४ से अधिक होने पर इसमें और वृद्धि होती है। वृहत् परिवारों को केवल राज्य की सहायता द्वारा ही नहीं वरन् अधिक सन्तानवाली जननी की "सार्वजनिक प्रशंसा" द्वारा भी प्रोत्साहित किया जाता है और उसे सम्मान की पदवी भी प्रदान की जाती है। विवाहित अथवा अविवाहित माताओं की सन्तति की वैधानिक स्थिति में कोई अन्तर नहीं दिखलाया जाता। अविवाहित माताओं की सन्तान के पालन-पोषण के व्यय का उत्तरदायित्व राज्य पर होता है। सामान्यतः कानून बच्चों के हितों की रक्षा करता है और पति-पत्नी का स्थान समान समझा जाता है। विवाह के समय उनलोगों को एक ही नाम ('सरनेम') स्वीकार करने अथवा अपने पहले नामों को ही प्रचलित रखने के लिये निश्चय करना आवश्यक होता है (यह एक नाम दोनों में से किसी एक का हो सकता है)। तलाक निषिद्ध नहीं है, किन्तु अत्यन्त व्ययसाध्य है और इसकी स्वीकृति तभी प्राप्त होती है जब मनोभावों की पूरी जाँच करने और सहमति के समस्त प्रयासों के विफल होजाने के बाद न्यायालय इसके पक्ष में अपना निर्णय दे देता है। निश्चयतः पहले की अवस्था से यह एक भिन्न बात है। १६४४ ई० तक तलाक देना (तुलनात्मक दृष्टि से) इससे सरलतर था। जिन कार्यों से स्त्रियों की स्थिति की हीनता को प्रश्रय मिलता है उनको अपराधयुक्त समझा जाता है और विशेषकर सोवियत संघ के पूर्वी प्रदेश की मुक्त नारी को भयभीत करने के किसी प्रयत्न के लिये राजनीतिक अभियोगों जैसा कठोर दण्ड दिया जाता है। यदि कोई मुसलमान बुर्का नहीं पहनने के कारण अपनी पत्नी की हत्या कर दे तो उसे हत्या नहीं वरन् राजद्रोह समझा जाता है जो और भी बड़ा गुरुतर अभियोग है। सोवियत संविधान (१६४७) की १२४ वीं धारा में निम्नस्थ व्यवस्था की गई है—"नागरिकों के विवेक की स्वतंत्रता सुरक्षित करने के लिये सोवियत संघ में चर्च को राज्य से तथा विद्यालय को चर्च से अलग कर दिया जाता है। सभी नागरिकों को धार्मिक उपासना और धर्म-विरोधी प्रचार की स्वतंत्रता प्रदान की जाती है।" 'आर० एस० एफ० एस० आर० (रूसी गणतंत्र)' के दण्डविधान (मास्को, १६४८) की १२२ वीं धारा में लिखा है—"प्राइवेट अथवा राज्य द्वारा चलाये गये शैक्षणिक संस्थाओं अथवा विद्यालयों में अल्पवयस्कों को धार्मिक सिद्धान्तों की शिक्षा देने अथवा इस सम्बन्ध में निर्मित नियमों के उल्लंघन के लिये एक वर्ष तक 'करेक्टिव लेबर (शोधक श्रम)' द्वारा दंड प्रदान किया जायगा।" यह रूसी गणतंत्र के अधिनियम संग्रह, १६२६ की ३५३ वीं धारा का अनुमान है जिसके कुछ अंशों को (१७ और १८ अनुच्छेदों को) नीचे उद्धृत किया जाता है—

१७ "धार्मिक संघटनों के लिये"

(क) पारस्परिक साहाय्य कोष, सहकारी समितियों अथवा उत्पादक संघ का निर्माण करना और सामान्यतः स्वाधिकृत सम्पत्ति का धार्मिक आवश्यकताओं की पूर्त्ति के सिवा अन्य कार्य के लिये उपयोग करना,

(ख) अपने सदस्यों को भौतिक सहायता प्रदान करना,

(ग) बालकों, युवकों अथवा स्त्रियों के लिये विशेष प्रार्थना या अन्य सभाओं का आयोजन करना अथवा धार्मिक शिक्षादि के लिये बाइबिल, साहित्य, हस्तकर्म अथवा श्रम से सम्बद्ध सभाओं, समुदायों, क्षेत्रों और कार्यालयों का संघटन करना, सर्वथा निषिद्ध है।

भ्रमणों अथवा बालकों के लिये क्रीड़ा भूमि की व्यवस्था करना, पुस्तकालयों अथवा वाचनालयों को खोलना अथवा सेनेटोरिया या चिकित्सा सम्बन्धी सहायताओं का प्रबन्ध करना भी निषिद्ध है। प्रार्थना गृहों में केवल उन्हीं पुस्तकों को रक्खा जा सकता है जो सम्बद्ध मत के व्यवहार के लिये अनिवार्य हैं।

१८. सरकारी, सामाजिक अथवा प्राइवेट शिक्षण-संस्थाओं में किसी भी धार्मिक विश्वास की शिक्षा देने की स्वीकृति नहीं है। धार्मिक विषयों को एन० के० वी० डी० की आज्ञा से अथवा स्वायत्त गणतंत्रों में केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति की आज्ञा से प्रारंभ किया जा सकता है।

(यहाँ जिस एन० के० वी० डी० की चर्चा की गई है वह नारकैन वनुडेल अथवा आन्तिरिक मंत्रणालय है। इसके कार्यों के अन्तर्गत जन्म-मृत्यु आदि के रजिष्ट्रेशन जैसे सामान्य प्रशासकीय कार्य और सीमा की प्रतिरक्षा, राज्यान्तर्गत सुरक्षा की व्यवस्था और "शोधक श्रम' के प्रशासन आदि जैसे कार्य भी सम्मिलित हैं। भूतपूर्व खुफिया पुलिस, जो ओ० जी० पी० यू० के नाम से प्रसिद्ध थी, १९३४ ई० के बाद एन० के० वी० डी० में मिला दी गई है)।

इन प्रतिबन्धों के सहित सभी ऑर्थोडॉक्स, बैपतिस्ट, कैथोलिक, यहूदी और मुस्लिम चर्चों को अपने-अपने उपासना स्थान में अपनी-अपनी विधि से धार्मिक उपासना करने की स्वतंत्रता है। ऑर्थोडॉक्स चर्च को १९१८ ई० में विघटन कर दिया गया और अब यह दो विभागों में विभक्त कर दिया गया है—एक का नाम "प्राचीन चर्च" रक्खा गया है और इसके प्रधान "पैट्रीआर्क" कहलाते हैं। दूसरे का नाम "नवीन चर्च" रक्खा गया है और इसके

प्रधान "मेट्रोपोलिटन" कहलाते हैं। परन्तु इन दोनों प्रकार के चर्चों के प्रधान कार्यालय मास्को में ही हैं। १९४३ ई० से ऑर्थोडॉक्स चर्च के विषयों के लिये मंत्रिपरिषद् के अधीन एक परिषद् काम कर रही है। इसका उद्देश्य पैट्रीआर्क और सरकार से सम्बन्ध बनाये रखना है। १९४५ ई० में सोवियत संघ में २०,००० ऑर्थोडॉक्स धर्मसभायें थीं और ३०,००० पुजारी थे जिन-लोगों को राज्य-स्वीकृत धार्मिक विद्यालयों में प्रशिक्षण मिल चुका था। अत्यधिक कष्टसहन और तनाव की एक लम्बी अवधि के बाद राज्य और ऑर्थोडॉक्स चर्च के बीच के सम्बन्ध में सुधार हुआ है। इस परिवर्त्तन का कारण द्वितीय महायुद्ध में चर्च द्वारा सोवियत सरकार का समर्थन बतलाया जाता है। निस्सन्देह यह प्रत्यक्ष है कि इस परिशिष्ट में सोवियत संबंधी विषयों का जो संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है वह अपूर्ण और सम्भवतः असन्तुलित है। परन्तु यह प्रायः इसकी संक्षिप्तता का अनिवार्य परिणाम है। उद्धृत आँकड़े बिल्कुल आधुनिक नहीं हो सकते हैं क्योंकि १९३९ ई० से क्रमबद्ध एवं नियमित आँकड़े दुर्लभ हैं। समय-समय पर केवल एकाकी विषयों के सम्बन्ध में ही आँकड़े प्रकाशित होते रहे हैं। इस विवरण द्वारा उस प्रकार की सूचना देने का प्रयत्न किया गया है जो सोवियत संघ में वैयक्तिक रूप से जाने का अवसर नहीं पाने वालों के लिये भी प्राप्य है। इसका उद्देश्य एक पृष्ठभूमि प्रस्तुत करना भी है जिससे गत अध्यायों के कुछ विषय (पाठकों को) अधिक बोधगम्य हो सकें (उदाहरणार्थ, उच्चतम सोवियत के चैम्बर ऑव नैशनलिटिज के परराष्ट्र कार्य आयोग, रूसी शिक्षा मंत्री की अन्य गणतंत्रों के शिक्षा-मंत्रियों से समानता, चर्च पर प्रतिबन्ध और पैट्रीआर्क तथा मेट्रो-पोलिटन के सम्बन्ध आदि से सम्बद्ध विषय)। हमलोगों को तो इससे स्वयं सोवियत संघ के ही सूचनादाताओं की यथार्थता और ज्ञातव्यता की थाह लगने का एक साधन प्राप्त हुआ। कारण, यह अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि यद्यपि हमलोगों के विचारपूर्वक छले जाने की आशा नहीं थी तथापि हमलोग अपने देशवासियों द्वारा अत्यधिक विश्वास प्रवणता के आक्षेप से बचने के लिये कम-से-कम चिन्तित तो अवश्य थे। इसका एक विशेष कारण यह भी है कि क्वेकर के रूप में कार्य करने के कारण हमलोगों की प्रवृत्ति सशंक होने की अपेक्षा विश्वासी बनने की ओर होती थी। और अन्ततः जिन लोगों के बीच हमलोग जा रहे थे उनलोगों के रीति-रिवाजों, उनलोगों के नियमों और सामाजिक प्रवृत्तियों के प्रारंभिक ज्ञान से उनलोगों को समझने में और स्थायी (वस्तुओं के) आधार पर उनलोगों से मिलने के लिये आवश्यक अन्तर्ज्ञान प्राप्त होने में स्पष्ट रूप से सहायता मिलती थी।

परिशिष्ट २.

मास्को के ट्रेड यूनियन कार्यालय में

बुधवार, २५ जुलाई, १९५१

मिलड्रेड कीक द्वारा लिखित टिप्पणी

हमलोगों ने (ट्रेड यूनियनों के अन्तर्राष्ट्रीय विभाग के उपसभापति) श्री कुद्रीयत्सेव और (ट्रेड यूनियनों के पारिश्रमिक विभाग के) श्री लर्नर के भाषण सुने।

सोवियत संघ में ट्रेड यूनियनों का संघटन उत्पादन की इकाई अर्थात् किसी प्लैंट या कारखाने के आधार पर होता है। तब वे मिलकर ६६ शाखाओं में विभक्त हो जाती हैं। उदाहरणार्थ खान मजदूर, रेल मजदूर इत्यादि। इनका कार्य व्यापक पैमाने पर होता है। सदस्यता ऐच्छिक होती है किन्तु यथार्थतः ७५ से ८० प्रतिशत मजदूर इनके सदस्य अवश्य बनते हैं। सदस्य होने से अनेकों लाभ हैं और प्रत्येक नये मजदूर को इसे दिखला दिया जाता है। (हमलोगों को विश्वास दिलाया गया कि इस अप्रत्यक्ष प्रभाव के अतिरिक्त मजदूरों पर दूसरों द्वारा कोई सरकारी दबाव नहीं डाला जाता और न सदस्य नहीं बनने से कोई दण्ड ही दिया जाता है)। इस प्रकार के लाभों में ट्रेड यूनियन विश्राम-गृह में छुट्टी बिताने की सुविधा भी है।

यूनियनों का प्रबन्ध यूनियन की प्रतिनिधि महासभा द्वारा किया जाता है। दो वर्षों में कम-से-कम एक बार भी सभाओं का होना आवश्यक है। निर्वाचन गुप्तमतदान (प्रणाली) द्वारा होता है। वहाँ क्षेत्रीय संघटन (संस्थायें) हैं जिनकी 'वितरण समितियों' का निर्माण क्षेत्रीय निर्वाचन द्वारा होता है। इस प्रकार का प्रत्येक दल एक ट्रेड यूनियन संघटनकर्त्ता का निर्वाचन करता है और निर्वाचित व्यक्ति वर्ष में कम-से-कम एक बार रिपोर्ट भेजते हैं। क्षेत्रीय समितियों द्वारा संघटन कर्त्ताओं का निर्वाचन भी गुप्तमतदान द्वारा होता है।

प्रत्येक प्लैंट अथवा कारखाने में कुछ विशेष कार्यकर्त्ता रहते हैं जो वहाँ (एक्टीविस्ट्स) के ट्रेड यूनियन के कार्य में सहायता करते हैं। वे संस्कृति, निवास एवं तत्सदृश कार्यों को करने वाली समितियों का संघटन कर उनमें कार्य कर सकते हैं। इन कार्यों को सम्पन्न करने के लिये नियमित काम से कुछ अवकाश प्रदान कर दिया जाता है जिससे इस प्रकार के कार्य में आर्थिक दण्ड की बात नहीं उठती।

श्रमिकों की संरक्षा के लिये समिति

ट्रेड यूनियन के विशेष टेकनिकल निरीक्षक सुरक्षा की विधियों का पर्य्यवेक्षण करते हैं। [इससे यह प्रकट हुआ कि एच० एम० आई० (ग्रेट-ब्रिटेन के सरकारी इन्सपेक्टर) का कार्य यहाँ ट्रेड यूनियनों के अधीन है] ये निरीक्षक नियमोल्लंघन होने पर आर्थिक दण्ड दे सकते हैं तथा किसी प्लैंट के प्रशासन को न्यायालय में विचारार्थ उपस्थित भी कर सकते हैं। सुरक्षा विधियों के लागू नहीं रहने पर वे किसी कारखाने के काम को बन्द भी करा सकते हैं, 'सोशल इंस्ट्रक्टर्स' टेकनिकल निरीक्षकों की सहायता करते हैं और उन्हें नियमोल्लंघन के सम्बन्ध में सूचना देते हैं। वे मूलतया प्रकाश, शोर, वायु-गमनागमन जैसे विषयों से अर्थात् कार्य की सामान्य अवस्थाओं से सम्बन्ध रखते हैं। औद्योगिक संस्थाओं में उद्योग की विभिन्न शाखाओं का अध्ययन किया जाता है। सम्बद्ध उद्योग के मजदूरों की प्रतिरक्षा से भी उनका सम्बन्ध होता है (लेसली मेटकाफ ने खान उद्योग की एक ऐसी संस्था को देखा था)।

गत ५ वर्षों में इस प्रकार की संस्थाओं के परामर्शानुसार ६००० से भी अधिक प्लैंटों को पुनर्निर्मित एवं पुनः संघटित किया गया है।

सामाजिक बीमा परिषद्

सामाजिक बीमा सबके लिये निःशुल्क है और इसका शुल्क राज्य की ओर से प्रदान किया जाता है अर्थात यह एक बीमा कोष की व्यवस्था करता है जिससे मजदूर लाभ उठाता तो है किन्तु यह उसके लिये वस्तुतः निःशुल्क है क्योंकि इसके लिये उसे अपने पारिश्रमिक से कुछ भी नहीं देना पड़ता। सम्बद्ध कारखाना अथवा प्लैंट किश्त के रूप में अर्थ देता है और इस प्रकार २० खरब रूबल की प्राप्ति संभव हो जाती है।

इस कोष का उपयोग रुग्ण मजदूर अथवा गर्भावस्था में अवकाश प्राप्त

महिलाओं द्वारा किया जाता है। सामान्य गर्भावस्था में किसी महिला को (इस कोष के वेतन सहित) ७७ दिनों की छुट्टी मिलती है। विशेष गर्भावस्थाओं में यह छुट्टी ६६ दिनों तक बढ़ाई जा सकती है। इस अवधि के बीच जननी को चिकित्सा-सम्बन्धी परामर्श—उदाहरणार्थ, शिशु के भोजन के सम्बन्ध में—निःशुल्क प्राप्त होता है।

पेंशन

ये पेंशनें,

(क) कार्य काल में घायल मजदूरों को

(ख) वृद्धावस्था में

(ग) दीर्घकालीन सेवा के लिये

(घ) विधवाओं के पेंशन और पति की मृत्यु से उत्पन्न व्यय के लिये स्वीकृत की जाती हैं।

इन समस्त सामाजिक बीमाओं के उपयोग पर ट्रेड यूनियनों का अधिकार रहता है और एक प्रकार से (जो बिल्कुल स्पष्ट नहीं है) ये यूनियनें कारखाने से संयुक्त पोलिक्लिनिक अथवा स्वास्थ्य केन्द्र के कार्य का पर्यवेक्षण करती हैं।

पारिश्रमिक

(श्री लर्नर द्वारा वर्णित)

ये श्रम के लिये सामाजिक अनुदान के सिद्धान्त द्वारा निर्धारित होते हैं। अन्य शब्दों में, श्रम एक सम्माननीय कार्य है और प्रत्येक व्यक्ति को कार्य करने का अधिकार है, जैसा कि सोवियत संविधान द्वारा प्रकट है।

प्रत्येक नागरिक को केवल कार्य करने का ही नहीं, अपितु अपनी योग्यतानुसार कार्य करने का अधिकार है।

पारिश्रमिक आवश्यकतानुसार देने की अपेक्षा कार्यानुसार ही दिया जाता है। सोवियत संघ भर में समान कार्य के लिये समान पारिश्रमिक के सिद्धान्त का अनुसरण किया जाता है।

श्री लर्नर ने विषय-निरपेक्ष ढंग से कहा कि वे लोग उद्योग-धंधे में पूर्ण साम्यवाद के विरुद्ध हैं। उन्होंने स्तालिन के उस कथन को उद्धृत किया जिसे

उन्होंने (स्तालिन ने) एमिल लुडविग से कहा था। स्तालिन ने कहा था कि वे सभी लोगों के एक समान वेतन, एक प्रकार की वेशभूषा आदि में विश्वास नहीं करते।

उनलोगों को प्रोत्साहन देने के लिये पारितोषिक दिये जाते हैं जो उत्तम उत्पादन की मात्रा पर निर्भर होते हैं। अतएव वहाँ सभी उद्योग-धंधों में कार्यानुसार वेतन की दर और 'बोनस सिस्टम (पुरस्कार पद्धति)' प्रचलित हैं।

'उत्पादन आदर्श' और अनुदान की दर राज्य निर्धारित करता है, किन्तु एतदर्थ ट्रेड यूनियन, कारखाने के व्यवस्थापक एवं कार्यकर्त्ताओं का संयुक्त परामर्श आवश्यक होता है। (हमलोगों को ठीक-ठीक पता नहीं चला कि व्यवहार में इस परामर्श से कैसे काम होता है। उदाहरणार्थ बहुत बड़े पैमाने पर असहमति और अनिश्चित काल तक काम का रुका रहना—क्या ये सम्भव हो सकते हैं ?) एक बार निर्धारित हो जाने पर बिना ६ मास पूर्व सूचना दिये इन दरों को नहीं बदला जा सकता।

ऊपर उठने की सीमा निश्चित नहीं है और एक तेज एवं कुशल कार्यकर्त्ता इस निर्धारित दर के रहते हुए भी अपने काम की गति और अपना वेतन बढ़ा सकता है। वहाँ एक प्रगतिशील वेतन दर (पीस-रेट) भी प्रचलित है जिसके अनुसार एक निश्चित उत्पादन माप-दंड के ऊपर पहुँच जाने पर वह अधिक वेतन की दर मिलने के योग्य सिद्ध हो जाता है। इससे प्रेरणा की समस्या का समाधान होता है।

ये क्रमबद्ध वेतन-दरें निर्धारित होने के बाद पुस्तकाकार प्रकाशित की जाती हैं और उनका हवाला दिया जा सकता है अर्थात् प्रत्येक कार्य की दर निश्चित कर दी जाती है और प्रत्येक कार्यकर्त्ता की श्रेणी निश्चित कर दी जाती है। परन्तु कोई भी कार्यकर्त्ता अपनी श्रेणी से ऊपर उठ सकता है। इस कारण कार्यकर्त्ताओं की कार्य-कुशलता की वृद्धि के लिये विद्यालयों की व्यवस्था की गई है। चूँकि यंत्रीकरण से उत्पादन में वृद्धि होगी (और फलस्वरूप अधिक पारिश्रमिक भी प्राप्त होगा) इसलिये यंत्रों में सुधार और नवीन आविष्कारों के करने में कार्यकर्त्ता बहुत अभिरुचि रखते हैं।

कल्याण-सम्बन्धी सेवायें

कार्य करनेवाली माताओं के लिये अधिकांश कारखानों के साथ एक

शिशुगृह अथवा किंडरगार्टेन संयुक्त रहता है (कारखानों की ही भाँति दूकानों और विश्वविद्यालयों में भी इसकी व्यवस्था की गई है)।

बालकों के संरक्षण के लिये इनमें अत्यन्त कम शुल्क देना पड़ता है। वृहत् परिवार होने पर माँ-बाप को अपने बालकों को ४ वर्ष बाद धातृगृहों में निःशुल्क भेजने का अधिकार होता है।

वहाँ पारिवारिक आर्थिक सहायता को भी व्यवस्था है जिसकी मात्रा परिवार के विस्तार पर बढ़ती है। ६ बच्चों की माता को सम्मान-पदक मिलता है और १० बच्चों की माँ को "स्तालिन वीरांगना" की उपाधि से विभूषित किया जाता है और वह राज्य से अपनी सेवा के लिये विशेष मान्यता का दावा करती है।

यदि कोई कार्यकर्त्ता बीमार पड़ता है, तो उसे अपना कुल वेतन मिलता है और दो सप्ताह से दो मास तक निःशुल्क चिकित्सा भी प्राप्त होती है। तत्पश्चात् इसकी वृद्धि स्पष्ट रूप से निर्देशित शर्त्तों के अधीन होती है। यदि उसे किसी सेनेटोरियम अथवा विश्राम-गृह में भेजा जाता है तो उसे कुल व्यय का केवल ३० प्रतिशत देना पड़ता है। २५ लाख कार्यकर्त्ताओं को प्रतिवर्ष निर्धारित अवकाश प्रदान किया जाता है।

अन्य पुरस्कारों में भूमि के अन्दर २० वर्ष या उससे अधिक समय तक कार्य करने वाले खान मजदूरों को उच्च पेंशन देना सम्मिलित है।

विश्वविद्यायल के छात्र को अध्ययन काल में राज्य की ओर से वृत्ति मिलती है और उसका जारी रहना कुछ अंशों तक छात्र की सफलता पर निर्भर रहता है।

हमलोगों को बतलाया गया कि इन अप्रत्यक्ष भत्तों के कारण किसी व्यक्ति की आय को यथार्थ अंक से ४० प्रतिशत अधिक समझना उचित है।

सोवियत संघ में बेकारी नहीं है।

सभी खान मजदूर ५० वर्ष की अवस्था में पेंशन के अधिकारी होते हैं और उसके बाद भी कार्य करने योग्य रहने पर उन्हें पेंशन और पारिश्रमिक दोनों प्राप्त होते हैं।

राज्य द्वारा कारीगरों का प्रशिक्षण

उद्योग की कुछ शाखायें व्यापारिक विद्यालयों में उच्च प्रशिक्षण की व्यवस्था करती हैं। इनमें १६ वर्ष तक के युवा श्रमिक-श्रमिकाओं को भर्त्ती किया जाता है और इनमें व्यावसायिक विद्यालयों सदृश कार्य होता है। विश्वविद्यालयों की ही भाँति यहाँ भी छात्रों को थोड़ी वृत्ति मिलती है तथा निःशुल्क भोजन-वस्त्र मिलता है। यदि किसी कारखाने में पहले उनकी जाँच की जाती है तो उन्हें सामान्य दर के साथ-साथ उत्पादन की योग्यता के अनुसार पारिश्रमिक भी दिया जाता है। लाखों विद्यार्थी इस प्रकार स्नातक (विश्वविद्यालय) की डिग्री प्राप्त करते हैं और कितने स्टैखनोवाइट बन जाते हैं (स्टैखनोवाइट उद्योग के अन्तर्गत गति डालने वाले दलों के प्राण हैं)।

ये दो लम्बे वार्त्तालाप करीब-करीब भाषण जैसे हुए। हमलोगों के दल के दो व्यक्ति कार्यवश अन्यत्र चले गये, इसलिये क्रमभंग उत्पन्न हुआ और इससे प्रश्नार्थ समय माँगने के लिये हमें अनुरोध करने का मौका मिला। हमलोगों को प्रतीत हुआ कि इसे कुछ अनिच्छापूर्वक स्वीकार किया गया, किन्तु इस अनिच्छा का कारण कुछ और बातों को बतलाना ही था। निम्नांकित प्रश्न पूछे गये थे—

पदच्युति ?

अयोग्य कार्यकर्त्ता को पदच्युत किया जा सकता है और प्रत्येक व्यक्ति (नर या नारी) को कार्य-परिवर्त्तन का अधिकार है। प्रत्येक स्थान में कार्यकर्त्ताओं का कुछ अभाव है। यह बात उन तालिकाओं द्वारा प्रकट होती है जो रिक्त स्थानों को भरने की विज्ञप्ति के लिये सार्वजनिक रूप में प्रदर्शित की जाती हैं। कोई भी व्यक्ति इच्छा होने पर दूसरे दिन दूसरा कार्य पा सकता है। यदि कोई कार्यकर्त्ता कार्य छोड़ना चाहे (उदाहरणार्थ कोई लड़की किसी अन्य नगर में कार्य करने वाले लड़के से विवाह करने के लिये अपना कार्य छोड़ने की इच्छा करे) तो उसे कारखाने के निर्देशक को सूचना देनी पड़ेगी।

श्रम का निर्देश ?

विधि की दृष्टि से श्रम का कोई निर्देश नहीं है। जहाँ अधिक आवश्यकता है उन स्थानों में जाने के लिये विद्यालय से निकलनेवाले स्नातकों पर कुछ दबाव डाला

जाता है। एक व्यापार-विद्यालय के शिक्षार्थी को चुनने के लिये अत्यन्त सीमित संख्या में कार्य मिलते हैं।

चिकित्सा में स्नातकत्व (ग्रेजुएट की डिग्री) प्राप्त करने वाले युवक को जहाँ डॉक्टरों का अभाव है उन क्षेत्रों में जाने के लिये निर्देश दिया जा सकता है। उदाहरणार्थ उन्हें एक ग्राम-मण्डल में जाने के लिये कहा जा सकता है। ऐसे निर्देश प्राप्त व्यक्तियों के लिये आवास का प्रबन्ध करना आवश्यक होता है।

क्या व्यक्तिवादी (उदाहरणार्थ लेखक, कलाकार) के लिये ट्रेड यूनियनें हैं ?

अभिनेता 'थियेटर कार्यकर्त्ता यूनियन' के सदस्य होते हैं। वैज्ञानिकों का भी एक ट्रेड यूनियन है और लेखकों के सम्बन्ध में भी यही बात है।

व्यावसायिक वेतन (उदाहरणार्थ, डॉक्टर) ?

स्पष्टतः कार्यानुसार वेतन दर साध्य नहीं है, किन्तु यदि कोई डॉक्टर बहुत दूर पर कार्य करता है, यदि वह विशेष कुशल है और विशेष उत्तरदायित्व ग्रहण करता है तो उसे अधिक वेतन दिया जाता है।

क्या सरकार में ट्रेड यूनियनों का प्रत्यक्ष प्रतिनिधित्व है ?

ऐसा केवल सरकार और ट्रेड यूनियन के अधिकारियों के वार्षिक परामर्श के समय होता है। परन्तु ट्रेड यूनियन के अनेकों अधिकारी उच्चतम सोवियत के सदस्य भी होते हैं।

क्या किसी ट्रेड यूनियन द्वारा काम नहीं करने वाली विवाहिता स्त्रियों का प्रतिनिधित्व होता है ?

वृहत् परिवारों की स्त्रियाँ काम करने के लिये बाहर नहीं जा सकतीं और वहाँ गृहिणियों का कोई संघ नहीं होता। परन्तु वे अपने पतियों के कार्यस्थल पर के क्लबों में भाग लेती हैं। वे अपने मण्डल की सोवियत की सदस्या बन सकती हैं। इसमें उनसबों की विशेष अभिरुचि हो सकती है। उदाहरणार्थ, वे आवास के प्रबन्ध में विशेष रुचि रख सकती हैं। नागरिक विषयों पर अभिरुचि अथवा दायित्व से रहित व्यक्तियों की संख्या सोवियत संघ में अत्यल्प है।

क्या राज्य और ट्रेड यूनियन के बीच संघर्ष सम्भव है ?

बृहत् पैमाने पर संभव नहीं है। कारखाने के प्रशासन और ट्रेड यूनियन के कार्यकर्त्ताओं के बीच छोटे-मोटे संघर्ष होते रहते हैं। इस प्रकार के झगड़ों को सुलझाने के लिये दोनों पक्षों के समान प्रतिनिधित्व से युक्त एक आयोग की बैठक होती है। यदि झगड़े का अन्त नहीं होता तो न्यायालय की शरण ली जा सकती है। परन्तु पता लगाने पर हमलोगों को ज्ञान हुआ कि ऐसी कठिनाई बहुत कम उपस्थित होती है।

सभायें कितनी बार होती हैं ?

कारखाने की सभायें वार्षिक होती हैं जिनमें कार्यकर्त्ता, प्रशासकीय संस्था और ट्रेड यूनियनें पारिश्रमिक आदि की दर का संशोधन करती हैं। झगड़ों के प्रश्न को सम्बद्ध मंत्रणालय के पास भेज दिया जाता है।

यह सम्मेलन दीर्घकालीन एवं क्रान्तिजनक था, किन्तु इससे उन अनेक प्रश्नों के उत्तर प्राप्त हुए जो हमलोगों के मस्तिष्क में उत्पन्न हो रहे थे। इस कारण जहाँ तक मेरा प्रश्न है मैं इसे सफल मानती हूं। इस सम्मेलन में इन बातों का ठीक अंदाज लगाते समय सोवियत संघ के स्त्री-पुरुषों के जीवन के सम्बन्ध में बहुत बातें मालूम हुई। इस सम्मेलन में शासक दल के प्रति रूसी जनता के प्रबल जनोत्साह का कारण भी ज्ञात हुआ। श्री कुद्रीयत्सेव के शब्दों में—"श्रम देश के लिये वीरता एवं गौरव की वस्तु है"।

इ० एम० सी०